श्री

महाशय ! पाठकगणोंसे ग्रंथ प्रसिद्धकर्ताकी प्रार्थना,

विद्वज्जन ! यह ग्रंथ (गुप्त था सो) अति कठिनतासे मेरेको प्राप्त हुआ है, और सर्वोपयोगी है, केवल द्विजवरही इस्का उपयोग करेंगे सो नहीं किंतु मनुष्यमात्रको लाभकारी है इस्के वांचनेसे वर्षका शुभाशुभ समझेंगे.

द्विजवर फल कहके सिद्ध कहलावेंगे, और व्यापारी सस्ती मैंहगीं वस्तुओंका फल समझके लाभ उठावेंगे.

प्रथम मैंने 'अर्घप्रकाश, नामकी एक छोटीसी पुस्तक छापी थी उस्में भी ऐसाही विषय किंचित २ लिया था सो पुस्तकें बहुत बिकीं, जबसे मेरी इच्छा यही थी कि इस विषयका कोई बडा ग्रंथ मिले तो छापूं सो नारायणकृपासे इच्छानुसार प्राप्ति होगया.

ग्रंथ पाके मनमें विचार किया कि यह तो संस्कृतमें है इस्मेंभी जैनीभाषा मिश्रित, और अनेक शब्द कठिन, और समझमें न आवे ऐसा है तो इस्की टीका हिंदीभाषामें होजानी चाहिये, क्योंकि यह अलभ्य ग्रंथ सर्वोपयोगी है, सो विना हिंदी टीकाके अर्थ साधारणमनुष्योंके उपयोगमें नहिं आके केवल पंडितवरोंके ही कामका होगा.

ऐसे विचार १ विनयपत्र (साथही ग्रंथ) मेरेपें परमकृपालु श्रीयुत पंडितजी श्रीज्वालाप्रसादजी महाराजकी सेवामें मुरादाबाद भेजा तो. उन कृपासागरने मेरी प्रार्थनाको पत्रद्वारा स्वीकार कर इस ग्रंथकी टीका अति श्रमसें सरल हिंदी भाषामें बनाय मेरेपास भेजदी !

अब ग्राहकजन या पाठकगणोंसे प्रार्थना है कि आपलोग अवश्य आश्रय देके मेरा श्रम सफल करेंगे ऐसी आशा है—

आपका,

किसनलाल श्रीधर,

पुस्तक मिलनेका ठिकाना,

पंडित श्रीधर शिवलालजी

ज्ञानसागर छापखाना,

मुंबई.

वर्षप्रबोधस्य विषयाणां अनुक्रमणिका

वर्षप्रबोध भाषाटीकासहित

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीतीर्थनाथवृषभं प्रभुमाश्वसेनिं संकेश्वरं नतसुरेन्द्रनरेन्द्रचन्द्रम् । ध्यायन्समेववविजयं सुखभावबुद्ध्यै शास्त्रं करोमि किल मेघमहोदयार्थम् ॥ ॥ १ ॥ दीपोत्सवदिने प्रातर्ग्रंथः प्रारभ्यते मया । अस्मिञ्जगद्गुरोर्भक्त्या भूयाद्वाक्सिद्धिसंनिधिः ॥ २ ॥

अथ उत्पातप्रकरणम् ।

प्रकृतेश्चान्यथाभावउत्पातःसत्वनेकधा । सयत्रतत्रदुर्भिक्षंदेशराज्यप्रजाक्षयः ॥ १ ॥ देवानांवैकृतंभंगंचित्रेष्वायतनेषुच । ध्वजश्चोर्द्ध्वमुखोयत्रतत्र राष्ट्रस्यविप्लवः ॥ २ ॥ जलस्थलपुरारण्येदृश्यन्तेन्यत्रजन्तवः । शिवा काकादिकाक्रन्दःपुरमध्येपुरच्छिदे ॥ ३ ॥ छत्रप्राकारसेनादिदाहाद्यैर्नृपतीन्पुनः । अस्त्राणांज्वलनंकोशनिर्गमश्च पराजये ॥ ४ ॥ अन्यायश्च दुराचारःपाखंडाधिकताजने । सर्वमाकस्मिकंजातंवैकृतंदेशनाशनम् ॥ ॥ ५ ॥ राजादिःकृषिजीवीचेत्विधर्मःपशुपालकः । देवताप्रतिमाभंगो लिंगविप्रवधस्तथा ॥ ६ ॥ सितरक्तंपीतकृष्णंसुरेन्द्रस्यशरासनम् । भवे द्विप्रादिवर्णानांचतुर्णांनाशनंक्रमात् ॥ ७ ॥ अकालेपुष्पितावृक्षाःफलिताश्चान्यभूभुजे । अल्पेल्पंमहतिप्राज्यंदुर्निमित्तैःफलंवदेत् ॥ ८ ॥ अश्वत्थोदुम्बरवटप्लक्षाःपुनरकालतः । विप्रक्षत्रियविट्शूद्रवर्णानांनाशनंक्रमात् ॥ ९ ॥ वृक्षेपत्रेफलेपुष्पेवृक्षपुष्पफलंदलम् । जायतेचेत्तदालोकेदुर्भिक्षादिमहाभयम् ॥ १० ॥ गोधनिर्निशिसर्वत्रकलिर्वादद्दुराःशिखी । श्वेत काकश्चगृध्रादिभ्रमणंदेशनाशनम् ॥ ११ ॥ एवमुत्पातसंयोगाज्ज्ञात्वाशास्त्रान्तरादपि । वर्षेशुभाशुभंदेशेज्ञेयंवर्षपरीक्षकैः ॥ १२ ॥

नमस्कृत्यजगन्नाथंपार्वतीवल्लभंहरम् । वर्षबोधस्यग्रन्थस्यभाषाटीकाविरच्यते

अर्थ–जो स्वाभाविक वस्तु अन्यथाभावको धारण करे उन को उत्पात कहते हैं वह अनेक हैं और जिस देशमें होते हैं वहीं दुर्भिक्ष देश राज्य और प्रजाका क्षय होता है ॥ १ ॥ देव-

ताओंकी प्रतिमा हँसे रोवें वा टूटजांय गिरपडे ध्वजा ऊर्ध्वमुख होजाय तो देशोपद्रव जानना ॥ २ ॥ जलके जीव स्थलमें स्थलके जलमें पुरके वनमें वनके पुरमें दीखें, गीदड और कौए पुरमे रोवें तो विध्वंस हो ॥ ३ ॥ छत्र परकोट सेना और अस्त्रोंका जलना तथा म्यानसे खड्गका निकल पडना, पराजयका सूचक है ॥४॥ अन्याय दुराचार मनुष्योंमें अधिक पाखण्डता होनी यह सब अकस्मात् होजाय तो देशका नाश कहना ॥ ५ ॥ जो राजा कृपिजीवी हो, विधर्मी पशु पालक हो, देवताकी प्रतिमाका भंग ब्राह्मणका वध यहभी उपद्रवके कारण हैं ॥ ६ ॥ वर्षाकालको छोडकर यदि अन्य समय इन्द्र धनुप निकले और वह सूर्यके सन्मुख न हो तो सफेद लाल पीला काला होनेसें क्रमसें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रोंका नाश करता हैं ॥ ७ ॥ जो वृक्ष अकालमें फूलें फलें कभीभी अत्यन्त थोडे फल हों कभी महा अधिक हों तौभी दुर्निमित्त हैं ॥ ८ ॥ पीपल वृक्ष उदुबर (गूलर) वड पिलखन यह, अकालमें फलै तौं क्रमसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रका नाश करैं ॥ ९ ॥ वृक्षके पत्र फल फूलमें वृक्षका पत्ता फल फूल उत्पन्न हो तो दुर्भिक्ष होता है और महा भय होता है ॥ १० ॥ गोधा कलि मेडक मोर यह रात्रिमें भ्रमण करैं श्वेतकाक और गृध्र घरोंमे, भ्रमण करैं तो देशका नाश हो॥ ११ ॥जो सर्पादिको छोड अन्य जीव अपने सन्तानोंका भक्षण करे वा अन्य जातिके जीव अन्य जातिसें मैथुन करैं यह सब उत्पात सुचक है इस प्रकारसें और शास्त्रोंसेभी उत्पातोंको जानकर वर्षका शुभाशुभ और वर्षाकी परीक्षा करनी उचित है ॥१२॥

अथ भृगुसुतोदयतो देशेषु वर्षज्ञानम् ॥

भृगुसुतःकुरुतेऽभ्युदयंयदासुरगणर्क्षगतःखलुसिंधुषु । सकलगुर्जरकर्वटमंडलेभवतिशस्यविनाशमहारुजे ॥ १३ ॥ जालंधरेपिदुर्भिक्षंविग्रहोरणसंभवः । मनुष्यगुणभेशुक्रोदयेसौराष्ट्रविग्रहः ॥ १४ ॥ कलिंगदेशेस्त्रीराज्येमध्यगंवर्षमुच्यते । मरुस्थलेचदुर्भिक्षंघृतधान्यमहर्घता ॥ १५ ॥ स्वर्णरूप्यंमहर्घंस्यात्पीडागोमहिषव्रजे । कार्पासतूलसूत्रादेर्महर्घत्वंभजायते ॥ १६ ॥ नक्षत्रेराक्षसगणेशुक्रस्याभ्युदयेसति । गुर्जरेपुद्गलभयंदुर्भिक्षंद्रव्यहीनता ॥ १७ ॥ पंचवर्णपट्टसूत्रंमूल्येनापिचदुर्लभम् । श्रीफलंदुर्लभंमृत्युःश्रेष्ठःपुंसश्चकस्यचित् ॥ १८ ॥ उत्पातादिषुदेशेषुसिंधुदेशेतिविग्रहः । दिनत्रयमवाणिज्यंविग्रहेमालवादिके ॥ १९ ॥ अथशुक्रास्ततो देशेषुवर्षज्ञानम् । सुरगणेभृगुजास्तगतिर्यदादिवसगुर्जरमालवमण्डले । भवतिदेशभयंनृपविग्रहःप्रथमतोपिचधान्यमहर्घता ॥ २० ॥ पश्चात्समर्घताकिंचिन्मासमेकंभवर्तते । खुरसानेमहोत्पातोद्रव्यनाशोतिदंडता ॥ ॥ २१ ॥ प्रबलाजलवृष्टिश्चमासषट्कात्परंभवेत् । हेमरूप्यमहर्घत्वंनिद्रा

लुःसकलोजनः ॥ २२ ॥ मरुस्थलेषुदुर्भिक्षंदिल्ल्यांराज्यविवर्तनम् । गोपालगिरिदेशेस्यान्मरकोनरकोपमः ॥ २३ ॥ रोगबाहुल्यमथवापरंचक्रपराभवः । व्यापारेबहुलालक्ष्मीःसुभिक्षमुत्तरापथे ॥ २४ ॥

अर्थ–जो शुक्रका देवतागणके नक्षत्रमें उदय होय तो सिंधु गुर्जर कर्वट देशोंमें खेतीका नाश और महारोग हो ॥ १३ ॥ जालंधरमें दुर्भिक्ष विग्रह और लडाई हो और जो शुक्रका उदय मनुष्यगणके नक्षत्रमें हो तो सौराष्ट्र देशमें विग्रह हो ॥ १४ ॥ कलिंग देश और स्त्री-राज्यमें यह वर्ष मध्यम रहे, मरुदेशमें दुर्भिक्ष, घी और धान्य अकरे हों ॥ १५॥ सोना चांदी अकरी हो, गौ भैंसकी गोठमें पीडा हो, कपास रुई सूतादि अकरे विकें ॥ १६ ॥ राक्षसगणके नक्षत्रमें यदि शुक्रका उदय हो तो गुर्जर देशमें पुद्गलका भय, दुर्भिक्ष और द्रव्यहीनता हो ॥ ॥ १७ ॥ पंचवर्णपट सूत्र मौलसैंभी न मिलें, श्रीफलका अभाव हो. किसी श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु हो ॥ १८ ॥ देशोंमें उत्पात सिंधु देशमें विग्रह तीन दिन व्यवहार बंद और मालवेमें विग्रह हो ॥ १९ ॥ अथ शुक्रास्तविचारः । जो देवतागणके नक्षत्रमें शुक्र अस्त हो तो दिवस,गुर्जर मालव देशमें भय, राजोंमें युद्ध हो. पहले धान्य अकरा हो पीछे ॥ २० ॥ एक महिनेतक सस्ता विके खुरासानमें उत्पात द्रव्यका नाश और दंडकी प्राप्ति हो ॥ २१ ॥ इसके उपरान्त छः महीनेतक बहुत वर्षा हो सोना चांदी अकरे और मनुष्योंमें आलस्य बहुत हो ॥ २२ ॥ मरुस्थलमें दुर्भिक्ष दिल्लीके राज्यमें परिवर्तन गोपाल गिरिदेशोंमें मरी पडे ॥ २३ ॥ बहुत रोग हो अथवा शत्रुकी पराभव हो व्यापारमें बहुत लक्ष्मी और सुभिक्ष यह उत्तर दिशामें हों॥२४॥

मनुष्यगणशुक्रास्तेवन्हिभीरोमपत्तने । देशत्रासःकोंकणेचलाटेसिंधोश्चशून्यता ॥ २५ ॥ दुर्भिक्षमुत्तरादेशेविग्रहोद्रविडाश्रये । गुर्जरेचसुभिक्षंस्याद्वनस्पतिफलोदयः ॥ २६ ॥ मासमेकंमहर्घस्यात्ततोधान्योसमर्घता । घृततैलान्ननिष्पत्तिःपटसूत्राणिसर्वतः ॥ २७ ॥ राजानःसुखिनःसर्वाःप्रजारोगविवर्जिताः । सर्वत्रवसतिर्देशेदुर्गेष्वानंदनंदिता ॥ ॥ २८ ॥ शुक्रास्तेराक्षसगणेहींदुदेशेषुविग्रहः । खर्प्परेराजयुद्धानिमिश्रदेशेऽन्नविग्रहः ॥ २९ ॥ मरुस्थलेसिंधुदेशेदुर्भिक्षंमध्यमंभवेत् । यानपात्रविनाशोऽब्धौफिरंगाणांचविग्रहः ॥ ३० ॥ विराटढुंढपांचालसौराष्ट्रेषुचरौरवम् । तथाराज्यपरावर्त्तोमालवेषुजनक्षयः ॥ ३१ ॥ जीर्णदुर्गेभयंभंगःपत्तनेन्नमहर्घता । नव्यमुद्राप्रकाशःस्याद्दक्षिणेसुखसंपदः ॥

१ देवतागण–अश्विनी मृगशिर रेवती हस्त पुष्य पुनर्वसु अनुराधा श्रवण स्वाती.

२ मनुष्यगण–तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा आर्द्रा रोहिणी भरणी.

३ राक्षसगण–कृत्तिका मघा आश्लेषा विशाखा शतभिषा चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा मूल.

॥ ३२ ॥ इतिश्रीशुक्रास्तगणे नवेशवर्षज्ञानम् । अथ मण्डलविचारः ॥
कृत्तिकाभरणीपुष्यंद्विदैवंपूर्वफल्गुनी । पूर्वाभाद्रपदंपैत्र्यंस्मृतमाग्नेयमंड
लम् ॥ ३३ ॥ यद्यस्मिन्धूलिवर्षादेविकारःकोपिजायते । भूमिकंपोश
नेःपातउल्कापातोंधकारिता ॥ ३४ ॥ दर्शनंधूमकेतोश्चग्रहणंचंद्रसूर्य
योः । रक्तवृष्टिजलवृष्टिरन्यद्वाकिंचिदद्भुतम् ॥ ३५ ॥ तदाग्निमंडलात्
प्राज्ञोजानीयाद्भाविलक्षणम् । नेत्ररोगमतीसारंदेशेग्निप्रबलोदयः॥३६॥
गवांदुग्धंघृताल्पत्वंद्रुमेपुष्पफलाल्पता। अर्थनाशंचचोरेभ्यःस्वल्पांवृष्टिस
मादिशेत् ॥ ३७ ॥

अर्थ–मनुष्यगण नक्षत्रपर शुक्र अस्त हो तो रोम देशमें अग्निका भय हो देशमें त्रास कोंकण तथा लाट और सिन्धु देशमें शून्यता हो ॥ १५ ॥ उत्तर देशमें दुर्भिक्ष द्रविड देशमें विग्रह हो गुर्जर देशमें सुभिक्ष और वनस्पतियोंमें फल आवें ॥ २६ ॥ एक महिना अन्न अकरा विके फिर धान्य समभाव विकैं घी तेल अन्न पटसूत्र यह सस्ते हो ॥ २७ ॥ सब राजा सुखी प्रजा रोगरहित हो देश और दुर्गोंमें आनंद हो ॥ २८ ॥ जो राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रास्त हो तो हिन्दूदेशोंमें विग्रह हो खर्पर राज्यमें युद्ध और मिश्र देशमें अन्नका विग्रह हो ॥ २९ ॥ मरुस्थल और सिंधुदेशमें सामान्य दुर्भिक्ष हो विमान और पात्रोंका अथवा जिहाजोका विनाश फिरंगीयोंमें विग्रह हो ॥ ३० ॥ विराट ढुंढु पांचाल सौराष्ट्र देशोंमें कष्ट हो राज्यका बदल और मालव देशके मनुष्योंका क्षय हो ॥ ३१ ॥ जीर्ण दुर्गोंके टूटनेका डर पट्टनमें अन्नकी महंगी हो नयासिक्का चले दक्षिणमें सुख संपदा हो ॥ ३२ ॥ इति शुक्रास्तविचारः । अथ मंडलविचारः । कृत्तिका भरणी पुष्य विशाखा पूर्वाफल्गुनी यह आग्नेयमंडलके नक्षत्र हैं ॥ ३३ ॥ जो इनमें धूलि वर्षादि कोई विकार भूमिकंप वज्रपात उल्कापात अंधकार आदि धूमकेतूका दर्शन चंद्र सूर्यका ग्रहण रक्तवृष्टि जलवृष्टिका और कोई अद्भुत वार्ता हो ॥ ३७॥ तो अग्निमंडलसें बुद्धिमान होनहारको जाने नेत्रोंका रोग अतिसार देशमें अग्निका लगना ॥ ॥ ३५ ॥ गायोंमें दुग्धकी अल्पता घी थोडा वृक्षोंमें पुष्प फल थोडा अर्थ नाश चोरका भय तथा थोडी वृष्टि जाननी ॥ ३९ ॥

क्षुधयापीडितालोकाभिक्षाखर्परधारिणः । सैंधवायमुनातीरेघृताटंकज
बाल्हिकाः ॥ ४० ॥ जालंधराश्चकाश्मीराःसमंत्रचोत्तरापथः । एतेदेशा
विनश्यंतितस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥४१॥ (इतिआग्नेयमंडलम्) मृगादि
त्याश्विनीहस्ताश्चित्रास्वातिसमन्विताः । उत्तराफाल्गुनीवायोरिदंमंडल
मुच्यते ॥ ४२ ॥ यद्येषुजायतेकिंचित्पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् । महावाता
स्तदावांतिमहाभयमुपस्थितम् ॥ ४३ ॥ उन्नीताअपिपर्जन्यानस्रवंति

तदाजलम् । विनाशोदेवविप्राणांनृपाणांविन्ध्यवासिनाम् ॥ ४४ ॥ प्राकारगिरिशृंगाणितोरणस्थलभूमिका । वायुवेगविधूतानिवनानिनिपतंतिहि । ॥ ४५ ॥ (इति वायुमंडलम्) आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्रपदंपुष्यंचवारुणम् । पूर्वाषाढामूलमेतद्वारुणंमंडलंस्मृतम् ॥ ४६ ॥ एषूत्पातोदयेपूर्वंगदितेस्यात्प्रजासुखम् । बहुक्षीरघृतागावोवहुपुष्पफलाद्रुमाः ॥ ४७ ॥ बहुधान्यमहीलोकेनैरुज्यंबहुमंगलम् । धान्यानिचसमर्वाणिसुभिक्षंप्रवलंभवेत् ॥४८ ॥ कीटकामूषकाःसर्पाःशलभामृगकर्कटाः । मारिःपिपीलिकाकामंस्थलदेशेप्रजायते ॥ ४९ ॥ ज्येष्ठानुराधारोहिण्यौधनिष्ठाश्रवणस्तथा । अभिजितोत्तराषाढाशुभंमाहेन्द्रमंडलम् ॥ ५० ॥ एषूत्पातोदयेलोकाःसर्वेमुदितमानसाः । संधिकुर्वंतिभूमीशाःसुभिक्षंमंगलोदयः ॥ ५१ ॥ उल्कापातादयःसर्वेमीषुस्वस्वफलप्रदाः । वर्षाकालंविनाज्ञेयावर्षाकालेतुवृष्टिदाः ॥ ५२ ॥ माहेंद्रंसप्तरात्रेणसद्योवारुणमंडलम् । आग्नेयमर्द्धमासेनफलंमासेनवायवम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-क्षुधासें पीडित प्राणी भिक्षा और खर्पर (खप्पड) धारण करने वाले हों सिंधु देश यमुनाके तटके देश घृताटंक वाल्हीक ॥ ४० ॥ जालंधर काश्मीर और उत्तरदेश इस उत्पातके देखनेसें इतने देश नाशको प्राप्त हो ॥ ४१ ॥ इति अग्निमंडलविचारः । मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी हस्त चित्रा स्वाति उत्तराफल्गुनी यह वायुका मंडल हैं ॥ ४२ ॥ यदि इन नक्षत्रोंमें पूर्वोक्त कोई उत्पात हो तो महावायु चले महाभय उपस्थित हो ॥ ४३ ॥ प्राप्त हुए भरे बादलभी जल न छोडें देव ब्राह्मणोंका विनाश हो विंध्यवासी राजोंमें विग्रह हो ॥ ४४ ॥ परकोट पर्वतोंके शृंग तोरणके स्थान यह सब वायुसें भग्न हो जाय ॥ ४५ ॥ इति वायुमंडलविचारः ॥ आर्द्रा आश्लेषा उत्तराभाद्रपदा रेवती शतभिषा पूर्वाषाढा मूल यह वारुणमंडल हैं ॥ ४६ ॥ जो इनमें पूर्वोक्त उत्पात हो तो प्रजाको सुख हो गायोंमें घी दूध बहुत हो पेडोंपर फल फूल बहुत हों ॥ ४७ ॥ पृथ्वीपै बहुत धान्य उपजै निरोगता और मंगल रहै धान्य सस्ते और सर्वत्र सुभिक्ष हों ॥ ४८ ॥ कीडे मूषे सर्प शलभ मृग कर्कट मारी चींटी यह स्थल देशोंमें बहुत हों ॥ ४९ ॥ ज्येष्ठा अनुराधा रोहिणी धनिष्ठा श्रवण अभिजित् उत्तराषाढा यह माहेन्द्रमंडल है ॥ ५० ॥ इनमें पूर्वोक्त उत्पात हो तो सब लोग आनंदसें रहैं राजा परस्पर संधि करें सुभिक्ष और मंगल हो ॥ ५१ ॥ उल्कापातादिकभी इनमें अपने २ फलको वर्षाकालके विना देतें हैं और वर्षाकालमें तो वृष्टि करतेही हैं ॥ ५२ ॥ माहेन्द्र मंडलका फल सात दिनमें वारुणमंडलका फल शीघ्रही, अग्निमंडलका आधे महीनेमें, और वायुमंडलका एक मासमें फल होता है ॥ ५३ ॥

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंराज्ञांसंधिःपरस्परम्। अंत्यमंडलयोर्ज्ञेयंतद्विपर्ययमाद्य योः ॥ ५४ ॥ माहेंद्रेवारुणेचैवहृष्टाभवंतिधेनवः । उत्पाताःप्रलयंयांतिध रणीवर्द्धतेशिवैः ॥ ५५ ॥, त्रिमासिकंतुआग्नेयंवायव्यंचाद्विमासिकम् । मासमेकंचवारुण्यंमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् ॥ ५६ ॥ (विवेकविलासे पुनः) मंडलेऽग्नेरष्टमासैर्द्वाभ्यांवायव्यकेपुनः । मासेनवारुणेसप्तरात्रान्माहेंद्रके फलम् ॥ ५७ ॥ (रुद्रदेवः प्राह) वायव्यंमासयुग्मेनमाहेंद्रंसप्तरात्रिकम् । आग्नेयमर्द्धमासेनवारुणंशीघ्रवारिदम् ॥ ५८ ॥ वारुणाग्नेययोर्भौमानि लयोःफलमंदता । अन्योन्यमभिघातेनतद्विमृश्यवदेत्फलम् ॥ ५९ ॥ भूमिकंपरजोवर्षदिग्दाहाकालवर्षणम् । इत्याद्याकस्मिकंसर्वमुत्पातइ तिकीर्त्यते ॥ ६० ॥ ईत्यनीतिप्रजारोगरणाद्युत्पातजंफलम् । मंडला ख्यासंप्रायोवन्हिबाष्पादिकंतथा ॥ ६१ ॥ आग्नेयेपीड्यतेयाम्यांवाय व्येपुनरुत्तराम् । वारुणेपश्चिमानात्रपूर्वामाहेंद्रमंडले ॥ ६२ ॥ (इति मं डलोपरि उत्पातेन देशे वर्षज्ञानमतःप्रसंग उत्पातभेदो यथा) भूमिकंपे प्रजापीडा निर्घातेतुनृपक्षयः । अनावृष्टिस्तुदिग्दाहे दुर्भिक्षंपांसुवर्षणे ॥ ॥ ६३ ॥ क्षयकृत्पांसुवृष्टिश्चनीहारश्चभयंकरः । दिग्दाहोऽग्निभयंकुर्या न्निर्घातेनृपभीतिदः ॥ ६४ ॥ झंझावायुश्चंडशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः । भूकंपोदुःखदायीचपरिवेषश्चरोगसत ॥ ६५ ॥ ग्रहयुद्धेराजयुद्धंकेतौदृष्टे तथैवच । ग्रहणांतेमहावृष्टिःसर्वदोषविनाशिनी ॥ ६६ ॥ उल्कापातेश्रेष्ठ नाशोद्रुमच्छिन्नेधनिक्षयः । पाषाणवर्षणेज्ञेयासर्वधान्यमहर्घता ॥ ६७॥

अर्थ–सुभिक्ष क्षेम आरोग्य राजोंकी परस्पर संधि यह थोडे मंडलमेभी जानना, उसके विप- रीत दूसरोंका ॥ ५४ ॥ माहेन्द्र और वारुणमंडलमें गौ प्रसन्न होती हैं, उत्पात नष्ट होते हैं, धरतीपर मंगल होते हैं ॥ ५५ ॥ तीन महीनेमें आग्नेय, दो महीनेमें वायु, एक महीनेमें वरुण, सात रात्रिमें महेन्द्रका फल रहता है ॥ ५६ ॥ विवेकविलासमें लिखा है कि, अग्निका मंडल आठ महीने, वायुका दो महीने वरुणका एक महीने महेन्द्रका सात दिनतक फल रहता है ॥ ५७ ॥ रुद्रदेवने कहा है कि वायूका दो महीने माहेन्द्रका सात दिन, अग्निका आधे महीने, और वरुणमंडल शीघ्र जल देनेवाला है ॥ ५८ ॥ वरुण अग्निका पृथ्वी संबंधी फल वायव मंडलमें फलकी मंदता और एक दूसरेके मिल जानेसे विचारकर इनका फल कहे ॥ ५९ ॥ भूमिकंप धूलिकी वर्षा दिग्दाह अकालवर्षण यदि यह अथवा और उत्पात हो तो यह सब आ- कस्मिक कहलाते हैं ॥ ६० ॥ इस प्रकार अन्याय रोग बडाई यह सब उत्पातके फल कहाते हैं

और मंडलकेभी ऐसेही होते हैं जो अग्नि और वायु आदिके उत्पात हो ॥ ६१ ॥ आग्नेयमड-लसें दक्षिण दिशा वायुमंडलसें उत्तरदिशा वारुणमडलसे पश्चिमदिशा माहेन्द्रसें पूर्वदिशामें पीडा हो ॥ ६२ ॥ इति मडलविचारः । अथ उत्पातभेद । भूमिकपसें प्रजापीडा वज्र गिरनेसें राजाका क्षय दिग्दाहसें अनावृष्टि धूल वरसनेसें दुर्भिक्ष ॥ ६३ ॥ पांसु अर्थात् धूलिकी वर्षा क्षय करती है कुहर भयदाई है दिग्दाह अग्निका भय करता है वज्र गिरनेसें राजाको भय होता है ॥ ६४ ॥ वर्षावाली हवा और तीक्ष्ण शब्द चोरोंका भय करता है भूकप दुख देनेहारा और सूर्य चद्रका घेरा दूतको भय देता है ॥ ६५ ॥ ग्रहोंमें युद्ध होनेसे राजाओंमे युद्ध हो-केतुके दर्शनमें भी यही हो जो ग्रहणके अंतमें अधिक वर्षा हो तो सब दोष नाश हो ॥ ६६ ॥ उ-ल्कापातसें श्रेष्ठ पुरुषका नाश और वृक्षके टूटनेसें धनीका क्षय और पाषाण पत्थरकी वर्षा होनेसे सब अन्न अकरे हों ॥ ६७ ॥

विद्युत्पातेजलाभावःप्रजानाशोंधकारिते । ऋतूनांव्यत्ययेरोगःसर्वजंतुषुजायते ॥ ६८ ॥ जंतूनांविकृतोत्पत्तीराजविघ्नकरीमता। विग्रहोजायतेघोरश्चंद्रसूर्यविपर्यये ॥ ६९ ॥ ग्रहयुद्धेभवेद्युद्धंयुतोचैवमहर्घता । सूर्येन्दुपरिवेषाणांफलंवक्ष्येस्वयंयतः ॥ ७० ॥ श्वेतवर्णेभवेद्द्रव्यंपीतवर्णेरुजाकरः। रक्तवर्णेभवेद्युद्धंकृष्णवर्णेनृपक्षयः ॥ ७१ ॥ नीलवर्णेमहावृष्टिर्धूमवर्णेचधूमरी । स्वल्पेस्वल्पफलंसर्वंबहूनांतुफलंमहत् ॥ ७२ ॥ जलाद्रावेमहावृष्टिर्विबनाशेनृपक्षयम् । अकालेफलपुष्पाणिसस्यनाशकराणिच ॥ ॥७३॥यस्यराज्येचराष्ट्रेचदेवध्वंसःप्रजायते॥ सूर्येंद्वोःसर्वथाग्रासेसर्वस्यापिमहर्घता ॥ ७४ ॥ भौमादिग्रहवक्रस्यचक्रेचमासकंफलम् ॥ ७५ ॥ इतिउत्पातभेदः ॥ कपिलंसस्यघातायमांजिष्ठाहरणंगवि। अव्यक्तवर्णंकुरुतेबलक्षोभंनसंशयः ॥ ७६ ॥ गन्धर्वनगरंस्निग्धंसप्राकारंसतोरणम् । सौम्यांदिशंसमाश्रित्यराज्ञस्तद्विजयंकुरु ॥ ७७ ॥ इति गन्धर्वनगरम् । कपिलाविद्युदनिलंकुर्यात्पीतातुवृष्टये। लोहिताआतपायस्यात्सितादुर्भिक्षहेतवे ॥७८ ॥ इतिविद्युल्लक्षणम् । श्रावणेभाद्रमासेचकेतवोवारुणादश । जलवृष्टिकरालोकेतदाधान्यसमर्घता ॥ ७९ ॥ आश्विनेकार्तिकेतैस्फाः सूर्यपुत्राश्चतुर्दश । कुर्युश्चतुष्पदेमृत्युंदुर्भिक्षंचैवनाशनम् ॥ ८० ॥ वन्हिपुत्राश्चत्रिंशत्केतवोमार्गपौषयोः । अग्निदाहंचौरभयमनावृष्टिंदिशंत्यमी॥८१॥केतवोयमपुत्राःस्युर्माघफाल्गुनयोर्नव। धान्यंमहर्घंदुर्भिक्षंकुर्युः

भूपमहारणम्॥८२॥ केतवोऽष्टादशसुताधनदस्यवसंतके।लोकेसुखंमंग
लानिसुभिक्षंकुर्युरुद्यताः॥ ८३ ॥

अर्थ–विद्युत्के उत्पातमें जलका अभाव हो अघकारसे प्रजाका नाश ऋतुओंकी विपरीततामें सब प्राणियोंको रोग हो॥ ६८॥ जंतुओंकी विकृत उत्पत्तिसे राजाको विघ्न होता है चद्र सूर्यकी विपरीततामें घोर विग्रह हो॥ ६९॥ ग्रहयुद्धसें युद्ध और धान्यका अकरापन होता है और सूर्य चद्रमाका मडल हो तो उसका फल यों कहना॥ ७०॥ श्वेतवर्ण द्रव्यके निमित्त, पीतवर्ण रोगकारी, रक्तवर्ण युद्ध करनेवाला, कृष्णवर्णमें राजाका क्षय॥ ७१॥ निलवर्ण हो तो महावर्षा, धूम्र वर्णसें धूम्रता थोडा होनेसें थोडा फल, अधिक होनेसें अधिक फल कहना॥ ७२॥ और उसमेंसें जलके कणका स्राव हो तो अत्यन्त वृष्टि हो और बिम्बके नाशमें राजाकी मृत्यु होवे और अकालमें फल पुष्पोंका होना खेतीका नाश करता है॥ ७३॥ जिसके राज्यमें देवताका ध्वस हो सूर्य चंद्रमाका पूर्ण ग्रास हो तो सब चीज अकरी हो॥ ७४॥ मगलादि ग्रहके वक्री होनेमें और मडल बंधनेमें पूर्वोक्तही फल कहा है॥ ७५॥ गधर्वनगर कपिश यानी भूरा दीखें तो खेतीका नाश करे, मजीठ रंगका गायोंको पीडा देता है, अमरूद रंगका बलका क्षोम करता है॥७६॥ गंधर्वनगर यदि स्निग्ध परिकोटे ध्वजासहित पूर्वदिशामे दीखे तो राजाकी जय हो॥७७॥ इति गधर्वनगरविचारः। भूरी विजली चमके तो पवन चले, पीली चमके तो बहुत वर्षा हो, रक्त गर्मी अधिक करे, श्वेत चमके तो काल पडे॥ ७८ ॥इति विद्युद्विचारः। श्रावण और भादों महीनेमें दश केतु वारुण नाम वाले होते हैं यह लोकमें जलकी वर्षा करते हैं तब नाज सस्ता रहे॥ ७९॥ क्वार कार्तिकमें तेरह नामवाले चौदह सूर्यके पुत्र हैं यह चौपायोंमें मृत्यु और दुर्भिक्ष तथा नाश करते हैं॥ ८०॥ अगहन पूसमें चौतीस अग्निके पुत्र केतु हैं यह अग्निदाह चोरका भय अनावृष्टि उदय होनेसे करते हैं॥ ८१॥ माघ फाल्गुनमें नौ केतू यमराजके पुत्र रहते हैं यह उदय होकर धान्यका अकरापन दुर्भिक्ष राजाओंमे विग्रह कराते हैं॥ ८२॥ अठारह केतु कुबेरके पुत्र चैत्र वैशाखके दिनोंमें रहते हैं यह उदय होनेपर सुख मंगल और सुभिक्ष करते हैं॥ ८३॥

ज्येष्ठाषाढोदितावायोःपुत्राविंशतिकेतवः। सवातजलवर्षायैतरुप्रासाद
भंगदाः॥ ८४॥ एवंपंचोत्तरशतंकचिदष्टोत्तरंशतम्। केचिदेकोत्तरशा
तंकेतूनांस्थानकत्रयात्॥ ८५॥ दशैवरविजागणाःशतमेकोत्तरंततः।
त्रयोविंशावायुजाताःशतमष्टोत्तरंतदा। अथकेतूदयफलम्॥ ८६॥ ए
षांकदाफलमितिज्ञेयमृक्षंविलोकयेत्।महोत्पातहतेऋक्षेदेशेनावृष्टिसंभवः
॥८७॥यदुक्तम्। उल्कापातोदिशांदाहोभूकंपोब्रह्मवर्चसम्। दृष्ट्वाऋक्षंम
वेधत्रतदृक्षंपीडितंभवेत्॥ ८८॥

अर्थ—जेठ और आषाढमें वायुके पुत्र बीस केतु उदय होते हैं, उनके उदय होनेसे वात जलवर्षा होती है, प्रचण्ड पवनसे वृक्ष और महल टूटते हैं ॥ ८४ ॥ इस प्रकार कोई एकसौ पांच और कोई एकसौ आठ कोई एकसौ एक केतुओंकी संख्या करते हैं ॥ ८५ ॥ जो सूर्यके उत्पन्न किये दशकेतु मिलावे तो एकसौ एक, वायुके तेईस मिलावे तो एकसौ आठ होते हैं ॥ ८६ ॥ इनका फल देखनेके लिये नक्षत्र देखे नक्षत्रके हत होनेमें महोत्पात और अनावृष्टिकी प्राप्ति होती है ॥ ८७ ॥ उल्कापात दिग्दाह भूकंपको देखकर विद्वान् विचारे जो नक्षत्र उसदिन हो वही पीडित होता है ॥ ८८ ॥

अथ चंद्रसूर्यग्रहणम्।

सूर्याचंद्रमसोर्ग्रहः शुभकरोमार्गेतथाकार्तिकेपौषेधान्यमहर्घताजनभयंच पुरोमध्यमम् ॥ माघेवांछितवृष्टिरन्नविगमःस्यात्फाल्गुनेदुःखकृच्चैत्रेचित्रगादिलेखकमहापीडासभामध्यमा ॥ ८९ ॥ वैशाखेतिलतैलमुद्गकुरुतेकार्पासकंनाशयेज्ज्येष्ठेऽवर्षणधान्यनाशनकरंस्याद्भाविवर्षंशुभम्। आषाढेक्वचिदेववर्षतिघनोरोगोऽन्नलाभःक्वचिद्वृक्षेमूलफलानिहंतिसहसावर्षंशुभंशंभवेत् ॥ ९० ॥ गर्भाश्रावणकेऽश्वगर्दभभवास्तूर्णोचतत्फाल्गुनेस्त्रीगर्भान्विनिहंतिभाद्रपदकेसौख्यंसुभिक्षंजने। कुर्यादाश्विनकेऽथसूर्यशशिनोरेकत्रमासेग्रहंद्वंद्वंचेन्नरनायकाबहुबलायुद्ध्यंतिकोपोत्कटाः ९१

अथ चंद्रसूर्यग्रहणफलम्।

अर्थ—सूर्य चंद्रमाका ग्रहण कार्तिक और अघहनमें शुभ करता है पूसमें धान्यका अकरापन मनुष्योंमें भय पुरमें भय माघमें मनके अनुसार वृष्टि अन्नकी प्राप्ति फाल्गुनमें दुःख चैत्रमें चित्रकार और लेखकोंको महापीडा ॥ ८९ ॥ वैशाखमें तिलतैल मूंग कपासका नाश हो ज्येष्ठमें ग्रहण हो तो अवर्षण धान्यका नाश और अगला वर्ष शुभ हो आषाढमें ग्रहण होतो कहीं वर्षे कहीं रोग कहीं अन्नका लाभ हो वृक्षोंके मूल फल टूटपडें शेष वर्ष शुभ रहे॥ ॥ ९० ॥ श्रावणमें घोडियों और गर्दभिओंके गर्भ पतित होवें स्त्रियोंके गर्भ पतित हों भाद्रपदमें ग्रहण हो तो सुख हो क्वारमें सुभिक्ष हो और एकही मासमें सूर्य चंद्रमाका ग्रहण होनेसे राजा लोग परस्पर महा क्रोध करके युद्ध करते हैं ॥ ९१ ॥

कदाचिद्व्यधिकेमासेग्रहणंचंद्रसूर्ययोः। सर्वराष्ट्रभयंभंगःक्षयंयातिमहीभुजः ॥९२॥ रवेर्ग्रहाच्चपक्षांतेयदिचंद्रग्रहोभवेत्। तदाद्दर्शनिनांपूजाधर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ ९३ ॥ क्रूरसंयुक्तसूर्येन्द्वोर्ग्रहणेनृपतिक्षयः। राष्ट्रभंगइतिप्राहुर्भूप्राज्ञावैमुनीश्वराः ॥ ९४ ॥ रविवारेग्रहेवर्षंमध्यमंधान्यसंग्रहः।

राजयुद्धंचदुर्भिक्षंघृतायस्तैलविक्रयाः ॥ ९५ ॥ सोमेऽर्द्धग्रहणेराजग्रहोम्न स्यसुहर्घता । लाभस्तैलघृतादिभ्योभौमेवन्हिभयंभवेत ॥ ९६ ॥ भौमवा रेग्रहेभानोरन्योन्यंनृपतिक्षयः । इन्द्रोग्रहेचकार्पाससूतसूत्रमहर्घता ॥ ॥ ९७ ॥ बुधेपूर्णरक्तवस्त्रसंग्रहोलाभदायकः । गुरौरीतिरक्तवस्तुतैलगं धादिलाभदम् ॥ ९८ ॥ शुक्रेसुभिक्षंमांगल्यंसर्वलोकशुभंकरम् । शनौ युगंधरीलाभःश्यामवस्तुमहर्घता ॥ ९९ ॥ पीतरक्तवस्त्रताम्रवृषभादिक संग्रहे । मासद्वयेतस्यलाभइत्युक्तंज्ञानिभिःपुरा ॥ १०० ॥ अर्द्धोर्द्धमासि केलाभस्त्रिभागेचत्रिमासिकः । चतुर्भागश्चतुर्मासेऽस्तमितेवर्षसंभवः ॥ ॥ १०१ ॥ ग्रहणाद्येचसर्वस्मिन्नुत्पातेप्रबलेयदा । पश्चात्संज्ञाततेघोरारि ष्टभंगंतदादिशेत् ॥ १०२ ॥ एवमुत्पातरहितेअस्मिन्नुदकयोनिकाः । जीवाःपुद्गलकाद्दश्यास्तद्देशेवृष्टिरुत्तमा ॥ १०३ ॥ एतेनगर्भाःसर्वेपिस्तू नितावातवर्जिताः ॥ स्थानांगसूत्रकारेणतेषांनीरात्समुद्भवात् ॥ १०४ ॥ ॥ इतिश्रीमेघमहोदयेदेशाधिकारः ।

अर्थ—कभी अधिकमासमें चंद्र सूर्यका ग्रहण हो तो राष्ट्रभंग भय और राजाओंका क्षय हो ॥ ९२ ॥ सूर्यके ग्रहणसे पक्षान्तमेंही यदि चंद्रग्रहण हो तो शास्त्रकारोंकी पूजा धर्म वृद्धि बडे पुरुषोंका उदय हो ॥ ९३ ॥ क्रूर ग्रह संयुक्त सूर्य चंद्रमाका ग्रहण राजाका क्षय करता है और मुनिजन कहते हैं कि वह राज्यकाभी भंग करता है ॥ ९४ ॥ जो रविवारके दिन ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम रहे धान्यका संग्रह करना उचित है राजयुद्ध दुर्भिक्ष और घृत तेल अकरे हो ॥ ९५ ॥ चन्द्रवारके दिन ग्रहण होनेसे अन्न अकरा तेल घी संग्रह करनेवालेको लाभ हो मंगलके दिन सूर्यग्रहण हो तो अग्निभय हो ॥ ९६ ॥ तथा राजोंमें युद्ध हो चन्द्रमाका ग्रहण हो तो सूत कपास अकरे बिके बुधके दिन ग्रहण हो तो सुपारी लाल वस्तुके संग्रह करनेसे लाभ होगा बृहस्पतिके दिन होनेसे पीत रक्त वस्तु तथा तेल गंधादिक संग्रह करनेवालेको लाभ होगा ॥ ९८ ॥ शुक्रके दिन ग्रहण हो तो सुभिक्ष हो सबको लाभ हो शनिके दिन ग्रहण हो तो युगंधरीका लाभ और काली वस्तु अकरी हो ॥ ९९ ॥ पीले लाल वस्त्र तांबा वृषभादिक इनका संग्रह करना यह दोही महिनेमें लाभ देंगे ऐसा ज्ञानियोंने कहा है ॥ १०० ॥ वा आधेके संग्रहमें आधेके मासमें लाभ तीन भागमें तीन मासमें लाभ चार भागं ग्रहण करनेसे चार महीनेमें ॥ १०१ ग्रहणके प्रारम्भमें जो संपूर्ण उत्पात यदि प्रबल हों और पीछे मेघ वर्षे तो अरिष्टभंग होजाय ॥ १०२ ॥ और जो कोई उत्पात यदि न हो तो जलके जीव बहुत हों अच्छी वृष्टि हो ॥ १०३ ॥ येते विकार न हो तो जलजन्तुओंके गर्भ वृद्धिको प्राप्त हो ऐसा सूत्रकारोंने स्थानांका निर्णय किया है ॥ १०४ ॥ इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधनाम्नि महोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिकृते देशाधिकारः ।

पूर्वस्यांअथवोदीच्याःपवनःशीघ्रवृष्टये । दक्षिणस्यावृष्टिनाशीपश्चिमायांविलंबकः ॥ १ ॥ आग्नेय्यांविग्रहंवन्हेर्भयंवृष्टिर्विबाधनम् । नैर्ऋतःपवनोयावत्तावत्कुर्यान्महातपम् ॥ २ ॥ वायव्यवायुःकुरुतेवृष्टिंपवनसंयुताम् । ततःपीडामत्कुणाद्याईतयोजीववर्षणम् ॥ ३ ॥ ऐशानःपवनोविश्वहितायजलवृष्टये । आनंदंनंदयेल्लोकेवायुचक्रमिदंमतम् ॥ ४ ॥ रुद्रोपिस्वकृतेमेघमालायामाह । वायुधारणमेवेदंशृणुतत्वेनसुंदरि । सुभिक्षंपूर्ववातेजायतेनात्रसंशयः ॥ ५ ॥ आग्नेय्यांखंडवृष्टिश्चजायतेगिरिजात्मजे । दक्षिणेईतिर्विज्ञेयानैर्ऋत्यांकुलदात्वहे ॥ ६ ॥ वारुणेदिव्यधान्यंचवायव्यांतपसिसंभवः । उत्तरायांशुभंज्ञेयमीशान्यांसर्वसंपदः ॥ ७ ॥ इतिसामान्यतोवायुचक्रविचारः । हेमंतेदक्षिणेवायुःशिशिरेनैर्ऋतःशुभः । वसंतेचोष्णःश्रेष्ठफलदायीशरत्सुसः ॥ ८ ॥ शरत्कालेतुपूर्वस्याःसमीरःफलनाशनः । वसंतेचोत्तरावायुःफलपुष्पाणिनाशयेत् ॥ ९ ॥ आग्नेय्यानकदापीष्टऐशानःसर्वदाशुभः । नैर्ऋतोविग्रहंरोगंदुर्भिक्षंकुरुतेभयम् ॥ १० ॥ इतिवातविशेषचक्रम् । झंझावातंविनाकश्चिद्यदाप्राच्यादिकोऽनिलः । स्पष्टभावेनचेद्वातितदावृष्टिःस्थिराभवेत् ॥ ११ ॥ श्रावणेमुख्यतःप्राच्यात्भस्येचोत्तरोऽनिलः । वृष्टिंददतरांकुर्याच्छेषमासेषुवारुणः ॥ १४ ॥ इतिस्थापकवातः ॥

अर्थ—पूर्व उत्तरकी वायुसे शीघ्र वर्षा होती है, पश्चिमकी पवनसे विलम्वमें वर्षा होती है ॥ १ ॥ आग्नेयीदिशाकी पवनसे अग्निका भय वृष्टिकी बाधा नैर्ऋतकी पवनसे महा-ताप ॥ २ ॥ वायव्यकी पवनसे वायु सहित वर्षा, छोटे जीव, खटमलादिकी उत्पत्ति होती है और ईति होती है ॥ ४ ईशानकी पवनसे जगतका मंगल होता है; जलकी वृष्टि होती है, लोक आनंद होता है, यह वायुचक्र है ॥ ४ ॥ रुद्रदेवने मेघमालामें कहा है सुंदरी ! वायुका धारण तत्व विचार से सुन पूर्वकी पवन चले तो सुभिक्ष हो ॥ ५ ॥ अग्नि कोणकी पवन खंडवृष्टि करै दक्षिणा और नैर्ऋतकी संतान वृद्धि करे ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशाकी पवन दिव्य अन्न उत्पन्न करै वायु कोणकी तपन करै उत्तरकी शुभ और ईशान दिशाकी सब सम्पत्ति करै ॥ ७ ॥ यह सामान्यसे वायुचक्रका विचार कहा ॥ हेमंत ऋतुमें दक्षिणकी पवन शिशिर ऋतुमें नैर्ऋतकी शुभ है वसन्तमें उष्ण वायु श्रेष्ठ है वह शरदमें फल देती है ॥ ८ ॥ शरत्कालमें पूर्वकी हवा चले तो फलका नाश करै वसन्तमें उत्तरकी पवन फल पुष्पोंको नाश करै आग्नेयी पवन

१ अतिवर्षा वर्षाका न होना शलभ मूषे पक्षीकी अधिकता होनी ईति है ।

कभी भली नहीं ईशानकी पवन सर्वदा सुख करे नैर्ऋतकी विग्रह और रोग करे दुर्भिक्ष भय हो॥ १० ॥ इति विशेष पवनविचारः। वर्षावाली पवनके विना कभी पूर्वकी पवन प्रगट न चले तो स्थिर वर्षा हो ॥ ११॥ श्रावणमें उ०पा० पूर्वकी, भादोंमें उत्तरकी हवा वर्षा अच्छी करे, शेष महीनेमें पश्चिमकी अच्छी है ॥ १२ ॥ इति स्थापकवातः।

चैत्रासितद्वितीयायांसर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः। विनामेघंतदाभाद्रपदेवृष्टिस्तुयसी ॥ १३ ॥ पूर्वस्याउत्तरस्याश्चवायुश्चैत्रेसितेतरे । तृतीयायांतदालोकेसुभिक्षं प्रचुरंजलम् ॥ १४ ॥ चतुर्थ्यांवृष्टियुग्वातस्तदादुर्भिक्षमादिशेत् । चैत्रसितेपिपंचम्यांतादृगेवफलंभवेत् ॥ १५ ॥ चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषुकृष्णेथपक्षेयदिपूर्ववातः। वर्षायुतोनैवशुभः सितेतुपूर्वोत्तरावायुरतीवशिष्टः ॥ १६ ॥ चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांवायुर्दक्षिणपूर्वयोः। वृष्ट्यासहतदावर्षेधान्येत्रिगुणमुल्यता ॥ १७ ॥ एवंच। चैत्रोयंबहुरूपस्तुदक्षिणानिलसंयुतः । सर्वोविद्युत्समायुक्तोवृष्टेर्गर्भेहितावहः ॥ १८ ॥ मूलमारभ्ययाम्यांतंक्रमाच्चैत्रंविलोकयेत्। यावद्दक्षिणतोवायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ॥ १९ ॥ शुक्लाकृष्णापिवैशाखेऽष्टमीयद्वाचतुर्दशी । एषुचेद्दक्षिणोवातस्तदामेघमहोदयः ॥ २० ॥ राधेशुक्लतृतीयायांचिन्हेंर्निश्चीयतेऽनिलः। पूर्वस्यायदिवोदीच्योघनाघनस्तदाघनः ॥ २१ ॥ दक्षिणानैर्ऋतोवायुर्वृष्टेःस्यात्प्रतिघातकः । वारुणाद्वृष्टिरधिकापरधान्यस्यरोधनम् ॥ २२ ॥ वैशाखशुक्लतुर्येहिसंध्यायामुत्तरानिलः ॥सुभिक्षायाथपंचम्यामैंद्रोधान्यमहर्घकृत् ॥ २३ ॥

अर्थ—चैत्रके महीने दोयजको कृष्णपक्षमें यदि सब ओरको वायु चले और मेघ न हो तो भादोंमें बहुत वर्षा हो ॥ १३ ॥ अथवा पूर्व उत्तरकी पवन चैत्र कृष्ण पक्षमें चले तीजका दिन हो तो सुभिक्ष और जलकी वर्षा अधिक हो ॥ १४ ॥ चौथके दिन यदि वर्षायुक्त हवा चले तो दुर्भिक्ष पडे चैत्र शुक्ल पंचमीकोभी यदि ऐसेही पवन चले तो यही फल जानना ॥ १५ ॥ चैत्रकृष्ण पक्ष की द्वितीया से चार दिन कृष्ण पक्ष में यदि पूर्वकी पवन चले और वर्षा नहो तो शुभ है शुल्कपक्षमें पूर्व उत्तर को वायू अधिक श्रेष्ठ है ॥ १६ ॥ चैत्रशुल्क पंचमी में यदि दक्षिण पूर्व की पवन चले और वर्षा भी हो तो भादों में धान्य तिगुने मोल बिकें ॥ १७ ॥ यदि चैत्रमें अनेकविध दक्षिण की पवन चले तो और बिजली चमके तो श्रेष्ठ वर्षा हो ॥ १८ ॥ मूल से लेकर भरणी नक्षत्रतक चैत्रको देखे जब तक दक्षिणकी वायु चले तब तक वर्षा हो ॥ १९ ॥ वैशाख के शुक्ल या कृष्ण पक्षकी अष्टमी या चौदस में दक्षिणकी पवन चले तो मेघका उदय हो॥ २० ॥ वैशाख की शुक्लाती-

जको चिन्होंसे पवनको जाने यदि पूर्व या उत्तर की पवन चले तो मेघ आवें वर्षा हो ॥ २१ ॥ जो दक्षिण या नैर्ऋत की पवन चले तो वृष्टि नहो पश्चिम की पवन में वर्षा अधिक और पर-धान्यका निरोध हो ॥ २२ ॥ वैशाख शुदि ४ को जो उत्तर की पवन चले तो सुभिक्ष हो और पंचमी को जो पूर्व दिशा ५ की पवन चले तो अकरा हो ॥ २३ ॥

उदयास्तंगतोयावत्पूर्ववायुर्यदाभवेत्।संग्रहियाच्चधान्यानिप्रचुराण्यसुलभान्यथ ॥ २४ ॥ एवंशुद्धदशम्यांचेत्तदापिधान्यसंग्रहः । तथादेशेषुपूर्णायांवायुंसम्यग्विचारयेत् ॥ २५ ॥ प्रातश्चतुर्घटीमध्येपूर्ववायुर्यदाभवेत् । सूर्यार्द्रासंगमेवाद्यदिनेमेघमहोदयः ॥ २६ ॥ वृष्टिर्द्वितीयेपिवायुर्घटिकेपूर्वयायुतः ॥ ज्ञेयाद्वितीयेदिवसेआर्द्रातपनसंगमे ॥ २७ ॥ पूर्णिमातःसमारभ्ययावज्ज्येष्ठासिताष्टमी । एवमार्द्रादिसूर्येक्षेनवकेवृष्टिरुच्यते ॥२८॥ सूर्यसौम्यअमायोगेवायुर्वारुणदिग्भवः।यदासरत्सुविज्ञेयोवायुर्धान्यमहाफलम् ॥२९ ॥ नवमासान्यदापूर्ववायुश्चरतिभूतले । स्वातौमौक्तिकनिष्पत्तिर्बहुधान्यादिमंगलम् ॥ ३० ॥ ज्येष्ठमासेरविकरास्तपंतिप्रचुरोनिलः । लूकासमन्वितोवातिवनगर्भस्तदाशुभः ॥ ३१ ॥ ज्येष्ठमासेऽष्टमीकृष्णातथाकृष्णचतुर्दशी । दक्षिणानिलसंयुक्तापरतोवृष्टिहेतवे॥३२॥ ज्येष्ठस्ययदिपंचम्यांदक्षिणापवनश्चरेत् । तदातिलास्तथातैलंवृतंक्रयंतदाश्विने ॥ ३३ ॥ यदुक्तंमेघमालायांगर्जितंश्रूयतेयदि । दक्षिणस्याभवेद्वायुरवच्छन्नंयदाततः ॥ ३४ ॥

अर्थ—उदय और अस्तके समय जो पूर्वकी वायु हो तो धान्यका संचय करना उचित है ॥ २४॥ और जो इसी प्रकार शुक्ल पक्षकी दशमी को पवन चले तोभी धान्यका संग्रह करना उचित है इसी प्रकार देशों में वायुका विचार करै ॥ २५ ॥ जो प्रातःकाल चारघडी तक पूर्वकी पवन चले और सूर्यके साथ आर्द्रानक्षत्र का संग हो तो दिनमें मेघका उदय हो ॥ २६ ॥ आर्द्रा और सूर्यके संगम होंनसे दूसरे दिन वर्षा हो-जो प्रातःकाल में चार-घडी भी हो ॥ २७ ॥ पूर्णमासी से लेकर जबतक ज्येष्ठकृष्णा अष्टमी हो जो आर्द्रादि नौ नक्षत्रमें सूर्यका योग हो तो अवश्य वर्षा हो ॥ २८ ॥ जो अमावास्या के दिन सूर्य, चंद्रमा एकराशीपर स्थित हो और उसदिन पश्चिम की पवन चले तो धान्य अधिक हो ॥ २९ ॥ जो नौ, महीनेतक बराबर पूर्वकी पवन चले तो सीपी में स्वातिनक्षत्र में बहुत मोती हो ॥ ३० ॥ जो ज्येष्ठ महीने में सूर्यके किरण बहोत तपे और बहोत पवन तथा लूव लू चले तो भी अच्छी वर्षा हो ॥ ३१ ॥ ज्येष्ठ मासमें कृष्णअष्टमी और चौदसको दक्षिण की पवन चले तो आगे जाकर वर्षा हो ॥ ३२ ॥ ज्येष्ठकी पंचमी को यदि दक्षिण की पवन

चले तो तिल तेल घृत इनको आश्विन मे खरीदना चाहिये ॥ ३३ ॥ जो मेघमाला का दक्षिणकी ओर गर्जना सुना जाय और उधर हीं की चले तो मेघों से आकाश छन्न रहे ॥ ३४ ॥

धान्यानांतिलतैलानांसंग्रहःक्रियतेतदा । द्विगुणस्त्रिगुणोलाभःक्रमान्मासश्चतुष्टये ॥ ३५ ॥ सिताऽष्टम्यांज्येष्ठमासेचतस्रोवायुधारणाः । मृदुवायुः १ शुनोवातः २ स्निग्धाभ्रः ३ स्थगिताभ्रकः ॥ ३६ ॥ यदि ताएकरूपाःस्युःसुभिक्षसुखकारिकाः । सांतरालाःशिवायैतास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यांपूजांकृत्वासुशोभनाम् । शुभंमंगलकंकृत्वापुष्पधूपैरलंकृतम् ॥ ३८ ॥ उच्चस्थानेप्रतिष्ठाप्योदीर्वं दंडेमहाध्वजः । एवंकृत्वाप्रयत्नेनशोधयेत्कालनिर्णयम् ॥ ३९ ॥ एकोवातोयदावातियानिचिन्हानिवापुनः । तदात्रिचतुरोमासान्ध्रुवंवर्षतिधारिदः ॥ ४० ॥ प्रथमंपश्चिमोवातश्चतुर्दिनानिवातिचेत् । अनावृष्टिंविजानीयाद्दुर्भिक्षंरौरवंतदा ॥ ४१ ॥ उत्तरोह्यमार्गेणचतस्रोहंतिवा दिशः । चत्वारोवार्षिकामासामेघावर्षंतिभूतले ॥ ४२ ॥ विपरीतोयदा वातश्चतस्रोहंतिवादिशः । रविमार्गेपरिभ्रष्टोजानीयात्तस्यलक्षणम् ॥ ४३ ॥ शीतकालेतदावृष्टिर्वर्षाकालेनविद्यते । अनयोर्वैपरीत्येचवृष्टिंवर्षासुनिर्दिशेत् ॥ ४४ ॥ वायव्यांपश्चिमायांचनैरृत्यांवातिचक्रमात् । आषाढे श्रावणेक्षिप्रंद्वौमासौवृष्टिरुत्तमा ॥ ४५ ॥ पूर्वस्यांचतथैशान्यामाग्नेय्यां वातिचक्रमात् । भाद्रपादाश्विनोच्छिद्रादावातेवृष्टिरुत्तमा ॥ ४६ ॥

अर्थ—यदि इस समय धान्य तिल और तेलोंका संग्रह किया जाय तो चार महीनेमें दूना लाभ हो ॥ ३५ ॥ ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी अष्टमीमें यह चारों वायु मृदुवायु शुनोवात स्निग्धाभ्र स्थगिताभ्रक ॥ ३६ ॥ जो यह सब मिलेहुए चले तो सुभिक्ष और सुख हो और पृथक् होनेसे भली नहीं उनमें तस्कर और अग्निका भय होता है ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठशुक्ल पक्षमें एकादशी अच्छी प्रकार पूजा करके शुभ मंगल करके धूप दीप कर मंगल करे ॥ ३८ ॥ और दीर्घदंडेको ऊंचे स्थान में स्थापन करके ध्वजा लगावे, यह यत्न पूर्वक करके कालका निर्णय करे ॥ ३९ ॥ जो चार दिनतक एकही उत्तर की पवन चले तो तीन चार महीने को अवश्य वर्षे ॥ ४० ॥ और जो पहले चारदिन पश्चिम की पवन चले तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष और दुःख हो ४१ ॥ और जो चारदिन उत्तर की पवन चले तो चौमासेमें चारों महीनें में वर्षा हो ॥ ४२ ॥ और जो इससे विपरीत सब ओरकी पवन चले तो कुलक्षण जानना ॥ ४३ ॥ तब शीतकालमें वर्षा होगी और चौमासेमें खेंच होगी इससे विपरीत वर्षा अच्छी जानना ॥ ४४ ॥ वायव्य पश्चिम के कोण और नैर्ऋत्य की पवन चले तो आषाढ और श्रावण में अच्छी वर्षा हो ॥ ४५ ॥

और पूर्व ईशान्य और अग्निकोण की क्रमसे पवन चले तो भादों और क्वारके अन्तमें अच्छि वर्षा हो॥४६॥

अमावास्यांचपूर्णायांज्येष्ठमासेदिवानिशम्। मेघैराच्छादितेव्योम्निवातोवहतिवारुणः॥ ४७ ॥ अनावृष्टिस्तदादेश्याक्वचिद्वृष्टिस्तुभाग्यतः। मासोद्वौश्रावणाषाढौपूर्णभाद्रपदाश्विनौ ॥ ४८ ॥ आषाढशुक्लपंचम्यांपश्चिमोयदिमारुतः। वर्षागर्जितसंयुक्तःशक्रचापेनभूषितः ॥४९॥ तदासंगृह्यतेधान्यंकार्तिकेतन्महर्घता। लाभायजायतेनूनंनान्यथाऋषिभाषितम् ॥५०॥ आषाढशुक्लपक्षस्यद्वितीयायांनवर्षति। यदिमेघस्तदावृष्टिःश्रावणेजायतेध्रुवम् ॥ ५१ ॥ तृतीयायांपूर्ववायुःपूर्वागामीचवारिदः। घनामेघास्तदाभद्रेवर्षतिविपुलंजलम् ॥५२॥ चतुर्थ्यांदक्षिणोवायुर्मेघःपूर्वेचगच्छति॥ आश्विनेचतदामासेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम्॥ ५३ ॥ वृष्टेदिनचतुष्केऽस्मिन्वातेपूर्वोत्तरागते। अतिवृष्टिसुभिक्षंचदुर्भिक्षंचतदन्यथा ॥५४॥ सर्वरात्रंयदाभ्राणिवातोपूर्वोत्तरोयदि। तस्मिन्वर्षेकणाःपुष्टाभवंतिभुविमंगलम् ॥ ५५ ॥ यदिवान्नाभ्रलेशःस्याद्वातोपूर्वोत्तरोनहि। नवर्षतियदादेवोदुष्टकालंतदादिशेत् ॥ ५६ ॥ यत्राभ्रेस्वल्पकेजातेमध्येवातेल्पवर्षणम्। यत्रमासविभागेचनिर्मलंदृश्यतेनभः ॥५७॥ तत्रहानिश्चवृष्टेश्चविज्ञेयंगर्भपातनम्। यत्राभ्रंपंचनाडीषुवातोपूर्वोत्तरोयदि॥ ५८ ॥ तत्रमासेभवेद्वृष्टिरित्येवसर्वनिर्णयः। आषाढ्यांरात्रिकालेपिपवनःसर्वदिग्गतः॥ ५९ ॥

अर्थ—जो ज्येष्ठ महीने की अमावास्या और पूर्णमासी के दिनरात आकाश बादलोंसे आच्छादित रहें और पश्चिम की पवन चले तो॥ ४७॥ अनावृष्टि जाननी कहीं भाग्य सेही वर्षा होगी श्रावण आषाढ भादों और क्वार ऐसे ही विना वर्षे वीत जाय ॥ ४८॥ और यदि आषाढ शुक्ल पंचमी के दिन पश्चिम की पवन चले तो गर्जन शब्द सहित वर्षा हो और इन्द्रका धनुष्य उदय हो॥ ४९॥ उस समय भी धान्य संचय करना श्रेष्ठ है कारण कि कार्तिक में अकरा होने से लाभ होगा ऋषियों का भाषण अन्यथा नहीं है॥ ५०॥ जो आषाढ शुक्ल पक्षकी दोयज को न वर्षे और मेघ हो तो श्रावण में अवश्य वर्षा हो॥ ५१॥ जो तीजके दिन पूर्वकी पवन और पूर्वको मेघ जाता हो तो भादों में अधिक वर्षा हो ॥ ५२॥ और चौथके दिन दक्षिण की पवन चले पूर्व में मेघ चले तो क्वारमें अवश्य वर्षा हो॥ ५३॥ इन वर्षा के चारों दिनमें यदि पूर्व की पवन चले तो अति वृष्टि और सुभिक्ष हो अन्यथा दु-

मिश्र जानना ॥ ५४ ॥ जो इनमें सारी रात बादल रहें उत्तर और पूर्वकी पवन चले तोभी पृथ्वी में मगळ हो वर्षा तथा धान्यकी उत्पत्ति हो ॥ ५५ ॥ और जो बादलोंका लेशभी नहीं पूर्व उत्तर की पवन भी नचले वर्षा नहो तो बुरा समय जानना वर्षा नहोगी ॥ ५६ ॥ जो थोडे बादल कुछ हवा चले तो थोडी वर्षा मध्यमें जाननी और मासके विभाग (अन्त) में आकाश निर्मल हो तो ॥ ५७ ॥ वर्षा की हानि और वर्षाका गर्भपात हो और पांचो नाडी में मेघ तथा पूर्वोत्तर की पवन चले ॥ ५८ ॥ तो पौष महीनेमें अवश्य वर्षा जाननी और आषाढी पूर्णिमा को रात्रिके समय जो सब ओर की पवन चले तो ॥ ५९ ॥

अभ्रैर्वृष्टैरपिचपूर्णिमासुखदायिनी । आद्ययामेयदाभ्राणिवातौपूर्वोत्तरौयदि ॥ ६० ॥ आद्येमासेतदावृष्टिर्वांछितादधिकाक्षितौ । आषाढ्यांचविनष्टायांनूनंभवतिनिःकणम् ॥ ६१ ॥ ग्रहणवृक्षपाताद्यैर्मर्त्यंनश्यति पूर्णिमा । प्रथमाघटिकाःपंचआषाढापंचश्रावणः ॥ ६२ ॥ पंचभाद्रपदोमासस्तथापंचाश्विनःपुनः।यत्राभ्राकुलनाडीषुवातौपूर्वोत्तरौस्फुटम्॥६३॥ तत्रमासेभवेद्वृष्टिर्वातेरपिशुभैःशुभः । येषुमासेषुयेदग्धागर्भाःपौषादिसंभवा ॥ ६४ ॥ तन्मासपंचभागेषुरात्रौचंद्रोगतिनिर्मलः । पौषादिसंभवेगर्भेध्रुवमुत्पातसंवः ॥ ६५ ॥ तेनाषाढीदिवारात्रौद्रष्टव्यावृष्टिहेतवे । यद्याषाढ्यामहोरात्रमभ्रैर्वातैःशुभैर्युतम् ॥ ६६ ॥ तदागर्भाःशुभाज्ञेयाः शीतकालेपिधीमता । एकमेवदिनंप्रेक्ष्यंवर्षज्ञानायधीधनैः ॥ ६७ ॥ चेदृष्टम्यांशुभमभ्रंवातैर्वर्षंभवेच्छुभम् । आषाढयांनिर्मलश्चंद्रःपरिवेषयुतोथवा ॥ ६८ ॥ तदाजगत्समुद्धर्तुंशक्रेणापिनशक्यते । कुहूतःषोडशेचान्हिलक्षणंचिंतयेदिदम् ॥ ६९ ॥ अस्तंगच्छतितिग्मांशौतस्माद्वर्षंशुभाशुभम् । आषाढ्यांपूर्ववातेचसर्वधान्यामहीभवेत् ॥ ७० ॥ आग्नेयवातेलोकाःस्युरुद्विग्नाश्चातिरोगतः।दक्षिणेपवनेराज्ञांमहायुद्धंपरस्परम् ७१

अर्थ–अथवा पूर्णिमाके दिन बादल तथा वर्षा हो तो बहुत अच्छी है यदि प्रथम पहरमें बादल हों पूर्व उत्तरकी पवन चले ॥ ६० ॥ तो प्रथम मासमें इच्छासेभी अधिक वर्षा हो और पूर्णिमाके क्षय होनेमें वर्षा नहो ॥ ६१ ॥ ग्रहण वृक्षपातादि उत्पात पूर्णिमाके नष्ट होनेसे होते हैं पहली पांच घडीमें आषाढ ॥ ६२ ॥ श्रावण भादौं और आश्विनमें जो मेघ हो और पूर्व वा उत्तरकी पवन चले ॥ ६३ ॥ तो पौष मासमें वृष्टि हो पवनभी अच्छी चले जिन महीनोंमें जो पौषादिके उत्पन्न हुए गर्भ नष्ट हुए हैं ॥ ६४ ॥ इन महीनोंमे पांच रात्रिमें यदि चन्द्रमा निर्मल हो तो पौषादिके हुए गर्भमें निश्चय उत्पातकी प्राप्ति हो ॥ ६५ ॥ इस्सें वर्षाके निमित्त आषाढी पूर्णिमामें पूजन करना चाहिये यदि आषाढी पूर्णिमामें दिन रात शुभ पवन

चले ॥ ६६ ॥ तो शीतकालमें अच्छे गर्भ हो बुद्धिमानोंनें एकदिन वर्षाके निमित्त देखना चाहिये ॥ ६७॥ जो आषाढकी अष्टमीको अच्छे बादल हों और पवन चलकर वर्षा हो तो वर्ष अच्छा हो और जो आषाढी पूर्णिमाको चंद्रमा निर्मल और (पांसर) मंडल सहित हो॥६८ ॥ तो जगतके उद्धार करनेकी इन्द्रकोभी सामर्थ्य नहीं इसका लक्षण बुद्धिमानको विचार करना चाहिये ॥ ६९ ॥ जो सूर्यके अस्त होनेपर आषाढी पूर्णिमाके दिन पूर्वकी पवन चले तो पृथ्वी धान्ययुक्त हो ॥ ७० ॥ अग्निकोणकी चले तो रोग हो दक्षिणकी पवन चले तो राजोंमें घोर युद्ध हो ॥ ७१ ॥

नैर्ऋतेनिर्जलाभूमिर्धान्यसंग्रहकारणम् । वारुणेप्रबलावृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ॥७२॥ वायव्येमत्कुणात्पीडामशकाद्यास्तथेतयः । उत्तरापवने लोकागीतिमंगलपूरिताः ॥ ७३ ॥ धान्यंधनंतथैशानेसुखंधान्यसमर्घता । इत्याषाढीवातचक्रमाषाढेघनशेखरम् ॥ ७४ ॥ गर्जतियदिवामेघोवातिचोत्तरःपवनः । दशमेतदानींभुविमेघमहोदयंकुर्यात् ॥ ७५ ॥ अभ्रंविनाषाढपूर्णावातोपूर्वोत्तरोयदि । यत्रयामार्द्धकेतत्रमासेवृष्टिर्हिवा भवेत् ॥ ७६ ॥ भवेत्पूर्वोत्तरोवातोनचान्नंनापिवर्षणम् । आषाढ्यां तर्हिविज्ञेयंदुर्भिक्षंलोकदुःखदम् ॥ ७७ ॥ मार्गमासेसिताष्टम्यांपूर्वो वातःसुभिक्षकृत् । अन्यतःपवनःकुर्याद्दुर्भिक्षंभाविवत्सरे ॥ ७८ ॥ एकादश्यांपौषकृष्णेदक्षिणःपवनोयदा । विद्युद्वार्दलसंयुक्तस्तदादुर्भिक्षकारकः ॥ ७९ ॥ पौषस्यशुक्लपंचम्यांतुषारःपवनोयदि । तदागर्भस्यपीडास्याद्भाविवर्षेहितावहः ॥ ८० ॥

अर्थ—नैर्ऋतकी पवन चले तो पृथ्वीपै जल न वर्षे उसमें धान्य संग्रह अवश्य करना और पश्चिमकी पवन चले तो बहुत वर्षा हो धान्य उत्पन्न हों ॥ ७२ ॥ वायव्यकी पवन चले तो खटमल डांस आदि बहुत उत्पन्न हों उत्तरकी पवन संसारमें गीत और मंगलकी करने हारी है ॥ ७३ ॥ ईशानकी पवन चले तो सुख हो धान्य सस्ता हो इस प्रकार आषाढी पूर्णिमाके वातचक्रका विचार है ॥ ७४ ॥ जो आषाढी पूर्णिमाको बादल आजाय और गर्जे तथा उत्तरकी पवन चले तो शुभ हो ॥ ७५ ॥ और जो इस पूर्णिमाको बादल न हो तथा पूर्व उत्तरकी पवन चले और आधे पहर ऐसा हो तो पौष मासमें वर्षा हो ॥ ७६ ॥ और जो बादल नहो कभी पूर्व कभी उत्तरकी पवन चले तो इस पूर्णिमाके फलसे लोकमें भयदाई दुर्भिक्ष हो ॥ ७७ ॥ मार्गशीर्षकी शुक्ला अष्टमीमें पूर्वकी पवन सुभिक्ष करती है दूसरी ओरकी दुर्भिक्ष करती है ॥ ७८ ॥ पौष कृष्ण एकादशीके दिन यदि दक्षिणकी पवन हो और बिजली बादल सयुक्त हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ ७९ ॥ पौष शुक्ल पंचमीको यदि महाशीत युक्त पवन चले तो गर्भपीडा और अगला वर्ष शुभ हो ॥ ८० ॥

पंचम्यांव्योमखंडेपियदावशीतलोनिलः । विद्युन्मेघसमायुक्तस्तदागर्भोदयोध्रुवम् ॥ ८१ ॥ माघेशुक्लप्रतिपदिवायुर्वादलसंयुतः । तैलादिसर्वसुरभिमहर्घजायतेभुवि ॥ ८२ ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांवृष्टियुक्तोत्तरानिलः । अनावृष्टिर्भाद्रपदेकुर्याद्धान्यमहर्घता ॥ ८३ ॥ शुक्लेमाघस्यसप्तम्यांवारुण्यांविद्युदभ्रयुक् । ऐन्द्रोवातोथकौवेरोदिनाविंशसुभिक्षकृत ॥ ॥ ८४ ॥ माघस्यनवमीकृष्णादशम्येकादशीतथा । सवाताविद्युतायुक्ताःकथयन्तिजलंबहु ॥ ८५ ॥ अमावास्यामहोरात्रंहिमोवातस्तुवृष्टिकृत । पूर्णमास्यांभाद्रपदेकुर्यान्मेघमहोदयम् ॥ ८६ ॥ फाल्गुनेतिखरोवायुर्वातिपत्राणिपातयन् । दक्षिणोतिमृदुश्चैत्रेमेघगर्भेहितायसः ॥ ८७ ॥ हुताशन्यादीप्तिकालेऐन्द्रःस्यादतिवृष्टये । औदीच्योधान्यनिष्पत्त्यैदुर्भिक्षंदक्षिणोनिलः ॥ ८८ ॥ वारुणोमध्यमंवर्षमुच्चैर्वातोभयंकरः । चतुर्दिक्षुमहद्वातेराज्ञांयुद्धंप्रजाक्षयः ॥ ८९ ॥ चैत्रस्यशुक्लपक्षेचेचतुर्थीपंचमीदिने । वर्षणंमाक्शुभंकिंचित्क्रमादुत्तरतोनिलः ॥ ९० ॥

अर्थ—और पंचमीके दिन शीतल पवन बिजली मेघ सहित हो तो मेघके गर्भकी वृद्धि हो ॥ ८१ ॥ जो माघ शुक्ल प्रतिपदाके दिन वायु सहित बादल घिरे हों तो तेल और सब सुगन्धित वस्तु अकरी विके ॥ ८२ ॥ माघ शुक्ल पंचमीको वृष्टि युक्त पवन चले तो भादोंमें वर्षा न हो धान्य भाव तेज हो ॥ ८३ ॥ जो माघशुदि सप्तमीके दिन पश्चिममें बिजली और बादल हों तथा पूर्व और उत्तरको पवन चले तो बीस दिन महा सुभिक्ष हो ॥ ८४ ॥ माघ-कृष्ण नौमी दशमी और एकादशीको बिजली चमके तथा पवन चले तो अधिक वर्षा हो ॥ ८५ ॥ जो अमावास्याके दिन दिनरात शीतल पवन चले तो वर्षा होकर भादोंकी पूर्णिमाको महावृष्टि हो ॥ ८६ ॥ जो फाल्गुनमें तीक्ष्ण पवन चलकर वृक्षोंके पत्ते गिरावे और दक्षिणकी मृदु पवन चले तो मेघोंसे शुभ वृष्टि होती है ॥ ८७ ॥ जो होली जलानेके समय पूर्वकी पवन चले तो अच्छी वर्षा हो उत्तरकी चले तो धान्यकी वृद्धि और दक्षिणकी दुर्भिक्ष करे ॥ ८८ ॥ पश्चिमकी पवनसे वर्ष मध्यम रहे तीक्ष्ण पवनसे भय, चारोंओरकी पवन चलनेसे राजोंमें युद्ध और प्रजाक्षय होती है ॥ ८९ ॥ चैतसुदि चौथ और पंचमीके दिन कुछ वर्षा हो तो शुभ है और जो क्रमसे उत्तरादिशाकी पवन चले ॥ ९० ॥

वादलाच्छादितव्योमएतल्लक्षणदर्शने । गोधूमैःश्रावणेमासेत्रिगुणंलाभमादिशेत् ॥ ९१ ॥ इत्येवंज्ञापकोवातःसंक्षेपेणसमीरितः । ग्रंथान्तराद्विशेषोपिविज्ञेयःप्राज्ञपुंगवैः ॥ ९२ ॥

इतिश्री मेघमहोदये वर्षप्रबोधे श्रीमेघगणि विरचिते द्वितीयो वाताधिकारः २

अर्थ–तथा आकाश बादलोंसे आच्छादित हो यह लक्षण होतो गेहूंसे श्रावणमें तिगुना लाभ हो ॥ ३१ ॥ इस प्रकार वातचक्रका वर्णन संक्षेपसे किया पण्डित जन दूसरे ग्रंथोंसे विशेष जान सक्ते हैं ॥ ३२ ॥

इतिश्री मेघमहोदये वर्ष प्रबोधे देव गणि विरचिते भाषाटीकायांद्विती योधिकारः २

शकेन्द्रकालेर्कयुतेकृतेशून्यैरसैर्हृते । शेषाःसम्वत्सराज्ञेयाप्रभवाद्याबुधैः क्रमात ॥ १ ॥ सएवपंचाग्निकुमिर्युक्तःस्याद्विक्रमस्यहि । रेवायो उत्तरेतीरेसम्वन्नामेतिविश्रुतः ॥ २ ॥ संवत्कालोग्रहयुतःकृत्वाशून्य रसैर्हृताः । शेषाःसम्वत्सराज्ञेयाःप्रभवाद्याबुधैःक्रमात ॥ ३ ॥ प्रभवोवि भवःशुक्लःप्रमोदोथप्रजापतिः । आंगिराश्रीमुखोभावोयुवाधातातथैवच ॥ ४ ॥ ईश्वरोबहुधान्यश्चप्रमाथीविक्रमोवृषः । चित्रभानुसुभानुश्चतारणः पार्थिवोव्ययः ॥ ५ ॥ सर्वजितसर्वधारीचविरोधीविकृतिःखराः । नंदनो विजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखो ॥ ६ ॥ हेमलम्बीविलम्बीचविकारीशार्व रीप्लवः । शुभकृच्छोभनःक्रोधीविश्वावसुपराभवो ॥ ७ ॥

अर्थ–शालिवाहन शाकेमें जिस सम्वत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीति है कि शाकेकी संख्या लिखकर उसमें बारह मिलावे और ६०का भाग दे जो शेष बचे सोहि सम्वत्सरका नाम जाने ॥ १ ॥ जो शालिवाहन शाकेमें १३५ मिलावे तो वही विक्रमका सम्वत्सर होजाय जो रेवानदीके उत्तर तटमें माना जाता है ॥ २ ॥ सम्वत्सरके अंकमें नौ मिलाकर ६०का भाग दे जो शेष रहे सो प्रभवादि सम्वत्सर जानना ॥ ३ ॥ प्रभव विभव शुक्ल प्रमोद प्रजापति आंगिरा श्रीमुख भाव युवा धाता ॥ ४ ॥ ईश्वर बहुधान्य प्रमाथी विक्रम वृष चित्रभानु सुभानु तारण पार्थिव व्यय ॥ ५ ॥ सर्वजित सर्वधारी विरोधी विकृति खर नंदन विजय जय मन्मथ दुर्मुख ॥ ६ ॥ हेमलम्बी विलंबी विकारी शार्वरी प्लव शुभकृत शोभन क्रोधी विश्वावसु पराभव ॥ ७ ॥

प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत् । परिधावीप्रमादीचआनंदो राक्षसोनलः ॥ ८ ॥ पिंगलःकालयुक्तश्चसिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः । दुंदुभीरु धिरोद्गारीरक्ताक्षःक्रोधनःक्षयः ॥ ९ ॥ निरीतिसकलेदेशःसस्यनिष्प त्तिरुन्नतिः । स्वस्थिताभूभुजाःसर्वेप्रभवेसुखिनोजनः ॥ १० ॥ दंहनी तिपराभूपाःबहुशस्यार्घवृष्टयः । विभवाब्देखिलालोकाःसुखिनोनिर्वैरि

णः॥११॥ शुक्लाब्दे निखिलालोकाः सुखिनः स्वजनैः सह । राजानो युद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ॥१२॥ प्रमोदाब्दे प्रमोदन्ते राजानो निखिला जनाः । वीतरोगा वीतभया ईतिशत्रुविनाशकाः ॥ १३ ॥ न चलन्त्यखिला लोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन । अब्दे प्रजापते नूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥१४॥ अन्नाद्यं भुज्यते शश्वज्जनैरातिथिभिः सह । अंगिराब्दे खिला लोका भूपाश्च कलहोत्सुकाः ॥ १५ ॥

अर्थ—प्लवंग कीलक सौम्य साधारण विरोधकृत् परिधावी प्रमादी आनंद राक्षस नल ॥ ॥८॥ पिंगल कालयुक्त सिद्धार्थी रौद्र दुर्मती दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्ष क्रोधी क्षय ॥९॥ यह साठ सम्वत्सर हैं सबदेश ईति रहित खेतीकी उपज अच्छी सब राजा प्रसन्न प्राणी सुखी यह प्रभव सम्वत्सरका फल है ॥ १० ॥ राजा दंडनीतिमें तत्पर बहुत खेती और वर्षा अच्छी हो विभवसम्वतमें सब लोक सुखी और निर्वैर हों ॥ ११ ॥ शुक्ल सम्वतमें सुजनोंसहित सबलोक प्रसन्न हों राजा परस्पर जीतनेकी इच्छासे युद्ध करें ॥ १२ ॥ प्रमोद सम्वत्में सब राजा और मनुष्य प्रसन्न हों रोग और भय रहित हों ईति और शत्रुका नाश हो ॥ १३ ॥ प्रजापतिवर्षमें मनुष्य अपनी मर्यादाको रेखा मात्रभी न त्यागें खेती और वर्षा अच्छी हो ॥ ॥ १४ ॥ अंगिरावर्षमें मनुष्य निरन्तर अतिथियोंके साथ अन्नादि भोगकरें सब लोक और राजा कलहोत्सुक हों ॥ १५ ॥

श्रीमुखाब्दे खिला धात्री बहुसस्यार्घसंयुता । अध्वरे निरता विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ॥ १६ ॥ भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्या सस्यार्घवृष्टयः । राजानो युद्धनिरताः तथापि सुखिनो जनाः ॥ १७ ॥ प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजन्तवः । सर्वकामक्रियासक्ता युवाब्दे युवतीजनः ॥ १८ ॥ धातृवर्षे खिलाक्ष्मेशाः संग्रामे सक्तमानसाः । संपूर्णधरणी भाति बहुशस्यार्घवृष्टिभिः ॥ १९ ॥ ईश्वराब्दे खिलान् जन्तून् धात्री धात्रीव सर्वदा । पोषयत्यखिलान् लोकाननात्रकार्या विचारणा ॥ २० ॥ बहुविधा जायते वृष्टिर्बहुधान्यस्य वत्सरे । विविधैर्धान्यनिचयैः संपूर्णा चाखिला धरा ॥ २१ ॥ न मुंचति पयोवाहाः कुत्रचित्प्रचुरं जलं । मध्यमा वृष्टिरर्थश्च नूनमब्दे प्रमाथिनि ॥ २२ ॥ विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रान्तमूर्तयः । सर्वत्र सर्वदा मेघा मुंचन्ति प्रचुरं जलं ॥ २३ ॥ वृषभाब्दे खिलाक्ष्मेशा युद्ध्यन्ते वृषभा इव । मत्ताः प्रसक्ता विप्रेन्द्राः सततं यजतां सुरान् ॥ २४ ॥ चित्रार्घवृष्टिसस्याद्यैः विचित्रा निखिला धरा । निराकुला खिला लोकाः चित्रभानोश्च वत्सरे ॥ २५ ॥ सुभा

नुवत्सरेभूमौभूमिपानांचविग्रहः।जायतेघोररूपेणसर्वभूतभयंकरः॥२६॥ कथंचिन्निखिलालोकाःतरंतिप्रतिपत्तनं।रोगशोकसमावेगात्क्रूरेतारणकाब्दके॥२७॥पार्थिवाब्देचराजानःसुखिनःस्युर्मृशंजनाः।बहुभिःफलपुष्पाद्यैःविविधैश्चपयोधरैः॥२८॥व्ययाब्देनिखिलालोकाबहुव्ययपराभृशं। उद्विग्नाद्दुःखभारेणभूमिर्भितिश्चसर्वदा॥२९॥ सर्वजित्वत्सरेसर्वेजनाःत्रिदशसन्निभाः।राजानोविलयंयांतिवीरसंग्रामभूमिषु॥३०॥सर्वधार्यब्दकेभूपाःप्रजापालनतत्पराः। प्रशान्तवैराःसर्वत्रबहुसस्यार्धवृष्टयः॥३१

अर्थ—श्रीमुखवर्षमें पृथ्वी धन धान्यसे पूर्ण हो ब्राह्मण यज्ञकरैं रोग और वैर रहित हो॥ ॥ १६ ॥ भाव वर्षमें बहुतरोग हो वर्षा मध्यम हो राजा युद्ध करैं तथापि मनुष्य सुखी हों॥ ॥ १७ ॥ गौ बहुत दूध दे सब प्राणी प्रसन्न हो युवावत्सरमें स्त्रीजन कामक्रियामें आसक्त हो॥ १८ ॥ धाता वर्षमें सबराजा संग्राममें मन लगावें सब पृथ्वी वर्षाद्वारा धन धान्यसे पूर्ण हो १९ ॥ ईश्वर वर्षमें पृथ्वी सब प्राणियोंको माताकी समान पालन करे इसमें संदेह नहिं ॥ २० ॥ बहुधान्य वर्षमें बहुत वर्षा हो पृथ्वी अनेक प्रकारके अन्नसे पूर्ण हो ॥ २१ ॥ प्रमाथी वर्षमें कहीभी अच्छी वर्षा नहो मध्यम वर्षा हो ॥ २२ ॥ विक्रम, वृषवर्षमें राजा युद्ध करनेमें मन लगावें और वर्षा सब स्थानमें अधिक हो ॥ २३ ॥ वृषवर्षमें सब राजा मत्त वृषभकी समान युद्ध करैं और ब्राह्मण निरन्तर देवताओंका पूजन करें ॥ २४ ॥ वर्षा विचित्र हो सब पृथ्वी धनसे पूर्ण हो चित्रभानु सम्वत्सरमें सबलोक प्रसन्न हों ॥ २५ ॥ सुभानु सम्वत्सरमें राजोमें विग्रह हो जिससे सबप्राणी डरें ॥ २६ ॥ तारण संवत्सरमें प्राणी कठिनतासे रोग शोक और संकटसे पार हों ॥ २७ ॥ पार्थिव सम्वत्सरमें सब राजा प्रसन्न हो मनुष्य प्रसन्नहो पृथ्वी धनधान्यसे पूर्ण हो वर्षा हो ॥ २८ ॥ व्यय सम्वत्सरमें सब मनुष्य बहुत व्यय करें और पृथ्वीपै दुःख हो भय हो ॥ २९ ॥ सर्वजित्सम्वत्सरमें देवताओंकी समान मनुष्य हों राजा समरभूमिमें प्राण त्यागैं ॥ ३० ॥ सर्वधारीवर्षमें राजा प्रजा पालैं, सब वैर रहित हो पृथ्वीमें बहुत वर्षा हो ॥ ३१ ॥

शीतलादिविकारःस्यात्वलानांतस्कराजनाः। अल्पक्षीरास्तथागावोविरोधश्चविरोधिनि॥३२॥ मुष्णन्तितस्करालोकंविकृतिमकृतिस्तथा। विकाराअल्पवृष्टिश्चविकृतेब्देप्रजारुजः॥३३॥स्वल्पावृष्टिःस्वल्पधान्यंखण्डवृष्टिनृपक्षयः। छत्रभंगःप्रजापीडाखरेब्देखरताजने॥३४॥ सुभिक्षंसुखिनोलोकाःव्याधिशोकविवर्जिताः। नन्दनंचधनैर्धान्यैःनन्दनेवत्सरेभवेत्॥३५॥ युध्यन्तेभूभृतोन्योन्यंलोगानांचधनक्षयं। दुर्भिक्षंचकचित्स्वस्थंबहुसस्यार्धवृष्टयः॥३६॥ जयमंगलघोषाद्यैःधरणीभाति

र्वदा। जयाब्देधरणीनाथःसंग्रामेजयकांक्षिणाः ॥ ३७ ॥ मन्मथाब्दे जनाःशर्वेतस्कराअतिलोलुपः। शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा॥ ॥ ३८ ॥ दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचोराकुलाधरा। महावैरामहीनाथावी रवारणवाजिभिः ॥ ३९ ॥ हेमलम्बेत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्धवृष्टयः। मा तिभूर्भूपतिक्षोमखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥ ४० ॥ विलंबिवत्सरेभूपाः परस्प रविरोधिनः। प्रजापीडात्वनर्थत्वंतथापिसुखिभोजनाः॥ ४१ ॥ विक्रम र्थेब्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः। पूर्वसस्यफलंस्वल्पंबहुलंचापरंफ लम् ॥ ४२ ॥ शर्वरीवत्सरेपूर्णाधरासस्यार्थवृष्टिभिः। जनाश्चसुखिनःस र्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥ ४३ ॥ प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्रवर्षति भाः। रोगाकुलात्वीतिभीतिसम्पूर्णवत्सरेफलम् ॥ ४४ ॥ शुभकृत्वत्सरे पृथ्वीराजतेविविधोत्सवैः। आतंकचौराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ४५

अर्थ-विरोधि सम्वत्सरमें शीतलादिका विकार हो, तस्करोंका बल हो गायें थोडा दूध दें और मनुष्योंमें विरोध हो ॥ ३२ ॥ चोर बहुत चोरी करें पीडाहो धान्य कमती हो प्र- जाको पीडा मध्यम जलवृष्टि यह विकृत सम्वत्सरका फल है ॥ ३३ ॥ खर सम्वत्सरमें थोडी वर्षा थोडाही धान्य खण्डवृष्टि राजाका क्षय क्षत्रभग प्रजामें पीडा मनुष्योंमें क्रूरता हो॥३४॥ नन्दन वर्षमें सुभिक्ष लोकसुखी व्याधि शोकसे रहित धन धान्यकी अधिकता हो ॥ ३५ ॥ विजय सम्वत्सरमें राजा परस्पर सग्राम करें लोगोंका धनक्षय हो दुर्भिक्ष पडे कहीं स्वस्थता हो वर्षा अच्छी हो ॥ ३७ ॥ जय सम्वत्सरमें जय मगलके शब्द हों पृथ्वी प्रसन्न हो राजा सं- ग्राममें जयकी इच्छा करें ॥ ३७ ॥ मन्मथ वर्षमें चोर और दूसरे लोक महालोभी होजाय धान्य ऊख यव गोधूमसे पृथ्वी पूर्ण हो ॥ ३८ ॥ दुर्मुख वर्षमें मध्यम वर्षा हो ईति और चो- रोंकी अधिकता हो और राजा वीरगण तथा हाथी घोडोंमें विरोध हो ॥ ३९ ॥ हेमलम्ब स- म्वतमें ईति भीति हो थोडी वर्षा हो पृथ्वी शोभित और राजोंको क्षोभ हो बिजली अधिक चमके ॥ ४० ॥ विलम्बी सम्वत्सरमें राजा परस्पर विरोध करें प्रजामें रोग और अनर्थ हो प- रन्तु अन्तमें मनुष्य सुखी हों ॥ ४१ ॥ विकारी वर्षमें सबप्राणी रोग और वर्षासे पीडित हो प- हले फल थोडे और अधिक हों ॥ ४२ ॥ शार्वरी वर्षमें पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो सब मनुष्य प्र- सन्न राजा वैररहित हों ॥ ४३ ॥ प्लव वर्षमें बहुत वर्षा हो रोग अधिक और सम्पूर्ण वर्षमें ईति भीति तथा रोग रहे ॥ ४४ ॥ शुभकृत् वर्षमें पृथ्वी अनेक उत्सवोंसे पूर्ण हो चोर डरे राजा युद्धकी इच्छा करें ॥ ४५ ॥

शोभनेवत्सरेधात्रीप्रजानांरोगशोकदा। तथापिसुखिनोलोकाःबहुसस्या र्धवृष्टयः॥४६॥क्रोध्यब्देत्वखिलालोकाःक्रोधलोभपरायणः। ईतिदोषेण

सततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ४७ ॥ अब्देविश्वावसोशश्वद्घोररोगाकुलाधरा ।शस्यार्घवृष्ट्योमध्याभूपालानातिभूतयः॥४८॥पराभवाब्देराज्ञास्यात्समरःसहशत्रुभिः।आमयक्षुद्रसस्यानिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः॥४९॥प्लवंगाब्देमध्यवृष्टिरोगचौराकुलाधरा । अन्योन्यसमरेभूपाःशत्रुभिःहतभूमयः ॥५०॥कीलाब्देत्वीतिरभीतिश्चप्रजाक्षोभनृपाह्वयौ। तथापिवर्धतेलोकःसमधान्यार्घवृष्टिभिः ॥ ५१ ॥ सौम्याब्देनिखिलालोकाबहुसस्यार्घवृष्टिभिः । विवैरिणोधनाधीशाविप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ ५२ ॥ साधारणाब्देवृष्टयर्द्धमयंसाधारणंस्मृतं । विवैरिणोधराधीशाःप्रजास्युःस्वच्छचेतसः ॥५३॥विरोधकृतवत्सरेतुपरस्परविरोधिनः। सर्वेजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः॥ ५४ ॥भूपाहवोमहारोगोमध्यसस्यार्घवृष्टयः॥दुःखिनोजन्तवःसर्ववत्सरेपरिधाविनः ॥ ५६ ॥ प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ प्रजाकथंचिज्जीवन्तिसमात्सर्याःक्षितीश्वराः॥५६॥ आनन्दाब्देखिलालोकाःसर्वदानंदचेतसः । राजानःसुखिनःसर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ५७ ॥ स्वस्वकार्येरतास्सर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः । राक्षसाब्देखिलालोकाःराक्षसा इवनिष्क्रियाः ॥ ५८ ॥ नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिःप्रवराधरा । नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥ ५९ ॥ पिंगलाब्देत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः । राजानोविक्रमाक्रांताभुंजंतेशत्रुमेदिनीम् ॥ ६० ॥ वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनःसर्वजंतवः । सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः॥ ६१ ॥

अर्थ-शोभन वर्षमें पृथ्वी प्रजाको रोग शोक दे तथापि लोक सुखी रहें और अधिक वर्षा हो ॥ ४६ ॥ क्रोधी सम्वतमें सबलोक क्रोध और लोभ परायणहों इसी दोषसे थोडी वर्षा हो ॥ ४७ ॥ विश्वावसु वर्षमें पृथ्वी घोर रोगसे व्याकुल हो मध्यम वर्षा होनेसे खेती, मध्यम हो राजा नीति वर्ते ॥ ४८ ॥ पराभव वर्षमें राजोंका शत्रुओंके साथ युद्ध हो रोग थोडा भय, प्रजाको अधिक और थोडी वर्षा हो ॥ ४९ ॥ प्लवग वर्षमें थोडी वर्षा और पृथ्वी रोग तथा चोरोंसे व्याकुल हो राजा परस्पर युद्धमें प्रवृत्त हों ॥ ५० ॥ कीलक वर्षमें ईति भीति प्रजामें क्षोभ और राजोंमें संग्राम हो तिसपरभी लोकमें धान्यभाव अच्छा रहे वर्षा हो ॥ ५१ ॥ सौम्य वर्षमें सब लोक प्रसन्न वर्षा अधिक राजा वैरहीन ब्राह्मण यज्ञ करनेमें तत्पर हों ॥ ५२ ॥ साधारण वर्षमें वर्षाका कुछ भय हो राजा वैरहीन प्रजा प्रसन्नचित्त हों ॥ ५३ ॥ विरोधी सम्वत्सरमें शत्रु परस्पर वैर करें राजाओंमें क्रोध और वर्षा मध्यम हो ॥ ५४ ॥ परिधावी व-

वेमें राजोंमें युद्ध महारोग मध्यम वर्षा और सब प्राणी दुखी हों ॥ ५५ ॥ प्रमाथी वर्षमें मध्यम वर्षा प्रजापीडा और राजोंमें ईर्षा हो ॥ ५६ ॥ आनन्द वर्षमें प्रजा सदा आनन्द रहै राजाभी सुखी हों वर्षा अधिक हो ॥ ५७ ॥ सब अपने २ कार्यमें रत हों मध्यम वर्षा हो राक्षस वर्षमें सब लोग राक्षसोंकी समान क्रियारहित हो ॥ ॥ ५८ ॥ नल सम्वत्सरमें धान्यके निमित्त अच्छी वर्षा हो राजोमें क्षोभ और चोरोंका भय हो ॥ ५९ ॥ पिंगल वर्षमें ईति भीति मध्यम वर्षा हो राजा विक्रमसे पूर्ण हों शत्रु पृथ्वी भोग करें ॥ ६० ॥ काल वर्षमें सब प्राणी प्रसन्न हो खेती अच्छी हो परन्तु रोग अधिक फैले ॥ ६१ ॥

सिद्धार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः । सकलावसुधाभातिबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ ६२ ॥ रौद्राब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसमानिने । सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ६३ ॥ दुर्मत्यब्देखिलालोकाभूपाडुर्मतयस्सदा । तथापिसुखिनःसर्वेसंग्रामाःसन्तिचेदपि ॥ ६४ ॥ सर्वसस्ययुताधात्रीपालिताधरणीधरे । पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥ ॥ ६५ ॥ आहवेनिहिताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः । यथाकथंचिज्जीवन्तिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ६६ ॥ रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिवृष्टिरनुत्तमा । प्रेक्षंतेसर्वदान्योन्यंराजानोरक्तलोचनाः ॥ ६७ ॥ क्रोधाब्देमध्यवृष्टिस्यात्पूर्वदेशेचवृष्टयः।सम्पूर्णमितरत्सर्वेभूपाःक्रोधपरायणाः ॥६८॥ कार्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनं । क्षयमाणश्चापिनराजीवन्तिक्षयवत्सरे ॥६९॥

अर्थ–सिद्धार्थ वर्षमे प्रजा ज्ञान और वैराग्ययुक्त हो और धान्यकी वृद्धि और वर्षासे सब पृथ्वी शोभित हो ॥ ६२ ॥ रौद्रवत्सरमें सब राजा क्षोभ और क्लेश मानैं और सब प्राणियोंको भी क्लेश हो और थोडी वर्षा हो ॥ ६३ ॥ दुर्मति सम्वत्में सब लोक और राजा दुर्मति हों तथापि सब सुखी हों और संग्रामभी हो ॥ ६४ ॥ दुंदुभीवर्षमें पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो सब राजा भलीप्रकार पृथ्वी पालन करे और पूर्वदेशका विनाश हो ॥ ६५ ॥ रुधिरोद्गारी वर्षमें राजा युद्धमें और लोक रोगमें मरें और बडे कष्टसे प्रजा प्राणधारण करें ॥ ६६ ॥ रक्ताक्षि सम्वत्में खेतीकी वृद्धि और वर्षा अच्छी हो और राजाभी लाल नेत्र कर सदा एक दूसरेको देखें ॥ ६७ ॥ क्रोधी वर्षमे मध्यम वर्षा पूर्वदेशकी खेतीका नाश और सब राजा परस्पर क्रोध करें ॥ ६८ ॥ क्षयवर्षमे कपास, गंध, तेल, ईख, मध खेतीकी हानि हो और मनुष्यभी क्षय होकर किसी प्रकार प्राणधारण करैं ॥ ६९ ॥

इतिश्री रामविनोदे षष्टिसंम्वत्सरफलम् ।

साठ सम्वत्सरोंका फल विशेषवार्तिक ।

प्रभवनाम सम्वत्सरके स्वामी ब्रह्मा चैत्रवैशाखमें मंदा ज्येष्ठादि तीनमहीनोंमें धान्यकी

महर्घता गेहूं मूंग आदिकी महर्घता आश्विनमेभी कुछ महर्घता रोगपीडा और सब अन्य वस्तु- ओंका भाव अकरा १

विभव वर्षके विष्णुस्वामी रोगव्याप्ति तिलंग मगध चीन देशमें नाज अकरा और स्थानोंमें समान चैत्रादि तीन महीनोंमें अकरा आषाढादि तीन महीनोंमें वृष्टि आश्विनमें सब रस तेज मेघ बहुत वर्षे कार्तिकादि पांच महीनोंमें सब वस्तु तेज गेहूंका भाव समान २

शुक्कके रुद्रस्वामी छत्रभंग हो म्लेच्छदेशमें मंत्रियोंका राज्य हो चैत्रादि तीनमहीनोंमें भाव समान आषाढादि तीनमहीनोंमें महावर्षा आश्विनमें मनुष्योंको रोग अन्न और घृत समान और सब वस्तु तेज कार्तिकादि चार महीनोंमें धान्यभाव समान फाल्गुन मासमें विग्रह गा- योंमें पीडा देशमें व्याकुलता ३

प्रमोदवर्षके सूर्य स्वामी मध्यम वर्षे थोडी वर्षा म्लेच्छवर्णका क्षय छत्रभंग पर्वतमें थोडी वसती चैत्रवैशाखमें तेजी ज्येष्ठमें रोगपीडा आषाढादि तीन मासोंमें थोडी वर्षा आश्विन- मासमें कुछ वर्षा कार्तिकादि पांचमहीनोंमें तेजी वायु बहुत चले व्यापारियोंको पीड़ा हो खंडवर्षा हो ऊनी रेशमी वस्त्र अकरे विकैं कार्तिकादि पांच महीनोंमें सब रस तेज फा- ल्गुन मध्यम ४

प्रजापतिवर्षका चन्द्रमा स्वामी बारहों महीने श्रेष्ठ थोडी वर्षा आश्विनमें रोग अधिक कार्तिकादि दोमहीने मंद पौषादि तीन महीने अरिष्ट लोकपीडा ५

अंगिरावर्षका स्वामी मंगल चैत्रवैशाख मंदा ज्येष्ठमें पवनका वेग आषाढमें मेघ अधिक श्रावणादि तीन महीनेंमें रोगपीडा कार्तिकादिमासमें अन्न उत्पत्ति पौषादि तीनमहीनेंमें मेघका अभाव ६

श्रीमुखवर्षका बुध स्वामी चैत्रमें सब अन्न तेज आषाढकृष्णपक्षमें अधिक मेघ श्रावणमें गेहूं भाव तेज घृत धान्यमें दूना लाभ वणियोंको पीड़ा पश्चिममें पीडा पूर्वमें शत्रुका भय भाद्र और आश्विनमें सर्व धान्य प्राप्ति कार्तिकादि पांच मासमें सब धान्य और रसतेज ७

भाववर्षका स्वामी गुरु गाय अधिक दूध दें वर्षा अधिक हो सबवस्तु समानभाव बिकें अयोध्यामें सुख लोकपीडा घी अफीम मिरचका भाव तेज चैत्रमें समता वैशाखमें तेजी सब धान्यमें दूना लाभ आषाढ श्रावणमें कुछ वर्षा भाद्रपदमें तेजी वर्षा हो आश्विनमें अधिक रोग कार्तिक उत्तम मार्गशीर्षादि चार मासमें मंदा ८

युवावर्षका शुक्र स्वामी भूकम्प और जलका भय चैत्र वैशाखमें उत्पात ज्येष्ठमें रोग आषाढशुक्लपक्षमें महामेघ श्रावणमें पवन अन्न भाव तेज भादोंमें १४ दिन महावर्षा व्याकु- लता राजविग्रह उत्तर देशमें दुर्भिक्ष दुःख पूर्वमें निष्फल खेती दक्षिणमें वैर विरोध मार्गमें विषमता पश्चिममें लोकपीड़ा पीछे दुर्भिक्ष रसभाव समान कार्तिकादि दो मास उत्तम पौष माघ मध्यम फाल्गुनमें किंचित् क्लेश ९

धातृवर्षका स्वामी शनि चैत्र वैशाखमें धान्यभाव तेज ज्येष्ठमासमें समता आषाढमें कुछ वर्षा घी तेल मजीठ मिरच सुपारी तेज श्रावणमें सब धान्य तेज भाद्रमें पुरुषोंमें काय-

रता पश्चिममें महावर्षा सर्व धान्य सम उत्तर दक्षिणमें महामेघ लोकपीड़ा आश्विनमें रस घातु अकरे कार्तिकादि चार महीनोंमें सब देशमें अन्नभाव तेज १०

ईश्वरवर्षका स्वामी राहु उत्तरमें दुर्भिक्ष पूर्वमें सुभिक्ष पश्चिममें विरोध चैत्र वैशाखमें अन्न भाव तेज ज्येष्ठ आषाढमें कुछ वर्षा पीछे सब धान्य तेज कार्तिक रोग और दुर्भिक्ष मजीठ मिर्च लौंग इलायची सुपारी यह सब वस्तु तेज मार्गशीर्षादि चार मासमें महा दुर्भिक्ष धान्यभाव तेज पृथ्वीमें घोरयुद्ध मनुष्योंके रुंड पृथ्वीपै लोटैं ११

बहुधान्यसम्वत्का केतु स्वामी पुरुष हीनपराक्रमी पश्चिममें सुभिक्ष और देशोंमें सुख दक्षिणमें विग्रह पीछे महाभय उत्तरके मार्ग और देशोंमें पीड़ा पूर्वमें दुर्भिक्ष अन्नका संग्रह उचित है चैत्र वैशाखमें अन्नभाव कुछ तेज ज्येष्ठमें चौगुना लाभ आषाढ श्रावणमें अन्न सर्वत्र अकरा व्योपारियोंको छःगुना लाभ भाद्रपदमें अत्यन्त मेघ सर्व धान्य सम आश्विनमें मेघ कार्तिकादि चार महीनोंमें समता १२

प्रमाथीवर्षका स्वामी सूर्य आषाढ श्रावणमें थोड़ा मेघ भाद्रपदकी पंचमीमें थोड़ा मेघ चैत्रमें गेहूं भाव तेज वैशाख ज्येष्ठमें सर्वत्र धान्याभाव तेज कृष्ण सप्तमी अमावास्याको महामेघ आगे अरिष्ट अधिक कार्तिकादि पांच मासमें सर्व रस तेज मजीठ सुपारी हींग नारिकेलादि वस्तु तेज १३

विक्रमसम्वत्का स्वामी चन्द्रमा राजा प्रजाको सुख चैत्र वैशाखमें अन्नभाव तेज व्योपारियोंको दूना लाभ वैशाखमें म्लेच्छोंसे भय वैशाखमें दस दिन पवनका महावेग भूमिकंप प्रजापीड़ा ज्येष्ठमासमें दुर्भिक्ष आषाढमें महाउत्पात् श्रावण भादोंमें महामेघ प्रजामें सुख सर्व धान्यभाव सम सर्ववस्तु सम आश्विनमें रोग सब वस्तुमें समता कार्तिकादि पांचमहीनोंमें अन्नभाव सम १४

वृषभसम्वत्का स्वामी मंगल वर्षा अधिक दूसरे राजाको पीड़ा छत्रभंग ज्येष्ठ वैशाखमें अन्नभाव सम धान्यमें तिगुना लाभ आषाढमें अन्यभाव तेज श्रावण भादोंमें महामेघ आश्विनमें धान्यभाव सम कार्तिकमें कुछ अरिष्ट मार्गशीर्षमें अस्वस्थता पौषादि तीन मासोंमें अन्नभाव तेज मध्यम सम १५

चित्रभानु सम्वत्का स्वामी बुध लोक सुखी पहले थोड़ी वर्षा पीछे बहुत सब धान्य और घृत भाव समान वैशाखमें अन्नभाव सम ज्येष्ठादि तीन मासमें महामेघ सब धान्य तेज भाद्रपद आश्विनमें रोग कार्तिकमें महामारीका भय मार्गशीर्षादि दो महीनोंमें अरिष्ट माघ फाल्गुनमें प्रजापीड़ा अन्न रस भाव सम १६

सुभानुसम्वत्का स्वामी गुरु पूर्वमें दुर्भिक्ष और लोक सुखी चैत्रमें अन्न तेज वैशाख ज्येष्ठमें रोगपीड़ा आषाढमें अन्नभाव तेज श्रावणमें वर्षा अन्नभाव सम भाद्रमें महामेघ आश्विनमें रोग पीड़ा गोधूमभाव सम धातभाव तेज घृतभाव सम कार्तिकादि दोमहीनोंमें राजपीड़ा पौषादि तीन मासमें प्रजापीड़ा क्षयकारी रोग परस्पर विरोध हो १७

तारण सम्वत्का स्वामी शुक्र वायुवेग अधिक परस्पर युद्धकी अधिकता चैत्रमें रोग वै-

शाखमें सब वस्तु तेज, ज्येष्ठमें महापवन, आषाढमें थोडी वर्षा श्रावणकी सप्तमीसे और भाद्रपदकी एकादशीसे अधिक वर्षा आश्विनमें अन्नभाव तेज सब वस्तुका संग्रह करना उचितहै कार्तिकमें तेज मार्गशीर्षमें विग्रह धान्य तेज, योगिनीपुरमें महाभय राजाओंमें, विरोध म्लेच्छभय पौषमें युद्ध पश्चिममें, धान्य उत्तरपथमें, महादुर्भिक्ष फाल्गुनमास मध्यम चोरोंका भय अन्न तेज विग्रह हो राजाके विरोधसे पातक हो पूर्वदक्षिणके लोग बहुत वनवासी हों पश्चिममें महायुद्ध दूसरे देशका धान्य और वस्तु तेज ॥१८॥

पार्थिवसम्वत्का स्वामी शनि बहुत उत्पात हों अन्नसंग्रह करना उचित है चैत्र वैशाखमें तेज ज्येष्ठमें रोगपीडा अथवा राजोंमें युद्ध, आषाढमें अल्पमेघ धान्यभाव तेज वायु अधिक श्रावणमें खण्डवर्षा भादोंमें नैर्ऋत्यकी पवन अन्नभाव तेज आश्विनमें वृष्टि गेहूं मुंगादि तेज कार्तिकादि दो महीनोंमें रोगपीडा पौष माघमें तेजी फाल्गुनमें समान ॥ १९ ॥

व्यय वर्षका स्वामी राहु अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो चैत्र मध्यम वैशाख ज्येष्ठमें तेजी देशमें विग्रह आषाढमें थोडा मेघ श्रावणमें दुर्भिक्ष दक्षिणमें प्रजापीडा भादोंमें खण्डवृष्टि अन्नभाव तेज आश्विनमें रोगपीडा पूर्वमें विग्रह दक्षिणमें प्रजापीडा भादोंमें खण्डवृष्टि अन्नभाव, तेज आश्विनमें रोग पूर्वमें विग्रह गेहूं तेजहो व्योपारियोंको चौगुना लाभ सब रसभाव मध्यम कार्तिकमें रोगपीडा अथवा विग्रहकी शान्ती मार्गशीर्षमें अन्न तेज पौषमाघमें कुछ अधिक तेज फाल्गुनमें समान ॥ इति उत्तमविंशतिः ॥ २० ॥

सर्वजितके स्वामी विष्णु सर्व धान्य रस वस्तु सस्ती नवीन मुद्रा चले राजविग्रह भादोंमें पांचदिन पश्चिमसे महावर्षा हो आश्विनमें रोग धान्यभाव तेज कार्तिकमें राजा राज्य प्रजा सुखी अन्न सस्ता मार्गशीर्ष पौषमें लोकमें सुख माघमें तीन दिन वर्षे मजीठ मिर्च सोंठ पीपल तेज फाल्गुनमें सब वस्तु और रस समान उत्तम समय ॥ २१ ॥

सर्वधारी वर्षका स्वामी विष्णु राजा प्रजामें सुख अन्न सस्ता मार्गशीर्ष पौष श्रेष्ठ सब लोकमें सुख छः शास्त्रका आदर सब देशमें पूजा पाठ चैत्रमें सब धान्यभाव सम उत्तरमें दुकाल वैशाख ज्येष्ठमें अकरापन ज्येष्ठमें महाभय अरिष्ट आषाढमें मेघ श्रावणमें थोडी वर्षा भादोंमें दुर्भिक्ष आश्विनमें रोग अन्नभाव समान राजोंमें विरोध अन्न तेज ॥ २२ ॥

विरोधीवर्षके स्वामी रुद्र चैत्रादि तीन महीनेमें अन्नभाव तेज आषाढ श्रावणमें बहुत वर्षा भादोंमें खण्डवृष्टि तीन महीनेमें कुछ भय और उत्पात राजा सुखी प्रजामें प्रसन्नता कहीं राजोंमें युद्ध सर्व धान्य तेज आश्विनमें सर्व धान्य सामान्य कार्तिकमें महामारी आदि अनेक रोग मार्गशीर्षादि चार महीनोंमें गुर्जरदेशमें अन्न तेज ॥ २३ ॥

विकृतिका स्वामी सूर्य अकालमें वर्षा राजोंमें विरोध मरुदेशमें दुर्भिक्ष चैत्रादि चार महीनोंमें अन्नभाव तेज श्रावण भादोंमें वर्षाका अभाव दुर्भिक्ष आश्विनमें उत्पात भूमिकम्प कार्तिकमें छत्रभंग सोना रूपा तांबा कांसी आदि सब धातु सस्ती ॥ २४ ॥

खर वर्षका स्वामी चंद्रमा चैत्रादि पांच महीनोंमें वर्षा अधिक सुभिक्ष प्रजामें सुख गुरुजनोंका सन्मान पश्चिममें सुभिक्ष आश्विनमें अन्नभाव समान मजीठ सुपारीमें त्रिगुना लाभ चैत्रे

रसक्षय अन्तमें रोगपीडा सर्व धान्यकी उत्पत्ति प्रजामें सुख कार्तिकादि पांच महीनेमें अन्नभाव समान ॥ २५ ॥

नंदन वर्षका स्वामी मंगल प्रजामें सुख धान्यभाव सम चैत्रमासमें धूलि वर्षा वैशाखमें धान्यभाव तेज प्रचण्डवायु इसी प्रकार ज्येष्ठ आषाढमें महामेघ श्रावणमें थोडी वर्षा भादोंमें महावर्षा आश्विनमें सुभिक्ष राज्यमें स्वस्थता प्रजामें सुख कार्तिकमें सुभिक्ष अन्नभाव सम मार्गशीर्षादि चार मासमें अन्नभाव तेज मजीठ मिर्च लवंग अकरी ॥ २६ ॥

विजय वर्षका स्वामी बुध सब देशमें महापीडा राजोंमें विरोध अन्न अकरा जल थोडा ब्राह्मण गौ महिष अश्व हाथियोंको पीडा चैत्रमें खण्डवर्षा वैशाख ज्येष्ठमें अन्न तेज आषाढ श्रावणमें थोडी वर्षा भादोंमें वर्षाका अभाव आसोजमें वैश्योंको पीडा अन्नभाव तेज फाल्गुनमें समता ॥ २७ ॥

जयसम्वत्सरका स्वामी गुरु चैत्रमें तेजी वैशाख ज्येष्ठमें अन्न सस्ता आषाढमें मेघवर्षा अन्न तेज श्रावणमें २४ दिन महामेघ भादोंमें ७ दिन वर्षा आश्विनमें अन्न सस्ता सुवर्णादि धातु समता कार्तिकादि पांचों महीनेमें आम अन्नभाव सम मोती मूंगा अकरा मार्गशीर्षमें रोगपीडा व्योपारियोंको पीडा छत्रभंग लोकमें दुःख ॥ २८ ॥

मन्मथसम्वत्सरका स्वामी शुक्र राजोंमें विरोध पूर्वमें पीडा अन्तमें वर्षा रोगकी प्राप्ति धान्यसंग्रह करना उचित है चैत्रमें वर्षा भूमिकंप वैशाखमें अन्न सस्ता ज्येष्ठ आषाढमें अन्न अकरा श्रावणमें थोडी वर्षा भादोंमें १४ दिन बडी वर्षा आश्विनमें रोग पीडा अन्नभाव तेज सर्व धातु सस्ती कार्तिकमें अन्नभाव सम मार्गशीर्षादि तीन मासमें प्रजाको सुख सर्व धातु सस्ती वस्त्र सस्ता ॥ २९ ॥

दुर्मुखका स्वामी शनि सो अशुभ है थोडा मेघ लोकोंको महापीडा उत्तरमें दुकाल पश्चिममें महापीडा चैत्रादि तीनमासमें सस्ता आषाढमें थोडा मेघ श्रावणमें प्रचण्डवायु सर्व धान्य अकरे भादोंमें खण्ड वर्षा आश्विनमें रोगपीडा सर्व धातु सस्ती कार्तिकादि चारमहीनोंमें दुर्भिक्ष सो ब्राह्मणमें पीडा माता पिता स्नेहशून्य हो पुत्र विक्रय कर अन्न प्राप्तिकी इच्छा करें फाल्गुनमें रोगपीडा राजोंमें परस्पर विरोध लोकपीडा ॥ ३० ॥

हेमलम्बका स्वामी राहु महादुःख लोकोंमें रोग भूकंपादि उत्पात व्योपारियोंको पीडा चैत वैशाखमें धान्यादि भाव मंदा शत्रुका आगमन ज्येष्ठादि तीनमासमें धान्यभाव तेज चतुर्गुणा लाभ भाद्रपदमें महामेघ मजीठ मिरच लौंग आदि वस्तु तेज अन्नभाव सम कार्तिकमें छत्रभंग लोकपीडा सर्व धातु सस्ती चौपायोंमें पीडा मार्गशीर्षादि चारमहीनोंमें राजस्वस्थ लोक सुखी ॥ ३१ ॥

विलम्बीवत्सरका स्वामी रवि चैत्र वैशाखमें धान्यभाव तेज आषाढमें मेघथोडा श्रावणमें महामेघ सुभिक्ष भाद्रपदमें ग्यारहदिन वर्षा अधिक गेहूं चनेका भाव पीछे तेज होजाय पश्चिममें सुभिक्ष राज्यविग्रह सर्व देशमें अन्नकी प्राप्ति कठिणतासे हो सर्व व्यापारकी वस्तु तेज कार्तिकादि पांचमहीनोंमें अन्नप्राप्ति ॥ ३२ ॥

विकारीवर्षका स्वामी चन्द्रमा सर्व वस्तु तेज ब्राह्मणोंको सुख चैत्रादि तीन महीनोंमें धान्यभाव तेज आषाढ श्रावणमें महामेघ सुभिक्ष भाद्रपदमासमें वर्षा थोडी आश्विनमें सर्व भय केतुका उदय. पीछे सर्व वस्तु सस्ती कार्तिकादि दो महीनोंमें धान्यभाव सम पौषमें रोगपीडा लोक सुखी फाल्गुनमें धान्यभाव तेज ॥ ३३ ॥

शर्वरी वर्षका स्वामी मंगल थोडी वर्षा प्रजामें संकट राजविरोध चैत्रादि तीन महीनेमें अन्नभाव सम आषाढ श्रावणमें अधिक मेघ खण्डवृष्टि अन्नतेज भाद्रपदमें वर्षाका अभाव राजा प्रजामें पीडा आश्विनमें रोगपीडा पश्चिममें दुर्भिक्ष पूर्वमें सुभिक्ष कार्तिकादि दो महीनेमें अन्नतेज पौषादि तीन मासमें अन्नभाव कुछ तेज ॥ ३४ ॥

प्लवसम्वतका स्वामी बुध वर्षा अधिक समय उत्तम चैत्रमें धान्यभाव मंदा वैशाखमें भय ज्येष्ठमें अन्नभाव सम तिलंगमें और पूर्वदेशमें पीडा आषाढमें महावायु उत्पात लोकोंमें पीडा श्रावणमें महामेघ १७ दिन वर्षा भाद्रपदमें वर्षा श्रेष्ठ अन्न सस्ता आश्विनमें सर्व वस्तु सस्ती गेहूं कुछ तेज कार्तिकमें अन्न सस्ता लोक सुखी पौषादि तीन मासमें सुभिक्ष राजा राजप्रजा सुखी ॥ ३५ ॥

शुभकृत्वर्षका स्वामी गुरु वर्षा अच्छी राजा प्रजाको सुख उत्तरमार्गमें अग्नि भय चैत्र वैशाखमें अन्नसस्ता धातुभाव सस्ता श्रावणमें नवमीसे वर्षा अन्न सस्ता भाद्रपदमें महामेघ घृत तेल सस्ते राजोंमें विरोध ज्येष्ठादि तीन मासमें सर्व वस्तु सस्ती फाल्गुनमें कुछ उत्पात मरुदेशमें रोग पीछे सुभिक्ष ॥ ३६ ॥

शोभनका स्वामी शुक्र राजा प्रजामें सुख अतिवर्षा चैत्रादि तीन मासमें अन्न सस्ता राजविग्रह किंचित् उत्पात आषाढमें मेघन्यून श्रावणमें अतिवर्षा लोकपीडा भाद्रपदमें महामेघ आश्विनमें सुभिक्ष पीछे किंचित् विग्रह ॥ ३७ ॥

क्रोधीवर्षका स्वामी शनि बारहों महीनेमें अन्नभाव तेज मध्यम समय राजोंमें परस्पर विरोध लोक निर्धन व्यापारहीन चैत्र वैशाखमें धूलिवर्षा महामारीभय ज्येष्ठमें धान्य अकरा आषाढमें सम अल्पमेघ श्रावणमें दुःख भादोंमें खण्डवर्षा अन्नतेज आश्विनमें वर्षा सर्व रसभाव सम अन्नवस्तुभाव सम कार्तिकमें सम ॥ ३८ ॥

विश्वावसुका स्वामी राहु वर्षा सम पीछेकों अन्न तेज चैत्रमें राजोंमें विरोध धान्य तेज वैशाखमें विग्रह मरुदेशमें दुर्भिक्ष पश्चिममें अन्नसस्ता ज्येष्ठमें विग्रह आषाढमें अल्पमेघ श्रावणभादोंमें दुर्भिक्ष दूसरे देशमें सुभिक्ष आश्विनमें लोकपीडा रोगअधिक गौ भैंस घोडे बकरी सुवर्णादि धातु तेज कार्तिकादि तीन मासमें अन्नभाव सस्ता ॥ ३९ ॥

पराभवसम्वतका स्वामी केतु बारहों महीनेमें मध्यम वर्षा चैत्र वैशाखमें अन्न तेज मेघकी गर्जना अधिक बिजली कडके वायु चले ज्येष्ठमें धान्यसंग्रह करना आषाढमें मेघ थोडा अन्नमें दूना लाभ श्रावणमें वर्षा अधिक अन्नभाव सम भाद्रपदमें खण्डवृष्टि आश्विनमें कुछ सुख धातुभाव सस्ता कार्तिकादि पांच मासमें धान्यभाव सम पश्चिममें अन्नभाव सम सिंधुदेशमें अन्नका आगमन ॥ इति मध्यम विंशतिः ॥ ४० ॥

प्लवगवर्षके स्वामी ब्रह्मा चैत्र वैशाखमें अन्न तेज ज्येष्ठमें राजपीडा आषाढमें अल्पमेघ भूमिकम्प हस्तिपीडा घोडे तेज श्रावणमें महामेघ भाद्रपदमें अष्टमीको महामेघ आश्विनमें रोग रस अकरे अश्व महिषीपीडा लोक पीडा ॥ ४१ ॥

कीलकवर्षके स्वामी विष्णु वर्षा मध्यम चैत्रमें धान्यभाव अकरा वैशाखमें रोग मरुदेशमें दुर्भिक्ष पश्चिममें सस्ता ज्येष्ठमें धान्यसंग्रह उचित आषाढ श्रावणमें अल्पमेघ अन्न अकरा अष्टमीतिथिसे मेघ आश्विनमें वर्षा अन्नभाव सस्ता रसभाव सस्ता कार्तिकादि तीन मासमें सस्ता माघमें अन्नभाव तेज रोगपीडा अधिक फाल्गुनमें राजा प्रजा सुखी अन्नभाव सम ४२॥

सौम्यवर्षके स्वामी रुद्र अल्पमेघ गायोंसे थोडा दूध प्राप्त हो वृक्षोंमें फल थोडे चैत्रमें अन्नभाव तेज वैशाखमें तीव्र पवन ज्येष्ठमें विग्रह प्रजापीडा आषाढमें अल्पमेघ अन्न अकरा श्रावणमें महामेघ धान्यमें दुगुणा लाभ सर्व धान्यभाव सम रस तेज भाद्रपदमें खण्डवृष्टि अन्नमें दुर्भिक्ष आश्विनमें राजविरोध लोकपीडा मार्गकी विषमता अन्नसंग्रह उचित धान्यमें दुगुणा लाभ सर्व रस और धातु सस्ते कार्तिकादि चार मासमें समता पीछे विरोध और रोग देशान्तरीय पुरुषोंको पीडा फाल्गुनमें तीक्ष्ण पवन पश्चिममें सुभिक्ष सिंधुदेशमें राजविरोध अन्नमें समता ॥ ४३ ॥

साधारणसम्वतका स्वामी सूर्य चैत्रमें धान्यकी मंदता वैशाख ज्येष्ठमें उत्पात भूमिकंप रोगवृद्धि राज्यविरोध धान्यभाव तेज आषाढमें वायु तीक्ष्ण कभी थोडा मेघ श्रावणमें बहुत वर्षा अन्नभाव सम भाद्रपदमें अल्पमेघ भाद्रपदमें थोडे धान्यकी प्राप्ति कार्तिकादि दो महीने मध्यम भूमिकम्प अकस्मात् राज्यविग्रह अन्नभाव तेज फाल्गुनमें चौपायोंमें रोग वृक्षोंमें अल्पफल धान्यसंग्रहमें तिगुना लाभ सर्व धातु अकरी सवरसका संग्रह उचितहै राजा सुखी ४४॥

विरोधकृत् वर्षका स्वामी चन्द्रमा मध्यदेशमें महादुःख परस्पर राजविरोध चैत्रादि तीन मासमें अन्नभाव सम आषाढमें अल्पमेघ श्रावणमें महावर्षा अन्नभाव तेज भाद्रपदमें मेघ अन्नभाव सम फाल्गुनमें देशविरोध मार्ग विषम मजीठ सुपारी आदि वस्तु तेज ॥ ४५ ॥

परिधाविनिवर्षका स्वामी मंगल दुर्भिक्ष नागपुर मेदपाठ जालंधरदेशके राजाओंमें विरोध चैत्रादि चार मासमें अन्नभाव सम अन्नका संग्रह करना उचित है लोकमें रोग और पीडा मरुदेशमें महामारीका डर चतुष्पद महिषी तुरग हाथियोंको पीडा श्रावण भाद्रपदमें अल्प मेघ खण्डवृष्टि अन्नभाव सम सब रस सस्ते सर्व धातु सस्ती कार्तिकादि पांच महीनोंमें धान्यभाव सम राजोंमें विरोध सिन्धुदेशमेंसे धान्यकी प्राप्ति ॥ ४६ ॥

प्रमाथी सम्वत्का स्वामी बुध चैत्रमें धान्य मंदा वैशाख ज्येष्ठमें धान्यसंग्रह आषाढमें नवीन मुद्रा अल्पमेघ श्रावणके आधेमें वर्षा धान्यमें तिगुना लाभ भाद्रपदमें महामेघ अन्नभाव सस्ता आश्विनादि मासमें सुभिक्ष लोक सुखी गुरुओंकी पूजा और महिमाकी वृद्धि ॥४७॥

आनन्दवर्षका स्वामी गुरु वर्षा अधिक सुभिक्ष चैत्र वैशाखमें अन्नभाव तेज ज्येष्ठ आषाढमें महावृष्टि श्रावणमें महामेघ भाद्रपदमें खण्डवर्षा गेहूं तेज आश्विनमें सस्ता रस अन्न वस्त्र सम धातु अकरी कार्तिकमें अकस्मात् भय लोकपीडा मार्गशीर्षमें लोकोंका दक्षिण दिशामें गमन पौष माघमें मेघवर्षा अन्नसस्ता फाल्गुनमें धान्य अकरे ॥ ४८ ॥

राक्षसंसम्वतके स्वामी शुक्र धान्यसग्रह उचित चैत्रमें धूलिवर्षा वैशाख ज्येष्ठमें तेल अकरी ज्येष्ठ आषाढमें खारी खाड आदि वस्तु अकरी श्रावणमें थोडा मेघ अन्न अकरा भाद्रपदमें महामेघ अन्नभाव सम आश्विनमें समता कार्तिकमे रोगसे व्याकुलता मार्गशीर्षादि चार मासमें धान्यभाव सम राजा सुखी प्रजा राजाका सन्मान करे फाल्गुनमे अन्न सस्ता वृक्षों में लये पत्ते मार्ग सुखदायी सुभिक्ष ॥ ४९ ॥

नलसम्वत्सरका स्वामी शनि अल्पमेघ पीछे अन्न सस्ता चैत्रमे रोगपीडा पवनका वेग बहुत वैशाखमें अरिष्ट अन्नसग्रह उचित है ज्येष्ठमे राजोंका परस्पर विग्रह लोक सुखी मार्ग विषम आषाढ श्रावणमें थोडा मेघ धान्यमें छःगुना लाभ भाद्रपदमे खण्डवर्षा दुर्भिक्ष धान्यका सग्रह करना आषाढमें उचित है कार्तिकमें बेचना मार्गशीर्षादि तीन मासमें अन्नभाव सम फाल्गुनमें रोग चौरभय उत्तरदेशमें दुकाल पूर्वमे सुभिक्ष ॥ ५० ॥

पिंगलवर्षका स्वामी राहु नागपुर मरुदेश दिल्लीमडल मथुरामे पूर्व देशमें दुर्भिक्ष अन्न धान सस्ते सर्व स्थानमें विग्रह रोगपीडा राजा सुखी प्रजा सुखी अन्न सम गुर्जरदेशमे अन्न सस्ता सिंधुदेशसे धान्यकी प्राप्ति चैत्रमे धान्य अकरे प्रजापीडा वैशाखादि तीन महीनेमें अन्न अकरा प्रजाका क्षय घोडोंको पीडा आषाढ श्रावणमें थोडा मेघ धान्यमे चौगुना लाभ भादोंमें खण्डवर्षा आश्विनमे समता कार्तिकादि पाच मासमे विग्रह पीडा अन्नआदि अकरे चौपायोंमें रोग ॥ ५१ ॥

कालवर्षका स्वामी केतु थोडी वर्षा थोडा व्यापार राजोंमें विग्रह चैत्र-वैशाखमें अरिष्ट उत्तर देशभग धान्यका सग्रह ज्येष्ठमे करना उचित है धान्यमें छःगुणा लाभ आषाढमें थोडा मेघ लोकमे दुःख मार्ग विषम श्रावणमें महामेघ अन्नभाव सम भाद्रपदमें खण्डवर्षा धान्यका दुर्भिक्ष उत्पात आश्विनमें रोग शीतलादि विकार नवें रस सस्ते सर्व धातु सस्ती कार्तिकादि पाचमहीनेतक राजविद्रोह चौपायोंमें पीडा वृक्षोमें फल ॥ ५२ ॥

सिद्धार्थका स्वामी सूर्य सुभिक्ष सबदेशोंमें आबादी अन्नकी बिक्री अधिक चैत्र वैशाखमें लोक पीडा ज्येष्ठ आषाढमें तीक्ष्णवायु श्रावणमें तीनदिन महावर्षा सब अन्न अकरे भादोंमें खण्डवृष्टि आश्विनमें अन्नभाव सम कार्तिकमें धान्यप्राप्ति अन्न सस्ता धातु सस्ती मार्गशीर्षादि चारमासमें सब स्थानमें अन्नकी प्राप्ति कहीं राजविरोध लोकमें नसे ॥ ५३ ॥

रौद्रिसम्वत्का स्वामी चन्द्रमा पृथ्वीमें रोग अधिक चौपायों में मरी फैले छत्रभंग अल्प मेघ चैत्रादि तीन मासमे अन्नभाव तेज आषाढ श्रावणमें अल्प मेघ खण्डवृष्टि भाद्रपदमें महामेघ अन्नसस्ता मजीठ सुपारीआदि सस्ते लोक सुखी चौपाये सस्ते हाथियों को पीडा ॥ ५४ ॥

दुर्मतिवर्षका स्वामी मगल चैत्र वैशाखमें धान्य सस्ता ज्येष्ठमे अन्नभाव सम आषाढमें तीव्रपवन श्रावणमें अल्प मेघ अन्न सस्ता भादोंमे महामेघ गेहूं सस्ते सबधातु सस्ती आश्विनमें सब रस और अन्न सस्ता कार्तिकादि दोमासमें अन्न सस्ता राजा स्वस्थहो नये ग्राम बसें सब लोक सुखी घोडे अकरे चौपाये अकरे पौषादि तीन मास समान पीछे धातु तेज ॥ ५५ ॥

दुंदुभीवर्षका स्वामी बुध वर्षा अधिक अन्न सस्ता चैत्रादि तीन मासमें अन्न सस्ता आ-

पाढमें व्योपारियोंको दूना लाभ थोडा मेघ श्रावणमें ११ ग्यारह दिन महावर्षा भाद्रपदमें नौ दिन वर्षा अन्नसस्ता नवीन गांव वसे आश्विनमें रोग अधिक अन्न सस्ता मजीठ मिर्च सब रस धातु सस्ती कार्तिकमें धान्य सस्ता मेदपाटदेशवासियोंको पीडा अन्तमें दुर्भिक्ष पश्चिममें शुभ मार्गशीर्ष सस्ता राजोंमें विरोध पौषादि तीन मास सम घोडे अकरे मजीठ तेज॥ ५६॥

रुधिरोद्गारिवर्षका स्वामी गुरु राजोंमें परस्पर विरोध प्राणी देशान्तरमें जांय दुर्भिक्ष ब्राह्मणोंको पीडा म्लेच्छोंके राज्यकी प्रवृत्ति परदेशसे धान्यागमन आषाढशुक्लपक्षमें महामेघ श्रावणमें पन्द्रहदिन महावर्षा चैत्रादि तीन मासमें सस्ता धातु सस्ता तिलंग गौड मोटरादि देशोंमें दुर्भिक्ष पश्चिममें दुर्भिक्ष सिंधुदेशसे धान्यनिष्पत्ति भाद्रपदमें खण्डवृष्टि धान्यमें तिगुना लाभ आश्विनमें समता रोगप्राप्ति कार्तिकादि पांच मासमें अन्न सस्ता मेदपाटदेशमें पीडा ॥ ५७ ॥

रक्ताक्षि सम्वतका स्वामी शुक्र अन्न सस्ता मेदपाटदेशमें पर्वतपर वसती चैत्रादि तीन मासमें तेजी अन्न धातु सस्ती फाल्गुनमें अन्न संग्रह उचित है ज्येष्ठमें अन्न तेज शुक्लपक्षमें महामेघ आषाढमें जलवर्षा अधिक श्रावणमें वर्षा थोडी कुछ विग्रह भाद्रपदमें अल्पवर्षा रोग पीडा आश्विनमें अन्न सस्ता रस वस्तुसस्ती कार्तिकादि पांच मासमें धान्यभाव तेज विवाहोंका अभाव अश्वपीडा पश्चिममें सुभिक्ष ॥ ५८ ॥

क्रोधीवर्षका स्वामी शनि रोग अधिक मंदवर्षा प्रजापीडा उत्तरमें दुर्भिक्ष लोक निर्धन चैत्र वैशाखमें थोडा मेघ अन्नभाव सम आषाढ श्रावणमें अल्प वर्षा धान्यमें दूना लाभ भादोंमें मेघ अन्न सस्ता आश्विनमें रोगपीडा कार्तिकमें विग्रह धान्य तेज मार्गशीर्षमें धान्यभाव सम (अकस्मात् उत्पात) पौषमें तेजी व्योपारियोंको पीडा धान्यमें दुगुण लाभ अन्नवस्तु सस्ती॥५९॥

क्षयसम्वत्सरका स्वामी राहु चैत्रमें धूलिवर्षा वैशाखमें उत्पात भूमिकम्प ज्येष्ठ आषाढमें रोग नवीन शिक्षा चले अल्प मेघ अन्न सस्ता भाद्रपदमें खण्डवृष्टि चौपायोंकी हानि आश्विनमें रोगपीडा पीछे अन्नभाव सम सर्व धातु सम मध्यम समय राजविरोध पश्चिममें सुभिक्ष अन्न सस्ता सिंधुदेश वा स्थलदेशसे अन्नका आगमन अन्नभाव सम ॥ इति अधमा विंशतिः॥

यह साठ सम्वत्सरका फल पूर्ण हुआ ॥

इन सम्वत्सरोंका फल ग्रहोंका बलाबल चलाचल देखकर कहना ऐसा करनेसे कभी फल व्यर्थ नहीं होता ।

इति श्रीमेघमहोदये श्रीमेघगणिविजयविरचिते सम्वत्सरफलकथनो नाम तृतीयोधिकारः ॥

अथ गुरुविचार ॥

स्यात् पीडा कार्तिकेवर्षे वन्हिगावोपजीविनाम् । शस्त्राग्निश्च भयं वृद्धिः पुष्पकौसुभजीविनाम् ॥ १ ॥ सौम्यवर्षे त्वल्पवृष्टिः सस्यहानिरनेकधा ।

राजानो युद्धनिरताः अन्योन्यवधकांक्षिणः ॥ २ ॥ पौषेऽब्दे सुखिनः सर्वे गुरुपूजारताजनाः । क्षेत्रं सुभिक्षमारोग्यं वृष्टिः कृषकसम्मता ॥ ३ ॥ माघेसम्वत्करोऽब्दस्यात् सर्वभूतहितोदयः । सम्यक् वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं च प्रजायते ॥ ४ ॥ फाल्गुनाऽब्दे चौरभीतिः स्त्रीणां दुर्भगतां भृशम् । कचिद्वृष्टिः कचित्सस्यं कचिद्वीरीतयः कचित् ॥ ५ ॥ चैत्राब्दे भूभुजाः स्वच्छाः स्त्री चाल्पप्रजा भवेत् । अल्पवृष्टिः सस्यसंपत् प्रजानां व्याधितो भयम् ॥ ६ ॥ वैशाखेऽब्दे तु राजानो धर्ममार्गरताः क्षितौ । क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं द्विजाश्चाध्वरतत्पराः ॥ ७ ॥ ज्येष्ठाब्दे धर्ममार्गस्थां पीडयन्ते सत्क्रियापराः । न च वर्षति वै देवो भवेत्सस्य विनाशनम् ॥ ८ ॥ आषाढाब्दे तु राजानः सर्वदा कलहोत्सुकाः। कचिदीतिः कचिद्भीतिः कचिद्वृद्धिर्जलं कचित् ॥ ९ ॥ श्रावणाब्दे धरा भाति त्रिदशस्पर्द्धिमानवैः । धरा पुष्पफलैर्युक्ता परिपूर्णाध्वरादिभिः ॥ १० ॥ अब्दे भाद्रपदे वृष्टिः क्षेमारोग्यं कचित् कचित् । सर्वसस्यसमृद्धिस्यात् नाशमेत्यपरं फलम् ॥ ११ ॥ अब्दे त्वाश्वयुजेत्यर्थं सुखिनः सर्वजंतवः। मध्यमं पूर्वसस्यं स्यात् परिपूर्णा विपच्यते ॥ १२ ॥

अर्थः—यदि बृहस्पति कार्तिकमें बदले तो पीडा हो गौसेवकवर्गोको शस्त्र और अग्निकाभय हो कुम्भके और फूलोंके उपजीवियोंकी वृद्धिहो ॥ १ ॥ अगहनमें बदले तो थोडी वर्षा अनेकप्रकारसे खेतीकी हानि राजा एकदूसरेके मारनेकी इच्छासे युद्ध करे. ॥ २ ॥ पौषवर्षमें सर्व सुखी मनुष्य गुरुओंकी पूजा करें क्षेम सुभिक्ष और आरोग्यताहो किसानोंके उपयुक्त वर्षा हो ॥ ३ ॥ माघमें बृहस्पति बदले तो सर्व प्राणियोंको सुख हो वर्षा अच्छी हो सुभिक्ष रहे ॥ ४ ॥ फाल्गुनमें बदले तो चोरोंका भय स्त्रियोंमें दुर्भाग्यता कहीं वर्षा कहीं खेती कहीं ईति भीति हो ॥ ५ ॥ चैत्रमें बदले तो राजा स्वच्छ, स्त्री थोडी सन्तानवाली हों अर्थात् सन्तान थोडी उत्पन्नहो थोडी खेती प्रजाओंको व्याधिसे भय हो ॥ ६ ॥ वैशाखमें बदले तो राजा पृथ्वीपै धर्मराज्य करें क्षेम सुभिक्ष आरोग्य और ब्राह्मण यज्ञ करनेमें तत्पर हों ॥ ७ ॥ ज्येष्ठमासमें बदले तो धर्ममार्ग और सत्क्रिया करनेवाले पीडितहों वर्षा न होनेसे सस्यकी हानि हो ॥ ८ ॥ आषाढमें बदले तो राजा क्लेशकरें कहीं ईति भीति कहीं वृद्धि कहीं जलहो ॥ ९ ॥ श्रावणमें बदले तो पृथ्वी ऐसी शोभित हो कि देवताभी इस भूमिकी इच्छाकरें पृथ्वी फूल फल और यज्ञसे पूर्ण हो ॥ १० ॥ भाद्रपदमें बदले तो वर्षा हो कहीं क्षेम और आरोग्यहो सर्व धान्यकी वृद्धि और कुछ फलोंकी

हानि हो ॥ ११ ॥ आश्विनमें बद्दले तो सर्व प्राणी सुखी हों पूर्वकी खेती मध्यमहो और सर्व स्थानमें पूर्णहो ॥ १२ ॥

मेषराशौ यदा जीवः चैत्रसम्वत्सरस्तदा । प्रवृद्धोनामजलदः वर्षा च सर्वतोसुखी ॥ १ ॥ सुभिक्षं विग्रहोराज्ञां समर्घं वस्त्रकर्पटम् । हेमरूप्यं तथा ताम्रं कार्पासं च प्रवालकम् ॥ २ ॥ अश्वपीडा महारोगो द्विजानां कष्टसंभवः । मासत्रये फलमिदं पश्चाद्भाद्रपदे पुनः ॥ ३ ॥ गोधूम शालि माषानां आज्यस्याग्रे समर्घता । दक्षिणस्यामुत्तरस्यां खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥ ४ ॥ दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभंगोपि कुत्रचित् । दुर्भिक्षमपि पण्मासा आश्विने फाल्गुने तथा ॥ ५ ॥ पश्चात् सुभिक्षं द्वौमासौ मेघावै स्युर्जलप्रदाः । कार्तिके मार्गशीर्षे च कार्पासान्नमहर्घता ॥ ६ ॥ भेदपाटे राज्यपीडा देशभंगो भवेद्ध्रुवम् । लोकाः सरोगा दुर्भिक्षं पौषे रससमर्घता ॥ ७ ॥ वाणिज्ये संशयोलाभेवैशाखे गुर्जरे रणः । छत्रभंगस्तथाषाढे श्रावणे चामयं पथि ॥ ८ ॥ अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्राशीत्रयं स्पृशेत् । तदा सुभटकोटीभिःप्रेतपूर्णा वसुंधरा ॥ ९ ॥ वृषराशौ यदा जीवो वैशाखो वत्सरस्तदा । नंदशालो भवेन्मेघः सर्वधान्य समर्घता ॥ १० ॥ वैशाखे आश्विने मासे स्त्रीणां रोगाश्च दन्तिनाम् । अश्वानां च महापीडा गृहवैरं परस्परम् ॥ ११ ॥ गोधूमशालिचणकाः मुद्गा माषास्तथा तिलाः । महर्घः श्रावणे ज्येष्ठे मेघानां न महाजलम् ॥१२॥ शृंगालके मालवे च उत्पातो राजविग्रहः । देशभंगोद्भयं शून्यं घृतधान्यमहर्घता ॥ १३ ॥ आषाढे श्रावणे वर्षा न वर्षा भाद्रपादके । अश्वरोगश्चतुष्पादनाशः पीडागमः क्वचित् ॥ १४ ॥

अर्थ–मेषराशीमें बृहस्पति होनेसे चैत्रसम्वत्सर कहताहै उसमें प्रवृद्धनामभेघ वर्षताहै सर्व ओरसे वर्षा होतीहै ॥ १ ॥ सुभिक्ष राजोंमें विरोध वस्त्र कर्पट गुड़ सस्ते सुवर्ण ताम्बा कपास मूंगे सस्ते हों ॥ २ ॥ घोड़ोंमें पीड़ा महारोग ब्राह्मणोंको कष्ट हो यह तीनमहीनै फल हो पीछे भादोंमासमें ॥ ३ ॥ गेहूं चावल उर्द घी सस्तेहों दक्षिण उत्तरमें खण्डवृष्टिहो ॥ ४ ॥ दक्षिण उत्तरके देशोंमें छत्रभंगभी कहींहो आश्विनसे फाल्गुनतक दुर्भिक्ष रहै ॥ ५ ॥ पीछे दोमहिनै सुभिक्ष हो अच्छी वर्षा हो कार्तिक मार्गशीर्षमें कपास और अन्न अकराहो ॥ ६ ॥ भेदपाटदेशमें राज्यपीडा छत्रभंग हो लोकोंमें रोग दुर्भिक्ष पौषमें रस सस्ता ॥ ७ ॥ व्योपारियोंको लाभमें सन्देह वैशाखमें गुर्जरदेशमें युद्ध आषाढमें छत्रभंग श्रावणमें

मार्गमें भय ॥ ८ ॥ एकवर्षमें, यदि बृहस्पति तीनराशियोंको स्पर्शकरे तो पृथ्वी रुंडमुण्डसे पूर्णहो ॥ ९ ॥ वृषराशीमें बृहस्पति होनेसे वैशाखसे वर्ष कहाताहै इसमें नन्दशालनामक मेघ वर्षे, और सब रस सस्ते हों ॥ १० ॥ वैशाख और आश्विनमें स्त्री और हाथियोंको पीड़ा परस्पर घरोंमें लड़ाई हो ॥ ११ ॥ गेहूं धान चने मूंग उरद तिल यह श्रावण ज्येष्ठमें अकरे हों मेघोंसे बहुत जल प्राप्त न हो ॥ १२ ॥ गुगाल माल्वा इनमें उत्पात और राजोंमें विग्रह हो देशभग भय थोडा घृत धान्य अकरे विकें ॥ १३ ॥ आषाढ श्रावणमें वर्षा हो भादोंमें न हो घोडे और चौपायोंमें रोग हो चौपाये मरें पीडा फैले ॥ १४ ॥

मिथुने संगते जीवे ज्येष्ठाख्यो वत्सरो भवेत् । बालानां दोषमश्वानां ख एडवृष्टिस्तदा वदेत् ॥ १५ ॥ कर्कोटकस्तथा मेघो वर्षते नात्र संशयः । तस्करैः पीड्यते लोकः पापोपहतमानसैः ॥ १६ ॥ पश्चिमायां सिंधुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि । चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगापीडोत्तरापथे ॥ १७ ॥ श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कर्पूरं चन्दनादिकम् । मंजिष्ठं नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च रूप्यकम् ॥ १८ ॥ मासा वै पंचकं यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् । पश्चान्महर्घं पूर्वोक्तधान्यानां च समर्घता ॥ १९ ॥ श्रावणे तु महत्कष्टं महिषीनां च हस्तिनाम् । पूर्वाग्नियाम्यनैर्ऋत्यामीशाने च सुभिक्षता ॥ २० ॥ राजा स्वस्थः प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं मंगलं भुवि । समर्घं तैलखण्डादि शर्करा धातवोपि च ॥ २१ ॥ शुंठीमरीचपिप्पल्यो मंजिष्ठो जातिकोशकः । महर्घमेतद्वस्तु स्यात् फाल्गुने धान्यसंग्रहः ॥ ॥ २२ ॥ कर्के गुरुस्तदाऽऽषाढे वासरस्तत्र जायते । पूर्वदक्षिणयोर्मेघः मध्यमः कंबलाभिधः ॥ २३ ॥ महर्घं सर्वधान्यानां कार्तिके फाल्गुने तथा । पश्चिमायां सिंधुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ॥ २४ ॥ क्षयश्चतुष्पदानां स्यात् दुर्भिक्षं मृगसैन्यकम् । हेमरूप्यं तथा ताम्रं पट्टसूत्रं प्रवालकम् ॥ २५ ॥ मौक्तिकं द्रव्यमन्नादि लोकोक्त्या लोकविक्रयः । मंजिष्ठा श्वेतवस्त्राणां समर्घं स्यान्नसंशयः ॥ २६ ॥ गोधूमशालिनैलाज्यं लवणं शर्करा पुनः । माषा महर्घा जायन्ते पापकर्मरतो जनः ॥ २७ ॥ पट्टसूत्रं च वस्त्राणि जातीफललवंगकम् । मरिचं शीतकालेथ संग्राह्या वै वणिग्जनैः ॥ २८ ॥ वैशाखज्येष्ठयोर्लाभो द्विगुणं तस्य विक्रयात् । वर्षाकाले महावर्षा सर्वधान्यसमर्घता ॥ २९ ॥

अर्थ–मिथुनराशीपर बृहस्पतिके आनेसे ज्येष्ठानामक वर्ष होताहै इसमें बालकोंको और घोडोंको रोग और खण्डवर्षा हो ॥ १५ ॥ निसन्देह कर्कोटकमेव वर्ष पापी चोरोंसे लोक पीडित हों ॥ १६ ॥ पश्चिम सिंधुदेश वायव्य उत्तरदेशमें अनेकप्रकारके चित्रविचित्र रोग हों ॥ १७॥ श्वेतवस्त्र कांसी कपूर चन्दन मजीठ नरियल सुपारी सोना चांदी ॥ १८ ॥ चैत्रसे पांचमहीनेतक सस्ते विकें पीछे यह सब अकरी हों धान्य सस्ते रहैं ॥ १९ ॥ श्रावणमें भैंस हाथियोंको महाकष्ट हो पूर्व आग्नेय दक्षिण नैऋत्य दिशामें सुभिक्ष हो ॥ २० ॥ राजा स्वस्थ प्रजामें वृद्धि सुभिक्ष पृथ्वीमें मंगल तेल खांड सस्ते शक्कर धातुमी सस्ते ॥ ॥ २१ ॥ सोंठ मिरच पीपल मजीठ जायफल कोशल (कंकोल) यह वस्तु अकरी फाल्गुनमें धान्यसंग्रह उचित है ॥ २२ ॥ कर्कके बृहस्पति होनेसे आषाढवर्ष कहताहै कम्बलनामक मेघ पूर्वदक्षिणमें वर्षे ॥ २३ ॥ कार्तिक फाल्गुनमें सबधान्य अकरे पश्चिम सिंधुदेश वायव्य उत्तर दिशामें ॥ २४ ॥ चौपायोंका नाश हो मृगोंको दुःख तथा दुर्भिक्ष सोना चांदी ताम्बा रेशम मुगा ॥ २५ ॥ मोती द्रव्य अन्न यह चतुराईकी बातोंसे विके मजीठ श्वेतवस्त्र सस्ते हों ॥ २६ ॥ गेहूं चावल तेल घी लवण शक्कर उर्द अकरे हों मनुष्य पाप करें ॥ ॥ २७ ॥ रेशम, वस्त्र जायफल लोंग मिर्च यह व्योपारियोंको शीतकालमें संग्रह करनी उचित है ॥ २८ ॥ वैशाख ज्येष्ठमे उसके बेचनेसे दूना लाभहो वर्षाकालमें महावर्षा सबधान्य सस्ते हों ॥ २९ ॥

सिंहे जीवे श्रावणाख्यंवत्सरे वासुकिर्घनः । बहुक्षीरघृतागावो जलपूर्णा च मेदिनी ॥ ३० ॥ देवब्राह्मणपूजा स्यान्नराणां मान्यता सताम् । रोगा विवादश्चान्योन्यं चतुष्पदमहर्घता ॥ ३१ ॥ गोधूमतिलमाषाज्यशालीनां च महर्घता।सुवर्णरूपताम्रादेः प्रवालानां समर्घता॥३२॥ सुभिक्षं सर्पदंशश्च मेघोप्याषाढभाद्रयोः । श्रावणे वृष्टिरल्पैव सुकालः कार्तिके मतः ॥ ३३ ॥ कन्याभोगे गुरोर्जाते मेघनामतमस्तमः । भाद्रसम्वत्सरस्तत्र सप्तमासाश्चरौरवम् ॥ ३४ ॥ ततः परं सुभिक्षं स्यात्कार्तिकान्माधवावधि । अन्नसंग्रहणे लाभो द्विगुणो भाद्रमासजः ॥ ३५ ॥ चतुष्पदानां पीडापि गोधूमाशालिशर्कराः । तैलं माषामहर्घाणि गुडादिक्षुरसःस्तथा ॥ ३६ ॥ शूद्राणामंत्यजानां च कष्टं सौराष्ट्रमण्डले । खण्डवृष्टिर्दक्षिणस्यामुत्पातो म्लेच्छमण्डले ॥ ३७ ॥ मेदपाटे शृगाले च परचक्रभयंरणः । सर्पदंशो वन्हिभयं मेघोल्पाश्च रसेल्पता ॥ ३८ ॥ मरुदेशे छत्रभंग चैत्रे वा माधवे भवेत् । गोधूमा घृततैलानि महर्घाणिसमादिशेत् ॥ ३९ ॥ वस्त्रकम्बलधातूनामन्नादेश्च समर्घता । धान्यसंग्रह

आषाढे भाद्रे लाभश्चतुर्गुणः ॥४०॥ गुरोस्तुलायां मेघाख्यः तक्षको वत्सरोऽश्विनः । तदातिवृष्टिमंजिष्ठनालिकेरसमर्घता ॥ ४१ ॥ अन्योन्यराज्ययुद्धानि समर्घताज्यतैलयोः । मार्गशीर्षे तथा पौषे द्वये धान्यस्य संग्रहः ॥ ४२ ॥ लाभः स्यात्पंचमे मासे मार्गात् प्रारभ्य चैत्रतः । छत्रभंगस्ततो राजविग्रहः क्वापिमंडले ॥ ४३ ॥ उत्पातो मरुदेशे स्यान्मार्गे चौरभयं तथा । कोटजेसलमेर्वादौ परचक्रागमो मतः ॥ ४४ ॥ रसक्रयाणकादीनां संग्रहेण चतुर्गुणः । लाभश्चतुर्थके मासे धातूनां च समर्घता ॥ ४५ ॥

अर्थः—सिंहके बृहस्पति होनेपर श्रावणाख्यवत्सर होताहै वासुकिमेघ वर्षताहै गायें बहुत दूध और घी दें और पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥ ३० ॥ देवब्राह्मणोंकी पूजा सत्पुरुषोंका मान्य हो रोग विवाद और चौपायोंकाभाव तेजहो ॥ ३१ ॥ गेहूं तिल उर्द घृत चावल अकरे हों सोना रूपा तांबा मूंगे अकरे हों ॥ ३२ ॥ सुभिक्ष कहीं सर्पबाधा आषाढ और भादोंमें मेघ हो श्रावणमें थोडीवर्षा कार्तिकमें सुकाल ॥ ३३ ॥ कन्याके बृहस्पति होनेसे तमनाम मेघ वर्षे भाद्रसम्वत्सरहै इसमें सात महीने दुःख हो ॥ ३४ ॥ इसके उपरान्त कार्तिकसे माघतक सुभिक्षहै इससमयका संग्रह किया धान्य भादोंमें दूना फायदा दे ॥ ३५ ॥ चौपायोंमें पीडा गेहूं धान्य शर्करा तेल उर्द गन्ने गुड अकरें हों ॥ ३६ ॥ शूद्र और अन्त्यजोंको कष्ट सौराष्ट्र मण्डलमें कष्ट दक्षिणमें खण्डवृष्टि दक्षिणमें म्लेच्छमण्डलमें उत्पात ॥ ३७ ॥ मेदपाट और शृंगालदेशमें शत्रुसे भय और रणहो सर्पदंश अग्निभय मेघ रस थोडे ॥ ३८ ॥ चैत्र वैशाखमें मरुदेशमे छत्रभंग गोधूम घृत तेल अकरे विकें ॥ ३९ ॥ उनीवस्त्र धातु अन्नादिक पीछे सस्ते हों आषाढमें सग्रह किया धान्य भादोंमें लाभ चौगुणादे ॥ ४० ॥ तुलाकी बृहस्पतिमें तक्षक मेघ वर्षे यह आश्विनवर्षहै उससमय वर्षा अधिक मजीठ नारियल अकरे ॥४१॥ राजा परस्पर युद्ध करें घी तेल सस्ते मार्गशीर्ष और पौषमें धान्यसंग्रह करना उचित है ॥४२॥ मार्गशीर्षसे लेकर चैत्रतक पांचमें महीनेमें लाभ हो छत्रभंग और किसी स्थानमें विग्रह हो ॥ ४३ ॥ मरुदेशमें उत्पात और मार्गमें चोरसे भय कोट और जैसल मेरुआदिमें शत्रुका आगमन हो ॥४४॥ रससंग्रह करनेवालोंको चौगुना लाभ चौथे मासमें हो धातू सस्ती विकें ४५

वृश्चिकस्थे गुरौ सोममेघः कार्तिकमासतः । सम्वत्सरः खण्डवृष्टिः धान्यमल्पं भयं महत् ॥ ४६ ॥ गृहे परस्परं वैरमष्टौ मासा न संशयः । भाद्राश्विनकार्तिकाख्यास्त्रयोमासा महर्घता ॥ ४७ ॥ हेमरूप्यं कांस्यताम्रतिलाज्यश्रीफलादिषु । महर्घं गुरुकार्पासलवणश्वेतवस्त्रकम् ॥ ४८ ॥ महिषी वृषभाअश्वाः समर्घा मध्यमंडले । पीडा स्यात्म्लेच्छलोकानां महोत्पातश्च संभवेत् ॥ ४९ ॥ देशभंगोप्यल्पवृष्टिः स्त्रीणामपि च दुःखिता । मरौ

तथा नागपुरे देशे क्लेशाकुलाःप्रजाः ॥ ५० ॥ धने गुरौ हेममालीमेघस्त्वत्सरस्तथा। मार्गशीर्षे दिव्यवृष्टिः स्त्रीणां पीडा गृहे गृहे ॥ ५१ ॥ पूर्वकाले भवेद्धान्यं गोधूमशालिशर्कराः। कार्पासश्च ,प्रवालानि कांस्यलोहं घृतं,त्रपु ॥ ५२ ॥ हेमरूप्यमहर्घाणि तिलास्तैलागुडस्तथा। पूगीफलं श्वेतवस्त्रंसमर्घंच कचिद्भवेत् ॥ ५३ ॥ मार्गशीर्षात्पुनर्ज्येष्ठं यावत् घृतमहर्घता। महिषीवाजिधेनूनां मंजिष्ठायामहर्घता ॥ ५४ ॥ मार्गशीर्षे तथा पौषे मंजिष्ठा,हिंगु मौलिकम्। जाती पूगीफलं चैव प्रवालानां महर्घता ॥ ५५ ॥ चतुष्पादादि कार्पाससंग्रहो रसमाषकान्। तल्लाभः सप्तमेमासे प्रोक्तो व्यक्तश्चतुर्गुणः ॥ ५६ ॥ गुरौ मकरगे मेघो जलेन्द्रःपौषवत्सरः। चतुष्पदक्षयो भूम्यां दुर्भिक्षं निर्जलो जनः ॥ ५७ ॥ उत्तरापश्चिमे देशे खण्डवृष्टिःकदापिच। पूर्वस्यां दक्षिणेचैव दुर्भिक्षं राज्यविग्रहम् ॥ ५८ ॥ पापबुद्धिरतालोका हाहाभूता च मेदिनी। जलतैलाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रे महर्घता ॥ ५९ ॥ उत्तमामध्यमा सर्वे सर्वभक्षणतत्पराः। क्षत्रियाणां क्षत्रभंगो म्लेच्छानां च ततः क्षयः ॥ ६० ॥ चैत्राश्विनाषाढमासास्त्रयो महर्घहेतवः। पश्चाद्धान्यंसुभिक्षं स्यात्प्रजापीडादितस्कराः ॥ ६१ ॥

अर्थः–वृश्चिककी बृहस्पति होनेपर सोमनाम मेघ वर्षे यह कार्तिकमासका सम्वत्सर प्रारम्भ होताहै इसमें खण्डवृष्टि धान्य थोडा भय अधिक हो ॥ ४६ ॥ घरोंमें परस्पर वैर आठमहीनेतक हो और भादों आश्विन कार्तिक तीन महीने अकराहो ॥ ४७ ॥ सोना चांदी कांसी तावा तिल घी श्रीफल कपास नोन श्वेतवस्त्र अकरे बिकें ॥ ४८ ॥ भैंस बैल घोडे ये सस्ते मध्यमण्डलमें पीडा म्लेच्छलोकोंमें महाउत्पात हो ॥ ४९ ॥ देशभंग थोडी वर्षा स्त्रियोंको दुःख मरु और नागपुर देशमें प्रजा क्लेशसे व्याकुल हो ॥ ५० ॥ धनकी बृहस्पतिमें हेममालीमेघ वर्षे मार्गशीर्षसे सम्वत्प्रारम्भ दिव्यवर्षा और स्त्रियोंको घरघरमें पीडा दे ॥ ५१ ॥ पूर्व कालमें गोधूम शालि शक्कर अधिक हों कपास मूंगे कासी लोहा घी त्रपु (सीसा) ॥ ५२ ॥ चादी सोना सस्ते हों तिलतेल गुड पूगीफल स्वेत वस्त्रभी सस्ते बिकें ॥ ५३ ॥ मार्गशीर्षसे ज्येष्ठतक जबतक घी अकरा हो तबतक महिषी घोडे धेनु मजीठ अकरे रहें ॥ ५४ ॥ मार्गशीर्ष और पौषमें मजीठ हींग मोती जायफल पूगीफल प्रवाल अकरे बिकें ॥ ५५ ॥ चौपाये कपास रस उर्द इनका संग्रह करना उचित है इनका लाभ सातमें मासमें चौगुना हो ॥ ५६ ॥ मकरकी बृहस्पतिमें जलेन्द्र मेघ, और पौषवत्सर होताहै चौपायोका क्षय दुर्भिक्ष और जलकी खैंच हो ॥ ५७ ॥ उत्तर पश्चिमके देशोंमें खण्डवर्षाहो पूर्वदक्षिणमें दुर्भिक्ष और राज्यविग्रह हो ॥ ५८ ॥ लोक पापबुद्धि हों पृथ्वीपे हाहाकार हो जल तेल घी दूध अन्न लालवस्त्र अकरे

हों ॥ ५९ ॥ उत्तम मध्यम सब मनुष्य सर्व भक्षणमें तत्पर हों क्षत्रियोंका क्षत्रभग और म्लेच्छों का क्षय हो ॥ ६० ॥ चैत्र आश्विन आषाढ तीन महीने अन्न तेज रहे पीछे नाज सस्ता प्रजामें पीडा चोर अधिक हों ॥ ६१ ॥

हेमरूप्यकताम्रलोहकर्पूरचन्दनादिकम्। महर्घं नर्मदातीरे अन्यदेशे शुभंभवेत् ॥ ६२ ॥ मेवेमालपदे देशे भगोवर्षा न भूयसी। व्याधयो बहुलारूप्यधातूनां च महर्घता ॥ ६३ ॥ मेदपाटे च कटके मार्गशीर्षेपि पौषके। महाजनानां पीडापि छत्रभंगोमहाभयम् ॥ ६४ ॥ देशग्रामपुरादीनां विध्वंसो युद्धसंभवः। शालयोयवगोधूमामहर्घाःस्युस्तथा रसाः ॥ ६५ ॥ कुंभे गुरौ वज्रदेशे मेघो माघादिवत्सरः। सुभिक्षं जायते तत्र ऋषिदेवद्विजार्चनम् ॥ ६६ ॥ कांस्यं च पित्तलं लोह मजिष्ठा त्रपु कांचनम्। एषां मासत्रयं यावत् समर्घत्वं प्रजायते ॥ ६७ ॥ माघफाल्गुनचैत्रेषु रोगामासत्रयेमता। महर्घं लवणं लोके मरौ धान्यमहर्घकम्॥६८ चैत्रवैशाखयोः सिंधुदेशे कटकचालकः। वस्त्रकंबलहिंगूनां महर्घत्वं प्रजायते ॥६९॥ कार्तिके वाश्विने रोगाश्छत्रभगोमहद्भयम्। रसकार्पासवस्त्राणां सर्वत्र स्यान्महर्घता ॥ ७० ॥ श्रावणे वा भाद्रपदे धान्यं संगृह्यते यदा। पौषे स्याद्विगुणोलाभः सुगन्धयोश्च विक्रियात् ॥ ७१ ॥ मीने गुरौ फाल्गुने स्याद्वत्सरः समबोधनः। खण्डवृष्टिर्महर्घाणि सर्वधान्यानि भूतले ॥ ७२ ॥ विविधा रोगपीडा च देशान्तरे व्रजेज्जनः। मासानां पंचकं यावद्भयं राजविरोधतः ॥ ७३ ॥ पश्चात् सुखं सुभिक्षं च शालिगोधूमशर्करा। तिलतैलगुडानांच महर्घत्व समीरितम् ॥७४ ॥ मंजिष्ठानारिकेलानां श्वेतवस्त्रं च दन्तकाः। कर्पूरलवणाज्यानां महर्घत्वं प्रजायते ॥ ७५ ॥ पौषे लेशसमुत्पत्तिस्तथा फाल्गुनचैत्रयोः। मरुदेशे महापीडा दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ७६ ॥

अर्थ.—सोना रूपा तांबा लोह कपूर चन्दन यह नर्मदाके तटपर अच्छे और देशोंमें सस्ते विकें ॥ ६२ ॥ मालपददेशमें भगता और वर्षा थोडी व्याधी अनेक और धातू अकेरी ॥ ६३ ॥ भेदपाट और कटकदेशमें मार्गशीर्ष और पौष इन दोमहीने महाजनोंको पीडा हो क्षत्रभग और महाभय हो ॥ ६४॥ देश ग्राम पुरमें विध्वस और युद्धहो धान जौ गेहू रस अकरे विकें ॥ ६५ ॥ कुंभके बृहस्पतिमें वज्रदेश मेघ वर्ष माघवत्सर कहावे इसमें सुभिक्ष और देवता ऋषिका पूजन हो ॥ ६६ ॥ कांसी पीतल लोहा त्रपु (सीसा) सुवर्ण यह तीन महीने

सस्ते रहें॥ ६७॥ माघ फाल्गुन चैत्र तीनमहीने रोगहों नून तेज मरुदेशमें अन्नभाव तेज॥ ॥ ६८॥ चैत्रवैशाखमें सिंधुदेशमें सेनाजाय वस्त्र ऊन हिंगु भाव तेज हो ॥ ६९॥ कार्तिक आश्विनमें रोग छत्रभग और महाभय हो रस कपास वस्त्र सब जगह तेज हों ॥ ७० ॥ यदि श्रावणाभादोंमें धान्यसंग्रह कियाजाय तो पौषमें वेचनेसे दूना लाभ हो॥ ७१ ॥ मीनको बृहस्पतिमें फाल्गुनसम्वत्सर संभवमेघ वर्षे जिसमें खण्डवृष्टि और सबवस्तु पृथ्वीमें तेज बिकें ॥ ७२॥ अनेकप्रकारकी रोगपीडा और प्राणी देशान्तरोंमें जाय. और पांचमहीनेतक राजविरोध होनेसे भय हो॥ ७३ ॥ पीछे सुख और सुभिक्ष हो शाली गोधूम शक्कर तिल तेल गुड मँहगे बिकें॥ ७४॥ मजीठ नारियल श्वेतवस्त्र हाथीदांत कपूर लवण घृत तेज हों॥७५॥ पौषमें क्लेश इसीप्रकार फाल्गुन और चैत्रका महीना रहै मरुदेशमें महापीडा और दुर्भिक्ष हो॥ ७६॥

चतुष्पदानां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् । आषाढे श्रावणे धान्यं घृततैलमहर्घता ॥७७॥ श्रावणस्योत्तरे पक्षे महावर्षा प्रजायते। घृतं समर्घं भाद्रपदे शुभावाश्विनकार्तिकौ ॥ ७८॥ समर्घास्तिलकार्पास छत्रभंगस्ततोर्बुदे। मार्गशीर्षे तथा पौषे उत्पातो मरुमण्डले॥ ७९॥

अर्थः-वैशाख ज्येष्ठमें चौपायोंका मरण हो आषाढ श्रावणमें धान्य घी तेलका भाव तेज ॥ ७७॥ श्रावण शुक्लपक्षमें वर्षा अधिक हो घृत सस्ता भाद्रपद आश्विन कार्तिकमास श्रेष्ठ हैं॥ ७८॥ तिल कपास सस्ते रहें अर्बुद देशमें छत्रभग मार्गशीर्ष पौषमें मरुमण्डलमें उत्पात हो॥ ७९॥

अथ वक्रीविचारः।

मेषराशिगतो जीवो यदा स्यान्मीनसंगतः॥ तदाषाढश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः॥१॥ एते महर्घतां यांति मासद्वये न संशयः। पश्चाद्भाद्रपदे मासे आश्विने हे महेश्वरि॥ २॥ चंदनं कुसुमं वापि ये चान्येपि सुगंधयः। तैलपण्यानि सर्वाणि मासद्वयमहर्घता॥ ३॥ वृषराशिगते जीवे वक्रीस्यान्मासपंचके। वृषभादिचतुष्पादैः स्तुलाभाण्डे महर्घता॥ ॥ ४॥ संग्रहः सर्वधान्यानां मासाष्टके महर्घता। श्रीश्रावणे भाद्रपदे आश्विने कार्तिके तथा॥ ५॥ तत्परं सर्वधान्यानां चतुष्पदां विशेषतः। विक्रयाद्विगुणो लाभः त्रिगुणस्तुचतुष्पदे॥ ६॥ मिथुनस्थः सुरगुरुः विकारं कुरुते यदा। अष्टमासी भवेत्क्रूरा चतुष्पदमहर्घता॥ ७॥ मार्गशीर्षादयो मासाः सुभिक्षं वसनं भुवि। लोकः सर्वोभवेत्स्वस्थो दुर्भिक्षं

कचिदादिशेत् ॥८॥ कर्कराशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा । दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्धतत्पराः ॥ ९ ॥ राष्ट्रभंगं विजानीयाद्वैरोपद्रव संकुलम् । रसादिसर्वसंयोगो घृततैलादिखंडकम् ॥१०॥ कार्पासादीनिव स्तूनि लाभं दद्युर्न संशयः।मार्गादिमासाः सप्तैव सर्वधान्यमहर्घता॥११॥

बृहस्पतिके वक्री होनेका विचार।

अर्थः-मेष राशिका बृहस्पति वक्री होकर मीनका हो जाय तौ आषाढ श्रावणमें गौ-महिषी गधे ऊंठ ॥ १ ॥ यह निःसन्देह दो महीनेको अकरे हों जाय पीछे भादों और आश्विन मासमें ॥ २ ॥ चदन फूल तथा जो सुगन्धिके द्रव्य हैं तेल तथा वेचनेकी सब वस्तु दो मास तेज रहैं ॥ ३ ॥ जो वृषराशिकी बृहस्पति पाच महीनें वक्री हो जाय तौ वृषभादि चौपाये और मानद्रव्य बर्तन तेज हों ॥ ४ ॥ सब धान्यका सग्रह करना उचित है. आठ मासतक तेजी रहै श्रावण भादौं आश्विन कार्तिक ॥ ५ ॥ के उपरान्त सब धान्य और विषेषकर-चौपाये वेचनेसे दूना और तिगुना लाभ हो ॥ ६ ॥ मिथुनकी बृहस्पति यदि वक्री हो जाय तौ आठ महीनेतक चौपाये तेज रहें ॥ ७ ॥ मार्गशीर्षादि महीनोंमें सुभिक्ष सब लोक स्वस्थ हौं कहीं दुर्भिक्ष हो ॥ ८ ॥ कर्कराशीके गुरु यदि वक्री हों तौ घोर दुर्भिक्ष और राजा युद्ध करनेमें तत्पर हों ॥ ९ ॥ राष्ट्रभग वैर और महा उपद्रव हो रसादि सब वस्तु घी तेल खाड और ॥ १० ॥ कपासादि वस्तुओंमें निःसन्देह लाभ हो मार्गशीर्षको आदि ले सात महीनेतक धान्य भाव तेज रहैं ॥ ११ ॥

सिंहराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा । सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोके प्रसन्नता ॥ १२ ॥ सर्वधान्यं च संग्रह्य तुलाभभाण्डानि यानि च । गते षु नवमासेषुपश्चाद्विक्रयमादिशेत् ॥ १३ ॥ कन्याराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा । सूक्ष्मश्चतु भवेल्लाभो पुण्यकर्मवशात्पुनः ॥ १४ ॥ तुलाराशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा । बहुभाण्डसुगन्धीनि कार्पास लवणानिच ॥ १५ ॥ समर्घाणि भवन्त्येव मार्गशीर्षव्यतिक्रमे । दशमासात्यये लाभो द्विगुणस्तत्र संभवेत ॥ १६ ॥ वृश्चिकं यदि संप्राप्य वक्रं याति बृहस्पतिः । अन्नस्य संग्रहस्तत्र धान्यादेस्तु विशेषतः ॥ १७॥ कार्पासस्य घृतादेर्वा मार्गशीर्षे च विक्रये । द्विगुणो जायते लाभस्तदा संग्रहकारिणः ॥ १८ ॥ धनराशिगतो जीवः करोति वक्रतां यदा। आचिरेणैव कालेन सर्वं धान्यसमर्घता ॥ १९ ॥ गोधूमचणकादीनि धान्यानि क्रय्यकाणिच । समर्घाण्यन्यवस्तूनि गुडश्च लवणादिकम् ॥ २० ॥

चैत्रादिसंग्रहस्तेषां मार्गशीर्षादिविक्रयः । सर्वाणि लाभं लभते मासैका दशकात्यये ॥ २१ ॥ मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिता । आरोग्यं कुरुते धान्यं समर्घं नात्रसंशयः ॥ २२ ॥ कुंभराशिगते जीवः करोति यदि वक्रता । आरोग्यं सर्वं स्वस्थत्वं राज्ञां श्रीजयसंभवः ॥२३॥ सर्वधान्येषु निष्पत्तिः सर्वधान्यस्यविक्रयः । घृतं तैलतुलाभांडं मासाष्टके च संग्रहः ॥ २४ ॥ पश्चात्विक्रयतो लाभः सुभिक्षं निर्भया जनाः । पूजा गोद्विजदेवानां भवति नात्र संशयः ॥ २५ ॥ मीनराशिगतो जीवो वक्रतामुपयातिचेत् । धनक्षयस्तदा लोकेचोराद्राजापि रोषितः २६ निराधारा प्रजापीडा ग्रहभूतादिदोषतः । तुलाभांडं गुरुः खण्डा अर्घं ददाति वांछितम् ॥ २७॥ लवणं घृततैलादि सर्वधान्यमहर्घता । कार्पासस्यार्धसम्प्राप्तिर्लाभस्तेषां चतुर्गुणः ॥ २८ ॥

अर्थः—यदि सिंहराशीकी बृहस्पति वक्री होय तो सुभिक्ष क्षेमआरोग्य और सब लोकोंमें प्रसन्नता हो ॥ १२ ॥ सब धान्य भाण्डादिक संग्रह करके नौमहीने पीछे बेचना चाहिये ॥ ॥ १३ ॥ यदि कन्याराशिका बृहस्पति वक्री हो तो पुण्यकर्मके वशसे सूक्ष्मलाभ हो ॥ १४ ॥ तुलाराशीका बृहस्पति यदि वक्री होयतो बहुत बर्तन सुगंधीवस्तु कपास लवण ॥ १५ ॥ अकरे हों और मार्गशीर्षके बेचनेपर पीछे दशमहीनेमें दूना लाभ हो ॥ १६ ॥ यदिवृश्चिकको बृहस्पति वक्री हो तो अन्न और धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ १७ ॥ कपास और घी मार्गशीर्षमें बेचनेसे दशमासके उपरान्त दूना लाभदायक हो इससे संग्रह करना उचित है ॥ ॥ १८ ॥ धनराशीका बृहस्पति यदि वक्री हो थोडेही दिनोंमें सब धान्य सस्ते हो ॥ १९ ॥ गोधूम, चना, धान्यादि बेचनेकी वस्तु और गुड लवणादि सस्ते हों ॥ २० ॥ चैत्रादिमें इनका संग्रहकरके मार्गशीर्षमें बेचना ग्यारहमहीनेमें यह सब वस्तु लाभदायक हों ॥ २१ ॥ यदि मकरका बृहस्पति वक्री हो तो धान्य सस्ता आरोग्यता निसन्देह हो ॥ २२ ॥ यदि कुंभराशिका बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्य स्वस्थता राजोंको जय प्राप्त हो ॥ २३ ॥ सर्वधान्यकी प्राप्ति धान्यका विक्रय घी तेल तुलाभाण्ड आठ मासमें संग्रह करना चाहिये ॥ २४ ॥ पीछे बेचनेसे लाभ सुभिक्ष मनुष्य निर्भय गौ द्विज देवताओंकी पूजा हो ॥ २५ ॥ मीनराशिकी बृहस्पति यदि वक्री हो तो धनक्षय चोरोंसे भय और राजोंको क्रोध हो ॥ २६ ॥ प्रजाको अधिक पीडा ग्रह भूतादिदोषसे हो तुलाभाण्ड खाड यह वांछित लाभ दें ॥ २७ ॥ लवण घी तेल सब धान्य अकरे हों कपास अकरी इनमें चौगुना लाभ हो ॥ २८ ॥

इति गुरु वक्री विचारः ।

अथ नक्षत्रभोगविचारः ।

कृत्तिकारोहिणीऋक्षे यदा तिष्ठेद्बृहस्पतिः । मध्यमात्रभवेद्वृष्टिः सस्यं भ

र्षति मध्यमम् ॥ १ ॥ मृगशीर्षे तथार्द्रायां यदि तिष्ठेद्बृहस्पतिः । सुभिक्षं लभते सौख्यं वृष्टिजातं सदाजनः ॥ २ ॥ आदित्यपुष्याश्लेषासु गुरुभोगे प्रसंगिनी । अनावृष्टिभयं घोरं दुर्भिक्षं सर्वमण्डले ॥ ३ ॥ मघा च पूर्वा फाल्गुन्यां यदा तिष्ठेद्बृहस्पतिः । सुभिक्षं क्षेममारोग्यं देशयोगं बहूदकम् ॥ ४ ॥ उत्तराफाल्गुनीहस्ते गुरौ वर्षासुखजने । चित्रायां च तथा स्वातौ विचित्राधान्यसंपदाः ॥ ५ ॥ विशाखायां च राधायां सस्यं भवति मध्यमम् । मध्यमेव भवेद्वर्षा वर्षा सापि च मध्यमा ॥६॥ गुरुर्ज्येष्ठामूलचारे मासद्वयेन वर्षणम् । परतःखण्डवृष्टिस्यात् नृपाणां दारुणोरणः॥७॥ जीवे पूर्वोत्तराषाढयुक्ते लोकसुखं मतम् । त्रिमासाज्जायते वर्षा मासमेकं न वर्षेति ॥ ८ ॥ श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरुसंगमे । सुभिक्षं क्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी ॥ ९ ॥ पूर्वोत्तराभाद्रपदयोरनावृष्टिभयादिकं । पौष्याश्विनीभरणिषु सुभिक्ष धान्यसंपदा ॥ १० ॥ मृगादिपंचकं चित्राद्वयमेवाष्टकं तथा । नक्षत्रेषु शुभं जीवो शेषेषु शुभमादिशेत्॥११॥ स्वातिमुख्याष्टके जीवे त्वश्विन्यादित्रिकेपि च । शनिराहुकुजेश्चैव मत्येके सहितो भवेत् ॥ १२ ॥ संचरते यदा काले सुभिक्षं जायते तदा । मृगादिदशके जीवे धनिष्ठापंचकेथवा ॥ १३ ॥ भौमादि सहितो गच्छेत् दुर्भिक्षं तत्र जायते । एकराशिगते चैव एकर्क्षे तु महद्भयं ॥ १४ ॥ अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे । हाहाभूत जगत्सर्वं रुण्डमाला-महीतले ॥ १५ ॥

अर्थ--जिस समय बृहस्पति कृत्तिका रोहिणी नक्षत्रमें हो उस समय मध्यम वृष्टि हो मध्यम धान्य हो ॥ १ ॥ मृगशीर्ष और आर्द्रामें बृहस्पति हो तौ सुभिक्ष सुख और वर्षा अच्छी हो ॥२॥ पुनर्वसु पुष्य आश्लेषामें बृहस्पति हो तौ अनावृष्टि घोर भय और सब स्थानमें दुर्भिक्ष हो ॥ ३ ॥ जो मघा और पूर्वाफाल्गुनीमें बृहस्पति हो तौ सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और वर्षा अच्छी हो ॥ ४ ॥ उत्तराफाल्गुनी हस्तमें जो बृहस्पति स्थित हो तौ वर्षा अच्छी मनुष्योंमें सुख हो चित्रा स्वातिमें श्रेष्ठ धान्यकी प्राप्ति हो ॥ ५ ॥ विशाखा और अनुराधामें मध्यम वर्षा हो, और मध्यमही धान्य हो ॥ ६ ॥ ज्येष्ठा और मूलमें बृहस्पति हो तौ दो मासतक वर्षा न हो पीछे खण्डवृष्टि और राजोंमें युद्ध हो ॥ ७ ॥ पूर्वा उत्तराषाढामें बृहस्पति हो तौ लोकमें सुख तीन महीने वर्षा और एकमहीने नहीं हो ॥ ८ ॥ श्रवण धनिष्ठामें शतभिषामें गुरु हो तौ सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और पृथ्वीमें बहुत धान्य हो ॥ ९ ॥ पूर्वा और उत्तराभाद्र-

में बृहस्पति हो तौ अनावृष्टि हो रेवती अश्विनी भरणीमें सुभिक्ष और धान्य संपदा हो॥१०॥ मृगशिरकूं आदिलेकर पांच चित्रादि आठ नक्षत्रोंमें बृहस्पति शुभ होतेहैं ॥ ११ ॥ स्वातिको आदिलेकर आठ और आश्विनी आदि तीन नक्षत्रमें जो शनैश्वर राहु केतु मंगल सहित बृहस्पति हो ॥ १२ ॥ और इनके सहित गमन करे तौ सुभिक्ष हो, और मृगशिर आदि दश नक्षत्र और धनिष्ठादि पांच नक्षत्रमें ॥ १३ ॥ मंगलके सहित प्राप्त हो तौ दुर्भिक्ष हो एकराशिमें प्राप्त होकर जो बृहस्पति एक नक्षत्रमें वर्ततो महा भय हो॥१४॥ बृहस्पतिके तीव्रगति होने और शनैश्वरके वक्री होनेमें सब जगतमें हाहाकार हो और रुण्डमाला पृथ्वीमें गिरै ॥ १५॥

मेषे गुरूदयस्त्वतिवृष्टिरेव दुर्भिक्षमुत्तममृतिर्वृषभे सुभिक्षम् । पाषाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः स्वावस्थया मिथुनके गणिकासु पीडा ॥ १॥ स्यात्कर्कटे जनमृतिर्जलवृष्टिरल्पा सिंहे तथैव कथितं बहुधान्यलाभः । कन्यास्थितस्य गुरोरुदये शिशूनां पीडा तथैव गणिकासु च वृद्धलोके ॥ २ ॥ काश्मीरचंदनफलादि महर्घता स्याल्लाभो महान्व्यवहृतौ च तुलीवलंबे । दुर्भिक्षतालिनि धनुष्यपि चाल्प वर्षा लोके रुजो मकरके बहुधान्यवृष्टिः ॥ ३ ॥ कुंभे गुरोरुदयता सकलेपि देशे वृष्टिर्घनेपि च घनेति महर्घमन्नं । मीनेल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगः पीडा जनस्य नरकान्तरकानुरूपा ॥ ४ ॥ जीवोभ्युदेति यदि कार्तिकमासि वन्हिर्लोके न वृष्टिरपि रोगनिपीडनं च । मार्गेपि धान्यविगमं सुखमेव पौषे नीरोग्यतो सकलधान्यसमुद्भवश्च ॥ ५ ॥ माघे तथैव परतो भुवि खण्डवृष्टिः चैत्रे विचित्रजलवृष्टिरतोपि राधे । सर्वं सुखं जलनिरोधनमेवशुक्रेप्याषाढके नृपरणोन्नमहर्घता च ॥ ६ ॥ आरोग्यं श्रावणे वर्षाबहुला सुखिनो जनः । भाद्रमासे धान्यनाशःआश्विनः सुखदः स्मृतः॥७॥इति गुरोदयमासफलं॥

अर्थः–मेषराशिका गुरु उदय होय तौ दुर्भिक्ष मरण हो वृषमें उदय हो तौ सुभिक्ष हो पाषाणशालिमणिरत्न अकरे बिकैं, और मिथुनमें अपनी अवस्थासे गणिका वेश्याओंमें पीड़ा हो ॥ १ ॥ कर्कमें उदय हो तो मनुष्योंमें मृत्यु जलवृष्टि थोड़ी सिंहमें उदय हो तौ बहुत धान्यका लाभ हो और कन्यामें गुरुका उदय हो तौ बालक गणिका तथा वृद्धोंको पीड़ा हो ॥ २ ॥ तुलाके उदयमें कश्मीरी चंदन फलका भाव तेज हो लाभ व्यवहारमें अधिक हो वृश्चिकमें दुर्भिक्ष धनमें थोड़ी वर्षा और मकरके गुरुउदय हों तो लोकमें रोग और धान्य अधिक वर्षा श्रेष्ठ हो ॥ ३ ॥ कुंभके बृहस्पति उदय हों तो सब देशमें घनी वर्षा हो अन्न अकरा रहे मीनके उदय हों तो राजोंमें युद्धका योग और मनुष्योंको नरककी समान पीड़ा हो ॥ ४ ॥ यदि कार्तिकमासमें बृहस्पति उदय हों तो लोकमें वर्षा

थोडी रोगपीडा मार्गशीर्षमें धान्य दूसरे स्थानोंमें जाय सुख हो पौषमें नीरोगता और धान्यकी प्राप्ति हो ॥ ५ ॥ माघफाल्गुनमें उदय हो तौ खण्डवर्षा चैत्रमें हो तौ विचित्र जलवृष्टि वैशाखमें सर्व सुख ज्येष्ठमें जलका निरोध आषाढमें उदय हो तौ राजोंमें युद्ध अन्न भाव तेज हो ॥ ६ ॥ श्रावणमें उदय होतौ आरोग्य और वर्षा हो मनुष्य सुखी भाद्रमासमें उदय हो तौ धान्यनाश आश्विनमें सुख हो ॥ ७ ॥ इति गुरूदयफलम् ॥

यद्यस्तमेत्य जगतो गुरुरल्पवृष्टिर्दुर्भिक्षमेव कुरुते वृषभे गुरुस्यात् । तैलं घृतंच लवणं प्रभवेन्महर्घं मृत्युस्तथाल्पजलदो मिथुनस्तमास्ते ॥ १ ॥ कर्केस्ततो नृपभयं कुशलं सुभिक्षं सिंहे नृनाथरणलोकधनादिनाशः । कन्यास्ततः सकलधान्य समर्घतास्यात् क्षेमं सुभिक्षमतुलं जनलोकनाशः ॥ पीडा द्विजेषु बहुधान्यसमर्घता च जाते तुलास्तमयने नयनेषु रोगः । राज्ञां भयान्यलिनितस्करलुंठनानि माषास्तिलाश्च बहवो धनुषास्तमास्ते । कुंभे गुरोरस्तमयात्प्रजायाः पीडापरं गर्भवतीच जाया । मीनें सुभिक्षं कुशलं समर्घं धान्य घनस्याल्पतयापि पृष्ठे ॥ १२ ॥

अर्थः—जो मेषकी बृहस्पति अस्त हो तौ थोडी वर्षा वृषकी दुर्भिक्ष करे मिथुनमें घी तेल लवण अकरे मनुष्योंमें मृत्यु थोडी वर्षा हो ॥ १ ॥ कर्कमें अस्त हो तौ राजोंमें भय कुशल और सुभिक्ष हो सिंहमें गुरु अस्त हो तो राजोंमें युद्ध लोगोंके धनका नाश हो कन्यामें अस्त हो तो क्षेम सुभिक्ष हो तुलामें मनुष्योंमें पीडा हो ब्राह्मणोंमें पीडा अन्न तेज वृश्चिकमें नेत्रोंमें रोग धनमें राजोंका भय चौरोंकी लूट हो मकरमें अस्त हो तौ उर्द तिल अधिक कुंभमें अस्त हो तौ प्रजा और गर्भवती स्त्रियोंको पीडा हो मीनमें अस्त हो तौ सुभिक्ष कुशल धान्यभाव सस्ता हो यद्यपि वर्षा थोडी पर धान्य अधिक हो ॥ १२ ॥ इतिअस्तविचारः ॥

अथ मेघविचारः ।

सुबुद्धो नंदिसारी च कर्कोटकः पृथुश्रवः । वासुकिस्तक्षकश्चैव कंबलश्वतुरावुभौ ॥ १ ॥ हेममालीजलेन्द्रश्च वज्रदंष्ट्रो वृषस्तथा । सुबुद्धो बुद्धिकर्ता च कष्टवृद्धिशुभावहः ॥ २ ॥ नंदिसारी महावृष्टिः नदन्ति च महाजनाः । कर्कोटके जलं नास्ति मरणं च महीपतेः ॥ ३ ॥ पृथुश्रवो जलं सूक्ष्मं सस्यहानिः प्रजायते । वासुकिः सस्यकर्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः ॥ ४ ॥ तक्षके मध्यमा वृष्टिः सस्यं भवति शोभनं । जायतेश्वतरे स्वल्पः जलं सस्यं विनश्यति ॥ ५ ॥ हेममाली महावृष्टिः जलेन्द्रः प्लावयेन्महीं । वज्रदंष्टे त्वनावृष्टिः वृषे स्यादीतितो भयम् ॥ ६ ॥ इति द्वादशधा नागाः, ततश्चावर्तसंवर्तपुष्कराद्रोणकारकाः । नीलश्च वरुणो वायुस्तमोमेघः स

नातनः ॥ ७ ॥ आवर्ते मंदतोयं स्यात्संवर्ते वायुपीडनं । पुष्करे बहुलं तोयं द्रोणे वृष्टिसुखं भवेत् ॥ ८ ॥ अल्पवृष्टिः कालमेघे नीलः क्षिप्रं प्रवर्षति । वारुणेत्वर्णवाकारा वायुवर्षाविनाशनः ॥ ९ ॥ तमोमेघेन वृष्टिः स्यान्मेघान फलमीदृशम् ॥ १० ॥

अथ मेघविचारः ।

अर्थः–सुबुद्ध, नंदिसारी, कर्कोटक पृथुश्रवा वासुकि तक्षक कंवल अश्वतर ॥ १ ॥ हेममाली जलेन्द्र वज्रदंष्ट्र वृष यह नाग हैं सुबुद्धि बुद्धिका कर्ता कष्टदायक और वृद्धि कर्ता सुखदायक है॥२॥नन्दिसारीमें महावर्षा महाजन प्रसन्नहों कर्कोटक नागके समय जल न वर्षे राजाका मरण हो ॥ ३ ॥ पृथुश्रवामें थोडा जल वर्षे खेतीकी हानि हो वासुकीके समय बडे शुभमे अच्छी वर्षा हो ॥ ४ ॥ तक्षकमें मध्यम वृष्टि खेती अच्छी हो, अश्वतरमें थोडी वर्षा वर्षासे खेती नाश हो ॥ ५ ॥ हेममालीमें महावर्षा जलेन्द्र पृथ्वीको जलसे पूर्णकरे, वज्रदंष्ट्रमें अनावृष्टि और वृषमे ईति भय हो ॥ ६ ॥ इति द्वादशनागाः ॥ आवर्त सम्वर्त पुष्कर द्रोण कालक नीलवरुण वायु तम मेघ सनातन, यह मेघ हैं आवर्तमेघमें मंदजल सम्वर्तमें वायुपीडा पुष्करमें बहुत वर्षा द्रोणमेंभी अच्छी वर्षा हो ॥ ८ ॥ कालमेघमें थोडी वर्षा नीलमें शीघ्र वर्षाहो वारुणमें महावर्षा सागरकी समान हो ॥ वायुमें वर्षाका नाश हो ॥ ९ ॥ तममेघमें वर्षा नहीं होती यह मेघोंका फलहै ॥ १० ॥

ईश्वरउवाच–शृणु देवि यथातथ्यं वर्णरूपं तु यादृशं । मंदरोपरिमेघास्ते राजानो दश कीर्तिताः ॥ १ ॥ कैलासदेशाविक्षेपाः प्राकारे कोटजे दश । उत्तरे दश राजानः शृंगवेरे तथा दश ॥ २ ॥ पर्यन्ते दश राजानो दशैव हिमवन्नगे । गंधमादनशैले च राजानो दशवारिदाः ॥ ३ ॥ अशीतिमेघा विख्याता कथितास्तव पार्वति । दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः ॥ ४ ॥ उन्नमय्य प्लावयन्ति मर्त्यलोके जलैर्महीं । कमलेष्टदले घृष्टये प्रतिष्ठाप्य पयोधरान् ॥ ५ ॥ धूपदीपैश्च कुसुमैः नैवेद्यैः परिपूजयेत् । सिंहको विजयश्चैवलंबलोथ जयद्रथः ॥ ६ ॥ धूम्रश्च शिखरो भद्रा मातंगो वरुणस्तथा । त्रिलोचनपतिश्चैव मेघाःप्राच्या अमीदश ॥ ७ ॥ आनंदः कालदंष्ट्रश्च सूकरो वृषभस्तथा । मृगो नीलो भवः कुंभो निकुंभो महिपस्तथा ॥ ८ ॥ दशमेघादक्षिणस्यां प्रायोमी वृष्टिकारिणः । कुंजरः कालमेघश्च पुनर्वे कालकालकौ ॥ ९ ॥ दुंदुभिर्मेखला सिंधुः मकरश्छत्रकस्तथा । पश्चिमायाममीमेघा दश वर्षाविधायिनः

॥ १०॥ मेघनादोथ नृपतिः त्रिलोचनसुधाकरो । दंडिनश्चैव सिताल्श्च त्रैकालिकजलस्तथा ॥ ११ ॥ वृषभोपि च गन्धर्वो विधूमा सिक्थः पर । गकरो दशमेघाः स्युरुत्तरस्यां प्रवर्षिणः ॥१२॥ ओंकारो नाम्नि मूर्तिश्च मयूरः कंदिकस्तथा । विंदुकांतिश्च करणः हेमकांतिश्च पर्वतः ॥ १३॥ गैरिकश्चाव्हया मेघाः स्वर्गलोके व्यवस्थिताः । दिव्यमेघाश्च सप्तेते सर्वांगसुखदायिनः ॥ १४ ॥

अर्थः—सुनो देवि मै इनका वर्ण और रूप कहाताहू मन्दरपर्वतपर मेघोंके दश राजा निवास करतेहैं ॥ १ ॥ दश कैलास और दश शृंगवेरपुरके राजा हें ॥ २ ॥ दश पर्यन्तदेशके राजा दश हिमवान पर्वतके दश गधमादन पर्वतके राजा हें ॥ ३ ॥ हे पार्वती सब अस्सी मेघ विख्यात हैं दिशा विदिशा सब स्थानोमें दश दश मेघ रहते हे ॥ ४ ॥ उदय होकर पृथ्वीको तरकर देते हे वर्षाके निमित्त बादलोंको अष्टदल कमलके बीच स्थापन करे ॥ ५ ॥ धूप दीप फूल और नैवेद्यसे पूजा करे सिंहक निजय कबल जयद्रथ ॥ ६ ॥ धूम्रशिख भद्र मातंग वरुण त्रिलोचनपति यह दश मेघ पूर्वदिशामे रहते हैं ॥ ७ ॥ आनद कालदंष्ट्र शूकर वृषभ मृगनील भव कुभ विकुभ महिष ॥ ८ ॥ यह दश मेघ दक्षिणमे रहकर वर्षा करते हैं कुजर कालमेघ कालकान्त ॥ ९ ॥ दुदुभी मेखलासिधु मकर छनक यह दश मेघ पश्चिममे वर्षा करते हैं ॥ १० ॥ मेघनाद नृपति त्रिलोचन सुधाकर दडी सिताल त्रैकालिक जल ॥ ११ ॥ वृषभ गन्धर्व विधूमासि कथा, पर, गकर यह दश मेघ उत्तरदिशामें वास करतेहैं ओंकारयुक्तमूर्ति मयूरंकादिक बिंदुकाति करण हेमकान्ति पर्वत ॥ १२ ॥ गैरिक यह मेघ स्वर्गमें रहतेहैं और यह सातों मेघ दिव्य होनेसे सर्वांग सुख देतेहैं ॥ १४ ॥

दशमेघाः श्वेतवर्णाः दशैव लोहितास्तथा । दश पीता स्वर्णवर्णा दश धूम्राः प्रकीर्तिताः ॥ १५ ॥ अथ मंत्रं प्रवक्ष्यामि येन मंत्रेण आहिताः । आगच्छन्ति धरा देवा कुर्वन्त्येकार्णवामहीं ॥ १६ ॥

ओं ऱ्हीं मेघदूत्यै नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥

ओं मेघदूतीकमलोद्भवाय नमःआगच्छ २ स्वाहा ॥

ओं ऱ्हीं महानीलराज हिमवन्निवासिने आगच्छ २ स्वाहा ॥

ओंऱ्हीं नंदिकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥

ओं ऱ्हीं कुबरराजाय शृंगवेरनिवासिने आगच्छ २ स्वाहा ॥

जपोस्य दशसाहस्रो दशांशो होम एव च । पुष्पैश्च धवलै रक्तैः करवीरसमुद्भवैः ॥ १७ ॥ ततः पुष्पैः सुगन्धाढयैः अर्चयेन्मेघसप्तकम् । दद्यात्तैववने गत्वा मेघानावाहयेद्बुधः ॥१८॥ शिवालये तडागे वा पुनर्मेघा

नविसर्जयेत्। दिव्यमेवाश्र सप्तेते कुलपर्वतवासिनः ॥१९॥ सर्वथामीषु मेघेषु राजानो द्वादशास्मृताः। प्रबुद्धनंदशालाद्या गुरुणैव प्रयोजिताः २०

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे श्रीमेघविजयगणिविरचिते सम्वत्सराधिकारश्चतुर्थः पूर्णः ॥

अर्थः—दश मेघ श्वेत दश लाल दश पीले दश धूम्रवर्णके हैं॥ १५ ॥ अब वह मंत्र कहताहूं जिनकेद्वारा मेघ आकर पृथ्वीको जलसे पूर्णकर देतेहैं॥ १६ ॥ वह ऊपर लिखे हैं इन मन्त्रोंका दश सहस्र जप और दशांश हवन करना धोले और लाल कनेरके, फूलोंसे, हवन करे ॥ १७ ॥ फिर सुगंधियुक्त पुष्पोंसे सातों मेघोंको पूजे नदी या वनमें जाकर पण्डित मेघोंको आवाहन करे॥ १८॥ शिवालय और सरोवरमें फिर मेघोंको विसर्जन करे यह दिव्य सात मेघ कुलपर्वतके निवासीहैं ॥ १९ ॥ सब प्रकार इन मेघोंमें बारह राजा हैं वे प्रबुद्ध नंदशालादि नामवाले हैं ॥ २० ॥

इति श्रीमेघमहोदये० व० सम्वत्सराधिकारश्चतुर्थः ॥

अथ शनिचारः।

मेषस्थे भानुपुत्रे त्रिभुवनविदिते याति धान्यं विनाशं नूनं तैलंगवंगे ह यमुरदलितं विग्रहस्तीव्र एव। पाताले नागलोके दिशिविदिशगताः भीतिभीताः नरेन्द्राः सर्वे लोका विलीनाः प्रथमगतधुना याचमाना व्रजन्ति॥१॥ वैरावर्ताज्जनानां धनसुखहरणां सर्वदेशे महर्घं दुःखं वैराग्ययोगः सकलजनमनस्यान्ननाशः पशूनां। धान्यं सेवार्द्धनाशो रसकससहितं सर्वशून्यं जनानामित्येते सर्वदेशाः परिजनविकलाः सूर्यपुत्रे वृषस्थे॥२॥

अर्थ—शनिश्चरके मेषराशिपर होनेसे धान्यनाश तैलंग और वंगदेशमें विग्रह पाताल नागलोक दिशा विदिशामें राजा भयसे भागते फिरें सम्पूर्ण लोकमें क्लेश हो मनुष्य जहां तहां याचना करते फिरें ॥ १ ॥ मनुष्योंमें वैर धन और सुखका नाश सब देशमें अन्नकी तेजी दुःख वैराग्य सब मनुष्योंके मनमें ताप पशुओंका नाश धान्यका नाश रस तेज शून्यता इस प्रकार अनेक देशोंमें व्याकुलता वृषके शनिश्चरमें होती है ॥ २ ॥

आद्यं कार्पासलोहलवणतिलगुडाः सर्वदेशे महर्घाः मंजिष्ठा हेमतारे वृषभहयगजं सर्वधान्यं समर्घं। सप्तद्वीपे समुद्रे सुखिजनसहिते सर्वसौख्यं नरेन्द्राः सर्वत्रो यान्ति मेघाः सकलमुनिमतं मैथुने सूर्यपुत्रे ॥ ३ ॥ रोगा नित्यं ग्रसन्ति प्रचुरपरिभवो वित्तनाशस्तथैव कार्ये हानिर्विरुद्धैः सकलभयजने देशचिन्ताविषादः। आरावोऽम्बुपातष्टलटलपृथ्वी सर्वलो

कार्द्विनाशः सर्वस्मिन्राजयुद्धं पशुधनहरणं कर्कटे सूर्यपुत्रे ॥ ४ ॥ भूम्यां नाशश्चतुष्पाद्गजहयवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगैः पीड्यन्ते सर्वदेशाउदधिपुरपथे दुर्गदेशेषु भंगः । म्लेच्छान्तो धान्यभावो धनसुखमवनीशेन्द्रचन्द्रप्रतापः सर्वे ते यान्ति काले भ्रमति युगमिदं सिंहगे सूर्यपुत्रे ॥ ५ ॥ काश्मीरे याति नाशं हयरवदलिते विग्रहं तत्र कुर्याद्रत्नस्थं धातुरूप्यं गजहयवृषभं छागलं माहिषं च । मांजिष्ठाकुंकुमाद्यं रसकससहितं यान्ति सर्वे समघं कन्यायां सूर्यपुत्रे सकलजनसुखं संग्रहे सर्वधान्यम् ॥ ६ ॥ धान्यानां महर्घता गरगरलधरा क्लेशपूर्णाश्चदेशाः पृथिव्यांकम्पमाप्ता सकलमुनिवरे देहपीडापिनित्यं । सर्वे ते यान्ति नाशं नरपुरनगराण्यम्बुदोप्यल्प एव चक्रावर्तो जनानां सुखधनरहितः सूर्यपुत्रे तुलायां ॥ ७ ॥

अर्थः—कपास लोहा लवण तिल गुड सब देशमें अकरे, मजीठ सुवर्ण वृषभ हाथी घोडे सस्ते, सप्तद्वीप सागरपर्यन्तके वासी प्रसन्न, राजोंको सर्व सुख सब स्थानमें श्रेष्ठ वर्षा यह मिथुनके शनिका फल है ॥ ३ ॥ कर्कके शनि होय तो रोग अधिक तिरस्कार धननाश कार्यमें हानि मनुष्योंमें विरोध देशमें चिन्ता और विषाद शब्दयुक्त जलका वेग हो जिससे पृथ्वी दुःखी लोकविनाश राजोंमें युद्ध पशु और धनका हरण हो ॥ ४ ॥ सिंहके शनिमें चतुष्पद हाथी घोडे आदिका नाश हो युद्ध दुर्भिक्ष और रोग फैले सब देशोंमें पीडा सागरतटके देशोंमें क्लेश हो म्लेच्छोंसे प्रजा दुःखपावे धान्यभाव अच्छा राजोंको धनसुख और उनका प्रताप फैले और पीछे सब दुःख पावे दुःखी हो प्राणी भ्रमण करे ॥ ५ ॥ कन्याके शनि हो तो कश्मीरदेशका नाश हाथी घोडोंमें क्लेश विग्रह रत्न धातु चांदी हाथी घोडे बैल छाग भैंसे मजीठ कुंकुम यह सस्ते हों सब जनोंको सुख धान्यसंग्रह करना उचित है ॥ ६ ॥ तुलाके शनि हों तो धान्यभाव तेज पृथ्वी व्याकुल देशोंमें भरपूर क्लेश पृथ्वी कांपे मुनियोंको देहपीडा, नगर गांव कहीं उजडें वनोंका नाश हो जल थोडा वर्षे पवन चले मनुष्य सुख और धन रहित हों ॥ ७ ॥

भूमीशाः क्रोधपूर्णा विषधरमुदिताः पक्षिणां सन्निपातः सप्तद्वीपप्रकम्पान्नरपतिमरणं यांति मेघा विनाशं । वैकल्पाद्व्याप्यमानः सकलजनरिपुः सर्वकार्यं निहन्ति सर्वे ते यान्ति नाशं सकलगुणविधेर्वृश्चिके सूर्यपुत्रे ॥ ८ ॥ सप्तद्वीपाः समुद्राः सकलमुनिवनं वायुपूर्णा धरित्री विप्रा वेदांगलीना जगति जनसुखं सर्वतो यातिसस्यं । धान्यं चारु प्रभूतं रसकसबहुलं याति धान्यं प्रसारं सर्वेषां वा जनानां प्रहसति वदनं सूर्यपुत्रे धनस्थे ॥ ९ ॥ रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभं सूत्रकार्पासमूल्यं सर्वं

स्मिन्धान्यमात्रं भवति भुवितले सर्वनाशश्च सस्ये। पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णा भवति पथि भयं सर्वरोगाद्विनाशः चिन्तानस्था नृपाणां भवति सति व ले सूर्यपुत्रे मृगस्थे ॥ १ ॥ लक्ष्मीप्राकार सौख्यं धनकण सहितं देशसौख्यं नृपाणां धर्माधर्मौ विधत्ते सुखनिरतजनो मेघपूर्णा धरित्री। मांगल्यं सर्वलोके भवति बहुशः सस्यनिष्पत्तिहर्षो भूमी रम्या विवाहैर्जनसुखसमयः कुंभगे सूर्यपुत्रे ॥ ११॥ पृथिव्यां कंपमात्रं प्रचलति पवनः कम्पते नागलोकः सप्तद्वीपेषु सिन्धोर्गिरिखरगहने सर्ववृक्षादिहानिः। नाशः पृथिवीपतीनां जनपदविलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं चक्रावर्तैः समस्तंभ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्यपुत्रे ॥ १२ ॥

अर्थः-वृश्चिकके शनि हो तो राजा क्रोधकरे सर्प प्रसन्न पक्षियोंमें युद्ध सातद्वीपकी पृथ्वीमें भूचाल हो राजाका मरण मेघोंका नाश मनुष्योंमें कलह विकल्पशत्रुता फैले कार्योंका नाश और गुणियोंको क्लेश हो ॥ ८ ॥ धनके शनि हो तो सातद्वीप समुद्र सकल मुनियोंके वन और पृथ्वी वायुसे पूर्ण हो ब्राह्मणवेदांगोंमें प्रीति करै ससारके मनुष्योंको सुख धान्यकी सब प्रकार उत्पत्ति रस अधिक धान्य बहुत हो सब मनुष्य प्रसन्नमुख हों ॥ ९ ॥ मकरके शनि हों तो चादी ताम्बा सोना हाथी घोडे बैल सूत कपास इनका भाव बहुत तेज हो धान्य बहुत न्यून खेतीका नाश राजा क्रोधपूर्ण मार्गमें भय रोगसे प्रजाका नाश राजोंमें चिन्ता अधिक हो ॥ १० ॥ कुम्भके शनि हों तो लक्ष्मीकी प्राप्ति देशमें सुख धन अधिक राजोंका प्रसन्नचित्त धर्माधर्मयुक्त मनुष्य, पृथ्वी मेघोंसे पूर्ण सब लोकमें मगल धान्यकी प्राप्ति प्रसन्नता पृथ्वी मनोहर मनुष्य विवाहादि मगलसे पूर्ण हों ॥ ११ ॥ मीनके शनि हों तो पृथ्वी हलें पवन तीव्र चले नागलोक कापैं समुद्र उछलें पर्वत और वृक्षादिकोंकी हानि राजोंका विनाश मेघोंका अभाव और प्रचण्ड पवनसे सारा जगत् भ्रमै ॥ १२ ॥

मेषेशनेरुदयने जलवृष्टिरुच्चैः सौख्यं जनं च वृषभगे तृणकाष्ठकष्टम्। अश्वेषु रोगकरणं च महर्घभिक्षुजन्यं गुडादिमिथुनेऽति सुभिक्षमेव ॥ १ ॥ वृष्टिर्न कर्कगृहगे सरसां च शोपः सर्वत्रमारिभयमाशुजनेषुपीडा। पीडागमः क्वचन सिंहगते शिशूनां नाशप्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ २ ॥ कन्याशने रुदयता किल धान्यनाशः पृथिवी ससंधिरतुलस्तुलया न वर्षा। गोधूमवर्जितमही तदसौ फलं स्यात् अस्वस्थताधनुषिमानुपजातिरोगं ॥ ३ ॥ स्त्रीणां शिशोश्च विपदोखिलधान्यनाशः शौरेर्मृगेभ्युदयने नृपयुद्धबुद्धिः। नाशश्चतुष्पदकुले कलशेथ मीने दीने जने ननु शनेरुदयान्नधान्यम् ॥ ४ ॥

अथ अस्तविचारः।

मेषेस्तं गमने शनेर्भुविजने धान्यं महर्घं वृषे सर्वत्रापि गवादिपीडनमहो पण्यांगना मैथुने । दुःखार्तो पथि कर्कटे रिपुभयं कार्पासधान्यादिषु दौर्लभ्यं जलदेष्ववर्षणविधिः सिंहे तु प्रचुरव्यथा ॥ १ ॥ धातूनां च महर्घतान्नविगमः कन्यास्थितावग्रतो लोकेन्येपि तुलाबलेन सततं निष्पत्तिरानंदतः । स्वल्पं धान्यमलौ जने नृपभयं पीडापि शलभादिजा चापे लोकसुखं मृगेपि पवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः ॥ २ ॥ कुंभे शीतभयं चतुष्पदपरिग्लानिश्च हानिर्गवां मीनेहीनतया घनस्य न जलं क्वापीह वापीस्थले । संतापी नृपतिः स्वधर्मविमुखः पापी जनः पीडया मंदंमंदसमंसभूपतिरणौ मन्देस्तमप्याश्रिते ॥ ३ ॥

अर्थः–मेषका शनि उदय होय तो जलवृष्टि मनुष्योंमें सुख वृषमें तृणकाष्ठका कष्ट अश्वोंमें रोग ईश्वरसे उत्पन्नहुए पदार्थ अकरे हों, और मिथुनमें उदय होय तो सुभिक्ष हो ॥ १ ॥ कर्कमें उदय होय तो वर्षाका अभाव रसोंमें शुष्कता सर्वत्र मरीका भय जनोंमें पीडा सिंहके होनेमें पीडा बालकोंको और राजाका अधर्मशासन प्रगट हो ॥ २ ॥ कन्याके शनि उदय हो तो धान्यनाश तुलाके उदयमें पृथ्वीमें सधि और महावर्षा हो पृथ्वी गैहू रहित हो यही फल वृश्चिकके उदयमें जानना ॥ ३ ॥ धनमें शनि उदय हो तो मनुष्योंमें अस्वस्थता मनुष्यजातिमें रोग स्त्री और बालकोंमें विपद धान्यका नाश हो मकरमें उदय हो तो राजोंमें युद्ध बुद्धि नाश चौपायोंमें कष्ट कुंभमीनमें शनिउदय हों तौ मनुष्य दीन, धान्य कमती हो ॥ ४ ॥ अब अस्तका विचार ॥ मेषमें शनि अस्त हो तो धान्य भाव तेज हो वृषमें गौ आदिमें सर्वत्र पीडा हो वेश्याओंको पीडा मिथुनमें दुःख कर्कमें शत्रुका भय कपास धान्यादि दुर्लभ हो बादलोंसे जल न वर्षे सिंहमें अधिक व्यथा हो ॥ १ ॥ कन्यामें अस्त हो तो धातुभाव तेज अन्नभाव तेज तुलामें अस्त हो तो लोकोंमें आनन्द हो स्वल्पधान्य उपजे वृश्चिकमें प्राणियोंमें भय और पीडा राजोंद्वारा हो टीडीशलभादिकी पीडा हो धनमें लोकोंको सुख मकरमें पवनप्रचण्ड वर्षाका अभाव स्त्रियोंकी मृत्यु अधिक हो ॥२॥ कुंभमें शीतका भय चौपायोंमें ग्लानि गौओंकी हानिहो मीनमें वर्षा थोडी कहीं कहीं जलकी प्राप्ति हो राजा अपनेधर्मसे विमुख दुःखदेनेवाले हों पापीजनोंको थोडी पीडा राजोंमें युद्ध हो ॥ ३ ॥

कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वास्थितः।शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ १ ॥ यस्मिन्सम्वत्सरे राहुर्मीनराशौ प्रजायते । तस्मिन्मासे भयं विद्युद्दुःखकष्टसमागतः ॥२॥ एवं ज्ञात्वा च कर्तव्यो यावन्नायाति संग्रहः । संग्रहः सर्वधान्यानां लाभो द्वित्रिचतुर्गुणः ॥३॥ वर्षमेकं

तु दुर्भिक्षं रौरवं परिकीर्तितम् । प्राप्ते त्रयोदशे मासे सुभिक्षमतुलं भवेत् ॥ ४ ॥ कुंभे राशौ यदा राहुर्देवाङ्गोगोपि संगता । तदालोक्य विधातव्यः शणसूत्राणि संग्रहः ॥५॥ भांडानि च समस्तानि कांस्यादीनि विशेषतः ॥ संगृह्यते मासषट्कं विक्रेतव्यानि सप्तमे ॥६॥ लाभश्चतुर्गुणो ज्ञेयो भौमराहुद्वयस्थितो । नान्यथेति च वक्तव्यं यावद्युक्तिस्थिताविमो ॥ ॥ ७ ॥ सैंहिकेयो यदा याति राशीमकरनामकम् । तदा संवीक्ष्य कर्तव्यः पट्टसूत्रस्य संग्रहः ॥ ८ ॥ धृत्वा मासत्रयं यावत्पट्टसूत्रं यथातथा । प्राप्ते चतुर्थके मासलाभः स्यात्त्रिकपंचकः ॥ ९ ॥ सैंहिकेयो यदा याति धनराशौ क्रमात्ततः । महिष्याहेस्तदा कार्यः संग्रहो वसुधातले ॥१० ॥ हयानां च गजानाच गर्दभानां विशेषतः । लाभश्चतुर्गुणः प्रोक्तो मासे द्वितीय पंचमे ॥ ११ ॥ वृश्चिकस्थो यदा राहुर्देवाङ्गोमस्यसंगमः । तदा ज्ञात्वा च कर्तव्यः संग्रहो घृतवाससाम् ॥ १२ ॥ पंचमासान्व्यतिक्रम्य षष्ठे कार्योस्य विक्रयः । लाभश्च द्विगुणो ज्ञेयो निश्चितं शास्त्रभाषितम्१३ तुलाराशि यदाराहुः संस्थितः संक्रमेरवेः । तदाभवतिदुर्भिक्षं पितुः पुत्रस्य विक्रयः ॥ १४ ॥ वार्षिकं संग्रहं कुर्याद्व्रीहीणां च विशेषतः । गणकानां तथा लोके लाभः कंबलकांस्यतः ॥ १५ ॥

अर्थः—शनि कन्या मिथुन मीन वृषमें स्थित होकर दुर्भिक्ष और राजोंमें युद्ध करता है ॥ ॥ २ ॥ अथराहुविचारः ॥ जिस सम्वत्सरमें राहु मीन राशिका हो उस महीनेमें बिजलीका भय और दुःख कष्टका समागम हो ऐसा विचार कर अन्नका संग्रह करना चाहिये इसमें दूना तिगुना लाभ हो ॥ ३ ॥ एक वर्षतक महा दुर्भिक्ष पडे और दुःख हो तेरहवें महीनेमें सुभिक्ष हो ॥४ ॥ कुंभराशीमें यदि राहु मंगलके साथ आवे तो सन सूत्रका संग्रह अवश्य करना ॥ ॥ ५ ॥ सम्पूर्ण कांसीके वर्तन छः महीनेतक संग्रह कर सातवें माससें वेचें ॥ ६ ॥ इन राहु मंगलकी स्थितिमें चौगुना लाभ हो इसमें कुछ अन्यथा नहीं है ॥ ७ ॥ राहुके मकरराशीमें होनेपर रेशमी वस्त्र और सूतका संग्रह करना उचित है ॥ ८ ॥ और यह वस्त्रादि तीन महिने रखकर चौथे मासमें वेचनेसे तिगुना पांचगुना लाभ हो ॥ ९ ॥ धनराशीमें राहु हो तो महिषी घोडे हाथी गर्दभोंका संग्रह करनेसे दूसरे पांचवें महीनेमें पंचगुना लाभ हो ॥ १० ॥ ११ ॥ और वृश्चिकके राहु होकर यदि मंगलके साथ हों तो यह जानकर घी और कपडेका संग्रह करना उचित है ॥ १२ ॥ पांच महीनेके उपरान्त छठे महीनेमें वेचना उचित है अवश्य दूना लाभ होगा ॥ १३ ॥ तुला राशिमें यदि संक्रान्तके दिन राहु हो तो महा दुर्भिक्ष पडे पिता पु-

त्रकोभी वेचदें ॥ १४ ॥ ऐसे समय जौयवका फसलमें, संग्रह करना उचित है ज्योतिषी महाशयोंकों लाभ हो ऊनीवस्त्र और कांसीके वस्त्रोंमें लाभ हो ॥ १५ ॥

कन्यागतो यदा राहुः संभवेन्मासपंचके । तदा विज्ञाय संग्राह्य धातकी पिप्पलीद्वयम् ॥ १६ ॥ मासमेकं च संग्राह्य धातकीपुष्पविक्रये । मास द्वयेन पिप्पल्यालाभो भवति वांछितः ॥ १७ ॥ सिंहराशौ क्रमाद्वक्रो यदा राहौ प्रवर्तते । अवश्यं संग्रहः कार्यस्तदा चोष्येषु वस्तुषु ॥ १८ ॥ आदौ धान्यकमादाय शुंठीमरिचपिप्पली । जीरकं लवणं सौवर्चलसैंधवखादिरः ॥ १९ ॥ धृत्वा संवत्सरं यावत्षण्मासान्तेस्य विक्रयः । लाभश्चतुर्गुणं तस्य यदिसौम्येन वेध्यते ॥ २० ॥ कर्कटे तु यदा राहुस्तिष्ठत्येव महाबलः । अवश्यं तस्कराः सर्वे लोकपीडां प्रकुर्वते ॥ २१ ॥ सूक्ष्मता स्यात्व्रीहीणां समर्घ स्वर्णरूप्यकम् । कांस्यं ताम्रं च संग्राह्य षण्मासे लाभदायकः ॥ २२ ॥ मिथुने च यदा राहुः स्वोच्चस्थानवशात्तदा । घृतधान्यं समर्घं स्यान्माणिक्यानां समर्घता ॥ २३ ॥ सैंहिकेयो यदा याति भौमग्रहनिरीक्षितः । वृषराशौ क्रमेणैव निधानं लभते जनः ॥२४॥ संग्रहस्सर्वधान्यानां घृतं तैलं विशेषतः । कुंकुमं गंधद्रव्यं च कार्पासश्चगुडस्तथा ॥ २५ ॥ मासषट्कं च धृत्वैवं विक्रेयं सप्तमे पुनः । ज्ञेयश्चतुर्गुणो लाभः सत्यमेव हि नान्यथा ॥ २६ ॥ कांस्यं च लाक्षा मंजिष्ठा शुंठीमरिचहिंगवः । एषां संग्रहणं कार्यं षण्मासश्चाधिनिश्चितम् ॥ २७ ॥ मेषराशौ यदा राहुः संस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः । दैवाद्ग्रहणसंयोगे दुर्भिक्षं भवति ध्रुवम् ॥ २८ ॥

अर्थः—जो कन्याके राहु हों तो पाच महीनेतक धवई और दोनो पीपलका संग्रह करना उचित है ॥ १ ॥ एक महीनेतक उसे रख छोड़े धायके फूल और पीपल दो महीने पीछे वेचनेमें मनवांछित लाभ हो ॥ १६ ॥ यदि राहु सिंहराशिमें वक्री हो जाय तो चोष्यवस्तुओंका संग्रह करना उचित है ॥ १७ ॥ धनिया सोंठ मिर्चे पीपल जीरा लवण सौवर्चल (कालानून) सेंधा खदिर ॥ १९ ॥ यह सम्वत्सरमें ग्रहण करे पीछे छः महीनेमें वेचें यदि चंद्रमासे राहुका वेध हो तो चौगुना लाभ हो ॥ २० ॥ कर्कका राहु हो तो तस्कर प्रजाको महा पीड़ा दें ॥ २१ ॥ जो थोड़े सोना चांदी कांसी तांबा यह सस्ता हो छः महीनेमें लाभदायक है ॥ २२ ॥ जो मिथुनके राहु अपने उच्चस्थानमें प्राप्त हों तो धान्य मोती माणिक मूंग सस्ते हों ॥ २३ ॥ और जो राहु भौमकी दृष्टियुक्त वृषराशिको प्राप्त हो तो मनुष्योंको

उचित है कि ॥ २४ ॥ नमसे सब धान्योंका संग्रह करे विशेषकर घी तेल कुमकुम गंध-द्रव्य कपास गुडका संग्रह करना ॥ २५ ॥ छःमास इनको रखकर सातवेंमें बेचे तो सातवें महीनेमें चौगुना लाभ अवश्य होगा ॥ २६ ॥ कासी लाख मजीठ सोंठ मिर्च हींग इनका छः महीनेतक अवश्य संग्रह करे ॥ २७ ॥ मेषराशिमें राहु हो और दैवसे चन्द्रमा सूर्यका ग्रहण हो तो अवश्य दुर्भिक्ष हो ॥ २९ ॥ इति राहुविचारः ॥

उपरागो यदा मेषे पीडयन्ते यं तदा जनः । काम्बोजांध्रिकिरातांश्च पां चालाश्चेतितैलङ्गकाः ॥१॥ वृषे च ग्रहणे गोपाःपशवः पथिका जनाः महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ २ ॥ सूर्याचन्द्रमसो ग्रासो मिथुने च वरांगना।पीडचन्ते वाल्हिका लोका यमुनातटवासिनः॥३॥ कर्कटे ग्रहणे पीडा गर्दभानां च जायते । आभीरवर्बराणां च पीडा च महती मता ॥ ४ ॥ सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनां । नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ ५ ॥ कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटा शालिजातिषु । कवीनां लेखकानां च गायकानां धनक्षयः ॥ ६ ॥ तुलायामुपरागे च दशार्णवककाह्वः । मरुतश्चापरान्त्याश्च पीडयन्ते य तिसाधवः ॥ ७ ॥ वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातेः प्रजायते।यदुवरस्य मं द्रस्य चौलयौधेयकस्य वा ॥८॥ यदोपरागश्चापे स्यात्तदावंत्याश्च वाजि तः । विदेहमल्लपांचालः पीडयन्ते भिषजो विशः ॥ ९ ॥ मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मंत्रवादिनां । स्थविराणां श्रेष्ठानां च चित्रकूटस्यसंक्षयः ॥ १० ॥ कुंभोपरागे पीडयन्ते गिरिजाः पश्चिमाजनाः । तस्कराद्रिरदा भीराः प्रजानां दुःखदायकाः ॥ ११ ॥ मीनोपरागे पीडयन्ते जलद्रव्या णि सागराः । जलोपजीविनो लोकाभवित्यां ये च पण्डिताः ॥ १२ ॥

अर्थः—मेषराशिके ग्रहणमें मनुष्योंको पीडा काम्बोज आंध्र किरात पांचाल तैलंग देशमें पीडा हो ॥ १ ॥ वृषराशीके ग्रहणमें गोप पशु पथिक और बडेलोगोंको पीडा हो ॥ २ ॥ मिथुनमें सूर्य और चन्द्रमाका ग्रहण हो तो वेश्या वाल्हीकदेशवासी और यमुनाके किनारे रहनेवालोंको पीडा हो ॥ ३ ॥ कर्कमें ग्रहण हो तो गर्दभोंको तथा आभीर और वर्बरोंको महापीडा हो ॥ ४ ॥ सिंहराशीके ग्रहणमें सब वनवासी दुःखी हों राजा और साहूकारोंका धनक्षय हो ॥ ५ ॥ कन्याके ग्रहणमें त्रिपुट और शालिजाति कवि लेखक और गानेवालोंके धनका क्षय हो ॥ ६ ॥ तुलामें दशार्ण वल काह्व मरु और अपरान्तदेशवासी तथा साधुओंको पीडा हो ॥ ७ ॥ वृश्चिकके ग्रहणमें सबजातियोंको पीडा हो, यदुवर मन्द्र चौल यौधेय जाति दुःखी हों ॥ ८ ॥ धनके ग्रहणमें अवन्तीदेशके घोडे विदेह मल्ल पांचालदेशवासी

वैद्य और वैश्य पीडा पावैं ॥ ९ ॥ मकरके ग्रहणमें नीच और मंत्रवादियोंको पीडा हो स्थविर–वृद्ध और नठ दुःखी हों चित्रकूटका क्षय हो॥ १० ॥ कुंभराशीके ग्रहणमें पश्चिमदेशके पर्वतवासी पीडित हों तस्कर दरिद आभीर प्रजाको दुःख दें॥ ११ ॥ मीनराशीका ग्रहण हो तो जलद्रव्यमें पीडा जलजीविका करनेवाले मल्लाह आदि और नक्षत्रविद्या वाले ज्योतिषी पण्डितादिकों पीडा हो॥ १२ ॥ इति राशिग्रहविचारः॥

अश्विन्यां पीडितायां स्यात् मुद्गादीनां महर्घता । भरण्यां श्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत् ॥ १ ॥ कृत्तिकायां हेमरूपाप्रवालमणिमौक्तिकं । संग्रहीतं लाभदायी मासे च नवगे स्मृतं ॥ २ ॥ रोहिण्यां सूत्रकार्पाससं ग्रहो लाभदायकः । दशमासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो न चेदिह ॥ ३ ॥ मृगशीर्षेपि मंजिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकं । महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितं ॥ ४ ॥ घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मासपंचके । तैलाल्लाभः पुनर्वस्वोः मास पंचकतः परं॥ ५ ॥ पुष्येमासैस्त्रिभिर्लाभोभवेद्गोधूमसंग्रहे । आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपंचके॥ ६ ॥ मघाचतुष्टये चोलाचणकः खलुतुष्टये । चित्रायां च युगन्धर्याः मासोलाभद्वयात्यये॥ ॥ ७ ॥ त्रिपंचनवभिर्मासैः स्वातौ लाभस्तथा तथा । विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसंभवः ॥८ ॥ राधायां कोद्रवाल्लाभो मासैर्नवभिराप्यते । ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पंचमासेधनोदयः ॥ ९॥ तंदूलोन्यस्तथा मूले पूषायां श्वेतवस्त्रतः । ऊषायां श्रीफलात्पुंवा सर्वत्रमासपंचकं॥१० ॥ श्रवणे तुवरीलाभः धनिष्ठायां तु माषतः । चणकेभ्योतिवारुण्यां तेभ्यः पूभानिपीडने॥ ११ ॥ लाभस्त्रिमासि निर्दिष्ट उभाभ्यां लवणादितः । मासषट्काल्लाभदृष्टो रेवत्यां मुद्गमाषतः ॥ १२ ॥

अथ केतुविचारः।

खेरस्ताचलप्राप्तो पश्चिमायां निरीक्षते । यदावन्हिशिखाकारास्तदा केतूदयोवदेत् ॥ १३ ॥ अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्यादश्मकपालकं । भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गपं ॥ १४ ॥ रोहिण्यां सूरसेनेशं मृगे चोशीनराधिपः । आर्द्रायां जालणाधीशमश्मकेशं पुनर्वसौ ॥ १५ ॥

अर्थः–अश्विनीमें ग्रहण हो तो मूंगादि महंगे, भरणीमें हो तो श्वेतवस्त्रोंसे तीनमासमें लाभ हो॥ १ ॥ कृत्तिकामें हो तो सुवर्ण चांदी प्रवाल मणि माणिक ग्रहण करनेसे लाभदायक

हैं ॥ २ ॥ रोहिणीमें सूत कपासका संग्रह करनेसे लाभ हो दश महीने पीछे, और चन्द्रग्रहण हो तो यह फल न हो ॥ ३ ॥ मृगशिरमें मजीठ लाख क्षार कुसुम यह संग्रह करे देशमें महीनेमें लाभदायक है ॥ ४ ॥ आर्द्रामें ग्रहण हो तो घी अकरा हो, पांचवें महीनेमें लाभ हो पुनर्वसुमें पांचवें मासमें तेलमें लाभ हो ॥ ५ ॥ पुष्यमें हो तो गेहूके संग्रहसे तीनमासमें लाभ हो आश्लेषामें पांचवे महीने मूंगसे लाभ हो ॥ ६ ॥ मघादिचारनक्षत्रोंमें हो तो चणकादि चार वस्तुओंसे लाभ हो चित्रामें सुगन्धोंसे दोमासमें लाभ हो ॥ ७ ॥ स्वातिमें हो तो तीसरे पांचवें नौवें मासमें, अन्नसे लाभ हो विशाखामें छठे महीने कुलथीसे लाभ हो ॥ ८ ॥ अनुराधामें हो तो नौ मासमें कोदोंसे लाभ हो ज्येष्ठामें गुडर षांडसे पांचमें मासमें लाभ हो ॥ ९ ॥ मूलमें चावलोंसे पूर्वाषाढामें श्वेत वस्त्रोंसे उत्तराषाढमें श्रीफल पुगीफलसे पांचमें मासमें लाभ हो ॥ १० ॥ श्रवणमें शतावरीसे लाभ हो धनिष्ठामें उदोंसे शतभिखामें चनोंसे लाभ पूर्वाफाल्गुनीमें पीडा ॥ ११ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें तीनमासमें लवणसे लाभ हो रेवतीमें हो तो मुंग उर्दसे छठे मासमें लाभ हो ॥ १२ ॥ अथ केतुविचार ॥ रविके छिपनेपर जो अग्नि-पूंछकी समान दीखे उसे केतु कहतेहैं ॥ १३ ॥ अश्विनीमें केतुका उदय हो तो अश्मदेशके राजाका नाश भरणीमें किरातदेशप। कृत्तिकामें कलिंग देशका पति नष्ट हो ॥ १४ ॥ रोहिणीमें शूरसेन देशका पति, मृगशिरमें उशीनरदेशका स्वामी। आर्द्रामें जालणदेशका स्वामी पुनर्वसुमें अश्मकका स्वामी नष्ट हो ॥ १५ ॥

पुष्ये च मगधाधीशं सार्पे केरलयाधिपम् । मघायामंगनाथं च पूषायां पांड्यनायकम् ॥ १६ ॥ उज्जयिन्या नृपं हन्यादुत्तराफाल्गुनी गतः । दंडकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूपतिम् ॥ १७ ॥ स्वात्यां काश्मीरकम्बोजभूपतीनां विनाशकः । इक्ष्वाकुकुलेशानां विशाखायां च घातकः ॥ ॥१८॥ मैत्रे पौंड्रमहीनाथं सार्वभौमं तथैंद्रभे । अंध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥१९॥ पूर्वाषाढाकाशिराजमुत्तराहन्ति केकतम् । बोधे शिविवेदीशं श्रवणे केकयेश्वरम् ॥ २० ॥ वामचेपंचजन्येशं वारुणे सिंहलेश्वरम् । पूर्वजायामंगनाथं नैमिशेपेसुखागतो ॥ २१ ॥ रेवत्यामुदितः केतुः किराताधिपघातकः । धूम्राकारसपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ २२ ॥ आषाढयोर्द्वयोर्मध्ये यदा पर्वत्रयं भवेत् । क्षितौ भवेन्महायुद्धं नृपमृत्युंसमादिशेत् ॥ २३ ॥ यत्र राशौ भवेत्पर्व तस्यवाच्यं क्रयाणकम् । अत्यर्थं लभते मूल्यं पीड्यमानं च राहुणा ॥ २४ ॥

इति श्रीमेघमहोदये महामहोपाध्याय मेघविजयगणिविरचिते सम्वत्सरनिर्णयाधिकारः पंचमः समाप्तः ।

अर्थः—पुष्यमें उदय हो तो मगधाधिपति आश्लेषामें केकयाधिपति मघामें अंगनाथ पूर्वाफाल्गुनीमें पांण्डयदेशका स्वामी ॥ १६ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें उज्जयनीके राजाका हस्तमें दंडकदेशके राजाका चित्रामें कुरुदेशाधिपतिका ॥ १७ ॥ स्वातिमें उदय हो तो काश्मीर काम्बोजदेशके स्वामियोंका विशाखामें हो तो इक्ष्वाकुके कुलवालोंका नाशक है ॥ १८ ॥ अनुराधामें पौंड्रदेशके स्वामीका ज्येष्ठामें सार्वभौम (राजाधिराज) का, मूलमें अंध्र और मद्रदेशके अधिपतिका ॥ १९ ॥ पूर्वाषाढमें काशीराजका उत्तरामें केतकदेशाधिपतिका, अभिजितमें शिविवेदीशका, श्रवणमें केकयदेशके राजाका ॥ २० ॥ धनिष्ठामें पांचालदेशाधिपतिका, शतभिषामें सिंहलदेशके राजाका पूर्वाभाद्रपदामें अंगदेशके राजाका, उत्तराभाद्रपदामें नैमिषदेशाधिपतिका ॥ २१ ॥ रेवतीमें उदय होकर केतु किरातदेशके राजाका नाशक है, और जो केतु धूम्राकार और बडी पूंछका हो वह विश्वको पीडा देता है ॥ २२ ॥ आषाढादि दो मासमें जो तीन पर्व हो तो पृथ्वीमें महायुद्ध और राजोंकी मृत्यु हो ॥२३॥ जिस राशीमें ग्रहण हो उस राशीकी बेचनेकी वस्तु बहुत महंगी हों यह चन्द्रग्रहणमें जानना ॥२४॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे सम्वत्सरनिर्णयाधिकारः पंचमः समाप्तः।

यदि कर्कार्कसंक्रान्तौ कुजार्कशनिसोमजाः। अल्पनीरं रणं घोरं स्यात्तदा नीचबुद्धिदः ॥ १ ॥ मेषकर्कमकरेऽर्कसंक्रमे क्रूरवारसहिते जलं नहि। धान्यमल्पतरमेव वत्सरे विग्रहो विपुलरोगतस्कराः ॥ २ ॥ चैत्रे च श्रावणे मासे पंच जीवो यदा भवेत्। दुर्भिक्षं रौरवं घोरं छत्रभंगं न संशयः ॥ ॥ ३ ॥ पंचार्कवासरे रोगाः पंचभौमे भयं महत्। दुर्भिक्षं पंचमंदेषु शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥ ४ ॥

अर्थः—जो कर्ककी संक्रान्ति मंगल रवि शनि बुधवार हो तो थोडी वर्षा, घोर युद्ध नीच बुद्धि प्राणी हों, वा नीचोंको बुद्धि हो ॥ १ ॥ जो मेष मकर कर्ककी संक्रान्ति क्रूर-वार हो तो वर्षा थोडी वर्षे, धान्य थोडे उपजें, रोग विग्रह चोर अधिक हो ॥ २ ॥ चैत्र और श्रावणमासमें जो पांच बृहस्पति हों तो दुर्भिक्ष घोर दुःख छत्रभंग हो ॥ ३ ॥ पांच रविवार होनेसे रोग पांच मंगल होनेसे महाभय पांच शनिसे दुर्भिक्ष शेषवार शुभ है ॥ ४ ॥

एकमासे रवेर्वाराः पंच न स्युः शुभावहाः। अमावास्यार्कवारेण महर्घत्वविधायिनी ॥ ५ ॥ मंगले म्रियते राजा प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे। बुधे रसक्षयो भूम्यां दुर्भिक्षस्तु शनैश्चरे ॥ ६ ॥ मासाद्यदिवसे सोमसुतवारो यदा भवेत्। धान्यं महर्घं त्रीन्मासान् भाविवर्षेपि दुःखकृत् ॥ ७ ॥ पंचार्कयोगे वैशाखे वृष्टिगर्भविनाशनी। पंचभौमे भयं वन्हेः वृष्टिरोधाय कुत्रचित् ॥ ८ ॥ प्रतिपत् सर्वमासेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी। ज्येष्ठमासे विशेषेण वर्षभंगाय जायते ॥ ९ ॥ चित्रास्वातिविशाखासु यस्मिन्मासे

वर्तमान शाकेके अंकमें ९२५ घटावे शेष अंकोंमें १९ का भाग दे जो तीन शेष रहें तो चैत्रमास अधिक जानना ११ रहें तो वैशाख और ००,८ बचें तो ज्येष्ठमास अधिक जानना सोलह रहें तो आषाढ अधिक हो, पांच बचें तो श्रावण, १३ रहें तो भाद्रपद, दो शेष रहें तो आश्विनकी वृद्धि और अन्य शेष रहे तो कोई मास अधिक नहीं होगा॥ ३ ॥ जो दो अमावास्योंके बीचमें संक्रान्ति न हो तो वह अधिकमास होताहै और जो दो अमावास्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रान्ति हों तो क्षयमास जानना कार्तिकादि तीन मास क्षयमास होते हैं और जिस सम्वत्सरमें क्षयमास होगा उसी सम्वतमें अधिक मास दो होंगे॥ ३ ॥

दुर्भिक्षंश्रावणयुगे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः। भाद्रपादद्वितये धान्यनिष्पत्तिस्याद्यथेहितं ॥ ४ ॥ आश्विनाद्वितये भूम्यां सैन्यचोररुजं भयं। सुभिक्षं के च नाप्याहुर्दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ॥ ५ ॥ सुभिक्षं कार्तिकयुगे क्वचिद्दुःखं रणान्नृणां। मार्गशीर्षयुगे देशे जायते परमं सुखं ॥ ६ ॥ पौषयुग्मे सुभिक्षं च मंगलं नृपतेर्जयः। राज्यदण्डपरो लोको लोके मतिविपर्ययः ॥ ७ ॥ माघद्वयेशुविक्षेमं राज्यानां च भयं तथा। सुभिक्षं फाल्गुनयुगे क्षत्रियाणां शिवं भवेत् ॥ ८ ॥ चैत्रद्वयेशुभं धान्ये वैश्यानामुदयो महान्। वैशाखयुग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुभः क्वचित् ॥ ९ ॥ ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यानि क्षितिसत्तम। द्व्याषाढे व्यथा किंचित् खण्डवृष्टिः क्वचित्पुनः ॥ १० ॥ क्वचिद्द्विकार्तिके दुःखं द्विमाघेप्यशुभं मतं। द्विफाल्गुने वन्हिभयमशुभं माधवद्वये ॥ ११ ॥ अनेकयुगसाहस्र्यांदैवयोगात्प्रजायते। त्रयोदशदिनैः पक्षस्तदा संहरते जगत् ॥ १२ ॥ पंचमी श्रावणे हीना सप्तमी भाद्रपादके। आश्विने नवमी नेष्टा पौर्णमासी च कार्तिके ॥ १३ ॥ भाद्रपदे पौषयुगे सितपक्षे पतति तिथिस्तस्याः। द्विगुणदिनैर्नृपमरणं यदि वा दुर्भिक्षमतिरौद्रं ॥ १४ ॥ यस्य मासे शुक्लपक्षे तृतीया वा चतुर्थिका पतेत् तदा मुद्गघृतं महर्घत्वं भवेद्भुवि ॥ १५ ॥ भाद्रपौषे तथा मासे विशेषेण महर्घता। यन्मासे दशमीछेदस्तदाघृतमहर्घता ॥ १६ ॥ श्वेतपक्षे प्रतिपदा पंचमी वा चतुर्दशी। वर्द्धिता चेत्सुभिक्षाय छिन्नादुर्भिक्षकारिका ॥ १७ ॥

अर्थः—दो श्रावण हों तो पृथ्वीका नाश प्रजाका क्षय हो दो भाद्रपदमें धान्यकी प्राप्ति हो ॥ ४ ॥ दो आश्विन हों तो पृथ्वीमें सैन्यारोग और चोरका भय हो कोई कहते हैं कि सुभिक्ष हो परन्तु दक्षिण दिशामें दुर्भिक्ष हो ॥ ५ ॥ दो कार्तिक हों तो सुभिक्ष; कहीं मनु-

श्योंको युद्धसे संकट हो मार्गशीर्ष दो हों तो परम सुख हो ॥ ६ ॥ दो पौष हों तो सुभिक्ष मंगल और राजोंका जय हो, लोकोंको राज्यदण्ड हो तथा मति विपरीत हो ॥ ७ ॥ दो माघ हों तो पृथ्वीमें मंगल और राजोंको भय हो दो फाल्गुन हों तो सुभिक्ष और राजोंको मंगल हो ॥ ८ ॥ दो चैत्र हों तो शुभ है धान्यकी प्राप्ति हो वैश्योंकी वृद्धि हो दो वैशाख हों तो धान्यकी निष्पत्ति हो ॥ ९ ॥ दो ज्येष्ठ हों तो राज्यध्वंस धान्यकी प्राप्ति हो दोआषाढ हों तो कुछ व्यथा और खण्डवृष्टि हो ॥ १० ॥ कहीं दो कार्तिकमें दुःख और दो माघ होनेमेंभी अशुभ फल लिखा है दो फाल्गुनमें अग्निका भय दो वैशाखमें अशुभ फल है ॥ ११ ॥ अनेक सहस्रों युगोंमें दैवयोगसे १३ तेरह दिनका पक्ष होताहै इसमें जगतका नाश होताहै ॥ १२ ॥ श्रावणमें पंचमी और भादोंमें सप्तमी आश्विनमें नवमी कार्तिकमें पूर्णिमाकी हानि हो तो नेष्ट है ॥ १३ ॥ भाद्रपद और पौष दोनोंमें यदि शुक्लपक्षकी तिथि बढे तो उससे दुगुने दिनोंमें राजाका मरण अथवा महादुर्भिक्ष हो ॥ १४ ॥ जिस महीनेके शुक्लपक्षमें तीज या चौथकी वृद्धि हो तो मूंग और घी अकरे हों ॥ १५ ॥ भादों पौषमें उपरोक्त तिथि बढे तो अन्नादिकी तेजी हो और जिसमासमें दशमीकी हानि हो तो घृत तेज हो ॥ १६ ॥ शुक्लपक्षमें प्रतिपदा पंचमी वा चतुर्दशी बढे तो सुभिक्ष करे और घटे तो दुर्भिक्ष हो ॥ १७ ॥

चैत्राद्भाद्रपदं यावच्छुक्लपक्षे यदा त्रुटिः । तदा कचिच्चोपपत्तिरल्पधान्योदयः कचित् ॥ १८ ॥ आर्द्रा ज्येष्ठे नष्टचन्द्रे प्रथमाया पुनर्वसु । द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलं धान्यं तृणं न च ॥ १९ ॥ कृष्णपक्षे श्रावणस्यैकादश्यां रोहिणी च भम् । यावद्घटीप्रमाणंस्याद्धानेतावद्धिशोषका ॥ २० ॥ आदित्याद्वारगणनात्प्रतिपत्प्रमुखातिथिः । अश्विन्यादि च नक्षत्रं संमील्यद्विगुणीकृतं ॥ २१ ॥ त्रिभिर्भागैर्द्वयं शेषं तदासुभिक्षमादिशेत् । शून्ये भवति दुर्भिक्षं शेषे वैजायते शुभं ॥ २२ ॥ आषाढमासे प्रथमे च पक्षे दृष्टे निरभ्रे रविमंडले च । नैवाशनिर्गर्जरवो न भवेच्च मर्षे मासद्वयं वर्षति वासवस्तु ॥ २३ ॥ आश्विने च सित पक्षे दशम्यादि दिनत्रये । गर्जितं विद्युतं कुर्यात्तद्रोधूमविनाशकः ॥ २४ ॥ ज्येष्ठे मूलं पूर्णिमायां शुभं वर्षं हिताय तत् । अवृष्ट्या चातिवृष्ट्या वा इत्येवं मुनिरब्रवीत् ॥ २५ ॥ यदि भवति कदाचित्कार्तिके नष्टचन्द्रे शनिकुजरविवारैः स्वातिनक्षत्रयोगः । इति भवति तथायुष्मान योगस्तृतीयः क्षयविलयविपत्तिः क्षत्रभंगस्त्रिपक्षे ॥ २६ ॥ श्रावणे प्रथमे पक्षे यद्याश्विन्यां जलं भवेत् । तदातीव सुभिक्षं स्याद्व्योपगेषु च सत्स्वपि ॥ २७ ॥ श्रावणे शुक्लपक्षे स्यात्स्वातिऋक्षेण सप्तमी । तत्र वर्षति पर्जन्यः सत्यमेतद्वरा

नने ॥ २८ ॥ द्विपंचाशद्युते वर्षे दिवसानांशतत्रये । सुभिक्षं केचिदप्याहुः परं देशेषु विग्रहः ॥ २९ ॥ बाणेषु त्रिदिने ३५५ कालौ मध्यमोद्रिशरात्रिभिः । वर्षं च षड्त्रिभिः ३५७ श्रेष्ठ सुभिक्षं तत्र निश्चितं ॥ ३० ॥

अर्थः—चैत्रसे भाद्रपदपर्यन्त यदि शुक्लपक्षमें तिथिकी हानि हो तब कहीं उत्पत्ति और थोड़ा धान्य हो ॥ १८ ॥ ज्येष्ठकी अमावसके दिन आर्द्रा और पड़वाके दिन पुनर्वसु द्वितीयाके दिन पुष्य हो तो तृण धान्य जलका अभाव हो ॥ १९ ॥ श्रावणकृष्ण एकादशीके दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी हो उतनेही प्रमाण धान्य बिके ॥ २० ॥ रविवारसे वार और प्रतिपदासे जितनी तिथि गई हो वे गिने और अश्विनीसे नक्षत्रपर्यन्त गिने इन्हे जोड़ कर दूना करे ॥ २१ ॥ तीनसे भाग दे दो बचें तो सुभिक्ष शून्यमें दुर्भिक्ष शेष अंक बचें तोभी शुभ जानो ॥ २२ ॥ आषाढमासके प्रथम पक्षमें आकाशमंडल यदि बादलरहित हो न गर्जना न वर्षा हो तो आगे दो महीने वर्षा हो ॥ २३ ॥ आश्विनमासके शुक्लपक्षमें दशमी आदि तीन दिन जो बिजली चमके तो गेहूंओंका नाश हो ॥ २४ ॥ ज्येष्ठ पूर्णिमाके दिन मूल हो तो वर्षका हित करे कोई मुनि कहते हैं वर्षाहोभी और नभी हो ॥ २५ ॥ यदि कार्तिककी अमावस कदाचित् शनि मंगल रविवारको हो उसमें स्वाति नक्षत्रभी हो तथा आयुष्मान् योग हो तो क्षय विपत्ति और तीन पक्षमें देशविध्वंसहो ॥ २६ ॥ श्रावणके कृष्णपक्षमें अश्विनी नक्षत्रके दिन जल वर्षे तो अत्यन्त सुभिक्ष हो जलका योगभी हो ॥ २७ ॥ और श्रावण शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन स्वाति नक्षत्र हो तो अवश्य वर्षा हो ॥ २८ ॥ जो ३५२ दिनका वर्ष हो तो सुभिक्ष हो और आगे देशमें विग्रह हो ॥ २९ ॥ ३५५ दिनका वर्ष हो तो मध्यम ३५७ दिनका और ३६० दिनका श्रेष्ठ तथा सुभिक्षकरनेवाला है ॥ ३० ॥

सितपक्षादिके चैत्रे मीने सूर्यसमागमे । मूलादिनवनक्षत्रे नैर्मल्ये वरसः शुभः ॥ ३१ ॥ वैशाखमासे प्रतिपदिनाचेन्मेघोदयः सप्तदिनानि यावत् । अभ्रेषु गर्जो घनविद्युदादि तदा सुभिक्षं मुनयो वदन्ति ॥ ३२ ॥ माघमासस्य सप्तम्यां पंचम्यां फाल्गुनस्य च । चैत्रस्यापि तृतीयायां वैशाखे प्रथमेहनि ॥ ३३ ॥ मेघस्य गर्जितं श्रुत्वा जलदस्य तु दर्शने । चतुरो वार्षिकान् मासान् जल वृष्टिं तदा वदेत् ॥ ३४ ॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे मेघविजयगणिविरचिते अयनमासादिपक्षनिरूपणं नाम षष्ठो अधिकारः ॥ ६ ॥

चैत्रशुक्लपक्षमें मीनके सूर्यमें मूलसे नौ नक्षत्रतक आकाश निर्मल रहे तो शुभ है ॥ ३१ ॥ वैशाखमासकी प्रतिपदाके दिनसे मेघका उदय सात दिनतक हो और बादल गर्जे बिजली चमके तो सुभिक्ष हो यह मुनिजन कहतेहैं ॥ ३२ ॥ माघमासकी सप्तमी और फाल्गुनकी पंचमी चैत्रकी तृतीया और वैशाखके पहले दिनमें मेघ गर्जे और बादलका दर्शन हो तो चौमासेमें वर्षा हो ॥ ३४ ॥

इति श्रीमेघमहोदये अयनमासपक्षनिरूपणं नाम षष्ठोऽधिकारः ॥ ६ ॥

यद्युदेति दिने प्रातः पीताब्धिर्मुनिपुंगवः। दुर्भिक्षं रौरवं घोरं राष्ट्रभंगं तदा दिशेत् ॥ १ ॥ रवौ वा पूर्वफाल्गुन्यां प्राप्ते चैवाऽष्टमेऽहनि। अगस्तेरुदयो, लोके न शुभाय कचिन्मते ॥ २ ॥ कृत्तिकायां रवौ जाते सप्तमे वाष्टमेऽहनि। ऋषेरस्तंगतिः श्रेष्ठा दिवसे यदि जायते ॥ ३ ॥ रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टश्चास्तंगमो मुनेः। दिवसेऽस्तंगमः श्रेष्ठो नेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ ४ ॥ यच्चैत्रशुक्लप्रतिपद्दिनस्य भुक्ते कलां वै प्रथमां स वारः। वर्षस्य राजा खलु मेषसूर्ये दिनस्थवारा सहितोत्र मंत्री ॥ ५ ॥ मिथुनेऽर्कैन्हि यो वारः सस्यात्सर्वरसाधिपः। कर्के रवौ च यो वारः धान्याधीशो विचारयेत् ॥ ६ ॥ आर्द्रार्कदिनवारो यः स मेघानामधीश्वरः। दिनवारो वृषे सूर्ये कोटपालः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥

अर्थः—जो अगस्त्यका उदय प्रातःकाल हो तो दुर्भिक्ष और राज्यभंग हो ॥ १ ॥ और सूर्यके पूर्वाफाल्गुनीमें प्राप्त होनेपर आठमें दिन अगस्त्यका उदय हो तो यह भी शुभ नहीं, ऐसा किसीका मत है ॥ २ ॥ सूर्यके कृत्तिका नक्षत्रमें होनेसे सातवें आठवें दिनमें अगस्त्यका अस्त श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥ रात्रिमें उदय होना श्रेष्ठ है अस्त होना ठीक नहीं दिनमें अस्त होना श्रेष्ठ है उदय अच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चैत्रशुक्लप्रतिपदाके दिन जो दिन हो वोही वर्षका अधिपति हो और मेषके सूर्य जिस दिन हों वही वार मंत्री हो ॥ ५ ॥ मिथुनकी संक्रान्तिके दिन जो वार हो वही रसाधिप कर्ककी संक्रान्तिके दिन जो वार हो वही धान्याधिपति होताहै ॥ ६ ॥ आर्द्राके दिनका वार मेघाधीश होताहै वृषके सूर्य जिस दिन हों वही वार कोटपाल होताहै ७ ॥

स्वयं राजा स्वयं मंत्री स्वयं सस्याधिपो यदा। तदा तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महोदधिः ॥ ८ ॥ यत्र वर्षे नृपो मंत्री धान्यपश्चैक एव हि। तद्वर्षे युद्धदुर्भिक्षं प्रजामार्यादि जायते ॥ ९ ॥ सूर्ये नृपेरल्पजलाः पयोदा धान्यं तथाल्पं फलमल्पवृक्षाः। अल्पप्रयोगेषु जनेषु पीडा चौराग्निशंका च भयं नृपाणाम् ॥ १० ॥ सोमे नृपे शोभनमंगलानि प्रभूतवारि प्रचुरं च धान्यं। प्रशाम्यति व्याधितरो नराणां सुखं प्रजानामुदयो नृपाणाम् ॥ ११ ॥ भौमेनृपे वन्हिभयं जनेस्याचौराकुलत्वं नृपविग्रहश्च। दुस्था प्रजा व्याधिवियोगपीडा क्षिप्रं जलं वर्षति भूमिखण्डे ॥ १२ ॥ बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहमंगलम्। सौख्यं सुभिक्षं धनधान्यसंकुलं वसुंधरायां नृपनंदगोकुलम् ॥ १३ ॥ गुरौ नृपे व

र्षति सर्वभूतले पयोधराः कामदुघाश्च धेनवः। सर्वत्र लोका बहुधान्यत त्पराः पराभवो नैव सदैव नंदनम् ॥ १४ ॥ शुक्रस्य राज्ये बहुधान्यसंप दो वृक्षाः फलाढ्या बहुगोप्रसूतयः। प्रभूततोयं मधुराम्रपाचनं प्रसन्नदे न्यं सजलं भुवस्तलम् ॥ १५ ॥ शनौ घने वर्षति खण्डशः क्षितौ जना स्सरोगा उदिताः प्रभञ्जनाः। करा नृपाणां विषमाश्च तस्करा भ्रमन्ति लोका बहुधा क्षुधातुराः ॥ १६ ॥ इति वर्षाधिपफलम् ॥

अर्थः–जिस समय वही ग्रह राजा वही मन्त्री वही सस्याधिपति हो उस समय समुद्रको छोड़कर और कहीं जल नहीं देखताहू ॥ ८ ॥ जिस वर्षमें राजा मंत्री और धान्यपति एकही हों उस वर्षमें युद्ध दुर्भिक्ष और प्रजामें मरी फैले ॥ ९ ॥ सूर्य राजा हो तो बादल थोडा जल वर्षावे धान्य थोडे वृक्षोंमें थोडे फल हों मनुष्योंमें किंचित्पीड़ा चोर, अग्निकी शंका और राजोंको भय हो ॥ १० ॥ चन्द्रमा राजा हो तो सुन्दर मगल हों अधिक जल और अधिक धान्य हो मनुष्योंकी व्याधि शान्त प्रजाको सुख और राजोंका उदय हो ॥ ११ ॥ मंगल राजा हो तो अग्निभय चोरभय राजोंमें विग्रह प्रजामें दुःस्थता व्याधि वियोग और पीड़ा हो पृथ्वीमें जल शीघ्र वर्षे ॥ १२ ॥ बुध राजा हो तो वर्षा श्रेष्ठ घरमें बाजे बजें विवाह मंगल हों सुख सुभिक्ष धन धान्यकी प्राप्ति पृथ्वीके राजा प्रसन्न नदके गोकुलकी समान आनंद पूर्ण हो ॥ १३ ॥ बृहस्पति राजा हो तो सब पृथ्वीमें वर्षा हो मेघ और गौ इच्छानुसार दूध और जल दें सर्वत्र लोकोंको धान्यकी प्राप्ति हो पराभव न होकर सदा आनंद रहे ॥ १४ ॥ शुक्र राजा हो तो बहुत धान्य संपत्ति हो वृक्ष फलोंसे पूर्ण गौ बहुत दूध दें जल अधिक वर्षे आम्र अच्छे मीठे हों प्रसन्नता हो पृथ्वीतलमें जल अच्छा वर्षे ॥ १५ ॥ शनि राजा हो तो खण्ड वृष्टि मनुष्य रोग और वातसे पीडित हों राजोंमें विग्रह चोरोंमें विग्रह और लोक क्षुधासे व्याकुल हो भ्रमण करते फिरें ॥ १६ ॥

रवावमात्ये भुवि रोगपीडा देशेषु सर्वत्र चरन्ति पीडाः। रसेषु धान्येषु महर्घता स्यात्कष्टानि लोके च सुरा विनाशिताः ॥ १७ ॥ सुधाकरे भूस चिवेनपूर्वफलैरसाढ्यास्तरवश्च गावः। पुत्रप्रसूतीर्बहुला वधूनां जनेषु वाणी जयिनी मधूनाम् ॥ १८ ॥ तदा मही स्याद्गुरुदेवनिन्दा भूमावती सागरदस्युभूमा। धूमाकुला भूर्बहुनेत्ररोगाः कुजे भवेन्मंत्रिणि युद्धयोगः ॥ १९ ॥ राज्ञां सुदृष्टिर्बहुलान्नवृष्टिः सच्छास्त्रवृद्धिर्धनिनां समृद्धिः। प्र त्यौमर्ति साकुले च नारी बुधे पुनर्मन्त्रिणि रागसिद्धिः ॥ २० ॥ मंत्रि त्वमाप्ते सुरमंत्रिणि स्यात्प्रजासु सौख्यं धनधान्यवृद्धिः। विवाहमांगल्य कलाजनानां नानारसैः सर्वमहोदयः स्यात् ॥ २१ ॥ जाते कवौ मंत्रि

णि गोषु दुग्धं बहु क्षितौ धान्यसमर्घता च । वृक्षाः फलाढ्या जनतासु रोगो भिषक्प्रयोगः क्वचिदीतिभीतिः ॥ २२ ॥ मांद्यं जनानां व्यवहार नाशः क्रूरा नृपास्तस्करवन्हिदुःखम् । गवां विनाशोतिमहर्घधान्यं शनि श्चरे मंत्रिणि राजयुद्धम् ॥ २३ ॥ इति वर्षमंत्रीफलम् ॥ क्वचित्पचंति सस्यानि क्वचिन्नश्यन्तिभूतले । व्याधि दुःखमहायुद्धं धान्यानामधिपे रवौ ॥ २४ ॥ समर्घं जायते धान्यं सर्वत्र जलवर्षणम् । सर्वधान्यानि जायन्ते यत्र सस्याधिपः शशी ॥ २५ ॥ ईति भूतं जगत्सर्वं व्याधिरोगम पीडितम् । महर्घं सर्वधान्यानां सस्यानामधिपे कुजे ॥ २६ ॥

अर्थः—सूर्य मन्त्री हो तौ पृथ्वीमें रोग और पीडा देशमें सर्वत्र दुःख रस धान्य अकरे लोकमें कष्ट देवताओंको दुःख हो ॥ १७ ॥ चन्द्रमा मंत्री हो तौ वृक्ष फल और रसोंसे पूर्ण हों गौ अधिक दूध दें स्त्री संतान अधिक प्रसव करें मनुष्य प्रियवाणी बोलें ॥ १८ ॥ मंगल मंत्री हो तौ देव गुरुकी निन्दा सागरपर्यन्त पृथ्वीमें चोरोंकी अधिकता हो धूमसे आकुल नेत्ररोग और युद्ध हो ॥ १९ ॥ बुध मंत्री हो तौ राजा प्रसन्नदृष्टिवाले हों अन्नवृष्टि अधिक शास्त्र और धनियोंकी वृद्धि हो स्त्री पतिसें प्रेम करनेवाली हों ॥ २० ॥ गुरु मंत्री हो तौ प्रजामें सुख धन धान्यकी वृद्धि मनुष्योंमें विवाह मंगल अनेक सुख महोदय हो ॥ २१ ॥ शुक्र मंत्री हो तौ गौ अधिक दूध दें पृथ्वीमें धान्य अधिक उपजे सस्ते रहें वृक्षोंमें फल अच्छे आवें किंचित् रोग हो वैद्य प्रयोग करें कहीं ईतिभीति हो ॥ २२ ॥ शनि मंत्री हो तौ मनुष्योंके व्यवहारका नाश राजा क्रूर चोर और अग्निका दुःख हो गोजातिका नाश धान्यभाव तेज हो राजोंमें युद्ध हो ॥ २३ ॥ इति मन्त्रीफलम् ॥ रवि धान्यपति हो तौ कहीं खेती पकै कहीं नाश हो व्याधि दुःख और महा दुःख हो ॥ २४ ॥ चंद्रमा सस्याधिप हो तौ धान्यभाव सस्ता सब स्थानमें वर्षा धान्यकी प्राप्ति हो ॥ २५ ॥ मंगल सस्याधिपति हो तौ सब जगत व्याधिरोगसे पीडित हो और सब धान्य अकरे बिकैं ॥ २६ ॥

सजला वसुधा सर्वा भयनाशः सुखी जनः । चणकादीनि धान्यानि धान्यानामधिपे बुधे ॥ २७ ॥ आनंदः सर्वलोकानां सुवृष्टिस्तु प्रजायते । निष्पत्तिर्बहुधान्यानां यत्र सस्याधिपो गुरुः ॥ २८ ॥ रोगमुक्तं जगत्सर्वं भयमुक्ता भवेन्मही । पच्यन्ते सर्वधान्यानि यत्र सस्याधिपः कविः ॥ ॥ २९ ॥ अग्निचौराकुला पृथ्वी महाव्याधिप्रपीडिता । मृत्युरोगभयं युद्धं वर्षे सस्याधिपे शनौ ॥ ३० ॥ वर्षेश्वरश्चभूपो वा सस्येशो वा दिनेश्वरः । तस्मिन्नब्दे नृपाः क्रूराः स्वल्पसस्याल्पवृष्टयः ॥ ३१ ॥ अब्दपो वा चमूपो वा सस्येपो वा क्षपाकरः । तस्मिन्वर्षे करोति क्ष्मां पूर्णधान्यार्घवृष्टि

भिः॥ ३२॥ अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा धरासुतः। अवृष्टिर्वह्नि चौरेभ्यो भयमुत्पादयन्ति हि॥ ३३॥ अब्दाधिपश्च भूपो वा सस्येशो वा शशांकजः। न करोति यदा कष्टमवृष्टिमतिमारुतं॥ ३४॥ चमूपो वाथसस्येशो वर्षेशो वागिरांपतिः। करोत्यतुलितां भूमिं बहुयज्ञार्थवृष्टिभिः॥ ३५॥ वर्षेशोप्यथसस्येशश्चमूपो वाथ भार्गवः। महीं करोति संपूर्णां बहुधान्यफलादिभिः॥ ३६॥ अब्देश्वरश्चमूपो वा सस्येशो वार्केनंदनः। तस्मिन्वर्षे बुधो राजा धान्यभूपभयप्रदः॥ ३७॥ यदाब्देशश्चमूनाथः सस्यपानां बलाबलं। तत्कालग्रहचारश्च सम्यक्ज्ञात्वा फलं वदेत्॥ ३८॥

अर्थः—बुध धान्याधीश हो तो सब पृथ्वीपर जलवर्षे भयका नाश और मनुष्य सुखी हो चने आदि सस्ते बिकें॥ २७॥ गुरु हो तो सब लोकोंमें आनंद अच्छी वर्षा बहुत धान्यकी उत्पत्ति हो॥ २८॥ शुक्र धान्याधिपति हो सब लोक रोगरहित और पृथ्वी भयहीन हो सब धान्य अच्छी प्रकार पकें॥ २९॥ शनि सस्याधिप हो तो पृथ्वी अग्नि चोरसे व्याकुल महाव्याधीसे पीडित हो मृत्यु रोगभय युद्ध हो॥ ३०॥ जो सूर्य वर्षाधिपति मंत्री और सस्याधिपति हो तो उस वर्षमें राजा क्रूरस्वभाव और धान्य तथा वर्षा थोडी हो॥ ३१॥ वर्षपति मंत्री और सस्यपति जो चंद्रमा हो तो उस वर्षमें पृथ्वी धान्यजलसे परिपूर्ण हो॥ ३२॥ यदि मंगल वर्षपति चमूपति धान्यपति हो तो वर्षाका अभाव अग्नि और चोरसे भय होताहै॥ ३३॥ जो बुध तीनोंका अधिपति हो तो कष्टका अभाव हो वर्षा हो पवन चले॥ ३४॥ यदि बृहस्पति वर्षेश चमूपति सस्याधिप हो तो पृथ्वीपै यज्ञ और वर्षा हो॥ ३५॥ जो शुक्र हो तो सम्पूर्ण पृथ्वीधन धान्यसे सम्पूर्ण हो॥ ३६॥ जो वर्षपति मंत्री और सस्याधिप शनैश्चर हो तो उस वर्षमें धान्य और राजाको भय हो॥ ३७॥ यह इस प्रकार वर्षपति मंत्री और सस्याधिपतिका बलाबल विचार कर फल कहना॥ ३८॥ इति सस्याधिपतिफलम्॥

अथ मेघाधिपतिफलम्।

सूर्य मेघाधिपति हो तो थोडा जल वर्षे राजाको क्षोभ चोरोंका भय हो चंद्रमा हो तो धान्यवृद्धि ब्राह्मणोंको सुख हो वृद्धि हो पृथ्वीमें जल अधिक वर्षे मंगल अधिपति हो तो अग्निभय जल थोडा चोर अग्नि सर्पकी पीडा दुर्भिक्ष उपद्रव हो बुध हो तो वृष्टि अधिक आनंदकी प्राप्ति लेखक काव्यकर्ता ज्योतिषियोंको सुख हो गुरु मेघपति हो तो वर्षा श्रेष्ठ धान्यकी वृद्धि कुशलता यज्ञकरनेवालोंको संपत्ति साम्राज्य धनकी समृद्धि हो॥ शुक्र मेघाधिपति हो तो कामिजनोंको सुख गौ बहुत दूध दें क्षेत्र धान्यसे पूर्ण हों शनि मेघपति हो तो पवन अधिक चले कहीं वर्षा और कहींहि कुशल हो खेतीका नाश हो इति मेघाधिपतिः। अथ रसाधिपफलम्। सूर्य रसाधिप हो तो चंदन कुमकुम गूगल तिल तेल अकरे बिकें चंद्रमा

आर्द्रारवेर्भानुवारे प्रवेशः पशुनाशनः। सौम्ये सुभिक्षदः प्रोक्तो भौमे निधनमाप्नुयात् ॥ १२ ॥ बुधे क्षेमं सुभिक्षं च गुरौचार्थसमृद्धये। शुक्रे शांतिकरः प्रोक्तो मंदे मंदफलं भवेत् ॥ १३ ॥ पूर्वाह्णकाले जगतो विपत्ति र्मध्याह्निके त्वल्पफला च पृथ्वी। अस्तंगतार्द्रा बहुसस्यसंपत् क्षेमं सुभिक्षंस्थिरमर्द्धरात्रे ॥ १४॥ आर्द्राप्रवेशो यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणेयदि केन्द्रगो वा ॥ जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च सम्पूर्णसस्या वसुधातदा स्यात् ॥१५॥ दिवार्द्रा सस्यनाशाय रात्रौ सस्यविवृद्धये। अस्तगेऽर्कें र्द्ध रात्रे वा समर्वं बहुवृष्टयः ॥ १६ ॥ चैत्रेमासे पुनः प्राप्ते लोकानां हितहेतवे। मेषसंक्रान्तिवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥ १७ ॥ यदा शुभ ग्रहैर्दृष्टं लग्ने स्यात्तु तदा शुभम्। धनधान्यादिसंपूर्णंसर्ववर्षंशुभावहम् ॥ १८ ॥ भावाद्द्वादश ते मासाः सौम्याः क्रूरा ग्रहाः पुनः। तेषु मासेषु देवेशि फलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ १९ ॥ मेषप्रवेशलग्नेवा यदि स्याद्वर्षजन्मनि। सप्तमस्थो यदा पापो धान्यजातं विनाशयेत् ॥ २० ॥ धने व्यये च सौम्यश्चकेन्द्रे वा मेषसंक्रमे। स्वर्क्षे शुभसुहृद्दृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा ॥ २१ ॥ गणयेचैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य मूलतः। प्रतिपल्लग्नवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥ २२ ॥ मेषलग्ने तु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राजविग्रहः। दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्याद्बहुधान्यरसा च भूः ॥२३॥ धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेघमहोदयः। घृत तैलादिवस्तूनां पण्यानां च महर्घता ॥ २५ ॥ उत्तरस्यां सुभिक्षं स्याद्राज्ञामुद्वेगकारणम्। मध्यदेशे महावृष्टि निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥ २५ ॥

अर्थः—आर्द्रामें रविका रविवारके दिन प्रवेश हो तो पशुनाश करै चन्द्रवारके दिन सुभिक्ष मंगलके दिन निर्धन हो ॥१२॥ बुधके दिन क्षेम और सुभिक्ष है गुरुवारके दिन अर्थवृद्धि शुक्रके दिन शान्ति शनि मंद फलदाता है ॥ १३ ॥ पूर्वाह्नमें प्रवेश हो तो जगतमें विपत्ति मध्याह्नकालमें पृथ्वीमें थोडा अन्न हो और अस्तसमयमें सस्यसंपत्तिकी प्राप्ति हो आधीरातमें प्रवेश करे तो क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ १४ ॥ जब सूर्यका आर्द्रामें प्रवेश हो तो उस समय चन्द्रमा त्रिकोण या केन्द्रमें प्रवेश करै अथवा चंद्रमाकी दृष्टि हो तो पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥ १५ ॥ दिनमें आर्द्रामें प्रवेश धान्यनाशके निमित्त रात्रिमें धान्यकी वृद्धि और अस्तसमय वा आधीरातमें हो तो अन्न सस्ता और वृष्टि अच्छी हो ॥१६॥ चैत्रका महीना प्राप्त होनेमें लोकोंके मंगलके निमित्त मेषकी संक्रान्तिके समय लग्न विचारे ॥ १७ ॥ जो शुभ

ग्रहकी लग्नमें दृष्टि हो तो शुभ हो धनधान्यादियुक्त सपूर्ण वर्ष शुभ हो ॥ १८ ॥ सौम्य ग्रह हों तो सब मास श्रेष्ठ हों क्रूर हों तो उन उन महीनोंमें उनके अनुसार शुभाशुभ फल जानना ॥ १९ ॥ जो वर्षप्रवेशमें मेष लग्न हो सप्तम स्थानमें पापग्रह हो तो धान्यका नाश करैं ॥ २० ॥ अथवा मेषकी संक्रांतिके प्रवेशमें धनस्थान ग्यारहवें स्थान वा केन्द्रस्थानमें शुभ नक्षत्रयुक्त शुभग्रहकी दृष्टि हो तो सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष ॥ २१ ॥ चैत्रमासके शुक्लपक्षसें प्रतिपदाके दिन वर्षप्रवेशका लग्न विचारे ॥ २२ ॥ मेष लग्न हो तो पूर्वमें दुर्भिक्ष और राज्यविग्रह हो दक्षिणमें सुभिक्ष पृथ्वीमें बहुत धान्य और रस हो ॥ २३ ॥ धान्यके वेचनेमें लाभ पूर्ण मेघ वर्षै घृत तैल व्यापारी वस्तु अकरी ॥ २४ ॥ उत्तरमें सुभिक्ष राजोंमें उद्वेग मध्यदेशमें महा वर्षा धान्यकी प्राप्ति हो ॥ २५ ॥

वृषेपि पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राजविग्रहः । उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्तिर्दक्षिणस्यां विकालतः ॥ २६ ॥ मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्यनष्टता । उदग्दक्षिणयोर्मेघा बहवो धान्यसंग्रहाः ॥ २७ ॥ पश्चिमायां स्वल्पमेवाश्छत्रभंगश्चविग्रहः । मध्यदेशेर्द्धनिष्पत्तिश्चतुष्पदसरोगता ॥ २८ ॥ कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः । स्याचासनवकं यावद्दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि ॥ २९ ॥ सिंहलग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीर्यते । धान्ये समर्घता मासषट्कं यावद्धनो महान् ॥ ३० ॥ पश्चिमायां धातुवस्तुफलादीनां महर्घता । उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च ॥ ३१ ॥ पूर्वस्यामर्द्धनिष्पातिः श्रेयोग्रे मासपंचकात् । मध्यदेशे राजयुद्धं मासपंचकसुद्धतं ॥ ३२ ॥ कन्यायां सुस्थिरा प्राच्यां घृते महर्घतामता । मंजिष्ठादिसमर्घत्वं यावन्मासयत्रं भवेत् ॥ ३३ ॥ मारिर्दक्षिणदेशे स्यात्तथा वंगेप्युपद्रवः । लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोन्नसमर्घता ॥ ३४ ॥ चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः । मध्यदेशे प्रजाभंगः समर्घत्वं घृते पुनः ॥ ३५ ॥ तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः । धान्यस्य विक्रयः प्राच्यां छत्रभंगमुपद्रवः ॥ ३६ ॥ दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेवप्रवर्षणम् । पश्चिमायां महायुद्धं दंष्ट्राभयमहर्घता ॥ ३७ ॥ दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे । मासद्वयपश्चिमायां किंचिदुत्पातसंभवः ॥ ३८ ॥

अर्थ-वृषमें प्रारंभ हो तो पश्चिममें काल पूर्वमें राजविग्रह जल और धान्यकी प्राप्ति दक्षिणमें किंचित सुकाल हो ॥ २६ ॥ मिथुनमें हो तो युद्ध पूर्वमें धान्य नष्ट दक्षिणमें जल और धान्यप्राप्ति धान्यसंग्रह करना उचित है ॥ २७ ॥ पश्चिममें थोडा मेघ छत्रभंग और विग्रह हो मध्यदेशमें अर्द्धप्राप्ति चौपायोंमें रोग ॥ २८ ॥ कर्कमें पूर्वमें सुख उत्तरमें विग्रह

आसन बढ और पश्चिममें दुर्भिक्ष हो ॥ २९ ॥ सिंहलग्नमें हो तो दक्षिणमें सर्पभय छःमासतक धान्य सस्ते रहे ॥ ३० ॥ पश्चिममें धातु वस्तु और फलादिक अकरे बिकें उत्तरमें महावृष्टि राजाप्रजामें सुख हो ॥ ३१ ॥ पूर्वमें अर्द्धप्राप्ति आगे पचमहीने श्रेष्ठ मध्यदेशमें पांचमहीने राजोंमें युद्ध हो ॥ ३२ ॥ कन्यामें प्रवेश हो तो प्राचीदेशवासी प्रसन्न हों घृतभाव तेज तीनमहीनें मजीठादि सस्ते रहैं ॥ ३३ ॥ दक्षिणदेशमें मरी बगदेशमें उपद्रव लोकमें दुःख अन्न सस्ता ॥ ३४ ॥ प्राचीमें चौपायोंको सुख हो उदीची दिशामें राजविग्रह मध्यदेशमें प्रजाभंग घीकी समर्घता ॥ ३५ ॥ तुलालग्नमें वर्षप्रवेश हो तो छत्रभग और विग्रह हो प्राचीदिशामें धान्यका विक्रय छत्रभग तथा उपद्रव हो ॥ ३६ ॥ दुर्भिक्ष तीक्ष्ण पवन मेघ थोडा वर्षे पश्चिममें महायुद्ध सर्पभय अन्न भाव तेज हो ॥ ३७ ॥ दक्षिणमें सुख उत्तरमें दुर्भिक्ष दो महीने पश्चिममें कुछ उत्पात हो ॥ ३८ ॥

वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकं । उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घोधातवस्तदा ॥ ३९ ॥ पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने । पश्चात्सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ॥४०॥ दक्षिणस्यां देशभंगो भावी वर्षे प्रजायते। धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपंचकात् ॥४१॥ धनुर्लग्ने उत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणां दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ॥ ४२ ॥ पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात् । दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीडा चतुष्पदे ॥ ४३ ॥ मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः । वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखं ॥ ४४ ॥ मध्यदेशेऽर्द्धनिष्पत्तिः किंचिद्धान्यमहर्घता । अकाले मेघवृष्टिःस्याल्लाभो धान्यस्य विक्रयात् ॥ ४५ ॥ कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्षसंभवः । हाहाकारः पश्चिमायां भवेद्धान्यमहर्घता ॥ ४६ ॥ दक्षिणे विग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखं । मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोऽन्नसंग्रहः ॥ ४७ ॥ मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगः क्वचिद्भवेत । एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरेजन्मनि ॥ ४८ ॥ इति वर्षजन्मलग्नम् ।

अर्थः—वृश्चिकमें वर्षप्रवेश हो तो नौमहीने पश्चिममें दुर्भिक्ष हो उत्तरमें अर्धप्राप्ति धातुभाव तेज रहें ॥ ३९ ॥ पूर्वके राजोंमें भय तीन महीने दुःख पीछे सुख धान्यनाश मध्यदेशमें हो ॥ ४० ॥ आगेके वर्षमें दक्षिणमें देशभग हो पांच महीने पीछे धातुओंका विक्रय करना ॥ ४१ ॥ धनुर्लग्नमें उत्तरपूर्वके मनुष्योंको सुख हो दुर्भिक्ष प्रबल वृष्टि और मध्यदेशमें रोग हो ॥ ४२ ॥ पश्चिममें घृत धान्य पांचमहीने सस्ते विकें दक्षिणदेशवासियोंको सुख चोपायोंम किंचित्पीडा ॥ ४३ ॥ मकरमें महा उत्पात उत्तरके राजोंका क्षय एक वर्ष सुख

और पश्चिममें भी महासुख हो ॥ ४४ ॥ मध्यदेशमें अर्द्धप्राप्ति कुछ धान्यभाव तेज अकालमें मेघवृष्टि धान्य बेचनेमें लाभ ॥ ४५ ॥ कुंभमें हो तो पूर्वमें सुख उत्तरमें दुर्भिक्ष पश्चिममें हाहाकार धान्यभाव तेज ॥ ४६ ॥ दक्षिणमें विग्रह मध्यदेशमें महासुख मीनलग्नमें दक्षिणमें सुख लोकमें अन्नसंग्रह करना उचित है ॥ ४७ ॥ मध्यदेशमें धान्यनाश कहीं छत्रभंग इसप्रकार बारह लग्नोंमें सम्वत्की प्राप्ति जाननी ॥ ४८ ॥

चैत्रे कृष्णद्वितीयायां निरभ्रं चेन्नभो भवेत्। तदा भाद्रपदे मासे ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥ ४९ ॥ चैत्रकृष्णद्वितीयायां मेघो वै प्रबलो यदा। जलं पतति चैत्रे च तदा वृष्टिस्तु कार्तिके ॥ ५० ॥ चतुर्थ्यां कृष्णपक्षस्य वर्षा दुर्भिक्षकारिणी। पंचम्यामसिते चैत्रे नृणां तत्र दुर्दिनः शुभः ॥ ५१ ॥

अर्थः—जो चैत्रकृष्णद्वितीयाके दिन आकाश बादलरहित हो तो भाद्रमासमें मेघमहोदय जानना ॥ ४९ ॥ चैत्रकृष्णद्वितीयाके दिन जो मेघ प्रबल हो और वर्षाभी हो तो कार्तिकमें अच्छी वर्षा हो ॥ ५० ॥ चैत्रकृष्णपक्षकी चौथको वर्षा होतो दुर्भिक्ष करे और कृष्णपक्षकी पंचमीको बादल हो तो शुभ है ॥ ५१ ॥

चैत्रस्य कृष्णपंचम्यां हस्तनक्षत्रसंगमे। न विद्युद्गर्जिताभ्राणि तदा स्याद्वत्सरः शुभः ॥ ५२ ॥ त्रयोदशी च नवमी पंचमी कृष्णचैत्रगाः। एतास्तु विद्युतोगर्भसंभवो वृष्टिहानिकृत ॥ ५३ ॥ चैत्रस्यकृष्णसप्तम्यामभ्रच्छन्नं यदा नभः। रक्तवस्तुसमर्घत्वं भवत्येव नसंशयः ॥ ५४ ॥ प्रतिप चैत्रशुक्लायाः द्वितीयायास्तृतीयका। चतुर्थी वृष्टियुक्ता चेचातुर्मास्यं तदा घनः ॥ ५५ ॥ चैत्राद्यप्रतिपन्मेघः गर्जितं वर्षणं तथा। श्रावणे भाद्रमासे च तदा वृष्टिर्नजायते ॥ ५६ ॥ पंचमी सप्तमी शुक्ला चैत्रीया च त्रयोदशी। एतासु बादलं श्रेष्ठं तत्र वर्षा तु दुःखकृत् ॥ ५७ ॥ चैत्रमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी तथाष्टमी। तत्राभ्रमुत्तरावायुः शुभाय वत्सरेभवेत् ॥ ॥ ५८ ॥ चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां रजोनिलः। अथवा धूमरी पातो मेघस्तत्र न वर्षति ॥ ५९ ॥ चैत्रेदशम्यां शनिना मघायोगे यदाम्बुदः। वर्षेत्तदा सर्ववर्षं धान्यस्यार्घो न जायते ॥ ६० ॥ वैशाखकृष्णप्रतिपद्युद्रच्छेन्नभभास्करः। मेघैराच्छाद्यते व्योम्निसम्वत्सरहिताय सः ॥ ६१ ॥ शुक्लकृष्णे च वैशाखे चतुर्दश्याष्टमीदिने। गर्जविद्युत्पयोवर्षा वर्षानंद विधायका ॥ ६२ ॥ वैशाखकृष्णेकादश्यां मेघो वै प्रबलो भवेत्। तदा धान्यानां विक्रयःकर्तव्यः कृपिकर्मणि ॥ ६३ ॥ वैशाखशुक्लप्रतिपद्दिने

याादिनद्वयेबादलकंशुभाय। तदा तृतीयादिवसेपि चाभ्रं वृष्टिर्विशिष्टा परसंगरोगः॥ ६४॥

अर्थः—जो चैत्रकृष्ण पंचमीको हस्त नक्षत्र हो और उस दिन बिजली बादल गर्जना न हो तौ वर्षश्रेष्ठ है॥ ५२॥ जो कृष्णपक्षकी त्रयोदशी नवमी पंचमीके दिन बिजली बादल हों तो वर्षाकी हानि हो॥ ५३॥ चैत्रकृष्णसप्तमीके दिन जो आकाश मेघसें आच्छादित हो तो लालवस्तु निःसन्देह सस्ती हो॥ ५४॥ चैत्रशुक्लप्रतिपदा द्वितीया तृतीया और चौथको वर्षा हो तो चौमासेभर वर्षे॥ ५५॥ चैत्रकी कृष्णपड़वाके दिन मेघ गर्जे अथवा वर्षे तो श्रावण और भादोंमें वर्षा न हो॥ ५६॥ चैत्रशुक्लपंचमी सप्तमी त्रयोदशी इनमें बादल होना अच्छा है वर्षा दुःखकारक है॥ ५७॥ चैत्रमासके कृष्णपक्षमें चतुर्थी अष्टमीके दिन बादल और उत्तरकी पवन चले तो वर्ष शुभ है॥ ५८॥ चैत्रशुक्लत्रयोदशीके दिन धूरियुक्त पवन चले अथवा धूमरोपात हो तो मेघ न वर्षे॥ ५९॥ चैत्रशुक्ल दशमी शनिवार हो और मघा नक्षत्र हो और वर्षा हो तो उस वर्षमें धान्यकी उपज अच्छी न हो॥ ६०॥ जो वैशाखकृष्णप्रतिपदाके दिन सूर्य मेघाच्छादित उदय हो तो सम्वत्सर अच्छा हो॥ ६१॥ वैशाखशुक्ल और कृष्णकी चौदश या अष्टमीके दिन गर्जना बादल और बिजली चमके तो सम्वत्सर शुभ हो॥ ६२॥ वैशाखकृष्ण एकादशीके दिन प्रबल मेघ हो तो धान्यविक्रय कृषिकर्ममें करना चाहिये॥ ६३॥ वैशाखशुक्ल प्रतिपदा द्वितीयाको दो दिन बादल होना श्रेष्ठ है और तीजके दिनभी बादल हो तो वर्षा हो और पीछे रोग हो॥ ६४॥

वैशाखशुक्लदशमी दिनेच बादलं शुभं। राधेश्विनीदिने पथ्या रक्तवस्तु महर्घता॥ ६५॥ वैशाखसितपंचम्यां मेघबादलसंभवः। संग्रहस्सर्वधान्यानां लाभो भाद्रपदे भवेत्॥ ६६॥ राधे शुक्लप्रतिपदि सप्तम्यादिदिनत्रये। बादलानां समुदये शीघ्रं वृष्टिर्विनिर्दिशेत॥ ६७॥ एकादशीत्रये शुक्ले दुर्भिक्षं वृष्टिबादलात्। राधे च पूर्णिमावृष्टिर्भाद्रे धान्यमहर्घकृत्॥ ६८॥ पंचम्यामथसप्तम्यां नवम्यैकादशीदिने। त्रयोदश्यां च वैशाखे वृष्टौ लोके सुखं भवेत्॥ ६९॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां ज्येष्ठे शुक्ले तथासित। कृष्णे दशम्या वृष्टिः स्याद्भाद्रमासेतिवृष्टये॥ ७०॥ ज्येष्ठस्य दशमीरात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते। वर्षणं जायते श्रेष्ठं स्वस्था सर्वमही भवेत्॥ ७१॥ ज्येष्ठस्य कृष्णेकादश्यां द्वादश्यां चाब्दगर्जितं। विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेत् वत्सरः स्यात्तदा शुभं॥ ७२॥ ज्येष्ठाषाढसमुद्भूते रोहिणी दिवसे नभः। साभ्रं वृष्टिविनाशाय समेघं वृष्टिवर्द्धनं॥ ७३॥ ज्येष्टे मूलदिने वृष्टिर्न्यूप्रान्ते दिवसद्वये। दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठा विद्युत्पांसुयुतानि

ला ॥ ७४ ॥ ज्येष्ठमासे तथाषाढे यत्रतत्राब्दवर्षणं । श्रावणेभाद्रमासेवा तद्दिने वृष्टिनिर्णयः ॥ ७५ ॥ ज्येष्ठे शुक्लद्वितीयायां गर्भपाताय गर्जितं । शुक्ले तृतीयार्द्रायोगे वृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शनी ॥ ७६ ॥ यदि ज्येष्ठस्य पंचम्यां वृषार्के वृष्टिरुद्भवेत् । पूर्वाषाढादिना वा स्यान्मूलं दृष्टं न दोषकृत॥ ॥ ७७ ॥ ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूलप्रस्रवते यदा । दिनषष्टिव्यतिक्रम्य ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥ ७८ ॥ यदा श्रुतिधनिष्ठाहे न भवेज्जलवर्षणं ज्येष्ठानुज्ज्वलपक्षे तु नक्षत्रश्रवणादिके ॥ ७९ ॥ अवर्षणे न वर्षा स्याद्वृष्टौ तु विपुलं जलं । चित्रास्वातिविशाखासु वादलं च तदा शुभं ॥ ८० ॥

अर्थः—वैशाखशुक्ल दशमीके दिन मेघ श्रेष्ठ है विशाखा अश्विनी छठके दिन हों तौ लाल वस्तु अकरी हों ॥ ६५ ॥ वैशाखशुक्ल पंचमीको मेघ वादलयुक्त हो तौ सब धान्यका संग्रह करना भादोंमें लाभदायक है ॥ ६६ ॥ शुक्लप्रतिपदि विशाखायुक्त हो वा सप्तमीआदि तीन दिनमें मेघ उदय हो तौ शीघ्र वर्षा हो ॥६७॥ शुक्लएकादशी आदि तीन तिथियोंमें वर्षा हो तौ दुर्भिक्ष हो विशाखा पूर्णिमाके दिन हो और वर्षा हो तौ भादोंमें धान्यभाव तेज रहै ॥६८॥ पंचमी सप्तमी नौमी एकादशी और वैशाखकी त्रयोदशीको वर्षे तौ लोकमें सुख हो॥ ६९ ॥ ज्येष्ठशुक्ल कृष्ण दोनो पक्षकी चौदश और अष्टमी और कृष्णदशमीको वर्षा हो तौ भादोंमें अधिक वर्षा हो॥७०॥ज्येष्ठदशमीकोरात्रीमें यदि चंद्रमा न दीखे तौ वर्षा अच्छी और पृथ्वी स्वस्थ हो ॥ ७१ ॥ ज्येष्ठ आषाढमें रोहिणी नक्षत्रके दिन वादल हो तौ वृष्टिका नाश मेघ वर्षे तौ अच्छा है ॥ ७२ ॥ ज्येष्ठकृष्ण एकादशी द्वादशीके दिन विजली चमके वादल गर्जे वर्षा हो तौ वर्ष श्रेष्ठहै ॥ ७२ ॥ ज्येष्ठमें मूल नक्षत्रके दिन वर्षा हो और अन्तके दो दिन वर्षा हो तौ दुर्भिक्ष करै और केवल विजली चमके धूरियुक्त पवन चलै तौ श्रेष्ठ है ॥ ७४ ॥ ज्येष्ठ और आषाढमें जिस दिन वर्षा हो श्रावण भादोंमें उसी दिन वर्षा होगी ॥ ७५ ॥ ज्येष्ठशुक्लद्वितीयाको गर्जनाभी वर्षाके निमित्त है शुक्लपक्षकी तीज आर्द्रायुक्त हो तौ दुर्भिक्ष करै ॥ ७६ ॥ यदि ज्येष्ठपंचमी वृषके सूर्यमें वर्षा हो वा पूर्वाषाढके दिन मूलके दिन वर्षा हो तौ दोष नहीं करती ॥ ७७ ॥ ज्येष्ठपूर्णिमामें जो मूल हो और वर्षा हो तौ साठ दिनके उपरान्त मेघ वर्षे ॥ ७८ ॥ जो श्रवणधनिष्ठाके दिन जल न वर्षे ज्येष्ठा शुक्लपक्ष और श्रवणके दिन ॥ ७९ ॥ न वर्षे तौ आगे वर्षाका अभाव और वर्षे तौ वर्षा जाननी चित्रा स्वाति विशाखाके दिन मेघ हो तौ शुभ है ॥ ८० ॥

कृष्णाषाढचतुर्थ्यां च मेघैराच्छादितो रविः । मासत्रयव्यतीते च तदा मेघमहोदयः ॥ ८१ ॥ आषाढकृष्णतुर्यायामास्ते भास्करमंडले । न वर्षति यदा मेघस्तदा कष्टतरं जलं ॥ ८२ ॥ आषाढे कृष्णपक्षस्याष्टम्यां चन्द्रोदयक्षणे । मेघैराच्छादितं व्योम नीरपूर्णा तदा मही ॥ ८३ ॥ आषा

ढे नवमी कृष्णा विद्युदम्भोदशेखरे। विक्रयः सर्वधान्यानां कर्षणे वे हि ताय च ॥ ८४ ॥ आषाढकृष्णपक्षे च धनिष्ठाश्रवणं तथा। गर्जविद्युद्विहीनं स्याद्देशभंगं तदा दिशेत् ॥ ८५ ॥ आषाढमासे रोहिण्यां विद्युद्वर्षा शुभाय सा। स्वातियोगेपि चाषाढे तथैव फलमिष्यते ॥८६॥ आषाढशुक्लप्रतिपत्त्रये वर्षा यदा भवेत्। एको द्वादश चन्द्रोणः षोडशापि क्रमाजलं ॥ ८७ ॥ आषाढे शुक्लपंचम्यादिके तिथिचतुष्टये। यावन्त्यभ्राणि वर्षासु तावन्मेघमहोदयः ॥ ८८ ॥ शुक्लाषाढनवम्यां च दशम्यां वर्षणं शुभं। दुर्भिक्षं जायते नूनं वाते वृष्टिविना कृते ॥ ८९ ॥ आषाढस्याप्यमावस्यां नवम्यां शुक्लकृष्णयोः। उद्गच्छेद्वसहस्रांशुर्निर्मलो यदि दृश्यते ॥ ९० ॥ मध्यान्हे वृष्टिरूपं स्यात्सूर्यस्यास्तंगमे तथा। अग्रे तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महानदीं ॥ ९१ ॥ चतुर्थ्यां तु सिताषाढे विद्युद्वर्षाश्च गर्जितं। तदा जलं समुद्रे स्यात्पुस्तके वा प्रदृश्यते ॥ ९२ ॥ आषाढ्यां प्रथमे यामे वादलेन सुभिक्षता। मासमेकं जलं धान्यं स्तोकं लोकमहाशयं ॥ ९३ ॥ श्रावणस्यादिमेपक्षेअश्विन्या मेघवृष्टितः। सर्वान्दोषान्निहत्यैव सुभिक्षं भुवि जायते ॥ ९४ ॥ श्रावणे विपुलाविद्युद्गर्जितं चापुनर्वने। वृष्टिस्तदा मनोभीष्टाः कुरुते वत्सरं शुभं ॥ ९५ ॥

अर्थः—जो आषाढकृष्ण चतुर्थीके दिन सूर्य मेघसे ढका होनो तीन मासके उपरान्त मेघ अधिक वर्षे ॥ ८१ ॥ जो आषाढकृष्ण चौथके दिन सूर्यके अस्त होनेमें जल न वर्षे तो मेघ कठिनतासे वर्षे ॥ ८२ ॥ आषाढकृष्ण अष्टमीको चन्द्रोदय मेघोंसे आच्छादित हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण हो ॥ ८३ ॥ आषाढकृष्ण नवमीको बिजलीयुक्त बादल हों तो सब धान्यको बेचे किसानोंको हितकारक है ॥ ८४ ॥ आषाढकृष्णमें धनिष्ठा श्रवणके दिन बिजलीके विना गर्जना हो तो देशभंग हो ॥ ८५ ॥ आषाढमासमें रोहिणीके दिन बिजली चमकना और वर्षा होनी लोकके हितकारी है और यही फल आषाढमें स्वातियोग होनेपर है ॥ ८६ ॥ आषाढशुक्ल प्रतिपदादि तीन तिथियोंमें जो वर्षा हो तो एक बारह तथा सोलह द्रोण जल वर्षे ॥ ८७ ॥ आषाढशुक्ल पचमीआदि चार तिथिमें जितनी वर्षा होगी उतनेही मेघोंका उदय होगा ॥ ८८ ॥ आषाढशुदि नवमी दशमीको वर्षा होनी अच्छी है और केवल पवनही चले तो दुर्भिक्ष हो ॥ ८९ ॥ आषाढकी अमावास्या और शुक्ल कृष्णपक्षकी नवमीके दिन यदि सूर्य निर्मल उदय हो ॥ ९० ॥ मध्यान्हमें कुछ वर्षाकी प्राप्तिसे और अस्तमें वर्षा हो तो नदीको छोड और स्थानोंमें जल न मिले ॥ ९१ ॥ आषाढशुक्ल चौथके दिन बिजलीयुक्त वर्षा हो तो जल समुद्र या पुस्तकोंमेंही दीखे ॥ ९२ ॥ आषाढ पूर्णिमाके पहले पहरमें बादल हों

तो सुभिक्ष न हो केवल एक महीना जल वर्षे धान्य थोडे और राजोंको भय हो ॥ ९३ ॥ श्रावणकृष्ण अश्विनीमें मेघ वर्षे तो सब दोष दूर होकर सुभिक्ष हो ॥ ९४ ॥ श्रावणमें बहुत बिजली चमके और वर्षा हो तो मनवांछित वर्षा हो ॥ ९५ ॥

श्रावणे कृष्णपक्षे चेच्चतुर्थ्यामरुणोदये । वादल वृष्टिरनिशं सर्वत्र सुखवृष्टिकृत् ॥ ९६ ॥ श्रावणे कृष्णपंचम्यां निर्मलं गगनं शुभम् । तदाष्टादशयामान्तघनस्तोयं व्यपोहति ॥ ९७ ॥ अमावास्यां श्रावणस्य यदि वृष्टिर्घनाघनः । चराचर तदा विश्वं सुखभाक्चचलाचलम् ॥९८ ॥ चित्रास्वातिविशाखासु श्रावणे न जलं यदा । तदा कुल्यादिकं कृत्वा नदीतीरे गृहं कुरु ॥ ९९ ॥ नभःप्रथमपंचम्यां यदि वृष्टिः पयोधरः । तदा भूश्चतुरो मासान्भवेद्वारिसमाकुलम् ॥ १०० ॥ श्रावणे शुक्लसप्तम्यामस्तं याते दिवाकरे । न वर्षति यदि पर्जन्यो जलाशा मुंच सर्वथा ॥ १०१ ॥ अष्टम्यां श्रावणे शुक्ले प्रातर्वादलडम्बरम् । रविराच्छादितस्तेन पृथिव्येकार्णवा भवेत् ॥ १०२ ॥ मेघैराच्छादितश्चन्द्रः पूर्णायां समुदीरते । तदा स्वस्थं जगत्सर्वं राज्यसौख्यघनो महान् ॥१०३॥ श्रावणे कृष्णपक्षे वा पूर्वाभाद्रपदासु च । चतुर्थ्यां मेघवृष्टिश्च तदा मेघमहोदयः ॥१०४॥ शुक्ला चतुर्दशी पूर्णा चतुर्थी पंचमी तथा । सप्तमीचेच्छ्रावणस्य वृष्टियुक्ता शुभं तदा ॥ १०५ ॥ श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वातियोगे जलं यदा । प्रजानंदः सुखं राज्ये बहुभोगान्विता मही ॥ १०६ ॥ एकादश्यां नभःकृष्णे यदि वर्षा मनागपि । तदा वर्षशुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥ १०७ ॥ नभश्चतुर्दशी राका चतुर्थी पंचमी तथा । सप्तमी वृष्टियुक्ता चेद्वर्षं शुभं न चान्यथा ॥ १०८ ॥ भाद्रमासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते । तदा संपूर्णवर्षास्याद‌न्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥ १०९ ॥ भाद्रे च शुक्लपंचम्यां जले दत्ते नचेद्धनः । दैवकोपात्तदाज्ञेयो सज्जनोपि च दुर्जनः ॥ ११० ॥

अर्थः—श्रावणकृष्ण चतुर्थीको अरुणोदय होनेपर यदि बादल वर्षा निसदिन हो तो सर्वत्र सुख और वर्षा हो ॥ ९६ ॥ श्रावणकृष्ण पंचमीको आकाश निर्मल रहे तो शुभ है और अठारह दिन पीछे वर्षा जाननी ॥ ९७ ॥ श्रावणकी अमावास्याको जो वृष्टि हो तो चराचर विश्व सुखभागी हो ॥ ९८ ॥ जो श्रावणमें चित्रा स्वाती विशाखाके दिन जल न वर्षे तो कूप खोदकर नदीके किनारे घर बनाना उचित है ॥ ९९ ॥ श्रावणकृष्ण पंचमी जो वर्षा हो तो चार महीने पूरा वर्षे ॥ १०० ॥ श्रावणशुक्ल सप्तमीको सूर्यास्त होनेमें जो वर्षा न

हो तो सर्वथा जलकी आशा त्यागनी उचित है॥ १०१ ॥ श्रावणशुक्र अष्टमीको जो बादल हो और सूर्य छिपा रहै तो महावर्षा हो॥ १०२॥ पूर्णमासीके दिन जो चन्द्रमा मेघाच्छादित उदय हो तो सब जगत स्वस्थ राज्य और सुखकी वृद्धि हो ॥ १०३ ॥ श्रावणकृष्णपक्षमें चौथके दिन पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रमें मेघ वर्षे तो अच्छी वर्षा हो ॥ १०४ ॥ श्रावणशुक्र चौथ पूर्णिमा पंचमी, चतुर्दशी सप्तमीकेदिन वर्षा हो तो शुभ है ॥ १०५ ॥ श्रावणशुक्र सप्तमी स्वातियोगमें जल वर्षे तो प्रजामें आनंद राज्यमें सुख पृथ्वीमें महाआनदहो ॥ १०६ ॥ श्रावणकृष्णा एकादशीके दिन यदि थोड़ीभी वर्षा हो तो अगला वर्ष अच्छा हो ॥ १०७ ॥ श्रावणकी चौदश पूर्णिमा चौथ पंचमी सप्तमीको वर्षा हो तो निःसन्देह वर्ष अच्छा है अन्यथा नहीं॥१०८॥भादौंमासकी बीजद्वितियाके दिन जो चन्द्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण प्रकारसे अच्छी वर्षा हो अन्नकी उत्तम प्राप्ति हो॥ १०९ ॥ भाद्रपदशुक्ल पंचमीकेदिन जो बादल न वर्षे तो दैवकोपसे जानिये कि सज्जनभी दुर्जन हो जायगे॥ ११० ॥

यद्यगस्तेरुदयने वर्षा हर्षाय जायते । सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्नचेद्भिक्षापि दुर्लभा ॥ १११ ॥ सप्तम्यां भाद्रमासस्य न वर्षा नच गर्जितम् । विद्युद्विद्योतने नैव दैवकालस्य नाशकः ॥ ११२ ॥ नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टिर्दुष्कालमादिशेत् । एकादश्यां तु तस्यैव धनोधान्यसमर्घदः ॥११३॥ सिंहेर्कदिवसे वृष्टिर्न शुभाय नृणां स्मृता । दैवाज्जाते घने पश्चाद्वृष्टिर्दिनद्वयान्तरे ॥ ११४ ॥ तदा तद्दूषणं नास्ति मासमेकं मवर्षति । भाद्रे चतुर्दशी वृष्टिर्जने रोगाय जायते ॥ ११५ ॥ आश्विनस्य चतुर्थ्यां चेद्बादलान्यरुणोदये । तदा क्षेमाय लोकानां वृष्टिः संजायते शुभा ॥११६॥ आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां यदि वादलम् । विद्युद्वर्षाथवा माषतिलानां वैमहर्घता ॥ ११७ ॥ सप्तम्याश्वयुजि मासे सितेऽष्टमी जलान्विता । सुभिक्षं तत्र चादेस्यं राजानः शांतविग्रहः ॥ ११८ ॥ एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघसमीक्ष्यते ।आषाढेत्र तदा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः॥११९॥ द्वितीयायां तृतीयायां कार्तिके वृष्टिलक्षणं । भावि वर्षे बहुजलं न चेत्तस्मिन्नवर्षणम् ॥१२०॥ द्वादश्यां कार्तिके रात्रौ मार्गस्य दशमी दिने । पंचम्यां पौषमासस्य सप्तम्यां माघमासके ॥ १२१ ॥ धाराधरो यदा वृष्टिः कुरुते वा सुगर्जितम् । तदा च श्रावणे मासे सलिलं नैव दृश्यते ॥ ॥ १२२ ॥ कार्तिके च द्वितीयायां तृतीया नवमीदिने । एकादश्यां त्रयोदश्यामभ्राद्वृष्टिर्घनो महान् ॥ १२३ ॥ कार्तिके यदि संक्रान्तेः पर्यन्ते

प्रदीपमाच्छाद्य गर्जेदैरावतान्वितः। विद्युत्कुमारिसंयोगाद्देवेन्द्रोगर्भकारकः॥ १३५॥ उत्तरस्यां यदा विद्युत्स्वर्णवर्णा प्रदीप्यते। सा विद्युज्जलदा ज्ञेया शीघ्रं मेघमहोदयः ॥ १३६ ॥ ऐंद्री च जलदा विद्युदाग्नेयी जलनाशिनी। याम्यां चाल्पजला प्रोक्ता वातकृद्वायवी तथा ॥ १३७ ॥ प्रभूतजलदा ज्ञेया वारुणी सस्यसंपदे । नैर्ऋतिर्निर्मला प्रोक्ता कौबेरी क्षिप्रवर्षिणी ॥१३८॥ ऐशानी लोकशुभदा विद्युद्भेदाइति स्मृताः। यत्र देशे सुभिक्षं स्याद्विद्युत्तत्रैव गच्छति॥१३९॥दिक्षुभूता स्थितिगुप्ता मेघानां मार्गदर्शनी। विद्युद्धीना न गर्जंति नवर्षन्ति जलं विना ॥ १४०॥

अर्थः—मार्गशीर्षकी चौथ पचमीको वादल हों तो अगले वर्ष पूर्णवर्षा हो ॥ १२६ ॥ मार्गशीर्षसप्तमीको दिनरात निर्मल हो तो वैशाखमें मेघछाये रहें धान्यभाव तेज हो ॥ १२७॥ मार्गशुक्लद्वादशी वा अमावसके दिन वर्षे तो अगला वर्ष शुभ हो ॥ १२८ ॥ पौषकृष्ण दशमीके दिन रात्रीको वादल वर्षे तो भादोंमें बड़ी वर्षा हो ॥ १२९ ॥ पौषमें विजलीका चमत्कार हो और वादल गर्जे तो अवश्य मेघका गर्भ रहा जानना ॥ १३० ॥ पौष छठके दिन मेघ वर्षे तो भाद्रकृष्णमें मेघ वर्षे पौषशुक्लमें वर्षे तो श्रावणमें वर्षा हो ॥१३१॥ पौषशुक्ल सप्तमी आदि तीन तिथिमें विजली गर्जे तो सुखके निमित्त मेघ वर्षे ॥ १३२ ॥ एकादशी छठ पूर्णिमा अमावसके दिन पौषमें वर्षा न हो तो आषाढमें अच्छी वर्षा हो. ॥ १३३ ॥ पौषशुक्लचतुर्दशीको विजलीका देखना अच्छा है ऐसा होनेसे आषाढकृष्णमें मेघकी प्राप्ति हो ॥ १३४॥ आकाशमें वादल सूर्यको छिपाकर गर्जे विजली चमके तो मेघका उदय होगा ॥ १३५ ॥ उत्तरदिशामें सुवर्ण रंगकी विजली चमके तो वह जलदायक है शीघ्र मेघउदय होगा ॥ १३६ ॥ ऐन्द्री पूर्वमें चमके तो जलदायक है आग्नेय दिशामें चमके तो जलको नाश करे दक्षिणमें चमके तो थोड़ा जल वर्षे वायव्य दिशाको चमके तो पवन चले॥१३७॥पश्चिममें चमके तो बहुत जल वर्षे धनसम्पत्ति हो नैर्ऋत्यदिशामें चमके तो निर्मल आकाश हो कुबेरकी दिशा उत्तरमें चमके तो शीघ्र जल वर्षे॥१३८॥ईशान दिशाको लोकसुखदायक है जिस देशमें सुभिक्ष हो विजली वहांही जाती है॥ १३९ ॥ यह दिशाओंमें स्थित हो मेघोंको मार्ग दिखाती हैं वादल विजलीके विना नहीं गर्जते और जलके विना नहीं वर्षते ॥ १४० ॥

अतिवातश्च निर्वातअति उष्णमनुष्णता। अल्पभ्रं चानिरभ्रं च षडेते वृष्टिलक्षणाः ॥ १४१ ॥ अंस्वप्लुतं नीरदगर्जितं च स्त्रीणांचरित्रं भवितव्यता च। अवर्षणं चाप्यतिवर्षणं च देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ॥१४२॥ पौषमासे श्वेतपक्षे ऋक्षं शतभिषग् यदा। वाताभ्रविद्युत्पंचम्यां गर्भश्चैवं प्रजायते ॥ १४३ ॥ सर्वाषाढे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम्। द्रोणसंज्ञस्तत्रमेघः सप्तरात्रं प्रवर्षति ॥ १४४ ॥ सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्लपोष्णादि

नत्रयम्। विद्युत्तुषारवाताभूः हिमेगर्भसमुद्भवः॥ १४५॥ एकादशीपौषशुक्ले सहिमाविद्युता युता। सजला रोहिणी योगाच्छुभादेश्या विचक्षणैः॥ १४६॥ पौर्णमासी द्वितीया च विद्युता वा हिमान्विता। वर्षा निष्पत्तिरादेश्या मेघैश्छन्नैस्तथाम्बरे॥ १४७॥ आषाढस्य त्वमावास्यां प्रबलं जलमादिशेत्। निष्पत्तिः सर्वधान्यानां प्रजानां निरुपद्रवः॥१४८॥ पूर्णमास्यां यदा पौषे चन्द्रमा नैव दृश्यते। उत्तरस्यां दक्षिणस्यांयदा विद्युत्प्रदर्शनम्॥ १४९॥ अभ्रच्छन्ने नभो वापि महावृष्टिं तदा दिशेत्। अमावास्यां श्रावणस्य नूनं भाविनि वत्सरे॥ १५०॥ पौषस्य कृष्णसप्तम्यां स्वातियोगे जले यदा। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं जायते नात्र संशयः॥ १५१॥ अभ्रच्छन्नेजले स्वल्पं जलपाते महाजलम्। त्रयोदशीत्रये कृष्णे पौषे विद्युच्चगर्भदा॥ १५२॥ ऐन्द्रीविद्युदमावस्यां दर्शनं वा हिमस्य चेत्। अभ्रच्छन्नं नभो वापि सुभिक्षं जायते तदा॥ १५३॥ सप्तम्यादित्रये माघे शुक्ले बादलयोगतः। धनधान्यसमृद्धिः स्याद्विवाहोत्सवो जने॥ १५४॥

अर्थः—पवनका अधिक चलना नहीं चलना अतिगरमी तथा अनुष्णता थोडे मेघ अथवा मेघोंका अधिक होना यह छः वर्षाके लक्षण हैं॥ १४१॥ घोडेका कूदना और मेघका गर्जना स्त्रियोंके चरित्र होनहार वर्षाका होना न होना यह देवभी नहीं जानता मनुष्य तो क्या है॥ १४२॥ पौषशुक्लपक्षमें जो शतभिषा नक्षत्र पंचमीके दिन हो और उस दिन पवन बादल बिजली चमके तो गर्भ (वर्षा) के निमित्त है॥ १४३॥ वह गर्भ आषाढकृष्णपक्षकी चतुर्थीके दिन अवश्य वर्षे उस समय सात दिनतक द्रोणसंज्ञावाला मेघ वर्षेगा॥ १४४॥ पौषशुक्ल सप्तमी आदि तीन दिन स्वेती आदि तीन नक्षत्रोंमें बिजली तुषार और पवन हो तो सरदीभी हो तो वर्षाके निमित्त गर्भ रहे॥ १४५॥ पौषशुक्ल एकादशी हिम और बिजलीसे युक्त हो रोहिणीका योग और कुछ वर्षा हो तो अच्छा है॥ १४६॥ पौर्णमासी और दोयके दिन जल वर्षे वा पाला पडै वा आकाश मेघोंसे आच्छादित रहे तो वर्षा हो॥ १४७॥ आषाढकी अमावसको महा वृष्टि हो सर्व धान्यकी उत्पत्ति और प्रजा उपद्रव रहित हों॥ १४८॥ पूषकी पूर्णिमाको मेघोंसे चन्द्रमा न दीखे और उत्तरदक्षिणमें बिजली चमके॥ १४९॥ वा आकाश मेघाछन्न रहे तो महावर्षा हो वह वर्षा श्रावणकी अमावासको होगी॥ १५०॥ पौषकृष्णासप्तमीको स्वातिनक्षत्रके दिन जल वर्षे तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो॥ १५१॥ मेघ छाये रहैं तो थोडा जल वर्षे जल वर्षे तो महावर्षा और पौषकृष्णमें त्रयोदशी आदि तीन तिथिमें बिजली चमके तो गर्भके निमित्त है॥ १५२॥ अमावसको बिजली पूर्वमें

चमके और वर्फ पडे वा आकाश मेघाच्छन्न रहे तो सुभिक्ष हो ॥ १५३ ॥ माघशुक्ल सप्तमी आदि तीन तिथिमें शुक्रके दिन मेघ हो तो धनधान्यकी वृद्धि प्रजामें विवाह उत्सव हों॥१५४॥

माघ नवम्यां शुक्ले परिवेषः शशिनि दृश्यतेऽवश्यम्। आषाढे वर्षति तदा मेघमहोदयो भवति ॥ १५५ ॥ माघे दशम्यां हि शुभाय वर्षा तद्वन्नवम्यां यदि चेदवर्षा। हर्षाय तर्षातिशयो न कश्चिद्वर्षागमे मेघमहोदयेन ॥१५६॥ माघमासे चतुर्दश्यां प्रहरे यत्र वादलम्। वर्षाकाले तत्र मासे न वर्षति पयोधरः॥१५७॥ महासुभिक्षमादेश्यं राजानो निरुपद्रवाः। सप्तमी निर्मला नेष्टा श्रेष्ठा वृष्टिबलान्ननु ॥ १५८ ॥ माघस्य शुक्लसप्तम्यां यदाभ्रं जायतेभितः। तदा वृष्टिर्घना लोके भविष्यति न संशयः ॥१५९॥ माघे च कृष्णसप्तम्यां स्वातियोगेभ्रगर्जितम्। हिमपाते च संजाते सर्वधान्य प्रजासुखम् ॥ १६० ॥ तथैव फाल्गुने चैत्रे वैशाखे स्वातियोगजम्। विद्युदभ्रादिकं श्रेष्ठमाषाढेपि सुभिक्षकृत् ॥१६१॥ स्वातौ निशांशे प्रथमेभिवृष्टे सस्यानि सर्वाण्युपयान्ति वृद्धिम्। भागे द्वितीये तिलमुद्गमाषा ग्रैष्मं तृतीयेस्ति न शारदानि ॥ १६२ ॥ वृष्टेन्हिभागे प्रथमे सुवृष्टिस्तद्वद्द्वितीये तुपकीटसर्पाः। वृष्टिस्तु मध्या परभागवृष्टेर्निश्छिद्रवृष्टिर्द्युनिशं प्रविष्टे ॥१६३॥ सप्तुत्तरेण ताराचित्रायाः कीर्त्यते ह्यपां वत्सः। तस्या सन्ने चन्द्रे स्वातियोगः शिवो भवति ॥ १६४ ॥ माघे कृष्णनवम्यां च मूलनक्षदिनेथवा। विद्युन्मेघधनुर्योगे चाभ्रैर्नभसि संवृते॥१६५॥ एतस्माद्भवेतो वृष्टिर्भाविवर्षेभिजायते। आषाढे वा भाद्रपदे दशमीदिवसे शुभा ॥१६६॥

अर्थः—माघशुक्लनवमीके दिन जो चन्द्रमाका परिवेष मंडल हो तो आषाढमें मेघ वर्षे ॥ ॥ १५५ ॥ माघकी नौमी दशमीके दिन वर्षा हो तो शुभ हो प्रसन्नता और मेघकी महाप्राप्ति हो॥ १५६ ॥ माघमासकी चौदशके प्रथमपहरमें वादल हो तो वर्षाकालमें उसी तिथिको वर्षा हो ॥ १५७ ॥ अत्यन्त सुभिक्ष और राजा उपद्रवरहित हों सप्तमीका निर्मल होना अच्छा नहीं वर्षना अच्छा है ॥ १५८ ॥ माघशुक्लसप्तमीको जो वर्षा हो तो अवश्य वर्षा हो ॥ ॥ १५९ ॥ माघकृष्ण सप्तमीको स्वातियोगमें जो वादल गर्जे वर्फ गिरे तो सब प्रजाको सुख हो ॥ १६० ॥ इसीप्रकार फाल्गुन चैत्र वैशाखमें स्वाति योगमें विजली वादलका होना अच्छा है आषाढमें सुभिक्षकारक है ॥ १६१ ॥ जिस रात्रिको चंद्रमा स्वातिसे मिले उसरात्रिके तीन भाग करके फल देखे पहले भागकी वर्षासे खेतीकी वृद्धि दूसरेमें वर्षा हो तो तिल मूंग उडदकी वृद्धि तीसरेमें वर्षा हो तो ग्रीष्मऋतुके अन्न जो(यव)गैहूं आदि हों और शरदऋतुका अन्न ज्वार बाजरा आदि न हों ॥ १६२ ॥ और दिनके पहले भागमें वर्षा होय तो आगे

वर्षा श्रेष्ठ हो परन्तु कीडे सर्पोंसहित हों तीसरेमें वर्षा हो तो आगे मध्यम वर्षा जाननी और जो दिनरात वर्षे तो आगे उपद्रवरहित वर्षा जाननी ॥ १६३ ॥ चित्रानक्षत्रके समसूत्र ठीक उत्तरमें अपांवत्स नामक एक ताराहै चद्रमा उस तारेके समीप स्थित हो तो स्वातिसे चंद्रमाका योग शुभ होताहै ॥ १६४ ॥ माघकृष्णा नवमीके दिन मूल नक्षत्रके दिन बिजली चमके मेघ वर्षे वा आकाश मेघोंसे आच्छादित हो तो ॥ १६५ ॥ इस गर्भसे अगले वर्षमें अच्छी वर्षा आषाढ वा भादों मासकी दशमीके दिन अवश्य होगी ॥ ६६ ॥

माघमासे च सप्तम्यां कृष्णे त्रयोदशीद्वये। पूर्वस्यामुन्नते मेघे बादलैः संकुलेपि खे ॥ १६७ ॥ बहूदककरा वृष्टिराषाढेसप्तरात्रकी । अमावस्याम भ्रयोगाद्भाद्रे वै पूर्णिमादिने ॥ १६८ ॥ न वृष्टिर्नगर्जारवो बादलेषु च तुर्य्यां च गोधूमका दुर्लभास्युः । तदा पंचमी वृष्टिहीनापि साभ्रा तदा भाद्रमासे महान्वृष्टियोगः ॥ १६९ ॥ कार्पासस्य महर्घता भुविभवेत्षष्ठी यदा निर्मला सप्तम्यामपि चन्द्रनिर्मलतया राज्ञां महान्विग्रहः । अष्टम्यां यदि भास्करस्समुदितः प्रातःपरं निर्मले रौद्रे वृष्टिनिरोधकृन्नभसि च प्रायोल्पवर्षाकरः ॥ १७० ॥ सप्तम्यादित्रये कृष्णे फाल्गुने घनगर्जितम् । संग्रामाद्यप्रतिग्रामं धान्यानां च समर्घता ॥ १७१ ॥ फाल्गुनेमासि वर्षा वै जायते चाष्टमी दिने । तदा सुभिक्षमादेश्यं देशे क्षेमं सुखं बहु ॥ १७२ ॥ सप्तम्यादित्रये साभ्रे गर्भे कुशलनिश्चयः । अमावस्यां भाद्रपदे जलं सुलभमब्दतः ॥ १७३ ॥ फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां पौर्णमास्यां तथा दिने । निर्वातं गगनं मेघा विजला विद्युदान्विता ॥ १७४ ॥ भविष्यद्वत्सरे तत्र सुभिक्षं क्षेममादिशेत् । भाद्रेसौ कृष्णसप्तम्यां दर्शे गर्भः फलं जलम् ॥ १७५ ॥ समये चेद्धुताशन्या ज्वलनस्यास्ति बादलम् । गोधूमकुंकुमापातान्महर्वं प्रोच्यते तदा ॥१७६॥ दशम्येकादशी शुक्ले फाल्गुनेभ्रादिगर्भयुक् । तदा चतुर्थपंचम्यामाश्विने वृष्टिदायनी॥१७७॥

इति श्रीमेघमहोदयसाधने श्रीमेघविजयगणिविरचिते अभ्रविद्युदादिकथने सप्तमोधिकारः ॥ ७ ॥

अर्थः–माघकृष्ण सप्तमी त्रयोदशीके दिन पूर्वसे मेघउदय हो और आकाशमें बादल छाये रहें ॥ १६७ ॥ तो आषाढमें सात दिनतक बहुत वर्षा हो और अमावास्याके दिन और भादोंकी पूर्णिमाके दिन मेघ वर्षे जो माघमें बादल छाये रहें ॥ १६८ ॥ जो चौथके दिन वर्षा

रहैं तौ भादोंमें अधिक वर्षा न हो ॥ १६९ ॥ जो छठ निर्मल हो तौ कपास अकरी विके स- प्तमीको चन्द्रमा निर्मल हो तौ राजोंमें महाविग्रह हो जो अष्टमीके दिन सूर्य निर्मल निकले तौ यह वर्षाका निरोध करे अर्थात् थोड़ी वर्षा हो ॥ १७० ॥ फाल्गुनकी सप्तमी आदि तीन दिनमें घन गर्जै तौ गामगाममें युद्ध धान्यभाव सस्ता हो ॥ १७१ ॥ जो फाल्गुनकी अष्टमीके दिन वर्षा हो तौ देशमें सुभिक्ष और सुख कल्याण हो ॥ १७२ ॥ जो सप्तमी आदि तीन दिन बादल रहैं तौ यह गर्भके और आनंदके कर्ता हैं ऐसा होनेसे भादोंकी अमावसको अ- धिक जल वर्षे ॥ १७३ ॥ फाल्गुनशुक्ल सप्तमी और पूर्णमासीके दिन पवनरहित उज्वल बिजलीरहित आकाश हो ॥ १७४ ॥ तौ अगले वर्षमें सुभिक्ष और मंगल हो यह गर्भ भादौं शुदी सप्तमी और अमावसको वर्षे ॥ १७५ ॥ होली जलनेके समय यदि बादल हो तौ गो- धूम (गेहूं) और कुमकुम पत्र अकरे हों ॥ १७६ ॥ फाल्गुनकी दशमी एकादशीको बाद- ल हो तौ गर्भके निमित्त हैं इससे आश्विनकी चतुर्थी पंचमीके दिन वर्षा होती है ॥ १७७ ॥

इति श्रीवर्षप्रबोधे भाषाटीकायां सप्तमोधिकारः ॥ ७ ॥

मार्गशिरः सितपक्षे प्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेषाढ्याम् । पूर्वां वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयं ॥ १ ॥ यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत्सचन्द्रवशा त् । पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति ॥ २ ॥ सितपक्षभवाकृष्णे शुक्ले कृष्णाद्यसंभवारात्रौ । नक्तं प्रभवाश्चाहनि संध्याजाताश्च संध्या यां ॥ ३ ॥ कर्काधूमरिकापातो रजोवृष्टिः सधूमिका । त्रिभिरेतैर्महो त्पातैः सद्यो गर्भो विनश्यति ॥ ४ ॥ मृगशीर्षाद्यागर्भामन्दफलापौषशु क्लजाताश्च । पौषस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेच्छ्रावणस्यसितम् ॥ ५ ॥ माघ सितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूतिमायान्ति । माघस्य कृष्णपक्षेण वि निर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम् ॥ ६ ॥ फाल्गुनशुक्लसमुत्थाः भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्याः । तस्यैव कृष्णपक्षोद्भवास्तु ये तेश्वयुक्शुक्ले ॥ ७ ॥ चैत्र सितपक्षजाता कृष्णेश्वयुजश्च वारिदागर्भाः । चैत्रासितसंभूताः कार्ति के शुक्लेभिवर्षन्ति ॥ ८ ॥ पूर्वस्यां यदि संध्यायां मेघैराच्छादितं नभः । पर्वताः कृत्रिमैः कैश्चित्कैश्चित्कुंजरमूर्तिभिः ॥ ९ ॥ नानाकृतिधरैश्चै व मातंगधवलैर्घनैः । पंचरात्रात्सप्तरात्रात्सद्योवृष्टिर्निगद्यते ॥ १० ॥ उ त्तरस्यां च संध्यायां गिरिमालेव विस्तृतः । मेघस्तृतीयदिवसे वृष्ट्या तु ष्टिकरो नृणां ॥ ११ ॥ पश्चिमायान्तु संध्यायः घनाः स्युः पर्वता इव । श्यामाभ्रेस्तंगते भानौ सद्यो वर्षाभिलक्षणं ॥ १२ ॥ दक्षिणस्यां यदा मेघाः संकोटीनारसंभवाः । त्रिपंचसप्तरात्रान्तः किंचिद्वृष्टिविधायकाः

॥ १३ ॥ आग्नेय्यां बहुतापाय मेघास्वल्पजलप्रदाः । नैऋत्यामीतिसंतापरोगवर्षाकरीस्मृता ॥ १४ ॥

अर्थः-मार्गशीर्षशुक्ल प्रतिपदाके उपरान्त जब चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्रपर स्थित हो उसी समयसे गर्भके लक्षण जानने उचित हैं ॥ १ ॥ चन्द्रमाके जिस नक्षत्रपर स्थित होनेसेः गर्भ हो फिर एकसौपिचानवें दिन अर्थात् सावनमानसे पिचानवें दिन अर्थात् सावनमानसे साढे छः महीने वीतनेपर जब उसी नक्षत्रपर चन्द्र आवे तो प्रसव होताहै ॥ २ ॥ शुक्लपक्षके हुए गर्भ साढेछः महीनेके उपरान्त प्रसव होतेहैं इसीप्रकार कृष्णपक्षके शुक्लपक्षमें प्रवर्षण करतेहैं दिनके गर्भरात्रिमें और रात्रिके दिनमें प्रसव होतेहैं प्रातःसंध्याके सायसंध्यामें और सायसंध्याके प्रातःसंध्यामें प्रसव होतेहैं ॥ ३ ॥ कहीं धूम्रापात धूमसहित रज (धूरिकी वर्षा होनी) इन तीन महोत्पातोंसे शीघ्र गर्भ नष्ट हो जातेहैं ॥ ४ ॥ मार्गशीर्षके कृष्णपक्षके हुए गर्भ और पौषशुक्लके गर्भ मन्दफल देनेवाले होतेहैं इस लक्षणमें चैत्रशुक्लादिमहीना गिनना उचित है जैसे चैत्रशुक्ल और वैशाखकृष्ण मिलकर चैत्र हुआ इसी भांति और भी जानना. पौषकृष्णपक्षके गर्भ श्रावणशुक्लमें वर्षते हैं ॥ ५ ॥ माघशुक्लके गर्भ श्रावणकृष्णमें और माघकृष्णके भाद्रपदशुक्लमें प्रसव होतेहैं ॥ ६ ॥ फाल्गुनशुक्लके भाद्रपदकृष्णमें फाल्गुनकृष्णके आश्विनशुक्लमें वर्षते हैं ॥ ७ ॥ चैत्रशुक्लके गर्भ आश्विन कृष्णमें वर्षते है और चैत्रकृष्णके कार्तिकशुक्लमें वर्षते हैं ॥ ८ ॥ जो संध्यासमय पूर्वमें आकाश मेघाच्छादित हो और वे मेघ, पर्वत तथा हाथीकी समान हों ॥ ९ ॥ और अनेकप्रकारके श्वेत हस्तीकी समान दीखैं तो पांच तथा सात रातमें अवश्य वर्षा हो ॥ १० ॥ संध्यासमय उत्तरमें पर्वत पंक्तिकी समान विस्तृत मेघ हों तो तीन दिनमें अच्छी वर्षा हो ॥ ११ ॥ संध्यासमय पश्चिममें मेघ पर्वतकी समान हो श्याम रंग हो तो सूर्यास्तमें वर्षा हो ॥ १२ ॥ जो सन्ध्याको दक्षिणमें मेघ हों तो तीन, पांच वा सातरात्रिमें कुछ वर्षा हो ॥ १३ ॥ आग्नेयदिशामें होनेसे ताप और थोड़ी वर्षा हो नैऋत्यमें हो तो ईति संताप और वर्षा रोगदायक हो ॥ १४ ॥

वातवृष्टिकराः सद्यो वायव्यामुन्नता घनाः । ऐशान्यामशनिव्यक्ताः मेघाः सुखकरा जलात् ॥ १५ ॥ चतुर्थी पंचमी षष्ठी अमावास्या च सप्तमी । आषाढकृष्णातिथयः सद्यो मेघाय लक्षणैः ॥ १६ ॥ मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे मघायां गर्भसंभवे । यद्वा कृष्णचतुर्दश्यां सविद्युन्मेघदर्शने ॥ ॥ १७ ॥ आषाढे शुक्लपक्षे च चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवं । मार्गकृष्णचतुर्थ्यां दिन्त्रयेश्लेषात्रयी क्रमात् ॥ १८ ॥ गर्भितेष्वेषु ऋक्षेषु मार्गे कृष्णफलं भवेत् । आषाढे पूर्वफाल्गुन्यां त्रिरात्रं वृष्टिसंभवः ॥ १९ ॥ उत्तराहस्ताचित्रा च सप्तम्यादित्रये यदा । मार्गशीर्षे गर्भिता चेदभ्रैर्वातैश्च विद्युतः ॥ ॥ २० ॥ आषाढेश्वेतपक्षे तु अष्टम्यां स्वातिभे तदा । त्रिरात्रं मेघवृष्ट्या

स्याज्जलैरेकार्णवा मही ॥ २१ ॥ दशम्यादित्रये मार्गे कृष्णे चामावसी तिथौ । चित्रास्वातिविशाखासु संजाते गर्भलक्षणे ॥ २२ ॥ आषाढे शुक्लपक्षान्तस्तिथौ तस्यां धनोदयः । तस्मिन्नेवच नक्षत्रे जायते नात्रसंशयः ॥ २३ ॥ सप्तमी दशमी चैकादशी श्रावणकृष्णगा । मेघचिह्नेन संध्यायां त्रिरात्रा वृष्टिकारिणी ॥ २४ ॥ अमावस्यां श्रावणस्य चित्रादिनेथवा सिते । सद्य उत्पद्यते गर्भः सुदिने दुर्दिनादिना ॥ २५ ॥ पूर्वस्यां वादलं धूम्रं सूर्यास्ते याति कृष्णता । उत्तरस्यां मेघमाला प्रभाते विमलादिशः ॥ २६ ॥ मध्यकाले जनस्ताप ईदृशं मेघलक्षणं । अर्द्धरात्रे गते वृष्टिः प्रजातोपाय जायते ॥२७॥ भाद्रशुक्ले चतुर्थेन्हि पंचमेसप्तमे ऽष्टमे । पूर्णिमायांचगर्भेण सद्योमेघमहोदयः॥२८॥ पंचभिः सप्तभिर्वास्यांदिनैरेकार्णवा मही।चतुर्थ्यामपि पंचम्यामाश्विनेशीघ्रगर्भता २९

अर्थः—वायव्यदिशाके बादल शीघ्र वर्षते हैं ईशानदिशाके जगतको सुख देते हैं ॥ १५॥ चोथ पचमी छठ अमावस सप्तमी आषाढकृष्णकी यह तिथि शीघ्र मेघ वर्षाती हैं ॥ १६ ॥ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षमें मघामें गर्भकी प्राप्ति हो अथवा कृष्ण चतुर्दशीको मेघ बिजली हो॥१७॥ वह आषाढशुक्लपक्षकी चौथको अवश्य वर्षे मार्गकृष्णचतुर्थी आदि तीन तिथि और आश्लेषादि तीन नक्षत्र ॥ १८ ॥ इनमें गर्भकी प्राप्ति होनेसे आषाढमें पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें तीन दिन वर्षा हो ॥ १९ ॥ उत्तरा हस्त चित्रा और सप्तमी आदि तीन नक्षत्र जो मार्गशीर्षमें गर्भित हों तो मेघ और बिजली चमके ॥ २० ॥ तो आषाढशुक्ल अष्टमी स्वाति नक्षत्रमें तीनरात महावृष्टि हो ॥ २१ ॥ मार्गशीर्षकृष्ण दशमी आदि तीन तिथि और अमावसको चित्रा स्वाति विशाखामें गर्भ रहै ॥ २२ ॥ तो आषाढीपूर्णिमाको मेघ वर्षे और उसी नक्षत्रमें वर्षा हो ॥ २३ ॥ श्रावणकृष्णकी दशमी सप्तमी एकादशीको संध्याको मेघ हो तो तीन रातमें वर्षा हो ॥ २४ ॥ श्रावणकी अमावस वा चित्रा नक्षत्रके दिन शुक्लपक्षमें मेघ हो या न हो गर्भ उत्पन्न होताहै ॥ २५ ॥ यदि पूर्वमें धूमला बादल सूर्यास्तमें श्याम होजाय और उत्तरमें मेघ हो दिशा प्रातःकाल निर्मलहोजाय ॥ २६ ॥ मध्यान्हमें महागर्मी हो ऐसा लक्षण होनेसे आधीरातमें अच्छी वर्षा हो ॥ २७ ॥ भादोंके शुक्लपक्षमें चौथे पाचवें सातवें आठवें दिन वा पूर्णिमाको गर्भ हो तो शीघ्र मेघ वर्षे ॥ २८ ॥ अर्थात् पाच सात दिनमेंही पृथ्वी जलसे पूर्ण हो जाय चतुर्थी पचमीको आश्विनमें शीघ्र गर्भता हो ॥ २९ ॥

दक्षिणः प्रबलो वातः सकृदेव प्रजायते । वारुणैश्चैव नक्षत्रैः शीघ्रं वर्षति माधवः ॥ ३० ॥ धूम्रिताः स्युर्दिशः सर्वा पूर्ववाते वहत्यपि । चतुर्थ्यामान्तरे मेघः सरांसि परिपूरयेत् ॥ ३१ ॥ उदयशिखरिसंस्थो दुर्नि

रीक्ष्योतिदीप्त्या द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः । तदहनि कुरुते म्भस्तोयकाले विवस्वान्प्रतिपदि यदि वोच्चैः खंगतोतीव तीक्ष्णम् ॥ ॥ ३२ ॥ गर्भोपघातलिंगान्युल्काशनिपातादिग्दाहाः । क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः ॥ ३३ ॥ रुधिरावृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंपि दर्शनं राहोः । इत्युत्पातैरेभिस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतोगर्भः ॥ ३४ ॥ स्वर्तुःस्वभावजनितैः सामान्यैर्यैश्चलक्षणैर्वृद्धिः । गर्भाणां विपरीतैस्तैरेव विपर्ययो भवति ॥ ३५ ॥ भाद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदैवपैतामहेष्वथर्क्षेषु । सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदोभवति ॥ ३६ ॥ शतभिषगश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतः शुभो गर्भः । पुष्णाति बहून् दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हतेस्त्रिविधैः ॥ ३७ ॥ मृगमासादिष्वष्टौ षट्शोडशविंशतिश्चतुर्युक्ता । विंशतिरथदिवसत्रयमेकतमर्क्षेण पंचम्यः ॥ ३८ ॥ क्रूरग्रहसंयुक्ते करकाशनिमत्स्यवर्षदा गर्भाः । शशिनि रवौ वा शुभसंयुते क्षिते भूरिवृष्टिकराः ॥ ॥३९॥ गर्भसमयेतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निमित्तकृता । द्रोणाष्टांशाभ्यधिके वृष्टेर्गर्भः स्रुतो भवति ॥ ४० ॥

जो दक्षिणकी प्रबल पवन चले और पश्चिमकी साथही चले तो शीघ्र वर्षे ॥ ३० ॥ जो पूर्वपवन चलै और सब दिशा धूम्रवर्ण हों तो चारपहरके अन्तर मेघ वर्षे ॥ ३१ ॥ जो उदयके समय सूर्य अति प्रचण्ड हो गलाये हुए सुवर्णके समान अथवा उज्वल वैदूर्य मणिके समान होय जिस दिन वर्षाकालमें ऐसा सूर्य हो उसी दिन वर्षा करताहै अथवा जिस दिन मध्य आकाशमें प्राप्त होकर अति तीक्षण हो तोभी वर्षा करे ॥ ३२ ॥ अब गर्भनाशके चिन्ह कहतेहैं जो गर्भकेसमय उल्कापात पांशुवर्षा दिग्दाह भूकम्प गन्धर्वनगर निर्घातशब्द ॥ ३३ ॥ रुधिरआदिकी विकृत वर्षा उदयके समय तिरछी मेघरेखाका सूर्यके ऊपर होना इन्द्रधनुपका दर्शन ग्रहण इत्यादि औरभी भूमि दिव्य अन्तरीक्ष तीनप्रकारके उत्पात होनेसे गर्भ नष्ट हो जाताहै वह मेघ नहीं वर्षते ॥ ३४ ॥ अपनेऋतुस्वभावसे उत्पन्न हुए गर्भलक्षण (पौषेसमार्गशीर्षे) इत्यादि हैं और सामान्य लक्षण (हादिमृदूदक) इत्यादि इनसे गर्भोकि वृद्धि होतीहै यही लक्षण विपरीत होनेसे गर्भमें हानि होतीहै ॥ ३५ ॥ पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद पूर्वाषाढा उत्तराषाढा रोहिणी इन नक्षत्रोंमें सब ऋतुओंसे वृद्धिको प्राप्त हुआ गर्भ वर्षता है ॥ ३६ ॥ शतभिषा आश्लेषा आर्द्रा स्वाति मघा इन नक्षत्रोंमें गर्भ होय तो शुभ है अच्छे निमित्तोंसे पुष्ट और उपरोक्त तीन उत्पातोंसे नष्ट हो जाता है ॥ ३७ ॥ मार्गशीर्षमें वृद्धिको प्राप्त हुआ गर्भ साढेछः महीने उपरान्त आठ दिन वर्षता है पुषका छः दिन माघका सोलह दिन फाल्गुनका चौविस वैशाखका तीन दिन इसी

प्रकार शतभिषादि पाच नक्षत्रोंमे गर्भकी वृद्धिसे वर्षनेके दिनोंकी सख्या जानो ॥३८॥ यदि गर्भका नक्षत्र क्रूरग्रहयुक्त होय तौ वर्षाके समय ओले पडें बिजली गिरे जलके साथ मत्स्य वर्षे और जो उस नक्षत्रपर चन्द्रमा सूर्य हो तथा शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तौ अधिक वर्षा करै ॥ ३९ ॥ गर्भके समय विनाकारण अति वृष्टि हो तौ गर्भका नाश हो जाता है पचीस पलसे अधिक वर्षा होय तौ गर्भस्राव होजाता है ॥ ४० ॥

गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातादिभिर्यदि न वृष्टः। आत्मीयगर्भसमये करकामिश्रं ददात्यंभः ॥ ४१ ॥ काठिन्यं याति यथाचिरकालधृतं पयः पयस्विन्याः। कालातीत तद्वत्सलिलं काठिन्यमुपयाति॥ ४२ ॥ पंचनिमित्तैः । शत योजनतदर्द्धार्द्धमेकहान्यतः। वर्षति पंचसमन्ताद्रूपेणैकेन यो गर्भः ॥ ४३ ॥ द्रोणः पंचनिमित्ते गर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन । षड विद्युता नवाभ्रैः स्तनितेन द्वादशप्रसवे ॥ ४४ ॥ रात्रौ तारागलत्कारः प्रातश्चात्यरुणो रविः । अवृष्टौ शक्रचापश्च सद्यो वृष्टिस्तदा भवेत्॥४५॥ धूम्रिता निविडा शैलाश्चर्मादिषु तथार्द्रता । प्रभाते पश्चिमायां चेदिन्द्रचापः प्रदृश्यते ॥ ४६ ॥ वारुणैश्चैव नक्षत्रैः शीघ्रं वर्षति माधवः। गोमये उत्कराः कीटाः परितापेतिदारुणः ॥ ४७ ॥ चातकानां रवो वृष्टिः सद्यो वै सूचयेज्जने। सूर्योदये श्रावणमासि गर्जेद्भ्रमन्तिनीरोपरिवापि मत्स्याः। घनस्तदाष्टादशयाममध्ये करोतिभूमिं सलिलेनपूर्णाम्॥४८॥ शुककपोतविलोचनसन्निभो मधुनिभश्च यदा हिमदीधितिः। प्रतिशशी च यदा दिवि राजते पतति वारि तदा न चिराद्दिवः ॥ ४९ ॥ स्तनित निशि विद्युतो दिवा रुधिरनिभा यदि दंडवत स्थिताः । पवनः पुरतश्च शीतलो यदि सलिलास्यस्तदागमोभवेत् ॥ ५० ॥

अर्थ-गर्भके समय जो गर्भ पुष्ट होय और प्रसवके समय मंगलादि ग्रहके रोहिणी श्रवणादि नक्षत्रपर रहनेसे अथवा और किसी उत्पातसे न वर्षे वह दूसरे गर्भग्रहणके समय ओलेसहित जल वर्षता है ॥ ४१ ॥ जैसे गौका दूध बहुतकाल रहनेसे कठिण हो जाताहै इसीप्रकार जलभी वर्षनेके समय न वर्षनेसे कठिन होकर ओले हो जाते हैं ॥ ४२ ॥ पवन जल बिजली गर्जन मेघ यह पाच निमित्त हैं गर्भके समय यह पाचो हों तौ वर्षनेके समय वह मेघ सौ योजनतक वर्षताहै चार निमित्तसे पचास तीनसे पचीस दोसे साढे बारह एकनिमित्तसे पाच योजनतक वर्षताहै ॥ ४३ ॥ पाचनिमित्त गर्भमें हों तौ एकद्रोण (२०० पल) जल वर्षता है और प्रसवसमय पवन होय तौ तीन आढक (१५० [1]पल) वर्षता है गर्भके

[1] ३ तोले २ मासे ८३ रत्ती

समय विजली होय तो छः आढक, मेघसयुक्त गर्भ होय तो नो आढक, और गर्भसमय मेघ गर्जे तो बारह आढक जल वर्षे पचास पलका एक आढक और चार आढकका एक द्रोण होताहै एकहाथ लम्बा एक हाथ चौडा कुण्ड बनाकर वर्षामें रख दे वर्षा होनेउपरान्त जल तोल्कर प्रमाण जाने ॥ ४४ ॥ रात्रिमें उलकापात प्रातःकाल सूर्यमें अधिक लाली विनावर्षामें इन्द्रधनुप निकले तो शीघ्र वर्षा हो ॥ ४५ ॥ पर्वत धुमेले हों घने दीखें चमडाआदि मुलायम हो जाय प्रातःकाल पश्चिममें इन्द्रधनुप दीखे ॥४६॥वरुणदिशामें नक्षत्र हों तो शीघ्र वर्षा हो जो गोवरमे कीडे दारुण उत्पन्न हों ॥ ४७ ॥ और चातक शब्द कर तो शीघ्र वर्षा हो श्रावण मासमें जो सूर्योदयके समय गर्जे जलके ऊपर मछलीघूमें तो अठारह पहरमें बहुत वर्षा हो ॥ ४८ ॥ चन्द्रमाका रग तोते और कबूतरकी आखकी समान लाल हो जाय व शहतके समान हो जाय वा दूसरा चन्द्रमा दीखे तो शीघ्र वर्षे ॥ ४९ ॥ रातको वादल गर्जे दिनमें लालवर्ण विजली दडकी तुल्य सीधी दीखे पूर्वदिशाकी पवन चले तो शीघ्र वर्षा होय ॥ ५० ॥

वल्लीनां गगन तलोन्मुखाः प्रवालाः स्नायन्ते यदि जलपांसुभिर्विहङ्गाः। सेवन्ते यदि च सरिसृपास्तृणाग्राण्यासन्नो भवति तदा जलस्य पातः ॥ ५२ ॥ यदा भाद्रपदे मासे प्रतिपद्दशमी तथा । सप्तमी पूर्णिमा चैव नवमी च यथाक्रमं ॥ ५३ ॥ मेघा यदा न दृश्यन्ते पाश्चिमां दिशि मा श्रिताः।तद्वर्षति सततं बहुनीराः पयोधराः॥५४॥संध्याकाले च ये मेघाः पर्वताकारसन्निभाः । आदित्यास्तंगते तर्हिअहोरात्र प्रवर्षति ॥ ५५ ॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे श्रीमेघविजयगणिविरचिते गर्भ कथनोनामाष्टमोधिकारः ॥ ८ ॥

अर्थः—वेलोंके पत्ते आकाशकी ओर ऊचे हो जाय अथवा धूलिसें पखेरू स्नान करैं सर्पादि कीडे तृणोंके अग्रभागपर चढकर बैठें चैंटी निकले विलाई नखोंसे वारवार पृथ्वी कुरेदे तो शीघ्र वर्षा हो ॥ ५२ ॥ जो भादोंके महीनेमें पडवा दशमी सप्तमी पूनो नवमीको यथाक्रम मेघ न दीखें और पश्चिमकी दिशामें न हों तो बहुत वर्षा हो ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ जो सध्याकालमें मेघ पर्वताकार हों तो सूर्यास्तमें वे एकदिनरात वर्षे ॥ ५५ ॥

इति श्रीमेघमहोदये भापाटीकाया अष्टमोधिकार. ॥ ८ ॥

चैत्रे सितप्रतिपदि रेवत्यां बहुलं जलं । वैशाखशुद्धप्रतिपद्भरण्यां तृणसंभवः ॥ १ ॥ ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि मृगे वातः शुभो भवेत् । आपाढशुक्लप्रतिपदादितो धान्यसंभवः ॥ २ ॥ चैत्रशुक्लप्रतिपदि रवौ वायुविशेषतः। अल्पवर्षाफलं तुच्छमल्पधान्यं प्रजायते ॥ ३ ॥ चन्द्रे बहुजलं धान्यं तृणानां बहुलोदयः । ईतयःसप्तधा भौमे पीडादुःखपराभवः ॥ ४ ॥ बुधे

च मध्यमे वर्षं सुभिक्षं तु गुरौ भृगौ । शनौ धान्यतृणरसाः जलशोषः प्रजातयः ॥ ५ ॥ चैत्रे च शुक्लपंचम्यामार्द्रायोगे यथोचितः । त्रिमास्यां धान्यसंक्षेपः श्रावणे जलदोदयः ॥ ६ ॥ चैत्रे दशम्यां शनिना युक्ता वारेण चेन्मघा । तदाधान्यं समर्घं स्याज्जाते मेघमहोदये ॥ ७ ॥

अर्थः–जो चैत्रशुक्लप्रतिपदाके दिन रेवती नक्षत्र हो तो बहुत वर्षा हो वैशाखशुक्लप्रतिपदाको भरणी हो तो तृणोत्पत्ति ॥ १ ॥ ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदाको मृगशिर हो तो शुभ पवन रहै आषाढशुक्लप्रतिपदाको रवि हो तो धान्यकी प्राप्ति हो ॥ २ ॥ जो चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवारके दिन हो तो विशेष पवन चलै इसका फल थोड़ी वर्षा थोडेही फल थोडाही धान्य हो ॥ ॥ ३ ॥ चंद्रवारके दिन हो तो बहुत जल धान्य हो बहुत तृण हो मंगलके दिन हो तो सात प्रकारकी ईति पीडादुःख और पराभव हो ॥ ४ ॥ बुधवारको हो तो मध्यम वर्षा गुरु शुक्रको हो तो सुभिक्ष शनिको हो तो तृणधान्य रसकी हानि प्रजाका क्षय हो ॥ ५ ॥ चैत्रशुक्लपंचमीको आर्द्रा नक्षत्र हो तो तीनमास धान्य थोडे और श्रावणमें मेघका उदय हो ॥ ६ ॥ जो चैत्रकी दशमी शनिवारके दिन मघा नक्षत्रयुक्त हो तो मेघ उदय होनेपर धान्यभाव सस्ता रहै ॥ ७ ॥

चैत्रेवै चाष्टमीमध्ये बुधोथवा भवेत्कुजः । विरूपवर्षं जानीहि नदीतीरे गृहं कुरु ॥ ८ ॥ चैत्रस्य शुक्लपंचम्यां रोहिण्यां यदि दृश्यते । साभ्रं नभस्तदा देश्यागर्भस्य परिपूर्णता ॥ ९ ॥ द्वितीयदिवसे प्राप्ते चैत्रे वायुश्च सर्वतः । न च मेघाः प्रदृश्यन्ते अनावृष्टिर्न संशयः ॥ १० ॥ पौर्णमास्यां यदा स्वातिर्विद्युन्मेघसमन्वितः । निर्दोषमपि पूर्वक्षेर्गर्भो गलितमादिशेत् ॥ ११ ॥ वैशाखकृष्णपक्षस्य पंचम्यां जायते रविः । आगामिवर्षसंक्रान्तौ तद्दिने वृष्टिबाधकः ॥ १२ ॥ वैशाखशुक्लपंचम्यां शनिनार्द्रा प्रसंगतः । सर्ववस्तुसमर्घं स्याद्भाद्रे मेघमहोदयः ॥ १३ ॥ वैशाखमासे सितपंचमी सा सूर्यादिवारैश्चिनुते फलानि । मंदा च वृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धं वातं सुभिक्षं कलहान्ननाशं ॥ १४ ॥ वैशाखे यदिसप्तम्यां धनिष्ठा वा श्रुतिर्भवेत् । श्यामवस्तुमहर्घं स्यात्समर्घं धवलं तदा ॥ १५ ॥ अक्षयाख्यतृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी । कृत्तिका मध्यमं वर्षं दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ १६ ॥ वैशाखे पंचमीमाश्रेद्भयं सर्वत्र जायते । क्वचिन्न मेघवर्षास्याद्धान्यं महर्घमादिशेत् ॥ १७ ॥ वैशाखे धवलाष्टम्यां शनिवारो भवेद्यदि । जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगस्तदा दिशेत् ॥ १८ ॥ रोहिणी चोत्तरातिस्रो मघा वा रेवती भवेत् । नवम्यां मण्डले राधे तदा क

ष्टमहद्भुवि ॥ १९ ॥ वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारो चेद्गुरुभार्गवौ । तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले ॥ २० ॥ अमावस्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता । रोहिणी लोकदुःखाय मध्यमा चाश्विनी स्मृता ॥ २१ ॥

अर्थः-चैत्रकी अष्टमीको मंगल अथवा बुध हो तौ जल न वर्षे नदीके किनारेही घर करै ॥ ८ ॥ चैत्रशुक्लपंचमीको यदि रोहिणी हो और बादलछाये हो तो गर्भकी पूर्णता जाननी ॥ ९ ॥ चैत्रकी द्वितीयाको वायु चले और मेघ न हों तो अनावृष्टि होगी ॥ १० ॥ पूर्णमासीके दिन जो स्वातिनक्षत्र विजली मेघसहित हो और निर्दोषताभी हो तथापि गर्भपतित हो जाय ॥ ११ ॥ वैशाखकृष्णपंचमी रविवारको हो तो अगले वर्ष संक्रान्तिको उस दिन वर्षा न हो ॥ १२ ॥ वैशाखशुक्लपंचमीको शनिके दिन आर्द्रा हो तौ सब वस्तु सस्ती और भादोंमें मेघका उदय जानना॥१३॥वैशाखमासकी शुक्लपक्षकी पंचमी सूर्यादिवारके दिन होय तो उसका क्रमसे मंदवर्षा अतिवर्षा युद्ध वात सुभिक्ष कलह अन्ननाश यह फल होताहै ॥ १४ ॥ वैशाखसप्तमीको धनिष्ठा या श्रवण हो तो काली वस्तु अकरी और सफेद सस्ती हो ॥१५॥अक्षयतीजके दिन रोहिणी हो तौ सुभिक्ष कृत्तिका हो तो मध्यम मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष ॥ १६॥ वैशाखमें पांच मंगल हों तो सर्वत्र भय हो मेघकी वर्षा नहो धान्यभाव तेज हो ॥ १७ ॥ वैशाखशुद्ध अष्टमीको यदि शनिवार हो तो जलका सूखना प्रजाका नाश छत्रभंग हो ॥ १८ ॥ रोहिणी तीनो उत्तरा मघा रेवती हो वा नवमीके दिन मंगलको राधा (विशाखा) हो तौ महाकष्ट हो ॥ १९ ॥ वैशाखचतुर्दशीको बृहस्पति शुक्र हो तौ श्रेष्ठ है पृथ्वीपर बहुत धान्य हो ॥ २० ॥ वैशाखकी अमावस रेवती युक्त हो तौ सुभिक्ष करै रोहिणी हो तौ लोकमें दुःख अश्विनी हो तौ मध्यम है ॥ २१ ॥

भरण्या व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जलेऽल्पता । चौरा लुटन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ २२ ॥ तृतीयायामक्षयायां रोहिणी गुरुणा सह । सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्भुवि मंगलकर्मच ॥ २३ ॥ ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे या तिथिः प्रथमा भवेत् । आगता केन वारेण तमन्वेषय यत्नतः॥२४॥ भानुनापवनोवातिकुजोव्याधिकरोमतः । सोमपुत्रेण दुर्भिक्षं खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥ २५ ॥ गुरुभार्गवसोमानामेकोपि यदि जायते । वर्षावधि तदा पृथ्वी धनधान्यसमाकुला ॥ २६ ॥ अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेदिह । जलशोषा प्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ २७ ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां द्वितीयायां प्रजायते । नक्षत्रमार्द्रातद्दृष्टौ महादुर्भिक्षकारणः ॥ २८ ॥ ज्येष्ठकृष्ण दशम्यां च रेवती सुखकारिणी । एकादश्यां खण्डवृष्टिर्द्वादश्यां सानुकष्टदा ॥ २९ ॥ शुक्ले ज्येष्ठदशम्यां च शनिवारः

प्रजायते । वृष्टिरोधोगवां नाशो महाशोकाकुला प्रजा ॥ ३० ॥ यावती शुक्तिराषाढे शुक्लायां प्रतिपद्दिने । पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यां वृष्टिः स्यात्ताव तीस्फुटम् ॥ ३१ ॥ आषाढे दशमीकृष्णा सुभिक्षाय च रोहिणी । एका दश्यां मध्यकालं दुर्भिक्षं द्वादशी भवेत् ॥ ३२ ॥ त्रयोदश्यां रोहिणी चेदुत्तमः पवनस्तदा । चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजाशोकाकुला तदा॥३३॥ आषाढमासेसितपंचमीदिने रव्यादिवारः क्रमशः फलानि । वृष्टिः सुवृ ष्टिर्ह्यतिवृष्टिरूर्द्धं वातः प्रवातः प्रलयः प्रणाशः॥३४॥आषाढशुक्लनवमी सानुराधा शनौ यदा । क्वचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिः क्वचिद्दुर्भिक्ष कारका२५

अर्थः—भरणीयुक्त हो तो लोकमें कष्ट कृत्तिकामें जल थोड़ा वर्षे चोर मार्ग लूटैं राजा युद्ध परस्पर करे ॥ २२ ॥ अक्षयतीजको बृहस्पति और रोहिणी नक्षत्र हो तो सब धान्यकी प्राप्ति और मंगल हो ॥ २३ ॥ ज्येष्ठके प्रथमपक्षमें जो तिथि पडवाकी हो वोह कोनसे दिन है यह विचार करना ॥ २४ ॥ रविको हो तो पवन चले मंगलको व्याधि करे बुधको दुर्भिक्ष और खण्डवृष्टि करे ॥ २५॥ गुरु शुक्र और चंद्रवारको होतो एकवर्षतक पृथ्वी धनधान्यसे युक्त हो ॥२६॥ अथवा दैवयोगसे शनिवारको होतो जलशोष, प्रजाका नाश और छत्रभंग हो ॥ २७॥ ज्येष्ठशुक्ल तृतीया द्वितीया आर्द्रायुक्त हो तो महा दुर्भिक्ष करै ॥ २८ ॥ ज्येष्ठकृष्णदशमीको रेवती दुर्भिक्ष करती है एकादशीको हो तो खण्डवृष्टि द्वादशीको हो तो कष्ट दे ॥ २९ ॥ जो ज्येष्ठशुक्ला दशमी शनिवारको हो तो वर्षाका निरोध, गोनाश प्रजामें शोक हो ॥ ३० ॥ आषाढशुक्लप्रतिपदा जितनी घडी हो और पुनर्वसु हो तो चौमासेमें उतनीही वर्षा हो ॥ ३१ ॥ आषाढकृष्णदशमीके दिन रोहिणी हो तो सुभिक्ष करे एकादशीको हो तो मध्यम द्वादशीको हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ ३२ ॥ त्रयोदशीको रोहिणी हो तो उत्तम पवन चले चतुर्दशीको हो तो राजोंमें युद्ध प्रजामें कष्ट हो॥३३॥आषाढशुक्लपंचमी जो रवि आदि *सात वारोंमेंसे किसीदिन* हो उसके क्रमसे वर्षा, अच्छी वर्षा, अतिवर्षा, ऊर्द्धवात, महापवन, प्रलय और विनाश यह फल होते हैं ॥ ३४ ॥ आषाढशुक्ल नवमी अनुराधायुक्त शनिके दिन हो तो कहीं धान्यकी थोड़ी प्राप्ति कहीं दुर्भिक्ष हो ॥ ३५ ॥

आषाढे प्रथमे पक्षे प्रथमादितिथित्रये । श्रवणं वा धनिष्ठा स्यात्तदान्नसं ग्रहः शुभः ॥ ३६ ॥ आषाढषष्ठिदिवसे कृष्णपक्षे शनिर्यदा । तदा गो धूमका ग्राह्या द्विगुणा यस्तु कार्तिके ॥ ३७ ॥ आषाढे शनिरेवत्यामष्ट म्यां संगतो यदा । तदा वृष्टिनिरोधेन कष्टमुत्कष्टमादिशेत् ॥ ३८ ॥ आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो यदा भवेत् । तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धा न्यस्यापि महर्घता ॥ ३९ ॥ चतुर्दश्यां तथाषाढे सोमवारप्रवर्तनात् । न

धान्यं न तृणं लोके किं गवादेः प्रयोजनम् ॥ ४० ॥ आषाढे प्रथमे पक्षे द्वितीया नवमीतिथौ । दुर्विद्धःशुक्रवाराः स्युः श्रेष्ठानेष्टो बुधः शनिः ॥ ॥ ४१ ॥ आषाढशुद्धेकादश्यां शन्यादित्यकुजेः समम् । संपूर्णस्तिथिभागश्चेत्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥४२॥आषाढपूर्णिमाषष्ठीघटीमानायदाभवेत् । मासद्वादशधान्यानां सुभिक्षं च सुखं जने ॥ ४३ ॥ त्रिंशद्घटीभिः षण्मासात्सुखं दुःखं ततः परम् । चतुर्मास्यं पंचदशघटीमाने सुभिक्षता ॥४४॥न्यूनत्वे तु पंचदशघटीभ्यो दुःखसंभवः । वातवादलसंयोगात् फलेन्यूनाधिकाश्रयः ॥ ४५ ॥ मासाभिधाननक्षत्रं राकायां क्षीयते यदि। महर्घत्वं तदा नूनं वृद्धौ ज्ञेया समर्घता ॥ ४६ ॥ मासनामकनक्षत्रं राकायां न भवेद्यदा । महर्घं च तदा वश्यं तत्तद्योगविशेषतः ॥ ४७ ॥ ऋक्षवृद्धौ रसाधिक्यं कणाधिक्यं च निश्चितम् । योगाधिक्ये रसश्छेदो दिनार्धप्रत्यहं स्फुटः ॥ ४८ ॥ मृगादिपंचके राका धान्ये महर्घतांवदेत् । मघा चतुष्टये पूर्णा कुर्याद्धान्यसमर्घताम् ॥ ४९ ॥ राका चित्राष्टके युक्ता दुर्भिक्षात्कष्टकारिणी। श्रवणाद्रोहिणी यावन्नक्षत्रैः पूर्णिमा शुभा५०

अर्थः—आषाढके प्रथमपक्षमें पड़वासे आदिले तीन तिथिमें श्रवण वा धनिष्ठा हो तो धान्यसंग्रह करना शुभ है ॥३६ ॥ आषाढकृष्ण छटको शनि हो तो गेहूं ग्रहण करना कार्तिकमें दूने मोलको विके ॥ ३७ ॥ आषाढकीअष्टमी शनिवार रेवती नक्षत्रसे युक्त हो तो वृष्टि न हो कष्टपर कष्ट हो॥३८॥आषाढकर्कसंक्रान्ति जो शनिवारको हो तो दुर्भिक्ष और धान्यभाव तेज हो ॥३९॥ आषाढचतुर्दशी सोमवारके दिन हो तो लोकमें धान्य और तृण न हो गवादिकका क्या प्रयोजन है ॥ ४० ॥ आषाढकृष्णद्वितीया नवमी शुक्रवारके दिन हो तो श्रेष्ठ बुध शनिवारको नेष्ट है ॥ आषाढशुक्ल एकादशी शनि रवि मंगलके दिन सम्पूर्णतिथि हो तो दुर्भिक्ष करै ॥ ४२ ॥ आषाढपूर्णिमा यदि साठ घडी हो तो बारह महीने धान्यकी सुभिक्षता हो ॥ ४३ ॥ तीस घडी हो तो छः महीने सुख पीछे दुःख पन्द्रह घडी हो तो चार महीने सुभिक्ष रहै ॥ ४४ ॥ पन्द्रहघडीसेमी न्यून हो तो दुःख हो और वायु मेघ हो तो फलमें न्यूनाधिकता हो ॥ ४५ ॥ यदि महीनेका नक्षत्र पूर्णिमाके दिन क्षय हो जाय तो अन्नभाव अवश्य तेज हो बढे तो मंदा हो ॥ ४६ ॥ और जो महीनेका नक्षत्र पूर्णिमाको न हो तो उन औरभी योगोंसे अन्नभाव तेज हो ॥४७ ॥ नक्षत्रवृद्धिमें रसकी कणकी अधिकता हो योग बढे तो रसकी हानि हो यह प्रगट जानना ॥ ४८ ॥ जो मृगशिरादि पांच नक्षत्रमें किसीएक नक्षत्रके दिन पूर्णिमा हो तो अन्न भावतेज मघादि चार नक्षत्रमें अन्नभाव सस्ता ॥ ४९ ॥ चित्रादि आठ नक्षत्रमें दुर्भिक्ष और श्रवणसे रोहिणीतक शुभ है ॥ ५० ॥

आर्द्राचतुष्टये सूर्यवारेपूर्णार्थनाशिनी । मघाचतुष्टये सोमेप्येषा धान्य

महर्घंकृत् ॥ ५१ ॥ चित्राष्टके भौमवारे पूर्णिमाव्याधिवर्द्धिनी। दुर्भिक्षा य शनौ शेषा वारर्क्षेषु शुभावहा ॥ ५२ ॥ आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत्। सुभिक्षं कुरुतेवश्यं नक्षत्रे मृगसप्तके ॥ ५३ ॥ श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद्गुरुयोगतः। मुद्गामाषारितलास्तैलं महर्घं शीघ्रमादिशेत् ॥ ५४ ॥ श्रावणे नवमीयुक्तः शनिः संतापकारकः। छत्रभंगं विजानीयादाश्विनांते न संशयः ॥ ५५ ॥ दशम्यां श्रावणे सिंहे रविः संक्रमते शनौ। महीस्याज्जलदैः पूर्णा तदा स्याद्धान्यसंपदः ॥ ५६ ॥ कृत्तिकाश्रावणे कृष्णैकादश्यां मध्यमा भवेत्। सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद्दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ ५७ ॥ श्रावणे शुक्लपक्षे चेद्यदा कश्चित्तिथिक्षयः। तदा कार्तिकमासे स्याच्छत्रभंगोपि निश्चयः ॥ ५८ ॥ श्रावणे कृष्णपक्षस्य प्रतिपद्दिवसे धृतौ। योगे धृतिः स्याद्धान्यस्य शेषयोगेषु विक्रयः ॥ ५९ ॥ द्वादश्यां श्रावणे कृष्णे मघा यद्योत्तरात्रयम्। तत्राभ्रे जलवृष्टौ वा जलयोगस्तदा महान् ॥ ६० ॥ श्रावणस्य त्रयोदश्यां रेवत्यां रवियोगतः। बहुधान्यविवस्तूनि जायन्ते बहुधान्यकं ॥ ६१ ॥ शनौ श्रावणसप्तम्यां जलपूर्णा वसुंधरा।श्रावणस्य चतुर्दश्यामार्द्रायामन्नसंग्रहः॥६२॥ श्रावणस्य त्वमावस्यां पुष्याश्लेषा मघा यदि। मध्यमं वर्षमादेश्यं वृष्टिर्न महती यदा ॥ ६३ ॥ विशाखाद्यष्टके दर्शे दुर्भिक्षं बहुधा स्मृतं। सुभिक्षमेकादशके वारुणाद्ये पुरोहितं ॥ ६४ ॥ अमावस्यां मध्यवर्षं भवेत्पुष्यचतुष्टये। शनिः सूर्यः कुजो दर्शेष्वनन्तरमरिष्टकृत् ॥ ६५ ॥

अर्थः—आर्द्रादि चार नक्षत्रोंमें रविवारके दिन पूर्णा हो तो अर्थका नाश करे मघादि चार नक्षत्रोंमें चंद्रवारके दिन हो तो तेजी करे ॥ ५१ ॥ चित्रादि आठ नक्षत्रमें मंगलके दिन हो तो व्याधि करे शनिको हो तो दुर्भिक्ष करे शेषवार और नक्षत्रोंमें शुभ है ॥ ५२ ॥ आषाढमें यदि सोमवती अमावस मृगशिरादि सात नक्षत्रसें युक्त हो तो सुभिक्षकारक है ॥५३॥श्रावण कृष्णप्रतिपदा गुरुवारके दिन हो तो मूंग उरद तिल तेल अकरे होवे॥५४॥श्रावणकी नवमी शनिवारको हो तो संताप करे और आश्विनमें छत्रभंग हो॥ ५५ ॥ जो श्रावणशुक्लदशमी को शनिके दिन सिंहकी संक्रान्ति हो तो जल अच्छा वर्षे धान्य संपत्ति हो॥ ५६॥ श्रावण-कृष्ण एकादशी कृत्तिकाके दिन हो तो मध्यम है रोहिणीहो तो सुभिक्ष करे मृगशिर दुर्भिक्ष करे ॥ ५७ ॥ श्रावणशुक्लपक्षमें यदि किसी तिथिका क्षय होय तो कार्तिकमासमें छत्रभंग हो ॥ ५८ ॥ श्रावणकृष्णप्रतिपदाको धृतियोग हो तो अच्छाहै और शेषयोगोंमें धान्यविक्रय

शुभ है ॥ ५९ ॥ श्रावणकृष्ण द्वादशीको मघा रात्रिमें हो और बादल हों तौ जलका महा योग जानना॥ ६० ॥ श्रावणत्रयोदशीको रविवारके दिन रेवती हो तो बहुत धान्य और वस्तुकी प्राप्ति हो ॥ ६१ ॥ श्रावणसप्तमी शनिवारको हो तो पृथ्वी जलसे पूर्ण हो यदि श्रावण चतुर्दशी आर्द्रायुक्त हो तो धान्यसंग्रह करना उचित है॥६२॥श्रावणकीअमावसको यदि पुण्य आश्लेषा मघा हो तो मध्यम वर्षा होथोडी वर्षा हो ॥ ६३ ॥ विशाखादि आठ नक्षत्र अमावसके दिन हों तो दुर्भिक्ष हो और शतभिषा आदि ग्यारह नक्षत्र हो तो शुभ है॥६४॥ अमावसके दिन पुष्यादि चार नक्षत्र हों तो मध्यम वर्ष जानना शनि सूर्य मंगलका हो तो अरिष्ट करै॥ ६५ ॥

पार्वणी यदि रौद्रा स्यादादित्यं प्रतिपत्तिथौ। द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलं धान्यं तृणं न च॥ ६६ ॥ अमावस्यादिने योगः पुनर्वस्वादिपंचके। समर्घमथ दुर्भिक्षमुत्तरादिचतुष्टये ॥ ६७ ॥ विशाखाद्यष्टके कष्टं वारुणादौ जने सुखं। ऊचिरे गेचनाचार्यो दर्शनक्षत्रजं फलं ॥ ६८ ॥ श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वातियोगस्सुभिक्षकृत। श्रवणं पूर्णिमायां स्याद्धान्यैरानंदिताः प्रजाः ॥६९॥ प्रथमायां तिथौ भाद्रे गुरौ श्रवणसंयुते। अभंगं जायते वर्षे धनधान्यादिसंपदः ॥ ७० ॥ भाद्रपदाऽसिताष्टम्यां रोहिणी शुभदायनी। नवमी भाद्रशुक्लस्य रवौ मूले भयंकरी ॥ ७१ ॥ एकादशी भाद्रशुक्ले मूले दिनकृता युता। मेघेन वत्सरे सौख्यं लोक व्याधिर्विबाधते ॥ ७२ ॥ भाद्रे शुक्लद्वितीयायां द्वितियवारयोगतः। धान्यनिष्पत्तिरतुला संपदाः स्युः चतुष्पदे ॥ ७३ ॥ शनौ भाद्रपदे कृष्णचतुर्थी यदि जायते। देशभंगश्च दुर्भिक्षं स्वस्थयोदरपूरणम् ॥ ७४ ॥ नवम्यां स्वातिसंयोगे भाद्रमासे सिते यदा। तदा सुखमयीभूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥ ७५ ॥ भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां चेद्वारा जीवेन्दुभार्गवाः। उत्तराहस्ताचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात्तदा॥ ७६ ॥ भाद्रमासे तृतीयायां भौमे चोत्तराफाल्गुनी। तदा वृष्टिकरो नैव प्रोन्नतोपि घनाघनः ॥ ७७ ॥ भाद्रमासे स्वमावस्यां रवौ घृतमहर्घता। धान्यं महर्घं भौमेज्ञे शनौ तैलं विनिर्दिशेत् ॥ ७८ ॥ जनानां बहुलो क्लेशः राजा दुःखैः प्रपीड्यते। अमावस्या दिने सूर्यः संतापार्यार्थनाशनात् ॥ ७९ ॥ सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वर्षायाः प्रबलोदयः। सस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यं सोमवारे प्रवर्तते॥ ८० ॥

अर्थः—पूर्णिमा और पड़वा यदि रविवारमें हो और दोयज पुष्यसंयुक्त हो जल धान्य तृण न हों ॥ ६६ ॥ जो अमावस्या पुनर्वसुआदि पांच नक्षत्रके दिन हो तो अन्नभाव

सस्ता उत्तरादि चार नक्षत्रमें हो तौ दुर्भिक्ष हो ॥ ६७ ॥ विशाखादि आठ नक्षत्रोंमें हो तौ कष्ट शतभिषा आदिमें हो तौ मनुष्योंको सुख इस प्रकार नक्षत्रसे अमावसका फल जानना ॥ ६८ ॥ श्रावण शुक्लसप्तमीको स्वातियोग सुभिक्ष करताहै और पूर्णिमाको श्रवण हो तौ आनद करै ॥ ६९ ॥ भादोंकी पड़वा गुरु और श्रवणनक्षत्रके दिन हो तौ वर्ष अच्छा हो धनधान्य संपत्ति हो ॥ ७० ॥ भाद्रपद कृष्णाष्टमीको रोहिणी शुभदायक है और शुक्लपक्षकी नवमी मूल नक्षत्रयुक्त हो तो भयदायक कहे ॥ ७१ ॥ जो भाद्रशुक्ला एकादशी मूल युक्त हो तौ मेघ न वर्षे लोकमें व्यापी फैले ॥ ७२ ॥ भाद्रशुक्ल द्वितीया चंद्रवारकी हो तौ धान्य अधिक उत्पन्न हो लोकमें संपत्ति हो चौपाये सुखी हो ॥ ७३ ॥ भाद्रपदकृष्ण चतुर्थी यदि शनिवारकी हो तौ देशभंग और दुर्भिक्ष हो ॥ ७४ ॥ जो भादोंकी शुक्लनवमी स्वातियुक्त हो तो पृथ्वी सुखपूर्ण धान्यभाव सस्ता हो ॥ ७५ ॥ भाद्रशुक्ल चतुर्थी वृहस्पति चन्द्रवार शुक्रके दिन उत्तरा हस्त चित्रा नक्षत्र युक्त हो तौ सुभिक्ष करै ॥ ७६ ॥ भादोंमासकी तीज मंगलवार उत्तराफाल्गुनी युक्त हो तौ बहुत मेघ आकरभी न वर्षे ॥ ७७ ॥ भादोंकी अमावस रविवारी हो तौ घी तेज हो मंगल बुधकी हो तौ धान्यभाव तेज हो शनिकी हो तौ तेल तेज ॥ ७८ ॥ रविवारकी हो तौ जनोंको क्लेश प्रजाको दुःख और सताप हो ॥ ७९ ॥ सोमवारकी हो तौ सुभिक्ष क्षेम आरोग्य वर्षाकी अधिकता धान्यउत्पत्ति प्रजामें सुख हो ॥ ८० ॥

राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम् । उपघातोल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे ॥ ८१ ॥ दुर्भिक्षं राज्यनाशश्च प्रजानां दुःखभाजनम् । स्थानत्यागो धान्यमल्पं बुधवारे प्रवर्तते ॥ ८२ ॥ सदा वृष्टिः सुभिक्षं च कल्याणं दुःखनाशनम् । आरोग्यं च प्रजाः स्वस्था गुरुवारे समादिशेत् ॥ ८३ ॥ भृशंजलोद्धता मेघाः कृषीणां बहुरुपद्रवाः । तस्करोपद्रवा नित्यं शुक्रेणामावसीदिने ॥ ८४ ॥ दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुःखंमहद्भयम् । पराङ्मुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे ॥ ८५ ॥ भाद्रपदे शुक्लषष्ठ्यामनुराधा यदा भवेत् । नक्षत्रान्तरदोषेपिहीने हीनत्वमाप्नुयात् ॥ ८६ ॥ आश्विने प्रथमायां चेच्छुक्लायां शनिरागते । तदा धान्यं च विक्रेयं पुरस्तस्य महर्घता ॥ ८७ ॥ आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमःशनिश्चरः । तदाशिः प्रबलो भूम्यामन्नादीनां महर्घता ॥ ८८ ॥ चतुर्थ्यामाश्विने सूर्ये विक्रेतव्यं घृतं जनैः । संग्रहान्ते च धान्यानि पुरो लाभाय तान्यपि ॥ ८९ ॥ आश्विने शुक्लसप्तम्यां सोमे हस्तसमागमे । गन्तव्यं मालवस्थाने निर्जला जलदायिनी ॥ ९० ॥ सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने । श्रवणं वा धनिष्ठा चेज्जगतो नाशकारणम् ॥ ९१ ॥ आ

श्विने च बुधेऽष्टम्यां विधेयो घृतसंग्रहः। कार्तिके विक्रयस्तस्य संपदः स्युः पदे पदे॥ ९२॥ नवम्यामाश्विने शुक्ले कुजवारेण संगतौ। मुहुः कर्पासचपलाः माषादेः संग्रहो मता॥ ९३॥ द्विगुणस्तुभवेल्लाभो चैत्र मासेथ विक्रिये। आश्विने दशमी भौमे भूम्यां व्याधिरबाधितः॥ ९४॥

अर्थः-राज्यनाश राजोंमें युद्ध क्लेशकी वृद्धि उत्पात थोडी वर्षा अर्थनाश मंगलकी अमावसमें होता है॥ ८१॥ बुधकी हो तो दुर्भिक्ष राज्यनाश प्रजामें दुःख स्थानत्याग धान्य थोडा हो॥ ८२॥ गुरुवारकी हो तो सदा वर्षा कल्याण दुःखकानाश आरोग्य प्रजामें स्वस्थता हो॥ ८३॥ शुक्रकी हो तो मेघभ्रंश कृषिमें उपद्रव तथा तस्करोंके उपद्रव हो॥ ८४॥ शनिकी हो तो घोर दुर्भिक्ष महादुःख और भय पितापुत्रोंमें क्लेश और व्यसन हो॥ ८५॥ भाद्रशुक्लपष्ठीको जो अनुराधा हो तो कोई दोषभी हो तो जाता रहै॥ ८६॥ अथ आश्विन॥ आश्विनशुक्लक प्रतिपदा शनिवारकी हो तो संचितधान्य वेचना॥ ८७॥ आश्विनकी तृतीया यदि मंगल शनिश्वरकी हो तो अग्नि लगे अन्नभाव तेज रहै॥ ८८॥ जो आश्विनकी चौथ रविवारकी हो तो घृत वेचना और धान्य खरीदनैसें लाभ है॥ ८९॥ आश्विनशुक्ल सप्तमी चन्द्रवार हस्त नक्षत्र युक्त हो तो मालवमें जाना चाहिये यह निर्जनस्थानमें भी जल दैनेहारी है॥ ९०॥ आश्विनशुक्लसप्तमी शनिवारी हो तो श्रवण वा धनिष्ठा युक्त हो तो जगतमें अमंगल करै॥ ९१॥ आश्विनकी अष्टमी बुधवार हो तो अन्नसग्रह करना उचित है कार्तिकमें वेचनैंसे महान लाभ हो॥ २२॥ आश्विनशुक्ल नोमी मगलकी हो तो कपास उरदादिकका संग्रह करना उचित है॥ ९३॥ चैत्रमें उसके वेचनैसे दूना लाभ हो और आश्विनकी दशमी मंगलवारी हो तो पृथ्वीमें प्रतीकाररहित व्याधी हों॥ ९४॥

एकादश्यां शनौ तस्मिन्छत्रभंगोथवा भुवि। नगरग्रामभंगं स्याद्वैरि चौराद्युपद्रवः॥ ९५॥ तृतीयारोहिणीयोगे वारयोः शनि भौमयोः। तदा कार्पासिकं ग्राह्यं फाल्गुने लाभमादिशेत्॥ ९६॥ आश्विने कृष्णपंचम्यां रविवारः प्रवर्तते। माघमास ह्यमावस्यां महर्घं निश्चयाद्घृतम्॥ ८७॥ षष्ठ्यामघाश्विने ज्येष्ठादित्यमूलाभिसंगमे। संग्रहस्सर्वधान्यानां पंचमासिफलं लभेत्॥ ९८॥ आश्विनैकादशी कृष्णा वारयोर्बुध सोमयोः। महिषीणां गवां मूल्यं महत्संजायते जने॥ ९९॥ द्वादशी शनिना युक्ता हस्तचित्रासमन्विता। तदा युगन्धरी ग्राह्या चैत्रेवै त्रिगुणं फलम्॥ १००॥ आश्विनस्याप्यमावस्यां शनिवारो यदा भवेत्। मध्यमं वर्षमथवा दुष्कालः खण्डमण्डले॥ १॥ कार्तिके प्रथमेपक्षे प्रथमा बुधसंयुता। जायते मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिःक्वचिद्भवेत्॥ २॥ कार्तिके

सप्तमी शुक्ला शनौ धान्यार्घनाशिनी। श्वेतवस्तु महर्घं स्यात् त्रिमासि द्विगुणं फलं ॥ ३ ॥ कार्तिके पंचमीरौद्रयोगे स्यात्तृणसंग्रहः। चतुष्पदे न्यथा दुःखं जायते अल्पवृष्टिजम् ॥ ४ ॥ कार्तिके दशमी कृष्णा शनौ रोगकरी जने। रविः कृष्णत्रयोदश्यां यवगोधूममूल्यकृत ॥ ५ ॥ कार्तिके कृष्णदशमी शनौ मेघसमन्विता। महर्घं घृतपूगादि चतुर्मासातिविक्रयः ॥ ६ ॥ कार्तिके चेदमावस्यांशनिश्चासननाशनः। भौमे भूम्यां महावन्हि रविर्युद्धाय भूभुजां ॥ ७ ॥ मार्गशीर्षे चतुर्थी चेन्मंगलो रेवतीदिने। प्रतिग्रामं वन्हिभयं जगत्क्लेशन्यथाभयं ॥ ८ ॥ द्वादश्यां मार्गशीर्षस्य भौमवारेर्कसंक्रमे। भावि वर्षविनाशाय ग्रहणं शीतगोस्तथा ॥ ९ ॥ मार्गे नवम्यां रेवत्यां बुधो दुर्भिक्षकारकः। पंचमी गुरुणा योगात्पंचमासान्सुभिक्षदा ॥ १० ॥

अर्थ.–जो एकादशी शनिवारी हो तो छत्रभंग हो नगरग्रामभंग वैरी और चोरोंका उपद्रव हो ॥ ९५ ॥ जो तीज मंगल शनिवारी रोहिणी सहित हो तो कपास फाल्गुनमें लाभदायक होगी जो आश्विनकृष्णपंचमी रविवारको हो तो माघमासकी अमावसको अवश्य घृत अकरा हो ॥ ९६ ॥ जो आश्विनकी छठ ज्येष्ठायुक्त रविवारकी हो मूलनक्षत्र हो तो सर्वधान्यका संग्रह पांचमहीनेमें लाभदायक होगा ॥ ९७ ॥ जो आश्विनकृष्ण एकादशी बुध और चन्द्रवारकी हो तो महिषी और गौओंका मूल्य बहुत होगा ॥ ९८॥ जो शनिवार द्वादशी हस्त वा चित्रा संयुक्त हो तो युगन्धरी-जवार-खरीदनी चैत्रमें तिगुना लाभ देगी॥१००॥आश्विनकी अमावस शनिवारी हो तो मध्यम वर्षा हो खण्ड मण्डलमें दुष्काल हो ॥ १ ॥ जो कार्तिकके प्रथम पक्षमें बुधवारी पडवा हो तो मध्यम वृष्टि हो कहीं न भी हो ॥ २ ॥ कार्तिक शुक्ल सप्तमी शनिवारी हो तो धान्यका नाश करे श्वेतवस्तु अकरी हो तीनमासमें दूना लाभ दे ॥ ३ ॥ जो कार्तिक पंचमी क्रूरयोग हो तो तृणसंग्रह करना अथवा चौपायोंको दुःख हो वर्षा थोडी हो ॥ ४ ॥ कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवारी हो तो रोग करै और कृष्ण त्रयोदशी रविवारी हो तो सब गेंहू तेज हो ॥ ५ ॥ कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवारको मेघयुक्त हो तो घी और सुपारी तेज हो चौथे महीनेमें बेचे ॥ ६ ॥ कार्तिककी अमावस शनिवारी अन्नतेज करे मंगलवारी अग्निदाह रविवारी राजोंमें युद्ध करे ॥ ७ ॥ जो मार्गशीर्ष चतुर्थी मंगलवार रेवतीयुक्त हो तो प्रत्येक ग्राममें अग्निभय और व्यथा हो ॥ ८ ॥ जो अगहनकी द्वादशी मंगलवारके दिन संक्रांति हो तो अगला वर्षको विनाशकरे यदि उसमासमें चंद्रग्रहण हो तो ॥९॥मार्गशीर्षकी रेवतीयुक्त नौमी दुर्भिक्ष करे और गुरुवारी पंचमी पांचमहीने सुभिक्ष करे ॥ १० ॥

मार्गशीर्षप्रतिपदि पुष्ये युक्ते चतुष्पदः। जलवृष्ट्यापरं वर्षे गर्भस्रावाद्विनश्यति ॥ ११ ॥ पुनर्वस्वोस्तथार्द्रायां तृतीयायां च संगमे। धान्यं

समर्घमादेश्यं राज्यस्वस्थः प्रजासुखं ॥ १२ ॥ मार्गशीर्षस्य पंचम्यां म घाद्यं पंचकं यदा । पुरो वर्षविनाशाय जायते जलरोधतः ॥ १३ ॥ नव म्यां मार्गचित्रायां धान्यं महर्घमादिशेत् । कृष्णाचतुर्दशी स्वाति श्राव णे जलरोधनी ॥ १४ ॥ मार्गशीर्षस्य दशमी मूले वा रविणायुता । सं ग्राह्यश्चतिलास्तैलं ज्येष्ठान्ते लाभदायकाः ॥ १५ ॥ मार्गे यदि स्यादा दित्यएकादश्यां तिथौ तदा । कार्पासादिकसूत्राणां ग्राह्यं वैशाखलाभ कृत ॥ १६ ॥ अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगमः । जलशोषः प्रजा नाशश्छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ १७ ॥ पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थीदिनवासरे । यदा शनिस्तदा दौस्थं त्रिमासिं स्यान्नसंशयः ॥ १८ ॥ सप्तमीसोमवा रेण पौषमासे यदा भवेत् । तदा च महिषीवृंदं म्रियते रोगपीडितं ॥ १९ ॥ यावन्नार्द्रां व्रजेत्सूर्यस्तावद्धान्यस्य संग्रहः । शनिपौषे नवम्यां चेत्पुरस्ता ल्लाभकारणं ॥ २० ॥ एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिकाभोगतः स्मृतः । रक्त वस्त्रमहर्घलाभः सधान्यात्प्रथमाम्बुदे ॥ २१ ॥ पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठाऽमा वस्यां पौषमासके । वाराः शनिकुजादित्या भाविवर्षविनाशकाः ॥ २२ ॥ पौषे मूलममावस्यां दृष्टये लोकतुष्टये । शन्यादित्यकुजास्तस्यां बहुला भाय धान्यतः ॥ २३ ॥ पौष कृष्णप्रतिपदि रोहिण्याभोगसंभवे । सप्तमा साद्धान्यलाभश्छत्रभंगोथवाभवेत् ॥ २४ ॥

अर्थः—मार्गशीर्षकी प्रतिदा पुष्ययुक्त हो तो चौपायोंको क्लेश हो और आगेके वर्षका गर्भ जलवृष्टिसे नाश हो ॥ ११ ॥ यदि तृतीयाको पुनर्वसु तथा आर्द्रा हो तो धान्य सस्ते देश स्वस्थ प्रजाको सुख हो ॥ १२ ॥ मार्गशीर्षपंचमीको यदि मघादि पांच नक्षत्र हों तो जल न वर्षनेसे अगला वर्ष विनष्ट हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्ष नवमीको चित्रा हो तो धान्य तेज हो और कृष्ण चतुर्दशी स्वातियुक्त हो तो श्रावणमें जल न वर्षे ॥ १४ ॥ मार्गशीर्षदशमी मूलयुक्त वा रविवारी हो तो तिलतेल संग्रह करे ज्येष्ठके अन्तमें लाभदायक है ॥ १५ ॥ यदि मार्गसिर्षकी एकादशी रविवारी हो तो कपाससूत्रका सग्रह करना वैशाखमें लाभदायक है ॥ १६ ॥ अथवा दैवयोगसे शनिवारी होय तो जलका सूखना प्रजाका नाश और छत्रभंग हो ॥ १७ ॥ पौष-शुक्ल चतुर्थी यदि शनिवारी हो तो तीन महीने अस्वस्थता रहे ॥ १८ ॥ यदि पौषकी सप्तमी सोमवारी हो तो भैंसें रोगसे पीडित हो मरें ॥ १९ ॥ जबतक सूर्य आर्द्रामें न आवे तब तक धान्यसग्रह करना उचित है जो पौषनवमी शनिवारी हो तो आगे लाभदायक है ॥ २० ॥

पौपशुक्लएकादशीको कृत्तिका हो तो लालवस्तुमें लाभ हो और पहले मेघतक धान्यसे लाभ हो ॥ २१ ॥ पौपअमावसको पूर्वापाढा और ज्येष्ठा हो और शनि मंगल रविवार हो तो अगला वर्ष हीन जानना ॥ २२ ॥ पौपकी अमावसको मूल हो तो लोक सहष्ट हों और शनि रवि मंगलवार हों तो धान्यसे लाभ हो ॥ २३ ॥ पौपकृष्ण प्रतिपदाको रोहिणी हो तो सात महीने धान्यसे लाभ वा छत्रभंग हो ॥ २४ ॥

मघाद्यदिवसे वारो बुधो भवति चेत्तदा । मासत्रयं महर्घं स्याद्भाविवर्षं विनश्यति ॥ २५ ॥ माघासितस्य प्रतिपद्द्वितीया वा तृतीयका । त्रुटिता धान्यसंग्रहे लाभाय वणिजां मता ॥ २६ ॥ सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि । दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोपि च भूभुजां ॥ २७ ॥ माघस्य शुक्लसप्तम्यां रविवारो भवेद्यदि । दुर्भिक्षं हि महाघोरं विग्रहं च महाभयं ॥ २८ ॥ माघमासप्रतिपदि शनिर्भोगः प्रशस्यते । सर्वत्र धान्यनिष्पत्ति रारोग्यं देशस्वस्थता ॥ २९ ॥ चतुर्थी माघमासस्य शनिवारेण संयुता । दुर्भिक्षं मृत्युचौराग्निभयं धान्यविनाशनं ॥ ३० ॥ माघे शुक्ले प्रतिपदि वाराजीवेन्दुभार्गवाः । सुभिक्षाय रणायार्कः कुजे स्युर्बहुईतयः ॥ ३१ ॥ माघे शुक्ले यदाष्टम्यां कृत्तिका यदि नो भवेत् । फाल्गुने रोलिकापातः श्रावणे वा न वर्षणं ॥ ३२ ॥ माघे च शुक्लसप्तम्यां सोमवारे च रोहिणी । राज्ञां युद्धं प्रजारोगो ह्यथवा वर्षमुत्तमं ॥ ३३ ॥ माघमासे च सप्तम्यां भरणी यदि जायते । रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभृत् ॥ ३४ ॥ फाल्गुने कृष्णपष्ठी चेच्चित्रानक्षत्रसंयुता । त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय स्वात्या दुर्भिक्षसाधनं ॥ ३५ ॥ फाल्गुने च त्रयोदश्यां शुक्रायां यदि भार्गवः । ज्येष्ठे रोगाय नूनं स्याद्रोगो मासत्रयेथवा ॥ ३६ ॥ फाल्गुने प्रथमे पक्षे वारुणं प्रतिपद्दिने । भोगानुसाराद्वर्षस्य स्वरूपं च निरूपयेत् ॥ ३७ ॥ फाल्गुने कृत्तिकायुक्तं सप्तम्यादिकपंचकं । श्वेतपक्षे सुभिक्षाय नार्द्राजलदवृष्टये ॥ ३८ ॥

अर्थः—जो माघप्रतिपदाको बुधवार हो तो तीन महीने तेजी और अगला वर्ष नष्ट हो ॥ २५ ॥ माघकृष्ण पडवा दोयज तीज यदि कोई क्षय हो जाय तो धान्यसंग्रह करनेमें वैश्योंको लाभ हो ॥ २६ ॥ माघशुक्लसप्तमी सोमवारी हो तो दुर्भिक्ष और राजोंमें विग्रह हो ॥ २७ ॥ और जो माघशुक्लसप्तमी रविवारी हो तो महाघोर दुर्भिक्ष और भय हो ॥ २८ ॥

माघकी प्रतिपदा शनिवारी हो तो शुभ हो सर्वत्र धान्यकी प्राप्ति कुछ, रोग देशमें, स्वस्थता हो ॥ २९ ॥ जो माघकी चतुर्थी शनिवारी हो तो दुर्भिक्ष मृत्यु चोर अग्निभय धान्यनाश हो॥ ॥ ३० ॥ माघशुक्ल प्रतिपदा जो बृहस्पति चंद्र शुक्रवारी हो तो सुभिक्ष रविवारी हो तो युद्ध मंगलवारी हो तो ईति हो ॥ ३१ ॥ माघशुक्ल अष्टमीको यदि कृत्तिका न हो तो फाल्गुनमें रोलिकापात वा श्रावणमें वृष्टि न हो ॥ ३२ ॥ माघशुक्लसप्तमी सोमवारको रोहिणी हो तो राजोंमें युद्ध प्रजामें रोग अथवा उत्तम वर्ष हो ॥ ३३ ॥ माघमाससप्तमीको यदि भरणी हो तो लोकमें रोगका नाश और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥ ३४ ॥ जो फाल्गुणकृष्ण षष्ठीको चित्रानक्षत्र हो तो तीन महीने सुभिक्ष और स्वाति हो तो दुर्भिक्ष करे ॥ ३५ ॥ फाल्गुनशुक्ल त्रयोदशी शुक्रवारी हो तो ज्येष्ठमें रोग और तीन महीने भोग हो ॥ ३६ ॥ फाल्गुणकृष्ण प्रतिपदाको यदि शतभिषा हो तो वर्षका स्वरूप उसके भोगानुसार जानना ॥ ३७ ॥ फाल्गुनमें सप्तमी आदि पांच तिथि कृत्तिकासे युक्त हों तो शुक्लपक्षमें सुभिक्ष हो और यदि आर्द्रा हो तो जल न वर्षे ॥ ३८ ॥

अथ द्वादशपूर्णिमाविचार ।

चैत्रस्य पूर्णमास्यां हि निर्मलं गगनं शुभम् । तद्दिने ग्रहणं तारापातभूकम्पवृष्टयः ॥ ३९ ॥ रजोवृष्टिःपरिवेषः विद्युल्केतूदयादिना । उत्पातेन च संग्राह्यं धान्यं धातुव्ययादितः ॥ ४० ॥ विक्रये सप्तमे मासे भाद्रे द्विगुणलाभदम् । वैशाख्यामीदृशे चिन्हे कर्पासस्य महर्घता ॥ ४१ गोधूममुद्गमाषादेः संग्रहो लाभकारणम् । विक्रियाद्द्विगुणत्वेन मासे भाद्रपदे भवेत्॥ ४२ ॥ ज्येष्ठस्य पूर्णिमानभ्रा शुभाय कथिता बुधैः । वृष्ट्या वा परिवेषेण तस्यां धान्यस्य संग्रहः ॥ ४३ ॥ तुर्ये मासेथवा पौषे लाभस्तस्या न्नविक्रयात् । आषाढी निर्मला नेष्टा वादलाच्छादिता शुभाः ॥ ४४ ॥ नैर्मल्याद्धान्यसंग्रह्यः पंचमे मासि लाभदः । श्रावणीनिर्मला श्रेष्ठा साभ्रत्वे धान्यसंग्रहः ॥४५॥ विक्रियाद्घृततैलादेः लाभोमासतृतीयके । पूर्णाभाद्रपदो शुभ्राशुभाधान्यस्य विक्रयात् ॥ ४६ ॥ आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभायवादलोदये । धान्यस्य संग्रहं कुर्याच्चैत्रे वै लाभदामहान्॥४७॥ साभ्रायां माघपूर्णायां धान्यसंग्रह इष्यते । विक्रयः सप्तमे मासे तस्य लाभाय संभवेत् ॥ ४८ ॥ फाल्गुनी पूर्णिमा साभ्रा सवृष्टिर्वा सगर्जना । धान्यसंग्रहणान्मासे सप्तमे लाभदायिनी ॥ ४९ ॥

इति मेघमहोदये महामहोपाध्यायमेघगणिविरचिते तिथिफल कथनोनामनवमोधिकारः

अथ संक्रान्तिविचारः ॥

अर्थः—चैत्रकी पूर्णिमाको निर्मल आकाश हो तो शुभ है और जो उस दिन ग्रहण हो तो तारापात भूकम्प और वृष्टि हो ॥ ३९ ॥ वा चंद्रमाका परिवेष (घेरा हो) बिजली चमके केतूका उदय आदि हो तो ऐसे उत्पात देखकर धान्यका संग्रह करना उचित है ॥ ४० ॥ सातवें महीनेमें बेचनेसे दूना लाभ होगा और वैशाखमेभी ऐसे चिन्ह हों तो कपास अकरी विके४१॥ गेहू मूंग उरदका संग्रह लाभदायक है भादोंमें बेचै तो दूना लाभ हो ॥ ४२ ॥ ज्येष्ठकी पूर्णिमा स्वच्छ अच्छी है और जो वर्षा वा घेरा हो तो धान्यसंग्रह शुभ है ॥ ४३ ॥ उसके बेचनेसे चौथे महीने वा पूषमें लाभ होगा आषाढी पूर्णिमा निर्मल अच्छी नही वादल हों तो अच्छे ॥ ४४ ॥ जो निर्मल हो तो धान्यसंग्रह करना पांचवें महीनेमें लाभ होगा श्रावणकी पूर्णिमा निर्मल अच्छी है और वादल हों तो धान्यसंग्रह करना ॥ ४५ ॥ घी तेलके बेचनेसे तीसरे महीनेमें लाभ होगा जो भादोंकी पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छी है धान्य बेचदेना ॥ ४६ ॥ आश्विनकी पूर्णिमा निर्मल अच्छी है और वादल हों तो धान्यसंग्रह करना चैत्रमें लाभ देंगे ॥४७ ॥ माघपूर्णिमाको वादल हों तो धान्यसंग्रह करना सातवें महीने बेचनेसे लाभ होगा ॥ ४८ ॥ जो फाल्गुनी पूर्णिमाको वादल हो वर्षा हो गर्जना हो तौभी धान्यसंग्रह करना सातवें महीनेमें लाभ हो ॥ ४९ ॥

इति श्रीवर्षप्रबोधे भाषाटीकायां नवमोधिकारः ॥

अब संक्रान्तिका विचार कहते हैं जिस दिन जिस पहरमें जैसी आवे जो फल हो सो चक्रमें समझलेना—

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रोंकोसुख	पूर्वान्ह	विप्रराजोंकोसुख	पूर्वको
चंद्र	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंकोसुख	मध्याह्न	वैश्योंकोसुख	पश्चिमको
मंगल	चर	महोदरी	चौरोंकोसुख	अपराह्न	शूद्रोंकोसुख	दक्षिणको
बुध	मैत्र	मंदाकिनी	राजाओंकोसुख	प्रदोष	पिशाचोंकोसुख	दक्षिणको
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजगणोंकोसुख	अर्द्धरात्रि	राक्षसोंकोसुख	उत्तरको
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुओंकोसुख	अपररात्रि	नटादिकोंकोसुख	पूर्वको
शनि	दारुण	राक्षसी	चाण्डालोंकोसुख	प्रत्यूषकाल	पशुपालकोंकोसुख	पश्चिमको

नीचे लिखेकोष्टकमें संक्रान्तिके वाहन फल जानिये॥

करण॥	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग	किंस्तु
स्थिति	बैठी	बैठी	खडी	सूती	बैठी	खडी	बैठी	सूती	खडी	सूती	खडी
फल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्यम	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मैंढा	बैल	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	बैल	मैंढा	गर्दभ	ऊंट	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कम्बल	नभ	घनवर्ण
आयुध	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रान्न	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोचन	अबल	दलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अन्त्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणी	गुंजा	कौडी	नीलक	पुन्नाग	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पर्ण	हरित	भुजपत्र	सीत	पां०श्वेत	नील	कृष्णा	अंजन	वल्कल	पांडुर
वय	बाल	कुमारी	गताल	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अतिवंध्या	पुत्रवती	संन्या

जिस करणकी संक्रान्ति हो उसके वाहन फल चक्रसे समझ लीजें संक्रान्ति जिस वाहनपर स्थित हो जो वस्तु धारण करै उसकी हानि होय.

मेषे रवौ तुलाचन्द्रे षण्मासे धान्यलाभदः । वृषेर्के वृश्चिके चन्द्रस्तुर्यमासेन्नलाभदः ॥ १ ॥ मिथुनेर्के धनुश्चन्द्रस्तिलतैलान्नसंग्रहात् । मासे श्चतुर्भिर्लाभाय सङ्क्रेश्चेन्न विद्यते ॥ २ ॥ कर्कार्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं

कुरुते जने। घोरं यावच्चतुर्मासी दासीकृतधनेश्वरः ॥ ३ ॥ षण्मासाद्विगु णोलाभः सिंहेर्के कुंभचन्द्रतः। मीने दुर्व्यक्तिकन्यार्के छत्रभंगेन विग्रहे ॥ ४ ॥ तुलार्के चंद्रमा मेषे पंचमासि च लाभदः। वृश्चिकेर्के वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसंग्रहः ॥ ५ ॥ प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासद्वयांतरे। मिथुनेन्दुर्धनुष्यर्के पंचमासान्नलाभदः ॥ ६ ॥ कर्पासघृतसूत्रादेः पंचमे मासि लाभदः। मृगेर्केकर्कशीतांशुः पांसुलानां विनाशकः ॥ ७ ॥ सिंहेन्दुः कुंभभानौ च तुर्ये मासेन्नलाभदः।कन्याचन्द्रोपि मीनेर्केस्तादृशी धान्यसंग्रहात् ॥ ८ ॥ यद्दिने यार्कसंक्रान्तिस्तद्राशौ तद्दिने शशी। जन्मवेधादयं नेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदोगृहे ॥ ९ ॥ यस्मिन्वारेस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः। लोके खप्पारयोगोयं जीवधान्यादिनाशकः ॥१०॥ शनिस्यादाद्यसंक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरं। तृतीयायां कुजे योगः खपेराख्योतिकष्टकृत् ॥ ११ ॥ स्यात्कार्तिके वृश्चिकसंक्रमाहे सूर्ये महर्घे भुवि शुक्लवस्तु। म्लेच्छेषु रोगान्मरणाय मंदः कुजः परंधान्यरसग्रहाय ॥ १२ ॥ लाभस्तु तस्य त्रिगुणस्त्रिमासान् बुधे च पूगादिफलं महर्घं। गुरौ च शुक्रे तिलतैलसूत्रकर्पाससूत्रादि महर्घतास्यात् ॥ १३ ॥

अर्थः-जो मेषकी संक्रान्तिको तुलाके चन्द्रमा हो तौ छः महिने धान्यकी अधिकता करै वृषकी संक्रान्तिको वृश्चिकके चन्द्रमा हो तौ चार महीनें अन्नका लाभ हो ॥ १ ॥ मिथुनकी संक्रान्तिको धनका चंद्रमा हो तौ तिल तैल तथा अन्नसंग्रह करे चौथे महिनेमें लाभ हो और क्रूरग्रहसहित हो तौ न हो ॥ २ ॥ कर्कके संक्रान्ति मकरके चन्द्रमा हों तौ दुर्भिक्ष करै चार महिनेतक यही रहै धनीभी दासभाव स्वीकार करें ॥ ३ ॥ सिंहकी संक्रान्तिको कुंभके चंद्रमा हो तौ छः मासमें व्यापारसे द्विगुण लाभ हो मीनकी संक्रान्तिको कन्याका चंद्रमा हो तौ छत्रभंग विग्रह हो ॥ ४ ॥ तुलासंक्रान्तिको मेषके चन्द्रमा हों तौ पांच महीनेमें व्यापारमें लाभ हो वृश्चिक संक्रान्तिको वृषके चन्द्रमा हैं तौ तिल तैल तथा अन्नका संग्रह करना उचित है ॥ ५ ॥ दो महीने उपरान्त धान्यमें अधिक लाभ हो धनसंक्रान्तिको मिथुनके चन्द्रमा हों तौ पांचवे महीने अन्नमें लाभ हो ॥ ६ ॥ कपास घी सूतमें पांचवें मास लाभ हो मकरकी संक्रान्तिमें कर्कके चद्रमा हों तो कुलटाओंका विनाश हो ॥ ७ ॥ कुंभकी संक्रान्तिको सिंहके चंद्रमा हों तौ चौथे महीनें अन्नमें लाभ हो मीनकी संक्रान्तिमें कन्याके चंद्रमा हों तौ धान्यसंग्रह करे ॥ ८ ॥ यदि सूर्य चद्रमा संक्रान्तिको एक राशिपर हों तौ यह जन्मवेधसे नष्ट है सुहृद्गृहमें हों तौ श्रेष्ठ है ॥ ९ ॥ जिस वारकी संक्रान्ति हो यदि उसीकी अमावस हो वा उसी दिन हो यह खर्परयोगजीव धान्यादिका नाशक है ॥ १० ॥ संक्रान्तिके दि

र्न शनि दूसरीको रवि तीसरीको मंगल हो यह खर्पर योगभी कष्टदायक है ॥ ११ ॥ यदि कार्तिकमें वृश्चिककी संक्रान्ति रविवारी हो तो श्वेतवस्तु अकरी हो म्लेच्छोंमें रोगसे मरी फैले मंगलकी हो तो रस और धान्यग्रहण करना ॥ १२ ॥ तीनमहीनेमें तिगुना लाभ करें बुधकी हो तो पूगीफलादि अकरे विकें गुरुशुक्रकी हो तो तिल तेल सूत कपास अकरी हो ॥ १३ ॥

सोमे सर्वजने सौख्यं संधिः सर्वत्र भूभुजां। तद्वारग्रहवेधेल्पमध्योत्कृष्ट फलोदयः ॥ १४ ॥ धनुषि तरणिभोगे मार्गशीर्षेके भौमो शनिरवि यदि वारेश्चौडकर्णाटगौडाः। सुरगिरिमलयान्ता मालवास्तेषु राज्ञां रणमरण विशेषाद्विग्रहायंत्रयोभी ॥ १५ ॥ कर्पाससूत्रादितिलाज्यतैलमहर्घता लोभदशासुवर्णात्। शैत्यप्रवृद्धिर्भुवि सोमवारे किंचिद्विनाशोप्यतएव धान्ये ॥ १६ ॥ बुधे गुरौ वान्नसमर्घता स्यात् शुक्रे पुनर्म्लेंछजनप्रमोदः पौषे मृगेर्के शनिना भयाय प्रभा कृता क्षत्रकुलक्षयाय ॥ १७ ॥ बुधे मुदा युद्धमुशन्ति श्रेष्ठाः गुरौ विरोधं स्वकुले द्विमास्यां। युगन्धरीमल्लमसूर धान्ये हिमाद्विनाशश्चणकेपि सोमे ॥ १८ ॥ देवे गुरौ वादल एव शुक्रे माघेथ कुंभे दिनकृत्प्रसंगे। पृथ्वीभयं विग्रह एव घोरं चतुष्पदानामतिशाय कष्टं ॥ १९ ॥ मीनेर्के सति फाल्गुने शनिवशात् सामुद्रिकार्थक्षयो भौमेहेम्नि सलाभतारणभटा सूर्ये भटानिष्ठताः। तैलाज्यादिरसागेह र्घेदिवसाश्चेन्द्रे जनानां सुखं शुक्रे चंद्रसुते सुभिक्षमतुलं रोगभयोगो गुरौ ॥ २० ॥ चैत्रे मेषरवौ तथा क्षितिसुते मंदे महर्घस्थितिः गोधूमे चणके तथैव शशिना कर्पास तैलादिषु। जीवे क्षत्रियजीवनाशनकरः शुक्रोथवा चंद्रजः सर्वं वस्तुसमर्घमेव कुरुते वैवाहसोत्साहतां ॥ २१ ॥

अर्थः—सोमवारको हो तो मनुष्योंमें सुख सब राजोंमें सन्धि हो और उसी वारको ग्रहवेध हो तो थोडी वर्षा हो ॥ १४ ॥ जो मार्गशीर्षमें धनकी संक्रान्ति रवि मंगल शनिवारी हो तो चौड कर्णाटक गौड देवगिरि मलय मालव देशोंमें युद्ध राजोंका मरण हो विग्रह हो ॥ १५ ॥ कपास सूत तिल घी तैल तेज हों सुवर्णसे लाभ हों शीतकी वृद्धि हो सोमवारको हो तो धान्य थोडा हो ॥ १६ ॥ बुध और गुरुकी हो तो अन्न सस्ता हो शुक्रकी हो तो म्लेच्छोंको सुख हो पूषमें मकरकी संक्रान्ति शनिवारी हो तो क्षत्रियकुलका क्षय हो ॥ १७ ॥ बुधवारी हो तो प्रसन्नता और युद्ध हो गुरुवारी हो तो विरोध और दो महीने युगन्धरी मल्ल मसूर धान्यका हिमसे नाश हो और चंद्रवारी हो तो चनेकी हानि हो ॥ १८ ॥ गुरु वार और शुक्रके दिन वा रविवारके दिन माघमें कुंभकी संक्रांति हो तो पृथ्वीमें भय और घोर विग्रह हो चौपायोंमें अतिकष्ट हो ॥ १९ ॥ मीनकी संक्रान्ति शनिवारकी हो तो सागरमें आनेजानेवाली

वस्तुओंमे लाभ न हों मंगलकी हो तो सुवर्णसे लाभ सूर्यवारी हो तो योधाओंमें वीरता तेल घी रस श्रकरे चंद्रवारी हो तो जनोंको सुख हो शुक्र और बुधकी हो तो सुभिक्ष हो गुरुवारी हो तो रोग हो॥ २० ॥ चैत्रमें मेषकी सन्क्रान्ति मंगलकी हो वा शनिवारी हो तो अन्नभाव तेज गेहूं चनेका भाव तेज हो चंद्रवारी हो तो कपास तेल आदि तेज गुरुवारी हो तो क्षत्रियोंका शुक्र और बुधवारी हो तो सब वस्तु सस्ती हो और विवाह मंगल घर घर हों॥ २१ ॥

वैशाखे वृषसंक्रमे शनिकुजादित्यो हि दुर्भिक्षदा देशे क्लेशरुचिर्महर्घविविधयः प्राप्या न गोधूमकाः। कर्पासे फलवस्तुनीक्षुरसजे मांजिष्ठकेत्यादरः सोमे धान्यमहर्घता कविगुरु तेषु प्रियाः स्युरसाः॥ ३॥ ज्येष्ठे श्रीमिथुनार्केनः शनिकुजादित्येषु पापाशयो रोगेग्निज्वलनादिजं भयमपि प्रायो महर्घाः कणाः। संतुष्टा वसुधासुधाकरसुते वस्तुप्रियं सिंधुजं दुर्भिक्षं शशिजीवभार्गवबलात्सार्वत्रिकं सूत्यतां॥ ३१ ॥ आषाढे कर्कसंक्रान्तौ क्रूरवारेतिवर्षणं। क्षत्रियाणां क्षयोन्योन्यं गुरौ तु प्रबलोनिलः॥ ३२॥ सोमे सौम्ये तथा शुक्रे जलस्नातं भुवस्तलं। धान्यं समर्घमायाति परदेशाज्जने सुखं॥ ३३ ॥ सिंहेर्के श्रावणे भौमे शनौ वा वाह्यवृष्टये। तुषधान्यविनाशाय वायुपीडाकरो रवौ॥ ३४॥ समर्घमाज्यं देवेज्यं गुरु तैलमहर्घता। सोमे शुक्रे बुधे छत्रभंगक्लोकतोपदः॥ ३५॥ कन्यार्के तो भाद्रपदेल्पवृष्टिः शनेर्जने स्याद्बहुधान्यनाशः। कुजाद्बुजाद्या बहुधे तयो वा वृष्टिस्तदाल्पातिमहर्घतान्ने॥ ३६ ॥ जीवेन्दुशुक्रज्ञपराक्रमेण क्रमेण सौख्यं न बहुश्रमेण। असुद्रसासुद्रकभूपयुद्धं किंचिद्विनाशोपि च पश्चिमायां॥३७॥ आश्विने रवितुलाधिरोहणे भास्करो द्विजगवादिदुःखदः। राज्यविग्रहकरः शनैश्चरः सार्पिषः खलु महर्घता वदेत्॥ ३८॥ बहुधा बहुधान्यसंभवात् वसुधापूर्णसुधा बुधाश्रयात्। गुरुणातिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृगुसूनुना तथैव॥ ३९॥

अर्थः—वैशाखमें वृषकी सन्क्रान्ति यदि शनि मंगल अथवा रविवारकी हो तो देशमें क्लेश अन्नभाव तेज गोधूम दुर्लभ कपास फलवस्तु ईखरसके पदार्थ मजीठका भाव तेज हो चंद्रवारी हो तो धान्य सस्ते शुक्र बुधकी हो तो रस समान हों॥ ३० ॥ ज्येष्ठमें मिथुनकी संक्रान्ति शनि मंगल रविवारी हो तो पापकारी रोग अग्निभय अन्नभाव तेज बुधकी हो तो पृथ्वी संतुष्ट सिंधुकी उत्पन्न हुई वस्तुका आदर चंद्रमा गुरु शुक्रवारी हो तो दुर्भिक्ष हो सूतभाव तेज रहै॥ ३१ ॥ आषाढमें कर्कसन्क्रान्ति क्रूरवार हो तो अधिक वर्षा हो क्षत्रियोंमें परस्पर क्षय हो

गुरुवारीं हो तौ तीक्ष्ण पवन चलै ॥ ३२ ॥ चंद्र और शुक्रवारीं होतो अच्छी, वर्षा हो धान्य सस्ते परदेशसे जनोंको सुख हो ॥ ३३ ॥ श्रावणमें, मंगलवारी सिंहकी संक्रान्ति हो, अथवा शनिवारीं हो और वर्षे तौ तृप और धान्यका नाश हो रविवारीं हो तौ वायुकी पीडा हो ॥ ॥ ३४ ॥ गुरुवारीं हो तौ घृत सस्ता अगर और तेल अकरा सोम,शुक्र बुधवारीं हो तौ छत्रभंग तथा व्याधि करै ॥ ३५ ॥ भाद्रपदमें कन्याकी संक्रान्ति रविवारीं हो तौ थोडी वर्षा करै शनिवारीं हो तौ धान्यनाश मंगलसे रोग और ईति वर्षा थोडी अन्नतेज ॥ ३६ ॥ यदि बृहस्पति चंद्र शुक्र बुधवारीं हो तौ पराक्रमसे सुख श्रम थोड़ा सब स्थानमें राजोंसे युद्ध पश्चिममें युद्ध विनाश यह क्रमसे जानना ॥ ३७ ॥ आश्विनमें रविवारको तुलाके सूर्य हों तौ ब्राह्मण और गायोंको पीडा हो शनिवारको हों तौ राजोंमें विग्रह और सरसोंका भाव तेज हो ॥३८॥ चंद्रवारीं हो तौ बहुत धान्यकी प्राप्ति हो गुरुवारीं हो तो अन्नभाव तेज चंद्र और सूर्यवारोंकी तुलाकी संक्रान्ति होतौ भी यही फल हो ॥ ३९ ॥

संक्रान्तिः स्याद्यदा पौषे-रविवारेण संयुता । द्विगुणं प्रोक्तमाधान्ये मूल्यमाहुर्महाधियः ॥४०॥ शनौ त्रिगुणता मूल्ये मंगले च चतुर्गुणं।समानं बुधशुक्राभ्यां मूल्यार्धं गुरुसोमयोः ॥ ४१ ॥ शनिभानुकुजैर्वारे बहवः संक्रमा यदा । महर्घमनिलं रोगं कुर्वते राजविग्रहं ॥ ४२ ॥ सूर्योदयेपि विशती जगतो विपत्यै मध्यन्दिने सकलधान्यविनाशहेतुः । संक्रान्तिरस्तसमये धनधान्यवृद्ध्यै क्षेमं सुभिक्षमवनेः कुरुते निशीथे ॥ ४३ ॥ माघे कृष्णदशम्यां चेन्मकरेर्कः प्रवर्तते । धान्यसंग्रहणाल्लाभं तदाषाढे करोत्ययं ॥ ४४ ॥ नंदायां मेषसंक्रान्तिरल्पवृष्टिकरी मता । भद्रायां राज्ययुद्धाय जयायां व्याधयेनृणां ॥ ४५ ॥ रिक्तायां पशुघाताय पूर्णायां धान्यवर्द्धिनी ।इत्येतद्बालबोधोक्तं बहुशास्त्रेषु संमतं ॥ ४६ ॥ दिनैर्योगं च नक्षत्र संक्रान्तेर्गृह्यते घटी । चतुर्गुणं सप्तभागं पण्डितस्तद्विचारयेत् ॥ ४७ ॥ शून्ये भयं क्षयं रोगं एकेन द्वितयेरसः । त्रयोरोगश्चतुर्थस्याद्वर्षं महर्घमुज्वलं ॥ ४८ ॥ चैत्रे शनौ त्रयोदश्यां यदि मीनेर्कसंक्रमः । वत्सरः स्यात्तदा निन्द्यः सद्यो धान्यार्थनाशनः ॥ ४९ ॥ चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः । तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्लोके बहुतरं सुखं॥ ५० ॥ वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तिर्वृष्टिर्मिश्रफलाभवेत् । मध्यमं कुरुते वर्षं खण्डमण्डलवर्षणात् ॥ ५१ ॥ वैशाखकृष्णपक्षान्तर्वृषसंक्रमणेरवेः वृषे चन्द्रस्तदा ज्ञेयो सर्वक्लेशक्षयात्सुख ॥ ५२ ॥ यदि स्याज्ज्येष्ठपंचम्यां वृषसंक्रमणादनु । दिनद्वयान्तर्जलदस्तदा सुभिक्षनिर्णयः ॥ ५३ ॥

अर्थः—यदि पौषकी संक्रान्ति रविवारी हो तो धान्य दूने मोल विके ॥ ४० ॥ शनिवारी हो तो तीनगुने मूल्य और मंगलकी हो तो चौगुने मूल्य बुध शुक्रकी हो तो समभाव गुरुवारकी हो तो अर्द्धमूल्य विके ॥ ४१ ॥ जो शनि सूर्य मंगलवारकी बहुतसी संक्रान्ति हों तो अन्नभाव तेज पवनका वेग और राजविग्रह हो ॥ ४२ ॥ सूर्योदयमें संक्रान्ति हो तो जगतकी विपत्तिके निमित्त हो मध्यम दिनमें हो तो सर्व धान्यका नाश हो अस्तसमयमें हो तो धनधान्यकी वृद्धि हो आधीरातमें हो तो क्षेम और सुभिक्ष करे ॥ ४३ ॥ माघकृष्णदशमीको मकरकी संक्रान्ति हो तो धान्यसंग्रहसे आषाढमें लाभ हो ॥ ४४ ॥ नंदातिथिको मेष संक्रान्ति थोडी वर्षा करे भद्रा तिथिमें राज्ययुद्ध जयामें व्याधि हो ॥ ४५ ॥ रिक्तामें पशुघात पूर्णामें धान्यवृद्धि हो ऐसा बालबोधमें लिखा है ॥ ४६ ॥ दिनयोग नक्षत्र और संक्रान्तिकी घडी जोडकर चौगुना कर सातका भाग दे ॥ ४७ ॥ शून्य बचे तो भय क्षय रोग हो एक बचे तो अन्नप्राप्ति दोमें रस तीनमें रोग चार बचें तो वस्त्र तेज ॥ ४८ ॥ जो चैत्र शनिवार त्रयोदशीको मीनकी संक्रान्ति हो तो निंद्य वर्ष जानना शीघ्र धान्यनाशक है ॥ ४९ ॥ चैत्रकी संक्रान्तिको यदि वर्षा हो तो धान्यप्राप्ति और लोकमें महा सुख हो ॥ ५० ॥ वैशाखज्येष्ठकी संक्रान्तिमें वर्षे तो मिलाहुवा फल हो मध्यम वर्ष और खण्डवर्षा हो ॥ ५१ ॥ वैशाखशुक्लपक्षमें वृषकी संक्रान्ति वृषका चन्द्रमा हो तो सब क्लेश दूर होकर सुख हो ॥ ५२ ॥ जो ज्येष्ठ पंचमीको वृषसंक्रान्तिके दो दिन पीछे मेघ वर्षे तो सुभिक्ष हो ॥ ५३ ॥

आषाढे चैव संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः । व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ॥ ५४ ॥ आषाढे कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो भवेद्यदि । तदा दुर्भिक्ष्यमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता ॥ ५५ ॥ श्रावणे कर्कसंक्रान्तिदिने जलधरागमात् । पीडा चमूपकादेव जायते तत्र वत्सरे ॥ ५६ ॥ दशम्यां शनिना युक्तः श्रावणे सिंहसंक्रमः । अनन्तधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ ५७ ॥ भाद्रपदसिंहसंक्रमदिने वर्षाजलदबंधनीपुरतः। संक्रान्तेर्दिनयुग्मान्तरे न वृष्टिर्यदावृष्टिः ॥ ५८ ॥ आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये । राज्ययुद्धं प्रजाः स्वस्था धान्यैरापूर्यते जगत् ॥ ॥ ५९ ॥ मासे भाद्रपदे प्राप्ते संक्रान्तौ यदि वर्षति । बहुरोगाकुलो लोको आश्विने शोभनं पुनः ॥ ६० ॥ कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति । मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ॥ ६१ ॥ मार्गशीर्षे धनूराशौ यदा याति दिवाकरः । तदा वर्षे च निर्दग्धं वृश्चिकेर्केसुखावहः ॥ ६२ ॥ द्वादश्यां पश्चिमे पक्षे मार्गशीर्षे च संक्रमे । यदि मंगलवारस्याद्दुःखाय जगतो मतः ॥ ६३ ॥ पौषमासस्यसंक्रान्तौ यदा मेघम

होदयः । बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ॥ ६४ ॥ पौषमासे यदा भानो रविवारेण संक्रमः । हाहाभूतं जगत्सर्वं दुर्भिक्षं नात्र संशयः ॥ ६५ ॥ माघमासे दशम्यां च कुंभसंक्रमणं रवेः । रोहिणी सूर्यवारेण कार्तिकान्ते महर्घताम् ॥ ६६॥ फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः । विचित्रं जायते सस्यं माधवज्येष्ठयोरपि ॥ ६७ ॥

अर्थः—यदि आषाढकी सक्रान्तिको वर्षा हो तो घोर व्याधी हो श्रावणमें शुभ है ॥ ५४॥ आषाढमें कर्ककी सक्रान्तिको यदि शनि हो तो दुर्भिक्ष और धान्यभाव तेज हो ॥ ५५ ॥ श्रावणमें कर्ककी सक्रान्तिको वर्षा हो तो मूषोंसे पीडा रहे ॥ ५६॥ श्रावणदशमी शनिवारके दिन सिंहकी सक्रान्ति हो तो धान्यकी अधिकः प्राप्ति और वर्षा अच्छी हो ॥ ५७ ॥ भादोंमें सिंहसक्रान्तिको वर्षा हो तो वर्षाको रोके सक्रान्तिके दो दिन अन्तरमें यदि न वर्षा हो तो आगे वर्षे ॥ ५८ ॥ आश्विनकी संक्रान्तिको यदि मेघ वर्षे तो राजोंमें युद्ध प्रजामें स्वस्थता जगत् धान्यसे पूर्ण हो ॥ ५९ ॥ भाद्रमासको सक्रान्तिको यदि वर्षा हो तो लोग अधिक रोगसे व्याकुल हों आश्विनमें अच्छा हो ॥ ६० ॥ यदि कार्तिक और मार्गशीर्षकी सक्रान्तिको वर्षा हो तो मध्यम वर्ष और पौषमें सुभिक्ष हो ॥ ६१ ॥ मार्गशीर्षमें धनसक्रान्तिको वर्षे तो वर्ष नष्ट और वृश्चिकसक्रान्तिको वर्षे तो सुखदायक है ॥ ६२ ॥ द्वादशी शुक्लपक्षमें सक्रान्ति मंगलवारी मार्गशीर्षमें हो तो जगतमें दुःखके निमित्त है ॥ ६३ ॥ पौषकी सक्रान्तिको वर्षे तो गौ अधिक दूध दें और पृथ्वीमें धान्य अधिक उत्पन्न हों ॥ ६४ ॥ पूषकी सक्रान्ति यदि रविवारी हो तो सब जगतमें हाहाकार और दुर्भिक्ष हो इसमें सन्देह नहीं ॥६५॥ माघदशमीको कुंभकी सक्रान्ति रोहिणी नक्षत्रयुक्त रविवारी हो तो कार्तिकान्तमें अन्न तेज हो ॥ ६६ ॥ फाल्गुन और चैत्रमें सक्रान्तिको यदि मेघ वर्षे तो वैशाख ज्येष्ठमें अच्छा अन्न हो ॥ ६७ ॥

संक्रान्तिनाड्यातिथिवारऋक्षधान्याक्षरं वन्हिहरेत्तुभागम् । संक्रान्तिनाडीनवमिश्रता च सप्ताहता पावकभाजिता च ॥ एके समर्घं द्वितये च सौम्यं शून्ये समर्घं मुनयोवदन्ति ॥ ६८ ॥ मीनमेषान्तरेऽष्टम्यां मंगलेधान्यसंग्रहात् । द्वित्रिश्चतुर्गुणोलाभ इत्युक्तपूर्वसूरिभिः ॥ ६९ ॥ कुंभमीनान्तरेऽष्टम्यां नवम्यां दशमीदिने । रोहिणी चेत्तदा वृष्टिरल्पमध्यादिका क्रमात् ॥ ७० ॥ कार्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः । संक्रमेष्वशुभः षट्सु यदि वर्षति वारिदः ॥ ७१ ॥ पौषे माघे सवैशाखे ज्येष्ठाषाढाश्विनेषु च । संक्रान्तौ वर्षति घनः सर्वदैवसुशोभनः ॥ ७२ ॥

इति श्रीमेघ० देवगणिवि० सूर्यचारकथनोनाम दशमोधिकारः ॥ १० ॥

अर्थ.—संक्रान्तिकी घडी और गईहुई तिथि वार नक्षत्र और धान्यके नामाक्षर एकत्र कर

त्सरे ॥ १० ॥ पंचतारा ग्रहा यत्र सोमं कुर्वन्ति दक्षिणे। भौमे च राजमारीः स्याज्जनमारिश्च भार्गवे ॥ ११ ॥ बुधे रसक्षयं विद्याद्गुरौ कुर्यान्निरोदकम्। शनौ वर्षक्षयं कुर्यान्मासे मासे विलोकयेत् ॥ १२ ॥ चित्रानुराधा ज्येष्ठा च कृत्तिका रोहिणी तथा। मघामृगशिरो मूलं तथापाढविशाखयोः ॥ १३ ॥ एतेषामुत्तरामार्गे यदा चरति चन्द्रमाः। सुभिक्षं क्षेमवृद्धिश्च सुवृष्टिर्जायते तदा ॥ १४ ॥ एतेषां दक्षिणे मार्गे यदा चरति चन्द्रमाः। क्षयं गच्छन्ति भूनाथा दुर्भिक्षं च भयं पथि ॥ १५ ॥ चन्द्रोदये मेषराशौ ग्रीष्मे धान्यमहर्घता। वृषे माषस्तिलगुरुस्तुपधान्यमहर्घता ॥१६॥ कर्पाससूत्रधान्यादि महर्घं मिथुनेस्मृतम्। अनावृष्टिः कर्कराशौ सिंहे धान्यमहर्घता ॥ १७ ॥ चतुष्पदविनाशोपि राज्ञामन्योन्यविग्रहः। द्विजादिपिडा कन्यायां तुलाक्रयणकं प्रियम् ॥ १८ ॥ वृश्चिके धान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम्। कुंभेतु चणकमाषादितिलानां नाश इष्यते ॥ १९ ॥ मीने सुभिक्षमारोग्यं फलं द्वादशराशिजम्। एवं ज्ञेयं द्वितीयायां नियमेप्यत्र भावनात् ॥ २० ॥

अर्थः—यदि गोवर्द्धनके दिन चन्द्रमा उदय होय तो प्रजा गौ राजाका नाश हो ॥ ७ ॥ ज्येष्ठमासकी शुक्रप्रतिपदाको सूर्यास्तके समय देखे जो द्वितीयामें चंद्रमा उत्तरदक्षिणको उदय हो तो विचारे ॥ ८ ॥ उत्तरकी ओरको उदय हो तो सुभिक्ष दक्षिणकी ओरको दुर्भिक्ष हो बीचमें हो तो मध्यम वर्ष हो ॥ ९ ॥ जो ग्रहोंके उत्तरभागमें चन्द्रमा गति करे तो सुभिक्ष क्षेम और आरोग्य हो ॥ १० ॥ और जो पांच तारा ग्रह चंद्रमाकी प्रदक्षिणा करें मंगलवार हो तो राजमारी शुक्र हो तो प्रजामारी हो ॥ ११ ॥ बुध हो तो रसक्षय हो गुरुवारकी हो तो जल न वर्षे शनि हो तो वर्षक्षय करे इस प्रकार महीने २ विचारे ॥ १२ ॥ कृत्तिका अनुराधा ज्येष्ठा चित्रा रोहिणी मघा मृगशिर मूल पूर्वाषाढा विशाखा ॥ १३ ॥ इनके उत्तरमार्गमें जो चंद्रमा चले तो सुभिक्ष क्षेम वृद्धि अच्छी वर्षा हो ॥ १४ ॥ और जो इनके दक्षिणभागमें चंद्रमा चले तो राजोंका क्षय और दुर्भिक्ष हो १५ ॥ शुक्र द्वितीयाके दिन मेष राशिमें चन्द्रोदय होय तो ग्रीष्ममें धान्यभाव तेज वृषमें उर्द तिल अगर तुष धान्य प्रकरे हों ॥ १६ ॥ मिथुनमें कपास सूत्र धान्यादि तेज हों कर्कराशिमें अनावृष्टि और सिंहमें हो तो धान्यभाव तेज ॥ १७ ॥ कन्यामें उदय होनेसे चौपायोंका विनाश राजोंमें परस्पर विरोध हो और ब्राह्मणादिकोंको पीड़ा हो तुलामें व्यापारी वस्तुका आदर हो ॥ १८ ॥ वृश्चिकमें धान्यकी उत्पत्ति हो धनमकरमें शुभ हो कुंभमें उदय हो तो चने उर्द तिलोंका नाश हो ॥ १९ ॥ मीनमें सुभिक्ष आरोग्य हो यह द्वादश राशिका फल द्वितीयाके दिन विचारना चाहिये ॥ २० ॥

चन्द्रास्ते मेषराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता । वृषे च चणिकापीडा मृत्यु श्चौरभयं जने ॥ २१ ॥ मिथुनेष्वतिवृष्टिः स्याद्बीजवापेन पुष्टये । कर्क टेप्यतिवृष्टिः स्यात् सिंहे धान्यमहर्घता ॥ २२ ॥ कन्यायां खण्डवृष्टिश्च सर्वधान्यसमर्घता । तुलायामल्पवृष्टिः स्याद्देशभंगो भयं पथि ॥ २३ ॥ वृश्चिके मध्यमं वर्षं ग्रामनाशोप्युपद्रवात् । सुभिक्षं धनुषाधान्यैर्मकरेधा न्यपीडनम् ॥ २४ ॥ कुंभेल्पवृष्टिर्धान्यानि महर्घाणि प्रजाभयम् । सुख संपत्तयोमीने मासं यावदिदं फलम् ॥ २५ ॥ वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उ त्तरस्यां विधूदये । बहुधा धान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ २६ ॥

अथ मंगलचारः ।

शीतपीडाश्विनीभौमे तुषधान्यमहर्घता । द्विजपीडाभरण्यादेर्नाशः स्या दतिशीघ्रगे ॥ २७ ॥ सर्वदेशे ग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता । कृत्तिका यां देशभंगोपीडा तापसआश्रमे ॥ २८ ॥ वृक्षपीडा-श्वापदानां रोगः स्याद्रोहिणी कुजे । महर्घतापि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ॥ २९ ॥ का र्पासनाशप्रबलं सुभिक्षं मृगे कुजे भूजलपूरितैव । वृष्टिश्चरौद्रेदितिजे ति लानां नाशो विनाशो महिषीकुलस्य ॥ ३० ॥ पुष्ये कुजे चौरभयं विरो धाच्छुभं न किंचिन्नृपनिर्बलत्वम् । सार्पेल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशो दुर्भिक्षमे वोरगदंशभीतिः ॥ ३१ ॥ पैत्र्ये न वृष्टिस्तिलमाषमुद्गविनाशनं दुर्लभता न्नधान्ये । स्याद्योनिदे चेतिजेअल्पवृष्टिः प्रजासु पीडा गुरुतैलमूल्यम् ॥ ॥ ३२ ॥ तथोत्तरायां जलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीडनमश्वमूल्यम् । हस्ते कु जेल्पांबु च तुच्छधान्यं घृतं गुरौ वा लवणं महर्घम् ॥ ३३ ॥

अर्थः—मेष राशिमें चन्द्रमा स्थित हो तो सबधान्य भकरे वृषमें हो तो चने तेज मनुष्योंमें मृत्यु और चोरभय हो ॥ २१ ॥ मिथुनमें हो तो वर्षा अधिक बीजवोनेसे पुष्टि हो कर्कमें भी अधिक वर्षा हो सिंहमें धान्य भकरे हों ॥ २२ ॥ कन्यामें हो तो खण्डवृष्टि सब धान्य सस्ते तुलामें थोडी वर्षा देशभग और मार्गमें भय हो ॥२३ ॥ वृश्चिकमें मध्यम वर्ष हो ग्रामनाश और उपद्रव हो धनमें धान्य अधिक सुभिक्ष हो मकरमें धान्यपीडा ॥ २४ ॥ कुंभमें थोडी वर्षा धान्य भकरे प्रजामें भय मीनमें सुखसंपत्ति एकमासतक यह फल जानना चंद्रमा अमावस्की राशिपर अस्त होता है ॥ २५ ॥ वैशाख या ज्येष्ठमें जो उत्तरकी ओर चन्द्रमा उदय हो तो धान्यकी प्राप्ति अधिक मेघका उदय हो ॥ २६ ॥ अथ मगलविचारः॥ अश्विनमें मगल हो तो शीतकी पीडा तुप और धान्य भकरे हों भरणीमें ब्राह्मणोंको पीडा और अनिष्ट हो ॥ २७ ॥

सब देश और ग्राममें पीडा धान्य तेज कृतिकामें देशभंग और तपस्वियोंको पीडा हो॥ २८॥ रोहिणीमें मंगल हो तो वृक्ष और चौपायोंको पीडा और कपास सूत वस्त्र अकरे हों ॥ २९ ॥ मृगशिरमें हो तो कपासका नाश शेष सब सुभिक्ष पृथ्वी जलसे पूर्ण हो, तिल और महिषी-कुलका नाश हो ॥३०॥ पुष्यमें मंगल हो तो चोरभय विरोध हो शुभ कुछभी नहीं हो राजा निर्बल हो आश्लेषामें थोडी वर्षा धान्यनाश अधिक दुर्भिक्ष और सर्प भय हो॥ ३१ ॥ मघामें हो तो वर्षाका अभाव तिल उर्द मूगका नाश धान्य दुर्लभ पूर्वाफाल्गुनीमें थोडी वर्षा प्रजामें पीडा तेल भाव तेज ॥ ३२ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें हो तो वर्षा थोडी चौपायोंका नाश घोडोंका मूल्य अधिक हस्तमें हो तो थोडा जल वर्षे थोड़ा धान्य हो घृत सेंधा अकरा हो ॥ ३३ ॥

चित्राकुजे तीव्ररुजोतिपीडा शालीष्टगोधूममहर्घतापि । स्वातावनावृष्टि स्थद्विदेवे कार्पासगोधूममहर्घभावः ॥ ३४ ॥ मैत्रे सुभिक्षं पशुपक्षिपीडा ज्येष्ठा कुजे स्वल्पजलं च रोगाः । मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा महर्घता वा तुषधान्यराशेः ॥ ३५ ॥ पूषाकुजे भूरिजलापयोदा गावोल्पदुग्धा वसु धान्नपूर्णा । महर्घताशालितिलाज्यमाषेष्वग्रेपि तत्पूर्ववदेवभावं ॥३६॥ श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगोभूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च । स्याद्वास वे वासववत्समृद्धि धान्यैः समर्घ गुडशर्करादि ॥ ३७ ॥ स्युर्वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहूनि भूम्यां । पूभामहीजे तिलवस्त्र रूतकार्पासपूगादिमहर्घता वा ॥ ३८॥ दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न्मेघोन्नयनेपि किंचित् । सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्टो नरेषु रोगा व हुधान्यलक्ष्या ॥ ३९ ॥ यत्र राशौ कुजो याति वक्रं तत्र सुनिश्चितं । तद्वाच्यानि क्रय्यणानि महर्घाणि भवंति हि ॥ ४० ॥ सिंहे मीनेथ कन्यामिथुनधनुषि वा वक्रितो मंदभूमौ पृथ्वीमुद्वास रूपां रिपुदलद लितां विग्रहान्तां च घोरां । दुर्भिक्षं सस्यनाशं भयमपि कुरुतः पापरोगं प्रजानां । पीडयन्ते गोमहिष्यो भुवि नरपतयः पापचित्ता भवन्ति॥४१॥

अर्थः-चित्रामें मंगल हो तो रोग और पीड़ा धान गेंहूका भावतेज हो स्वातिमें अनावृष्टि विशाखामें कपास और गोधूम अकरे हों ॥३४॥ अनुराधामें सुभिक्ष पशुपक्षियोंको पीडा हो ज्येष्ठामें मंगल हो तो थोड़ा जल और रोग हो मूलमें ब्राह्मण क्षत्रियोंको पीडा हो अथवा तुष और धान्य अकरे हो ॥ ३५ ॥ पूर्वाषाढके मंगल हो तो बादलोंसे अच्छी वर्षा हो गौ थोड़ा दूध दें पृथ्वी अन्नसे पूर्ण हो धान्य तिल घी उर्द अकरे हों उत्तराषाढमें भी पूर्ववत्भाव रहे ॥ ३६ ॥ श्रावणमेंभी रोग हो धान्यकी प्राप्ति हो पीछे जलकी वर्षा हो घनिष्ठामें इन्द्रवत् समृद्धि हो गुड शर्करादि धान्य सस्ते हों ॥ ३७ ॥ शतभिषामें कीटमूषकोंकी प्रबलता हो तौभी

पृथ्वीमें धान्य अधिक हों पूर्वाभाद्रपदमें मंगल हो तौ तिल वस्त्र सुपारी कपास भावतेज हो ॥ ३८ ॥ उत्तराभाद्रमें मंगल हो तो दुर्भिक्ष करे वर्षा और अन्नकी उत्पत्ति न हो रेवतीमें मंगल हो तो सुख और सुभिक्ष करे मनुष्योंमें रोग धान्यकी अधिकता हो ॥ ३९ ॥ जिस राशिमें मंगल होता है उसमें वक्री भी निश्चय होता है वह फलसहित कहते हैं ॥ ४० ॥ सिंह मीन कन्या मिथुन धनमें मंगल शनि वक्री हो तो पृथ्वीमें द्वेष शत्रु दलसे कष्ट घोर विग्रह दुर्भिक्ष खेतीका नाश भय और प्रजाओंको पापरोगसे पीडा गो महिषी राजाको पीडा हो और चित्तमें पापकी प्राप्ति हो ॥ ४१ ॥

कन्यामीनधनुःसिंहे घ्यार्किभौमौ च वक्रितौ । कुर्वन्ति विभ्रमं लोके नृपाणां क्षयकारकौ ॥ ४२ ॥ कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः । ज्येष्ठानुराधामूलानि पूर्वाषाढा तथा पुनः ॥ ४३ ॥ एतेषां चैव ऋक्षाणां भौमशुक्रस्तथाशनिः । उत्तरस्यां यदा याति मास्याषाढेविशेषतः ॥ ४४ ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यं मध्ये च मध्यमः फलं । दक्षिणेन यदा यान्ति ईतिरोगभयं भवेत् ॥ ४५ ॥ चलत्यंगारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतेः । शुक्रस्यास्तंगमे वृष्टिर्विधा वृष्टिःशनैश्चरे ॥ ४६ ॥ मेषवृश्चिकयोर्मध्ये यदा तिष्ठति भूसुतः । तदा धान्यं महर्घं स्यान्मासद्वयमुदाहृतं ॥ ४७ ॥ रविराहुशनिश्चरभूमिसुता उदयन्ति च मध्यमराशिगताः । धनधान्यहिरण्यविनाशकरा विलयन्ति महीपतिछत्रधराः ॥ ४८ ॥ शनिर्मीने गुरुः कर्के तुलायामपि मंगलः । यावच्चरति लोकस्य तावत् कष्टपरंपरा ॥ ४९ ॥ भौमस्याधो गुरुस्तिष्ठेद्बुधोपि शनैश्चरः । ग्रहाणां मुशलं ज्ञेयमिदं जगदरिष्टकृत् ॥ ५० ॥ रविराशे गुरो भौमो वृष्टिसृष्टिनिरोधकः । भौमाद्या यामगाचन्द्राश्चत्वारो वृष्टिनाशकः ॥ ५१ ॥ भौमवक्रे अनावृष्टिर्बुधवक्रे धनक्षयः गुरुवक्रे स्थिरो रोगो शुक्रवक्रे सुखी प्रजा ॥ २७ ॥ शनिवक्रे जने पीडाराहुः स्यादग्निकारकः । चतुर्ग्रहानवक्रा स्युः योगोयं कथितो बुधैः ॥ ५३ ॥ यत्र मासे ग्रहाः सर्वे वक्रत्वं यान्ति दैवतः । तन्मासेति महर्घं स्याद्धान्यं वा राजविग्रहः ॥ ५४ ॥

अर्थः—कन्या मीन धन सिंहमें शनि मंगल वक्री हों तो लोकमें विभ्रम और राजाका क्षय करें ॥ ४२ ॥ कृत्तिका रोहिणी मघा चित्रा विशाखा ज्येष्ठा अनुराधा मूल पूर्वाषाढा ॥ ॥ ४३ ॥ इन नक्षत्रोंमें मंगल शुक्र शनि उत्तरकी ओरको विशेषकर आषाढमासमें आवें तो ॥ ४४ ॥ सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो मध्यमें मध्यम फल दक्षिणकी ओरको आवें तो ईति और

लें पक्षिपशूनां च बालपीडा विजायते । धान्यं मंदं च पूषायां व्याधि ग्रीष्मेपि वर्षणम् ॥ ७६ ॥ उषायां सस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयः । श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु हिमाद्भयम् ॥ ७७ ॥ वासवे तु गवां पीडा वारुणे शूद्ररोगता ॥ दुर्भिक्षमथ पूर्फायां क्षेममारोग्यता स्मृता ॥ ७८ ॥ ऊफायां नृपतिक्लेश आरोग्यं पशुपक्षिणां । रेवत्यां नंदनं चन्द्रो महर्घं कुंकुमादि प्रि ॥ ७९ ॥ मेषे बुधस्योदयतो गवादि चतुष्पदानां महतीह पीडा । तीडीदिना धान्यमहर्घता च वृषेतिवृष्टिर्मिथुनेन वर्षा ॥ ८० ॥ कर्के सुखं सिंहपदे चतुष्पान्म्रियेत कन्यां । बहुधान्यसौख्यं । भूकंपयुद्धादितुलो दिने ऽलितयष्टिमे राजभयं सुभिक्षं ॥ ८१ ॥

अर्थ । कृत्तिकामें बुध हो तो ब्राह्मणोंको पीडा, मेघ थोडा, अन्न थोडा, ज्वरबाधा, कहीं विग्रह हो ॥ ६७ ॥ रोहिणीमें बुध हो तो तिल, सूत, कपास तेज, मृगशिरमें सुभिक्ष वात वर्षा अधिक हो ॥ ६८ ॥ गेहूं तिल उरद सस्ते मनुष्य सुखी आर्द्रामें वर्षा अधिक ग्रहपात पवनका वेग हो ॥ ६९ ॥ पुनर्वसुमें बालपीडा सूत कपास भाव मंदा जनोंमें मेल पुष्यमें राजोंको भय और जय हो ॥ ७० ॥ आश्लेषामें महावर्षा तृणधान्यकी उत्पत्ति, मघामें बुध हो तो थोडी वर्षा धान्यनाश प्रजाको भय हो ॥ ७१ ॥ पूर्वाफाल्गुनीमें राजोंमें संग्राम क्षेत्रबाधा अन्न मंदा उत्तराफाल्गुनीमें उर्द मूंगादि थोडे उत्पन्न हों ॥ ७२ ॥ हस्तमें बुध हो तो सुभिक्ष धान्यप्राप्ति हो चित्रामें गणिका कारीगर द्विजातिको पीडा थोडी वर्षा हो ॥ ७३ ॥ स्वातिमें बुध हो तो थोडी वर्षा विशाखामें सुभिक्ष और कहीं कुछ व्याधिभय और दुर्भिक्ष हो ॥ ७४ ॥ अनुराधामें सुभिक्ष पक्षियोंको पीडा और प्रजाको सुख हो ज्येष्ठामें ईख धान्य घी तेज घोडोंमें रोग हो ॥ ७५ ॥ मूलमें पक्षियोंके बच्चे पशु और बालकोंको पीडा हो पूर्वाषाढमें धान्यकी मंदता और ग्रीष्ममें व्याधि और वर्षा हो ॥ ७६ ॥ उत्तराषाढामें खेतीमें धान्य अच्छे उपजें आठ वर्षके बालक क्षय हों श्रवणमें गुड अलसी धान्य चनेको हिम (ओले वा शीत) से भय हो ॥ ७७ ॥ धनिष्ठामें गायोंको पीडा शतभिषामें शूद्रोंको रोग पूर्वाफाल्गुनीमें दुर्भिक्ष पीछे क्षेम और आरोग्य हो ॥ ७८ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें राजोंको क्लेश पशुपक्षियोंको आरोग्य रेवतीमें बुध हो तो कुमकुमादि तेज विकें ॥ ७९ ॥ मेषमें बुधका उदय हो तो गौ चौपायोंको पीडा टीडी आदि और धान्यभाव तेज हो वृषमें हो तो अधिक वर्षा मिथुनमें वर्षा न हो ॥ ८० ॥ कर्कमें सुख सिंहमें चौपायोंकी मृत्यु कन्यामें बहुत धान्य और सुख तुलामें उदय हो तो भूकंप और युद्ध हो वृश्चिकमें उदय हो तो राज्यभय और सुभिक्ष हो ॥ ८१ ॥

धनुर्बुधस्याभ्युदयात् सुखानि मृगे महीधान्यरसादिपूर्णा । कुंभेतिवायुः पथिभिश्च मीने दुर्भिक्षपक्षो यदि वातिवृष्टिः ॥ ८२ ॥ आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे चन्द्रस्य पुत्रोभ्युदयं करोति । शुक्रस्य चेच्छ्रावणमासिचारतम्

नाश हो ॥ ९ ॥ शेष नक्षत्रोंका फल उद्धारानुसार जानो इसप्रकार गतिके अनुसार सुभिक्ष दुर्भिक्षका फल जानना ॥ १० ॥ प्रतिपदादि चार तिथियोंमें पृथ्वीमें सुख पंचमी आदि चार तिथिमें चौरादिका भय नवमी आदि चारतिथिमें उदय हो तो राजोंमें युद्ध शेषमें दुर्भिक्ष और वातादिका सुख ॥ ११ ॥ ज्येष्ठमें शुक्रका अस्त हो तो महावृष्टि और प्रजाका क्षय हो आषाढमें जलकी शुष्कता श्रावणमें महाकष्ट हो ॥ १२ ॥ भाद्रपदमें धनधान्यकी सम्पत्ति हो आश्विनमें सुभिक्ष कार्तिकमें बडी वर्षा हो ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षमें राजोंका युद्ध प्रजामें सुख पौष माघमें छत्रभंग फाल्गुनमें अग्निका भय हो ॥ १४ ॥ चैत्रमें हो तो छः महीनेतक दुर्भिक्ष धनका नाश हो वैशाखमें हो तो चौपायोंमें पीडा हो ॥ १५ ॥ जो शुक्लपक्षमें शुक्र उदय या अस्त हो तो पृथ्वी सहस्र राजपुत्रोंका रुधिर पीवे ॥ १६ ॥ मेषमें शुक्र अस्त हो तो सब धान्य तेज वृषमें हो तो चौपायोंको पीडा धान्यकी प्राप्ति हो ॥ १७ ॥

मिथुने वैश्यपीडास्यादल्पवर्षा प्रजाभयं । कर्कटे बहुला वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ १८ ॥ सिंहे पीडा भूपवर्गे तथानावृष्टिजं भयं । कन्यायां वैद्यलोकस्य सूत्रधारस्य पीडनं ॥ १९ ॥ तुलायां सिंहवत्सर्व दुर्भिक्षं वृश्चिके मतं । स्त्रीधान्यनाशो धनुषि मकरे धान्यसंपदः ॥ २० ॥ द्विजपीडा कुंभराशौ मीने मेघमहोदयः । रोगनाशः प्रजासौख्यं पृथिव्यां बहुमंगलं ॥ २१ ॥ ग्रहयोग यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोपि ग्रहस्तदा । षण्मासात्तुषधान्यानां जायते च महर्घता ॥ २२ ॥ शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वये नूनं महर्घता । चंद्रेच दिननाथे च सर्वरोगोऽशुभं तदा ॥ २३ ॥ शनौ राहौ सर्वधान्यं महर्घं राजविग्रहः । बुधे क्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजां ॥ २४ ॥ उत्पत्तिस्तुषधान्यानां पंचमासात्प्रजायते । शुक्रक्षेत्रे बुधे भद्रं चन्द्रक्षेत्रे भृगौ सुते ॥ २५ ॥ पाखण्डानां भवेद्वृद्धिः धान्यानां च महर्घता । रविक्षेत्रे भृगोः पुत्रे पशूनां च महर्घता ॥ २६ ॥ शनिक्षेत्रे शनौदेशे घृतधान्यमहर्घता । चन्द्रभास्करयोः क्षेत्रे सुभिक्षं चंद्रसूर्ययोः ॥ २७ ॥ पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता । गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ पशुनाशस्तृणक्षयः ॥ २८ ॥ सौमेराज्ञां विरोधश्च बुधे वृष्टिस्तु भूयसी । सौमे क्षेत्रे यदा सन्ति राहौ भौमार्कभार्गवाः ॥ २९ ॥ षण्मासान् गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता । मंदक्षेत्रे यदा सन्ति गुरुमंदबुधास्तदा ॥ ३० ॥ चतुष्पदानां नाशश्च शंखस्य च महर्घता । भौमक्षेत्रे भार्गवे च धान्यानां च महर्घता ॥ ३१ ॥

सप्तम्या च शनिभौमौ भवेतां वक्रगामिनौ । हाहाकारस्तदा लोके विशेषा दक्षिणापथे ॥ ४३ ॥ शनिःकुजो देवगुरुर्यदि शुक्रगृहेत्रयं । एकत्र गुरु शुक्रो वा तदा वृष्टिरणोथवा ॥४४॥ कार्तिकस्य नवम्यां चेद्ग्रहाःपंचैक राशिगाः । अकालेपि महावृष्ट्या नद्यः पूर्णाःपयोभरैः ॥ ४५ ॥ मार्ग शीर्षे ग्रहाः पंच यदि स्युः एकराशिगाः । तदाजनेति मारीस्यात् नृप स्य मरणं कचित् ॥ ४६ ॥

इति श्रीमेघमहोदये मेवग० ग्रहणविमर्शनोनामैकादशोधिकारः॥११॥

अर्थः-शनिके क्षेत्रमें यदि सूर्य हो तो वस्त्र अकरे विकें और गुरुके क्षेत्रमें शुक्र और मंगल हो तो प्रजाको पीडा हो ॥ ३२ ॥ भौमके क्षेत्रमें चंद्रमा उदय हो तो तृप धान्यकी वृद्धि हो शुक्रके क्षेत्रमें उदय हो तो शुक्रवस्तुका उदय हो ॥ ३३ ॥ रविके क्षेत्रमें शनि चंद्र शुक्र हों तो बहुत वृद्धि हो और चन्द्रमाके क्षेत्रमें शुक्र चन्द्र बुधका उदय होय ॥ ३४ ॥ तो छः महीने दुर्भिक्ष और अतिवर्षा हो और बुधके क्षेत्रमें यदि राहु शनिश्चर हों तो ॥ ३५॥ पशुओंका क्षय प्रजापीडा धान्यभाव तेज हो और जो शुक्रके क्षेत्रमे चंद्र शनिका उदय हो तो ॥ ३६ ॥ राजोंमें युद्ध धान्यभाव तेज हो और जो शनिके क्षेत्रमें मंगल सूर्य उदय हो ॥ ॥ ३७ ॥ तब घृत और लाल वस्त्रोंकी वृद्धि हो, और शनि क्षेत्रमें शनि उदय हो तो ॥ ३८ ॥ तृण काष्ठ और लोहेका भाव तेज हो ॥ ३९ ॥ इति ग्रहयोग जो सौम्यग्रहके सामने क्रूर ग्रह आजाय अथवा क्रूर ग्रहोंसे शुभ ग्रहका वेध हो तो अवश्य दुर्भिक्ष हो ॥ ४० ॥ ग्रहोंमें युद्ध हो तो. राजोंमें युद्ध हो वक्री हों तो देशमें विभ्रम हो, ग्रहवेध होतो पीडा हो. यह तत्वदर्शियोंने कहाहै ॥ ४१ ॥ जो ज्येष्ठमहीनेमे पांचग्रह सूर्यके साथ एक राशिपर हों तो श्रावणमें वर्षाका निरोध और कहीं छत्र भंग हो ॥ ४२ ॥ सप्तमीके दिन यदि शनि मंगल वक्री हों तो लोकमें हाहाकार हो विशेप कर दक्षिणमें दुःख हो ॥ ४३ ॥ शनि मंगल बृहस्पति यदि तीनग्रह शुक्र के घरमें हों अथवा गुरु शुक्र हों तो वर्षा अथवा युद्ध हो ४४ ॥ कार्तिककी नवमीको यदि पांच ग्रह एकराशिपर हों तो अकालमें सब नदी जलसे पूर्ण हों ॥ ४५ ॥ यदि मार्गशीर्षमें पांच ग्रह एकराशिपर हों तो मनुष्योंमें मरी पडे वा राजाका मरण हो ॥ ४६ ॥

इति श्रीमेघमहोदये देवविजयगणिविरचिते ग्रहगणविमर्शनोनामैकादशोधिकारः ॥ ११ ॥

अथ नक्षत्रविचारः ।

कृत्तिकादिकनक्षत्रत्रयोदशकमब्दतः । सूर्यभोग्यं भवेद्यस्मिन्नब्दस्तेह शुभप्रदम् ॥ १ ॥ अश्विनीधान्यनाशाय जलनाशाय रेवती । भरणी सर्वनाशाय यदि वर्षेन्नकृत्तिका ॥ २ ॥ कृत्तिकायां निपतितः पंचशः अपिबिंदवः । पूर्वपश्चाद्भवान् दोषान् हत्वाकल्याणकारिणी ॥ ३ ॥

अर्थः-वर्षमें कृत्तिकादि तेरहनक्षत्रमें सूर्यका प्रथमभोग होय तो शुभ है वर्ष अच्छा रहे ॥१॥ अश्वनी हो तो धान्यका नाश रेवती हो तो जलका नाश करे भरणी सर्व नाशी है यदि कृत्तिका

न वर्षे तौ ॥ २ ॥ कृत्तिकामें पांच चारभी बूंदे पडे तौ आगे पीछेके दोष दूरकर मंगल करै३

अथ रोहिणीनिर्णयः।

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसंक्रान्तिमादिकं । अष्टाविंशतिकं तत्र लिखे न्नक्षत्रसंकुले ॥४॥ संधौद्वयं जलं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च । चत्वारः साग रास्तत्र संधयश्चाष्टसंख्यया ॥ ५ ॥ शृंगाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृ तानि च । रोहिणीपतिता यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्॥६॥जाता जलप्रद स्यैषा चन्द्रस्य परमप्रिया । समुद्रेति महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्चशोभना॥७॥ पर्वते बिंदुमात्रा च खण्डवृष्टिश्चसंधिषु । संधौवाणिक्गृहेवासः पर्वते कुंभ कृद्गृहे॥८॥मालाकारगृहे सिंधौरजकस्यगृहे तटे। इति रोहिणीनिर्णयः९

अथ रोहिणी निर्णय ॥ द्वादश कोठेकी कुंडली रोहिणी चक्रमें गर्भित करे.

संधि उत्तराभाद्रपदा संधि पूर्वाभाद्रपदा शतभिषा	तट रेवती	सिंधु अश्विनी भरणी	तट कृ०	संधि रोहिणी संधि आर्द्रा मृ०
धनिष्ठा तट	शृ.		शृ.	तट पुनर्वसु
सिंधु अभिजित् श्रवण		२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८		सिंधु पुष्याश्लेषा
उत्तराषाढा तट	शृ.		शृ.	तट मघा
संधि पूर्वाषाढा मूल संधि ज्येष्ठ	तट अनुराधा	सिंधु स्वाति विशाखा	तट चित्रा	उ०फा० संधि पूर्वाफाल्गुनी संधि हस्त

सूर्योदये रोगकरीस्मृतार्द्रा घटीद्वये विग्रहरोगयोगः । मध्यान्ह काले कृषिनाशनाय धान्यं महर्घं च तृणस्यनाशः ॥ १० ॥ संध्यास्थिता र्द्रा कुरुते सुभिक्षं रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके । भोगंप्रदत्ते खलुमध्य रात्रेः पूर्वं सुखं दुःखमतो परात्रेः ॥ ११ ॥ इत्यार्द्राप्रवेशः। माघार्कदिवसं त्यक्त्वा सर्वनक्षत्रवर्षणं । हर्षणं सर्वलोकानां कर्षणं फलदायकम्॥१२॥

अट्ठाईसं नक्षत्र रखिये दो दो समुद्रमें एक एक शृंगमें एक एक नक्षत्रसंधिमें एकएक तटमें मेषकी संक्रान्ति जिसनक्षत्रमें हो उस नक्षत्रमें धरै जो रोहिणी समुद्रमें पडै तौ अधिक वर्षा शृंगमें पडै तौ थोडी वर्षा संधिमें हो तौ कभी न वर्षै तटमें पडै तौ अच्छी वर्षा हो अश्विनीके स्थानमें संक्रान्ति नक्षत्र धरै संधिमें हो तौ वैश्यके घर पर्वतमें हौ तौ कुम्हारके सिंधुमें हो तौ मालीके और तटमें हो तौ धोबीके घर रोहिणीका वासजानिये ४।५।६।७।८।९।इति रो० । अथ आर्द्राप्रवेशः सूर्योदयमें आर्द्रा हो तौ रोग करै दो घडी हो तौ विग्रह और रोग करै मध्यान्ह में हो तौ खेतीका नाश करै धान्य अकरे और तृणका नाश हो ॥ १० ॥ संध्यामें आर्द्रा हो तौ सुभिक्ष करै रात्रिमें हो तौ सब लोकोंको सुखी करै मध्यरातमें भोग प्रदान करै पूर्वमें सुख और अपरात्रिमें दुख करै ॥ ११ ॥ इत्यार्द्रा प्रवेशः मघामें सूर्य आवे उस दिनके छोडकर और सब नक्षत्र वर्षै सब लोकोंको प्रसन्नता और किसानोंको फलदायक हैं ॥ १२ ॥

हस्तार्कसंक्रमाद्वर्षासर्वाभीतिं निवारयेत् । स्वातिवृष्टिर्मौक्तिकानिनिष्पा दयतिनीरधौ ॥ १३ ॥ सौम्यवारेर्कनक्षत्रे चारः शुभकरः स्मृतः । अर्का रमंदवारेषु नक्षत्रभ्रमणेऽशुभम् ॥ १४ ॥ सौम्यवेधे समर्घत्वं क्रूरवेधे मह र्घता । देशः कालश्च वस्तूनिग्रहवेधेत्रिषु स्मृतः ॥१५॥ व्रीहियवाश्चचण का हीरका धातवस्तिलाः ॥ कृत्तिकावेधतो मासा नष्टयाम्यादितोसुखं ॥ १६ ॥ रोहिण्यासर्वधान्यानि सर्वे रसाश्च धातवः । जीर्णार्कंचलका प्राच्यामसुखं दिनसप्तकं ॥ १७ ॥ मृगशीर्षेऽश्वमहिषी गावोलाक्षादिको द्रवाः । विविधानि जलान्नानि पीडापष्ठिवासरान्॥ १८ ॥ आर्द्रायां तै ललवणसर्वक्षाररसादयः । श्रीखंडादिसुगंधीनि मासं स्यात्पश्चिमाऽसु खम् ॥ १९ ॥ पुनर्वस्वोः स्वर्णसूतकार्पासश्चतथातिलाः । कुसुम्भः श्या मकौशेयं माषयुग्मोत्तरासुखम् ॥ २० ॥ पुष्ये स्वर्णघृतं रूप्यं शालिशो चलसर्षपाः । सर्जिका तैल हिंग्वापि याम्यपीडाष्टमासिकी ॥२१ ॥ आ श्लेषायां च मंजिष्ठा गोधूमश्चमसूरिकाः । मरिचं कोद्रवाशालीमासिकं पश्चिमासुखं ॥ २२ ॥ मघायां तिलतैलाज्यप्रवालचणकागुडाः । अत

सीदक्षिणे देशे विग्रहश्चाष्टमासिका ॥ २३ ॥ उफायां कंबलोर्णादियुगंधरी तिलास्तथा । रजतं वस्तुजातानि याम्यां पीडाष्टमासिकी ॥ २४ ॥ उफायां माषमुद्गाद्यं तंदुलाः कोद्रवाः पुनः । सैंधवं लशुनं सर्जिमासे युग्मोत्तरा यथा ॥ २५ ॥ हस्ते श्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्ठागरुस्तथा । रक्तचंदनकंदादिमासयुग्मोत्तराऽसुखं ॥ २६ ॥

अर्थः—हस्तमें सूर्य हो तो बर्षाद्वारा ईति निवारण हो स्वातिमें वर्षे तो सागरमें सीपियोंमें मोती उपजें ॥ १२ ॥ सौम्यवारके दिन नक्षत्रमें सूर्यका चार श्रेष्ठ है और मद क्रूर वारमें, अच्छा नहीं ॥ १४ ॥ जो सौम्यनक्षत्रमे वेध हो तो सस्ता क्रूररवेध हो तो तेजी देशकाल अनुसार वस्तुओंकी सस्तापन ग्रहवेधसे करादे ॥ १५ ॥ आगे नक्षत्रोंके नामपर उनके अन्न और देश कहतेहैं क्रूर सौम्य वेधसे शुभाशुभफल जानना धान्य यव चने हिरण्यादि सात धातु तिल यह आठमहीने कृत्तिकाके वेधसे सौम्य क्रूर अनुसार समर्घ महर्घ हो पश्चिममें असुख हो॥१६॥ रोहिणीमें सबधान्य सर्वरस सर्वधातु- पुरानीवस्तु, कम्बलवस्त्र, और सात दिन प्राचीदिशामें सुख न हो॥१७॥मृगशिरमें घोडे, भैंस, गौ, लाख, कोदों, जल और अन्न और साठ दिन पीडा हो ॥ १८ ॥ आर्द्राके वेधमें तेल, लवण, सब स्वार रसादिक चंदन आदि सुगन्धि वस्तु और एकमहीने पश्चिममें दुःख हो ॥ १९ ॥ पुष्यमें सुवर्ण, घी, चांदी, धान्य, शोचल, लौन, सरसों, सज्जी, तेल, हिंग, और आठ महीने दक्खनमें पीडा ॥ २० ॥ पुनर्वसुमें सुवर्ण, सूत, कपास, तिल, कुसुम्भ, श्याम, रेशमीवस्त्र, उर्द और दो महीने उत्तरमें असुख हो ॥ २१ ॥ आश्लेषामें मजीठ गेहूं मसूर मिर्च कोदों धान्य उर्द और एक महीने पश्चिममें दुःख ॥ २२ ॥ मघामें तिलतेल घी प्रवाल (मूगा) चने गुड अलसी और दक्षिणमें आठमहीने विग्रह हो ॥ २३ ॥ पूर्वाफाल्गुनीमें रेशमीवस्त्र ऊन युगधरी तिल चांदीकी वस्तु और दक्षिणमें आठ महीने पीडा हो ॥ २४ ॥ उत्तराफाल्गुनीमें उर्द मूग चावल कोदों सैंधव ल्हसन सज्जी ये दो महीने उत्तरमें असुख॥२५॥हस्तमें चदन कपूर देवदार अगर लाल चदन कद और दोमहीने उत्तरमें दुःख हो ॥ २६ ॥

चित्रायां स्वर्णरत्नगुडमाषप्रवालकं । अश्वादिवाहनं मासद्वयपीडोत्तरादिशि ॥ २७ ॥ स्वातौ पूगीमरिचं सर्षपतैलादिराजिका हिंगुः । खर्जूरादि पीडासप्तदिनान्युत्तरेदेशे ॥ २८ ॥ विशाखायां यवाः शालिगोधूमामुद्गराजिका । मसूरान्नमकुष्टा च याम्यपीडाष्टमासिकी ॥२९॥ राधायां तुवरी सर्वद्विदलान्नं च तण्डुलाः । मकुष्टकाश्चचणकाः प्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥ ३० ॥ ज्येष्ठायां गुग्गुलगुडलाक्षाकर्पूरपारदाः । हिंगुश्च बहुकांस्यानि प्राक्पीडादिनसप्तकम्॥३१॥मूले श्वेतानि वस्तूनि रसधान्यादि सैंधवं । कार्पासलवणाद्यं च मासिकं पश्चिमासुखम् ॥ ३२ ॥ पूषायां ज

नतुषधान्यघृतं कंदमूलचूर्णादि । वेद्यं सशालिपश्चिमदिशि मासिकम शुभमन्यदा ॥ ३३ ॥ उषायामश्ववृषभः गजलोहादिधातवः । सर्वं च सारवस्त्वाद्यं प्राग्व्यथादिनसप्तकं ॥ ३४ ॥ द्राक्षाखर्जूरपूगैला मुद्गाजातिफलं हयाः । अभिजिद्वेधतः पूर्वा यथा वा दिनसप्तकं ॥ ३५ ॥ श्रवणे शर्करादीनि पिप्पलीपूगमालिका। तुषधान्यानि वेधानि प्राक्शुभं सप्तवासरान् ॥ ३६ ॥ धनिष्ठायां स्वर्णरूप्यधातवश्चविशेषतः । मणिमौक्तिकमन्नादि सप्ताहं पूर्वतः शुभम् ॥ ३७॥ तैलंकोद्रवमधादिधातकीपत्रमूलकं । वल्लीशतभिषग्वेधं वारुण्यां मासिकं शुभम् ॥ ३८ ॥ प्रियंगुमूलजात्यादिसर्वधान्यानि धातवः। सर्वौषधं देवदारुयाम्यां पीडाष्टमासिकी ॥ ३९ ॥ पूर्वाभाद्रपदे वेध्यमथो भावेयमुच्यते । गुडः खण्डाः शर्करा च खलं तिलाश्च शालयः ॥ ४० ॥ घृतं मणिमौक्तिकानि वारुण्यां मासिकं शुभः । पत्रंश्रीफलपूगादि मौक्तिकं मणयोऽपि च ॥ ४१ ॥ अश्विन्यां व्रीहयो जूर्णाविसरोष्टघृतादिकं । सर्वाणि धान्यवस्त्राणि मासद्वयोत्तरा तथा ॥ ४२ ॥ भरण्यां तुषधान्यानि युगन्धरी च वेध्यते । मरिचाद्यौषधं सर्वं याम्यां पीडाष्टमासिकी ॥ ४३ ॥

अर्थः–चित्रामें सोना रत्न गुड मूंगा उर्द घोडे आदिवाहन और दो महीने उत्तरमें पीडा हो ॥ २७ ॥ स्वातीमें सुपारी मिर्च सरसों तेल राई हींग खजूरादि, तथा उत्तरदेशमें सात दिन पीडा हो ॥ २८ ॥ विशाखाके वेधमें जो धान गेहूं मूंग राई मसूरान्न वनमूंग दक्षिणमें आठ महीने पीडा हो ॥ २९ ॥ अनुराधामें शतावरी दलरहित अन्न चावल वनमूंग चने और पूर्वमें सात दिन पीडा हो ॥ ३० ॥ ज्येष्ठामें गूगल गुड लाख कपूर पारा हिंगू कांसी पूर्वमें सात दिन पीडा हो ॥ ३१ ॥ मूलमें श्वेतवस्तु रसधान्य सेंधा कपास लवणादिक और एकमहीने पश्चिममें सुख न हो ॥ ३२ ॥ पूर्वाषाढमें अंजन तुषधान्य घृत कंदमूल चूर्णधान और पश्चिममें एकमहीना अशुभ हो ॥ ३३ ॥ उत्तराषाढामें अश्व बैल गज (हाथी) लोहादिधातु और सब सारवस्तु तथा पूर्वमें सातदिन कष्ट हो ॥ ३४ ॥ दाख खजूर सुपारी इलायची मूंग जायफल अश्व अभिजितके वेधसे पूर्वमें सातदिन व्यथा ॥ ३५ ॥ श्रवणमें शर्करादि गजपीपली सुपारी तुषधान्य पूर्वमें सातदिन शुभ जानना॥ ३६ ॥ धनिष्ठाके वेधमें सोना रूपा धातु मणि मोती अन्न और सातदिन पूर्वमें शुभ हो ॥ ३७ ॥ तिल कोदों मद्य धातकी (पिप्पली) मूलक वल्ली (वेल) शतभिषाके वेधसे पश्चिममें एकमहीने शुभ हो ॥३८॥ प्रियंगु मूलादि जातीफल सम्पूर्ण धान्य और धातु सब औषधी देवदारु दक्षिणमें आठमासकी पीडा हो ॥ ३९ ॥ पूर्वाभाद्रपदके वेधमें गुड खाड शक्कर तिल खल धान्य ॥ ४० ॥ उत्तराभाद्रपदके वेधमें घी मणि

मोती रेवतीमें पत्र नारियल सुपारी मोती मणि एकमासतक पश्चिममें शुभ हो॥ ४१ ॥ अश्विनीमें जो तृण खचर ऊंट घृतादिक सब धान्य वस्त्रादि दोमहीने उत्तरदिशामें शुभाशुभ रहैं॥ ॥ ४२ ॥ भरणीमे तुष धान्य युगन्धरी मिरच और सब औषधी तथा दक्षिणमें आठ महीने पीडा रहै ॥ ४३ ॥

रात्रौ संक्रातिरार्द्रायामप्यगस्तोदयो यदा।तदा वर्षे सुभिक्षं स्याद्विपरीतं तथोच्यते॥४४॥अवृष्टो न युतो क्रूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगो। जीवदृष्टौ विशेषेण महावृष्टिस्तदा भवेत्॥ ४५ ॥ज्ञजीवावेकराशिस्थौ क्रूरदृष्टिविवर्जितौ।शुक्रदृष्टौ विशेषेण कुरुते वृष्टिरुत्तमां॥ ४६ ॥ जीवशुक्रौ यदा युक्तौ क्रूरेणापि विलोकितौ। बुधदृष्टौ महावृष्टिं कुरुते जलयोगतः ॥ ४७ ॥ गुरुर्बुधो दानवेन्द्रो एकराशिगतास्त्रयः। अदृष्टाः क्रूरखचरैर्महावृष्टिविधायकाः ॥ ४८ ॥ यदा शुक्रश्च भौमश्च मंदश्चैकत्र राशिगः । तदा वर्षति पर्जन्यो जीवदृष्टौ न संशयः ॥ ४९ ॥ शुक्रे चंद्रसमायुक्ते भौमे वा चंद्रसंयुते ॥ उद्बन्धना दिशः सर्वा जलयोगस्तदा महान्॥५०॥ अग्रतो वा स्थिता सौम्याः क्रूराणां तु परस्पराः । ददते सलिलं भूरि न तोयं स्याद्विपर्यये ॥ ५१ ॥ एकराशिगतोजीवः सूर्येण सह वर्षति । यावन्नास्तमनं याति योगो द्वन्द्वंज्ञजीवयोः ॥ ५२ ॥ उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद्बुधः। तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पंच सप्त वा ॥ ५३ ॥ कर्कटे तु प्रविशते सूर्यं पश्येद्यदा गुरुः। पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तत्र काले महाजलं ॥ ५४ ॥ उदयेस्तंगमे चेत्स्याज्जीवदृष्टो यदा ग्रहः। पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तदा वर्षति नान्यदा ॥ ५५ ॥ शनौ शुक्रे ल्पवृष्टिः स्यान्न सस्यानि भवन्ति चावक्रीतीर्णाः शुभाः क्रूरा जीवो वक्रगतः शुभः ॥ ५६ ॥ अतिचारगताः क्रूराः स्वल्पवृष्टिविधायकाः। सौम्या यदा वक्रगतास्तदा वृष्टिविधायिनः ॥ ५७ ॥

अर्थः-रात्रिको संक्रान्तियुक्त आर्द्रामें यदि अगस्तिका उदय हो तो वर्षमें सुभिक्ष हो अन्यथा नहीं ॥ ४४ ॥ बुध शुक्र एकराशिपर क्रूरग्रहसंयुक्त हों तो वर्षा न करे और जो गुरुकी दृष्टि हो तो वर्षा अधिक हो ॥ ४५ ॥ बुध गुरु एकराशिपर स्थित हों क्रूरदृष्टिसे रहित हों और शुक्रकी दृष्टियुक्त हों तो विशेष वर्षा करें ॥ ४६ ॥ जो एकराशिपर होकर जीव शुक्र क्रूरग्रहयुक्त हों और बुधकी दृष्टि युक्त हो तोजलयोग है अधिकवर्षा हो ॥ ४७ ॥ गुरु बुध शुक्र यह तीनों एकराशिपर स्थित हों और क्रूर ग्रहोंसे देखे जाय तो महावर्षा करें ॥ ४८ ॥ जो

शुक्र मंद शनि एकराशिपर स्थित हों और गुरुकी दृष्टि हो तो अवश्य वर्षा हो ॥ ४९ ॥ शुक्रके चन्द्रमायुक्त होनेपर वा मंगलके चंद्रसंयुक्त होनेपर दिशाओंमें उद्बंधन और महावर्षा हो ॥ ५० ॥ आगे सौम्यग्रह स्थित हो पीछे क्रूर हों तो जल बहुत वर्षे विपरीतमें वर्षा न हो ॥ ॥ ५१ ॥ सूर्यके साथ एकराशिमें स्थित होकर बृहस्पति वर्षा करे जबतक जीव बुध अस्त न हों यह योग रहे ॥ ५२ ॥ जो वक्री होकर शुक्र बुधको त्यागे तो पांच या सात दिन वर्षा हो ॥ ५३ ॥ जो सूर्यको कर्कमें प्रवेश करते हुए बृहस्पति देखे पौन या पूर्णदृष्टिसे देखे तो महा जल वर्षे ॥ ५४ ॥ उदय अस्त होते हुए कोई ग्रह सूर्यसे देखे जाय पौनया पूर्ण दृष्टिसे देखे तो वर्षा हो अन्यथा नहीं ॥ ५५ ॥ शनि शुक्र एकराशिपर हों तो थोडी खेती हो धान्य न उपजैं वक्री हो सुकनेपर क्रूरग्रह शुभ होते हैं और शुक्र वक्री होकर शुभ होताहै ॥ ५६ ॥ क्रूरग्रह अतिचारको प्राप्त होकर थोडी वर्षा करते हैं और सौम्य वक्री होकर अधिक वर्षा करतेहैं ५७

सिंहे कन्यातुलायां च यास्यते च यदा गुरुः। एकादश्यां च योगोयं व र्षत्येव महाजलं ॥ ५८ ॥ शुक्रस्य यदि भौमेन यदि स्यात्सप्तसप्तकम् । वृष्टिर्मासे तदा काले तथैव शनिजीवयोः ॥ ५७ ॥ क्रूराणां सह सौम्यै श्च यदि स्यात्सप्तसप्तकं । अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीडा महत्यपि ॥ ॥ ६० ॥ अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा । पूर्वाषाढादिचत्वा रिचोत्तरा रेवतीद्वयं ॥ ६१ ॥ उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यभान्य थ । रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिका तथा ॥ ६२ ॥ सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति । चान्द्रसूर्यो भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघरा ट् ॥ ६३ ॥ आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् । मूलाचतुर्दश पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ ६४ ॥ वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्र दर्शनम् । स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ६५ ॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे श्रीमेघविजयगणिविरचिते द्वारचतुष्ट यकथनोनामद्वादशोऽधिकारः ॥ १२ ॥

अर्थः—जो गुरु कन्या या तुला या सिंहमें प्राप्त हो और एकादशीके दिन यह योग हो तो मेघ वर्षे अथवा गुरुसे ग्यारहवीं राशिपरका ग्रह हो तो वर्षा हो ॥ ५८ ॥ शुक्रकायदि मंगलमें राशिसप्तक हो और शनि गुरुका राशिसप्तक हो तो एक महीने वर्षा हो ॥ ५९ ॥ जो क्रूर ग्रहोंका सौम्य ग्रहोंके साथ राशिसप्तक हो तो अनावृष्टि और लोकमें महापीडा जाननी॥६०॥ अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ॥ ६१ ॥ यह चंद्र नक्षत्र हैं शेष सब सूर्य नक्षत्र हैं रोहिणी मृगशिर पूर्वाफाल्गुनी आदि सूर्यनक्षत्र जानने ॥ ६२ ॥ दिवस नक्षत्र और ग्रह नक्षत्र दोनों सूर्यके होंय तो

महापवन चले दोनो चंद्रके होय तो मेघ न वर्षे चन्द्र और सूर्यनक्षत्रका योग होय तो अच्छी वर्षा हो ॥ ६२ ॥ आर्द्रासे लेकर स्वातितक दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं विशाखासें ज्येष्टातक तीन नपुंसक मूलसे मृगशिरपर्यंत चौदह पुरुषसंज्ञक हैं ॥ ६४ ॥ नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवै तो वायुचले दोनों स्त्री नक्षत्र हों तो मेघदर्शन होय स्त्रीपुरुषनक्षत्रोंका योग हो तो अवश्य वर्षा हो ॥ ६५ ॥

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे भाषाटीकायां द्वादशोऽधिकारः ॥ १२ ॥

अथ वर्षाशकुनविचारः ।

पृच्छालग्ने चतुर्थस्थो शनिराहूयदा पुनः । दुर्भिक्षं च महाघोरं तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत् ॥ १ ॥ चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभा ग्रहाः । तस्या दिशि च निष्पत्तिः सुभिक्षं च प्रजायते ॥ २ ॥ यस्यां दिशि शनिर्दृष्टः क्रूरश्चात्र ग्रहे स्थितः । दिशि तस्यां बुधैर्वाच्यं दुर्भिक्षं नात्रसंशयः ॥३॥ पंचांगुलिस्पर्शनेपि यद्यंगुष्ठं जनः स्पृशेत् ।तदा वृष्टिस्तु महती सावित्री स्पर्शनेलिपका ॥४॥ अक्षय्यायां तृतीयायां संध्यायां सप्तधान्यकम् । पुंजीकृत्य स्थापनीयं पृथक्कृत्वा तरोरधः ॥ ५ ॥ यदा ततं स्यात्तद्धान्यं तद्वर्षे बहु जायते । यत्पुञ्जरूपं वा तिष्ठेन्नैव निष्पद्यते पुनः ॥ ६ ॥ अक्षय्यायां तृतीयायां प्रपूर्येद्भाडणमम्बुना । रविं विलोकयेन्मध्ये तत्स्वरूपं विमृश्यते ॥ ७ ॥ रक्ते सूर्ये विग्रहः स्यान्नीले पीते महारुजः । श्वेते सुभिक्षं जायते धूसरे दुःखमूपका ॥ ८ ॥ आषाढ्यां समतुलिताधिवा सितानामन्येद्युर्यदधिकतामुपैति बीजम् । तद्वृद्धिर्भवति न जायते यदूनं मंत्रोस्मिन् भवति तुलाभिमंत्रणाय ॥ ९॥ स्तोतव्यामंत्रयोगेन सत्या देवी सरस्वती । दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रताह्यसि ॥ १० ॥ येन सत्येन चन्द्राकौं ग्रहाज्योतिर्गणास्तथा । उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥ ११ ॥ यत्सत्यं सर्वदेवेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु । यत्सत्यं त्रिषुलोकेषु तत्सत्यमिह दृश्यताम् ॥ १२ ॥ ब्रह्मणो दुहितासित्व मादित्येति प्रकीर्तिता । काश्यपीगोत्रतश्चैव नामतो विश्रुतातुला ॥ १३ ॥

अर्थः—मेघके प्रश्नकरनेमें यदि लग्नसे चौथे स्थानमें शनि राहु हों तो उस वर्षमें महाघोर दुर्भिक्ष हो ॥ १ ॥ और चारों केन्द्रके बीचमें जहां शुभ ग्रह हो उसी दिशामें अन्नकी उत्पत्ति और सुभिक्ष हो ॥ २ ॥ जिस दिशाकूं क्रूर ग्रहों सहित शनिश्चर देखै उस दिशामें अवश्यदुर्भिक्ष हो ॥ ३ ॥ पांच अंगुली स्पर्शकरनेपर यदि अंगूठेको प्रच्छक स्पर्श करे तो अधिक वर्षा

हो कनिष्ठिका छुए तौ थोडी वर्षा हो ॥ ४ ॥ अक्षय तीजको सध्याके समय सात धान इकट्ठे करके पेडके नीचे रख देने चाहियें ॥ ५ ॥ जो वे बिखर जाय तौ अधिक धान्य उत्पन्न हो और जो वे इकठे रहै तौ धान्यकी उत्पत्ति न्यून हो ६ ॥ अक्षय तीजको थालीमें जल रखकर सूर्यको देखै उसका स्वरूप विचारे ॥७ ॥ जो सूर्य लाल दीखे तौ विग्रह हो नीला पीला दीखे तौ महारोग हो श्वेत दीखै तौ सुभिक्ष धूसर दीखे तौ मूषोंका उपद्रव हो "ओं ह्रीं श्रीं क्लीं आ लक्ष्म्यै स्वाहा" इस मत्रसे अक्षयतीजको धान्य अभिमन्त्रितकर गाठमें बाधकर रखदे दूसरे दिन खोलकर तोले जो घटें तौ अकरे और बढे तौ सस्ते हों ॥ ८ ॥ उत्तराषाढयुक्त आषाढकी पूर्णिमाके दिन सब धानोंको बराबर तोलकरले और उनके अभिमन्त्रितकर, एकरात भर रक्खे पीछे तराजूको आगे लिखे पाचमन्त्रोंसे अभिमन्त्रितकर तोले जो बीज घटें तौ उस वर्षमें नहीं उत्पन्न होते जो बढें तों उसकी उस वर्षमें वृद्धि होती है ॥ ९ ॥ मन्त्रयोगसे सत्यस्वरूप देवी सरस्वतीकी स्तुति करे वोह सत्यव्रत जो सत्य है सो दिखाती है ॥ १० ॥ जिस सत्यसे चन्द्र सूर्य ग्रह ज्योतिर्गण पूर्वमें उदय हो पश्चिममें अस्त होतेहैं ॥ ११ ॥ जो सत्य देवता, ब्रह्मवादी और त्रिलोकीमें है वह सत्य इनमें दीखे ॥ १२ ॥ तू ब्रह्माकी दुहिता आदित्या करके विख्यात है काश्यप गोत्रमें उत्पन्न तुला नाम है ॥ १३ ॥ इनमन्त्रोंसे तराजू अभिमन्त्रितकर बीज तोले ॥ १४ ॥

क्षौमं चतुः सूत्रकसन्निबद्धं षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्याः । सूत्रप्रमाणं च दशाङ्गुलानिषडेव कक्षोभयशिक्यमध्ये॥१४॥याम्येशक्ये काञ्चनं सन्निवेश्यं शेषंद्रव्याण्युत्तरेम्बूनि चैवम् । तोयः कोप्यैस्यान्दिभिः सारसैश्च वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च ॥ १५ ॥ दन्तैर्नागा गोहयाद्याश्च लोम्ना हेम्नाभूपाः सिक्थकेन द्विजाद्याः । तद्वद्देशा वर्षमासादिशश्च शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ॥ १६ ॥ हैमी प्रधाना रजतेन मन्या तयोरलाभे खदिरेण कार्या । विद्धः पुमान् येन शरेण सा वा तुलाप्रमाणेन भवेद्वितस्तिः ॥ १७॥ हीनस्य नाशोभ्यधिकश्च वृद्धिस्तुल्येन तुल्य तुलितं तुलायां । एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तं प्रजेशयोगेपि नरो विदध्यात् ॥१८॥ स्वातावषाढास्वथ रोहिणीषू पापग्रहा योगगता न शस्ताः । ग्राह्यं तु योगद्वयमप्युपोष्य यदाधिमासो द्विगुणी करोति ॥ १९ ॥ त्रयोपि योगाःसदृशाः फलेन यदा तदा वाच्यमसंशयेन । विपर्यये यत्विह रोहिणीज फलं तदेवाभ्यधिकं निगद्यम् ॥ २० ॥ अथ कुसुमलताफलम् ॥ फलकुसुमसंभववृद्धि वनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम् । सुलभत्व द्रव्याणां निष्प

त्तिश्चापि सस्यानाम् ॥ २१॥ शालेन कलमशाली रक्ताशोकेन रक्तशालिश्च । पाण्डूकः क्षीरिकया नीलाशोकेन शूकरकः ॥ २२ ॥

अर्थः—उस तखडीके दोनो पल्लेछः अंगुल विस्तारके लालसीरेस्मीके कपडेके चार सूत्रोंमें बांधे उन सूत्रोंका प्रमाण दश दश अंगुल हो और उनके बीचकी कक्षा अर्थात् जिस डोरीको पकडकर तराजू उठाते हैं छःअंगुलकी बनावे॥१४॥सोना दक्षिणके पल्लेमें तोले और सब वस्तु जलादि उत्तरके पल्लेमें तोले कुएका जल तोलमें बढे तो थोडी वर्षा झरनेका जल बढे तो मध्यम सरोवरका बढे तो उत्तम सब जल बढे तो बहुत वर्षा हो कोईभी न बढे तो वर्षा न हो ॥ ॥१५ ॥ हाथी दांतकी तोलसे हाथी रोमकी तोलसे गौ घोडे आदि पशु सुवर्णकी तोलसे राजा भौमसे ब्राह्मणादि वर्ण वर्ष महीने आठों दिशा और सब वस्तुकी अपनें२ तोलसे घटती बढती जानें ऐसेही सब विचार करे ॥ १६ ॥ सोनेकी तराजू उत्तम, चांदीकी मध्यम हैं और यह न मिलें तो खदिर काठकी बनावे अथवा जिस बाणसे कोई मनुष्य विंधा हो उसकी बनावे और बारह अंगुलकी डंडी रक्खे ॥१७॥ जो वस्तु तोलमें घटे उसका क्षय जो बढे उसकी वृद्धि और जो न घटै न बढे उसकी हानि और वृद्धि नहीं होती यह तुलाकोशका रहस्य रोहिणीयोगमेंभी करके देखना चाहिये ॥१८॥ स्वाति उत्तराषाढा,रोहिणी इन नक्षत्रोंसे चन्द्रयोग होनेके समय भौम शनि राहु केतु यह पापग्रहभी इन नक्षत्रोंपर हों तो शुभ नहीं होते बुध शुक्र बृहस्पति शुभ ग्रह हों तो अच्छे हैं जो अधिकमास होनेसे दो आषाढ हों तो उपवास रखकर दोनो महीनोंका विचार करे ॥ १९ ॥ जो रोहिणी स्वाति और आषाढी योग तीनों फलमें तुल्य हों तो निःसन्देह शुभ या अशुभ जैसा फल हो कहदेना और जो फलोंमें भेद हो तो रोहिणीका जो फल हो वही विशेषकर कहना चाहिये ॥ २० ॥ अथ कुसुमलता फलम् ॥ वृक्षोंके फल और फूलोंकी वृद्धि देखकर सब वस्तुओंकी सुलभता और खेतीकी उत्पत्ति जानें ॥ २१ ॥ शालवृक्षके फल और फूलोंकी वृद्धिसे कलमाशालिकी वृद्धि रक्ताशोकसे रक्तशालि वृधीसे पाण्डूक नील अशोकसे शूकरधान्यकी वृद्धि होती है ॥ २२ ॥

न्यग्रोधेन तु यवकस्तिन्दुकवृष्ट्या च षष्ठिको भवति । आश्वत्थेन ज्ञेया निष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥ २३ ॥ जम्बूभिस्तिलमाषाः शिरिषवृद्धश्च कंगुनिष्पात्तिः । गोधूमाश्च मधूकैर्यवब्राद्धिः सप्तपर्णेन ॥ २४ ॥ अतिमुक्तककुन्दाभ्यां कार्पासः सर्षपाअसनैः । बदरीभिश्च कुलत्थान् चिरविल्वेनादिशेन्मुद्गान् ॥ २५॥ अतसीवेतसपुष्पैः पलाशकुसुमैश्चकोद्रवा ज्ञेयाः । तिलकेन शंखमौक्तिकरजतान्यथ चेंगुदेन शणाः ॥ २६ ॥ करिणश्च हस्तिकर्णेरादेश्या वाजिनोश्वकर्णेन । गावश्चपाटलाभिः कदलीभिरजाविकं भवति॥२७॥चम्पककुसुमैः कनकं विद्रुमसंपच्च बंधुजीवेन । कुरवकवृद्ध्या वज्रं वैदूर्यं नन्दिकावर्तैः॥२८॥ विन्द्याच्चसिन्दुवारेण मौक्तिकं

कारुकान् कुसुम्भेन । रक्तोत्पलेन राजमंत्रीनीलोत्पलेनोक्तः ॥ २९ ॥ श्रेष्ठी सुवर्णपुष्पैः पद्मैर्विप्राः पुरोहिताः कुमुदैः । सौगन्धिकेन बलपतिरर्केण हिरण्यपरिवृद्धिः ॥ ३० ॥ आम्रैः क्षेमं भल्लातकैर्भयं पीलुभीस्तथा रोग्यम् । खदिरशमीभ्यां दुर्भिक्षमर्जुने शोभना वृष्टिः ॥ ३१ ॥ पिचुमन्दनागकुसुमैः सुभिक्षमथमारुतः कपित्थेन । निचुलेनावृष्टिभयं व्याधिभयं भवति कुटजेन ॥ ३२ ॥ दूर्वांकुशकुसुमाभ्यां भिक्षुर्वहनिश्च कोविदारेण । श्यामालताभिवृद्धया बन्धक्यो वृद्धिमायान्ति ॥ ३३ ॥ यस्मिन्काले स्निग्धनिश्छिद्रपत्राः संदृश्यन्ते वृक्षगुल्मालताश्च । तस्मिन् वृष्टिः शोभना संप्रदिष्टा रूक्षैश्छिद्रैरल्पमंभः प्रदिष्टम् ॥ ३४ ॥

अर्थः—बडकी वृद्धिसे यवक तेंदूकी वृद्धिसे सठी और पीपलकी वृद्धिसे सब खेतीवृद्धि होतीहै ॥ २३ ॥ जामनकी वृद्धिसे तिल और उडद सिरसकी वृद्धिसे कंगनी महुयेसे गेहूं और सप्त पर्णसें जौंकी वृद्धि होतीहै ॥ २४ ॥ अतिमुक्त और कुंद इन दोनो पुष्पवृक्षोंसे कपास असन वृक्षकी वृद्धिसे सरसौं वेरीसे कुलथीकी और चिरविल्ववृक्षकी वृद्धिसे मूंगकी वृद्धि होतीहै ॥ २५ ॥ वेतके फूलोंकी वृद्धिसे अलसीकी पलासके फूलोंसे कोदो तिलकके वृक्षसे शंख मोती और चांदीकी वृद्धि इंगुदीकी वृद्धिसे सनकी वृद्धि होतीहै ॥ २६ ॥ हस्तिकर्ण वृक्षकी वृद्धिसे हाथियोंकी अश्वकर्णकी वृद्धिसे घोडोंकी पाटलकी वृद्धिसे गौओंकी केलोंकी वृद्धिसे बकरी और मेढोंकी वृद्धि होतीहै ॥ २७ ॥ चम्पेके फूलोंसे सोनेकी गुलदुपहरियासे मूंगेकी कुरबककी वृद्धिसे हीरेकी और नन्दिकावर्तकी वृद्धिसे वैडूर्यरत्नकी वृद्धि होतीहै ॥ २८ ॥ सिंधुवारकी वृद्धिसे मोती कुसुम्भकी वृद्धिसे कारीगरोंको लाल कमलसे राजा ओंकी और नील कमलसे राजाओंके मंत्रियोंकी वृद्धि होतीहै ॥ २९ ॥ सुवर्णपुष्पकी वृद्धिसे सेठोंकी प मलोंसे ब्राह्मणोंकी कुमुदोंसे राजपुरोहितोंकी सौगन्धिक फूलसे सैनापतिकी और आककी वृद्धिसे सोनेकी वृद्धि होतहै ॥ ३० ॥ आम्रकीवृद्धिसे कल्याण भिलावेकी वृद्धिसे आरोग्य शमीकी वृद्धिसे दुर्भिक्ष, और अर्जुनकी वृद्धिसे उत्तम वर्षा होतीहै ॥ ३१ ॥ नीम और नागकेसरके फूलोंकी वृद्धिसे सुभिक्ष होता है कैथकी वृद्धिसे पवनका वेग, पिचुलवृद्धिसे वर्षा न होनेसे भय कुटजकी वृद्धिसे रोगका भय होता है ॥ ३२ ॥ दूर्वाकुशाके फूलोंकी वृद्धिसे ईसकी वृद्धि के विदारकी वृद्धिसे अग्नि अधिक लगे श्यामलताकी वृद्धिसे व्यभिचारिणियोंकी वृद्धि अधिक होती है ॥ ३३ ॥ जिस समय वृक्ष गुल्म वेल चिकने और छिद्ररहित पत्रोंसे युक्त होय उसकालमें उत्तम वृष्टि होती है जो पत्र रूखे और छिद्रयुक्त होंय तो थोडी वर्षा होतीहै॥

काकेंगित ।

काकस्याण्डानि चत्वारि वारुणं प्रथमं स्मृतं । तथा द्वितीयमाग्नेयं वायवीयं तृतीयकं । चतुर्थं भूमिजं प्रोक्तमेषां फलमयोदितम् ॥ ३५ ॥ क्षेमं

सुभिक्षं सुखिता च धात्री स्याद्भूमिजेण्डे महताचवृष्टिः । पृथ्वी तथानंदति सस्यमाद्यं वर्षाविशेषेण जलाण्डतः स्यात् ॥ ३६ ॥ जातानि धान्यानि समीरजाण्डे खादंति कीटः शलभाः शुकाश्च । दुर्भिक्षमण्डेग्निभवे निवेद्यं जानीहि मासान् चतुरोपि चाण्डे ॥ ३७ ॥ काकालयः प्राग्दिशि भूरुहस्य सुभिक्षकृत् स्वल्पघनस्तथाग्नौ । मासद्वयं वृष्टिकरोतिपूर्वं ततो न वृष्टिर्हिमयात एव ॥ ३८ ॥ मासद्वयेतीव घनः प्रतीच्यां निष्पत्तिरन्नस्य तदोच्चभूम्यां। ततोल्पवृष्टिर्यदि वाल्पवर्षा स वातवृष्टिः पवनस्य कोणे ॥ ३९॥ पूर्वं न वृष्टि निर्ऋतं पयोदाः पश्चाद्घनो लोकसरोगताच । स्यादुत्तरस्यां भवनेसुभिक्षमीशानभागेपि सुखं सुभिक्षं॥४०॥ वृक्षाग्रे तु महावर्षा वृक्षमध्ये तुमध्यमा । अधःस्थाने नैव वर्षा वृक्षेकाकालयाद्वदेत् ॥ ४१ ॥ वृक्षकोटरके गेहप्रकारे काकमालके । दुर्भिक्षं विग्रहो राज्ञां याम्यां छत्रस्य पातनं ॥ ४२॥ नदीतीरेकाकगृहे मेघप्रश्ने न वर्षणं । पक्षौविधूनयन् काको वृक्षाग्रेशीघ्रमेघकृत् ॥४३ ॥ ग्रामाद्बहिश्च निर्गत्य स्वस्थाने मंण्डलं लिखेत्। संपूज्यशकुनं वीक्ष्य काकेंगित विनिर्णयः ॥ ४४ ॥ कपिलानां शतं हत्वा ब्राह्मणानां शतद्वयं । तत्पापं परिगृण्हासि यदि मिथ्यावलिं हरेः ॥ ४५ ॥

अर्थः—काकके वारुण आग्नेय वायवी और भूमिज चार प्रकारके अंडे होते हैं, उनका फल कहते हैं ॥ ३५ ॥ भूमिक अंडा हो तो क्षेम सुभिक्ष और पृथ्वी सुखी हो वर्षा अच्छी हो पृथ्वी आनंद और खेती अच्छी हो और जलसंज्ञक अंडे हो तो अधिक वर्षा हो ॥ ३६ ॥ वायवी अण्डेसे धान्यकी अधिकता हो परन्तु उसे कीट शलभ तोते खाजांय और अग्निसंज्ञक अंडेसे दुर्भिक्ष हो इस प्रकार चारमासोंमें अंडेके अनुसार फल कहै, चार महीनेमें चारसंज्ञा है ॥ ३७ ॥ जो कोएका स्थान वृक्षपर पूर्वको होय तो सुभिक्ष करनेवाला है अग्निकोणमें हो तो थोडी वर्षा हो दक्षिणमें हो तो दो महीने वर्षा होकर फिर वर्षा न हो ३८ ॥ पश्चिममें हो तो दो महीनें वहुत वादल रहें ऊंची भूमिमें अधिक अन्न हो और वायव्यकोणमें हो तो थोडी वर्षा हो वा पवनसहित वर्षा हो ॥ ३९ ॥ नैर्ऋत्यमें हो तो पहले वर्षा न हो पीछे वादल वर्षे लोकमें रोग हो उत्तरमें हो तो सुभिक्ष करै ईशानमें हो तो सुभिक्ष करे ॥ ४० ॥ वृक्षके अग्रभागमें घौंसला हो तो महावर्षा हो मध्यमें हो तो मध्यम वर्षा हो नीचे हो तो वर्षा न हो इसप्रकार फल स्थानका कहना ॥ ४१ ॥ और जो वृक्षके कोटरमें घर हो तो दुर्भिक्ष राजोंमें विग्रह दक्षिणमें छत्रभंग हो ॥ ४२ ॥ नदीके किनारे काकका घर हो तो मेघप्रश्नमें वर्षा न हो और कौआ यदि पंख कंपाता हुआ वृक्षके आगे बैठा हो तो जल्दी मेघ वर्षे ॥ ४२ ॥ ग्रा-

मसें बाहर निकलकर अपने स्थानमें मंडल लिखै पूजन कर और शकुन देखकर कौएकी चेष्टाको विचारे ॥ ४४ ॥ और कहे कि, हे काक, सो कपिला और दोसै ब्राह्मणोंके मारनेका अपराध लगे जो तू मिथ्या बलिको ग्रहण करे ॥ ४५ ॥

शाल्योदनेन साज्येन कृत्वा पिंडचयं बुधः । संमार्जिते शुभे स्थाने स्थापयेन्मंत्रपूर्वकं ॥ ४६ ॥ मंत्रो यथा ओं तुंडब्रह्मणे सुराय । असुरेन्द्राय हिरण्यपुण्डरीकाय स्वाहा॥१॥आव्हानमंत्र ॥ ओं तिरिति मिरिटी काकपिंडालये स्वाहा । पिंडाभिमंत्रणम् ॥ २ ॥देशकालपरीक्षार्थं वृषभं चाद्यपिंडके द्वितीये तुरंग न्यस्य तृतीये हस्तिनं क्रमात् ॥ ४७ ॥ वर्षाज्ञानाय संस्थाप्यं प्रथमे पिंडके जलं । द्वितीये मृत्तिकास्थाप्या तृतीयेंगारकः पुनः ॥ ४८ ॥ शीघ्रं वर्षति पानीये मृत्तिकायास्तु पिंडके । पक्षान्ते न तु वृष्टिस्यादंगारे नास्ति वर्षणम् ॥ ४९ ॥

ग्रंथान्तरे ।

ओं नमो भगवउगोयमसामिस्मसिद्धत्सबुद्धस्स अरकीणमहासस्था भगवन भास्कर श्रीयं आनय आनय पूरय पूरय स्वाहा ॥ छे ॥ आश्विनस्य चतुर्दश्यां मंत्रोयं जप्यते निशि । सहस्रमेकं तपसा धूपोतक्षेवपुरस्सरं ॥ ५० ॥ प्रातःपूर्णोदिनमुखे लेख्येगोतमपादुके । जपेद्धिसुरभिर्द्रव्यैरर्चनीयो सुभाविना ॥ ५१ ॥ यत्पादुके पात्रे लेख्ये वस्त्रेणाछाद्यते च तत् । मार्जारदर्शनं वर्ज्यं यावच्च क्रियते विधिः ॥ ५२ ॥ समये पात्रकं नीत्वा भिक्षायै गम्यते गृहे । दातुर्महेभ्यः श्राद्धस्य यत्प्राप्तं तद्विचार्यते॥ सधवा सतनूजा स्त्री भिक्षादात्री शुभाय सा । यद्वहु प्राप्यते धान्यं तन्निष्पत्तिः पुरो भवेत् ॥ ५४ ॥ नास्ति वेलेत्युत्तरेण दुर्भिक्षं भावि वत्सरे । विलम्बदाने मेघोपि विलंम्बेनैव वर्षति ॥ ५५ ॥ तत्र क्लेशदर्शनेन राजविग्रहमादिशेत् । भंगे पात्रस्थ भाण्डस्य छत्रभंगो विचार्यते ॥५६॥ व्यंगवादवती दत्ते तदा रोगाद्युपद्रवः । इति गोतमीयज्ञानम् ॥

अर्थः—विद्वानको उचित है कि सठीके आटेमें घी डालकर लिपे हुए स्वच्छ स्थानमें मंत्रपूर्वक स्थापन करे ॥४६॥ ओं तुडेति इस्से आवाहन करे ओं तिरिति इससे अभिमंत्रण करे देशकालकी परीक्षाके निमित्त पहले पिंडपर वृषभ दूसरे पर घोड़ा तिसरेपर हाथी स्थापित करे यह चिन्ह है ॥ ४७ ॥ वर्षा जाननेके निमित्त पहले पिण्डपर जल दूसरेपर मृत्तिका तीसरेपर

अंगारा रक्खे ॥४८॥ जो जलका पिण्ड काक स्पर्श करैं तौ शीघ्र वर्षा हो मृत्तिकाका ग्रहण करै तौ पश्चान्तमें वर्षा हो और अंगारेको स्पर्श करै तौ वर्षा न हो॥४९॥ अथ प्राकृतमंत्र॥ओं नमो इति यह मंत्र आश्विन चतुर्दशी रात्रिके समय एक सहस्र जपै और धूपदेता रहै ॥५०॥ प्रातःकाल गौतम पादुकाके नीचे लिखकर धूप दीप सुगन्धि फूलोंसे उसकी पूजा करै॥५१॥ और फिर वस्त्रसे ढकदे बिल्लीको न देखनेदे जबतक यह पूजन करै ॥ ५२ ॥ फिर भिक्षाके समय पात्र लेकर मागने जाय जो और श्रद्धासे देनेवाले महात्माओंके वाक्योंका विचार करै ॥ ५३ ॥ जो सौभाग्यवती पुत्रवती स्त्री भिक्षा दे तौ शुभ है जो धान्य मिलै उसीकी उत्पत्ति अधिक हो ॥ ५४ ॥ जो भीतरसे ऐसा उत्तर आवै कि इससमय नहीं फिर लेना तौ आगेके वर्षमें दुर्भिक्ष जानना देरमें देनेसे मेघभी देरसे वर्षै ॥५५॥ और जो वहां क्लेश होता देखै तौ राजोंमें विग्रह हो और पात्र टूटजानेसे छत्रभंग जानना ॥ ५६ ॥ और जो बड़ बड़ विवाद करतेहुए कोई भिक्षा दे तौ रोगादि उपद्रव हो ॥इति गौतमीयज्ञानम् ॥

अथगर्वेगित ।

गावो दीना पार्थिवस्याशिवाय पादैर्भूमिं कुट्टयन्तश्च रोगान्। मृत्युं कुर्वन्त्यश्रुपूर्णायताक्ष्यः पत्युर्भीता तस्करानाह्वयन्त्यः ॥ ४६ ॥ अकारणं क्रोशति चेदनर्थो भयाय रात्रौ वृषभः शिवाय। भृशं निरुद्धो यदि मक्षिकाभिस्तदाशु वृष्टिः सरमात्मजैर्वा ॥ ४७ ॥ आगच्छंत्यो वेश्महम्बारवेण संसेवन्त्यो गोष्ठवृद्ध्यै गवां गाः । आर्द्राङ्ग्योया हृष्टरोम्ण्यः प्रहृष्टा धन्यागावः स्युर्महिष्योपि चैवम् ॥ ४८ ॥ इत्येवं शकुनं विचार्यसुधिया वाच्यं फलं वार्षिकं यस्योद्बोधनतो लभेद्बहुधनं सर्वार्थसंसाधनं।राजन्यैरपि मान्यते सनिपुणः मोल्लासिभास्वद्गुणः शास्त्रं यन्मनसि स्फुरत्यतिभयात् श्रीवर्षबोधाव्हयम् ॥ ४९ ॥ श्रीमत्तपागणविभुः प्रसरत्प्रभाव प्रद्योतते विजयताप्रभनामसूरिः । तत्पादपद्मतरणिर्विजयादिरत्नः स्वामी गणस्य महसा विजितद्युरत्नः ॥५०॥ तच्छासने जयति विश्वविभासने ऽभूद्विद्वान् कृपाब्धिविद्वज्जनसेव्यमानः । शिष्योस्य मेघविजयाव्हय वाचकोसौग्रंथः कृतः सुकृतलाभकृतेत्र तेन ॥ ५१ ॥ अनुष्टुभां सहस्राणि त्रीणिसार्द्धानि मानिता । अथोयं वर्षबोधाख्योयावन्मेरु प्रवर्ततां ॥ ५२ ॥ यत्पुनरुक्तमयुक्तं द्विरुक्तमिह तद्विशोधितुं युक्तं । बद्धांजलिनेति मयाभ्यर्थ सकलगीतार्थः ॥५३॥ भाविवत्सरबोधाय तस्य बालस्य शालिनः । कुरुताः गुरुतां ग्रंथो हिताबालस्य पालनात् ॥ ५४ ॥

इति श्रीमहामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणिविरचिते वर्षप्रबोधे मेघमहोदये शकुननिरूपणोनाम त्रयोदशोधिकारः ॥ १३ ॥

अर्थ-अब गौकी चेष्टा कहते हैं जो गौ उदास होंय तो राजाको भय होता है पैरोंसे भूमिको कूटैं तो रोग होताहै। और नेत्रोंमें आंसू भरे रहें तो स्वामीकी मृत्यु होती है और भयभीत होकर बडा शब्द करैं तो चोर आते हैं ॥ ४६ ॥ विनाकारणके गौ बोलैं तो अनर्थ होताहै रात्रिको बोलैं तो भय होताहै बैल रात्रिको बोलैं तो शुभ होताहै जो गौओंको बहुतसी मक्खी वा श्वान् घेरैं तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ ४७॥ जो गौ हम्बा शब्द बोलती हुई घरमें आवै और घरका सेवन करैंतो गौओंके गोष्टकी वृद्धि करतीहैं जो गौओंके अंग जलसे भीगरहे होंय रोमांच हों गौ प्रसन्न होंय तो शुभ होता है इसीप्रकार महिषियोंकाभी फल जानना चाहिये॥४८॥ इसप्रकार शकुनविचारकर पडितोंको वर्षका शुभाशुभफल कहना चाहिये। इसके जाननेसे सब प्रकारसे अर्थकी प्राप्ति होतीहै जो इस शास्त्रको जानते हैं वे चतुर राज्यमान्य होते हैं और उनके सद्गुण प्रकाशित होते हैं जिनके हृदयमें यह वर्षबोधप्रकाशित होताहै ॥ ४९ ॥ शेष दो श्लोकोंमें ग्रंथकर्ताका वंशवर्णन है ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इसग्रंथमें सब साढेतीनसहस्र श्लोक थे जिसमेंसे संक्षेपकरके उपयोगी विषय ले लिये हैं यह वर्षबोध मेरुकी स्थितितक वर्तमान रहै ॥ ५२ ॥ जो कुछ इसमें पुनरुक्त या अशुद्ध हो वह क्षमा करना यह करजोड प्रार्थनाहै॥५३॥ यह ग्रंथ भविष्यवर्षके बोधके निमित्त और बालक आदिकोंके उपकारके निमित्त किया है५४

इति श्रीमेघमहोदये वर्षप्रबोधे पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां त्रयोदशोधिकारः ॥ १३ ॥

भूमिबाणाङ्कचन्द्रेऽब्दे कृष्णाषाढस्यसप्तमी। वर्षबोधस्य ग्रन्थस्य टीका पूर्तिमुपागमत् ॥ १ ॥